



नई तालीम

संपादक-सबका

आशादेवी : मॉर्जरी सॉईक्स

देवीप्रसाद



हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ७]

जनवरी १९५९

[अंक : ७

नअी तालीम

“नअी तालीम” जनवरी १९५९ : अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
१	अध्ययन तेजस्वी हो	-विनोद	... १८७
२	गांधीजी और शांति सेना	-प्यारेलाल नय्यर	... १८९
३	गांव ही शाला बन गया	-राधाट्टण्ण	... १९५
४	धाल शिक्का की कुछ प्राथमिक बातें	-काशीनाथ त्रिवेदी	... १९९
५	दो महीने के काम की योजना	-अ ना जयपुरकर	... २०५
६	बच्चों की भजन मंडली	-श प्र. पांडे	... २१०
७	नअी तालीम प्रशिक्षण शिविर-पट्टीकल्याण चर्चाओं के निष्कर्ष	---	... २१२
८	अंक शिक्षणतंत्र का अनुभव	-देवीप्रसाद	... २१५
९	नअी तालीम के सत्त्व	-धीरेन्द्र मजूमदार	... २१७
१०	सामूहिक साधना	-विनोद	कवर पृष्ठ ३

सूचना

१३ वां अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन

हमें सूचित करते हुए हमें है कि तेरहवां अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन अप्रैल १९५९ के तीसरे सप्ताह में, राजपुरा, पंजाब में संपन्न होगा। पूज्य विनोदाजी भी सम्मेलन में सम्मिलित रहेंगे। अन्य विषयों के साथ, सम्मेलन धामदान आन्दोलन और ग्रामसंकल्प के वर्तमान तदर्थ में नअी तालीम के भावी कार्यक्रम पर भी विचार करेगा।

नअी तालीम के रुचि रखने वाले जो व्यक्ति सम्मेलन में भाग लेना चाहते हैं, तत्समय ही जानकारी के लिये मन्त्री, हिंदुरतानी तालीमी सच, सेवाग्राम से पत्र व्यवहार करें। सम्मेलन की विस्तृत जानकारी “नअी तालीम” के अगले अंक में प्रकाशित होगी। सम्मेलन में होनेवाली चर्चाओं के सच में आरंभ हुए गुणाव हों तो कृपया जरूर भेजें।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७]

जनवरी १९५९

[अंक ७

अध्ययन तेजस्वी हो

विनोबा

हम लोग प्राचीन काल से ही अध्ययन-प्रेमी रहे हैं, लेकिन हम अंसी प्रार्थना नहीं करते कि बहुत अध्ययन करें, बल्कि "तेजस्वि नावधी-तमस्तु" हमारा अध्ययन तेजस्वी हो, अंसी ही हम प्रार्थना करते हैं। अध्ययन को तेजस्विता तभी आती है, जब उसके साथ जीवन-योग होता है। मैंने उसे सिर्फ "कर्मभोग" नाम से नहीं कहा, बल्कि "जीवन याग" कहा है। जब अध्ययन का किसी तरह जीवन के साथ योग होता है तो उस जीवन में विचार-शीलता आती है। अध्ययन के बिना जीवन जड़ बनता है और जीवन के बिना अध्ययन पगु। जिसलिअे दोनों का संयोग होना चाहिये। यह हमें हमारे ऋषियों ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। वे कहते हैं, "अतः च स्वाध्यायः प्रवचनं, सत्यं च स्वाध्यायः प्रवचनम्।" जिस तरह अक-अक जीवन-याग दिलाकर उसके साथ स्वाध्याय-प्रवचन जोड़ने की बात उन्होंने हमारे सामने रखी है। वह बात हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन बीच में हमने

तरह-तरह का अनुभव लिया, उसमें हमने कुछ नयी बातें सीखी और कुछ भूल भी गये।

जीवन में समन्वय

अब जमाना आ गया है जब कि हम सकुचित धार्मिक कल्पनाओं को छोड़ मानव धर्म में परिणत हो जाय और जीवन में समन्वय करें, जो बहुत जरूरी है। अभी थोड़ा सांनटक्केजी ने कहा था कि वेद का और अवेस्ता का समन्वय होना चाहिये और अच्छी तरह हो सकता है। अब जमाना था जब अपनिषद् और गीता का, अनेक अपनिषद् का भी समन्वय करने की जरूरत महसूस हुई। फिर प्रस्थानत्रयी बनी, उस पर भाष्य लिखे गये और कुछ समन्वय हुआ। इसलिअे समाज में श्रद्धा बनी, नहीं तो वह टूट फूट जाता। उसके बाद अनेक संस्कृतियों का हमारे साथ सम्पर्क हुआ। यह हमारे और विदेश के लिअे बहुत अच्छी चीज हुई। हम यह नहीं समझते हैं कि यहाँ मुसलमान, ईसाई और दूसरों का भी जो सम्पर्क आया, उससे हमें या उन्हें कुछ नुबतान

हुआ। हम यह मानते हैं कि सम्पर्क होता है, तो आरम्भ में कुछ-न-कुछ कक्षमकक्ष, सघर्ष, गलतफहमिया होती है, किन्तु अन्त में उससे भला होकर जीवन समृद्ध होता है। यदि हम अकेले ही संप्रदाय, संस्कृति में या सम्प्रदाय में पलते हैं और दूसरे संप्रदाय, संस्कृति और सम्प्रदाय से संपर्क नहीं होते, तो बहुत कुछ सकुचितता आ जाती है। अपने दोषों का भान नहीं होता। किन्तु जब दूसरी संस्कृति या सम्प्रदाय से संपर्क होता है, तो आप-निरसन और गुणाधान का भी मौका मिलता है। इस तरह जीवन समृद्ध और विचार व्यापक बनता है।

‘असके आगे सिर्फ गीता और उपनिषदों के समन्वय से नहीं चलेगा। बल्कि हिन्दू, बौद्ध, पारसी, जैन, यहूदी, इस्लाम, ईसायी, लाओत्से और खाओत्से आदि जो भी विचारक दुनिया में हुए, जिन्होंने दुनिया पर प्रभाव डाला और जिनके पीछे करोड़ों लोग गये, उन सब के विचारों या ममान अथवा ही परम सत्य समझना चाहिये। दिया भी पढ़ने वाले विभिन्न विचारों की गहराई में जाने पर यही प्रकाश मिलता है। यह अलग बात है कि उस अनुभव को किन शब्दों में रखा जाय। इस पर भिन्नता होती है। अकेले का अर्थ शब्द मूर्खता है, तो दूसरे को दूसरा शब्द। अर्थ सामान्य अनुभव को जब हम शब्दों में रखने को कोशिश करते हैं तो समाधान नहीं होता। इसलिये शब्दों की छानबीन करने वाले अकेले-अकेले नया शब्द मुझाते हैं और नए शब्दों पर आश्रय उठाते हैं। उससे शब्द-नगोपन में तो मदद मिलती है, पर उससे भी यदि आप्रदा पैदा हुआ, तो वह शब्दजाल बन जाता है, फिर भले ही वह अनुभव भौतिक हो या आध्यात्मिक।

अनुभव भौतिक हो, तो भी उसे शब्दों में रखने पर समाधान नहीं होता। किसी को अकेले शब्द अच्छा लगता है, तो किसी को नहीं भी लगता है। हमारी आँखों के सामने कुम्हार मिट्टी का घड़ा बनाता है। वह अतनी मामूली चीज है, जिसके विषय में कुम्हार को कभी संदेह ही नहीं पैदा हुआ। लेकिन उसमें तत्त्व-ज्ञानियों को संदेह पैदा हुआ कि मिट्टी का घड़े के साथ क्या संबंध है? क्या वह कार्य-कारण है, भेद है, अभेद है या समवाय? क्या उसमें से परिणामवाद निकलता है कि विवर्त-वाद? फिर अकेले-अकेले वाद पर दूसरे वादी आक्षेप करते हैं। अकेले पूछता है कि क्या मिट्टी और घड़ा अकेले हैं या अलग? अगर दूसरा कहे कि “वे अलग पदार्थ हैं, तो वादी कहेगा—“अगर वे बिल्कुल अलग पदार्थ हैं, तो हमें हमारी मिट्टी दे दो और तुम अपना घड़ा ले जाओ, जैसे कि घड़ी और घंटी जैसे दो अलग-अलग चीजों के बारे में होता है।” इस तरह मिट्टी और घड़ा अलग-अलग चीजें हैं, यह कहने में मुश्किल मालूम होती है। तब क्या दोनों अकेले ही हैं? नहीं, अगर ऐसा होता, तो सामने वही मिट्टी पड़ी है, उसमें पानी भरो, कुम्हार को जरूरत ही क्या है? इस तरह दोनों अकेले ही हैं, अंसा भी नहीं कह सकते और अलग-अलग हैं अंसा भी नहीं कह सकते। अकेले बिल्कुल सादी-सी बात है—मिट्टी का घड़ा बनाना जिसके बारे में कुम्हार का कभी भी शक नहीं हुआ कि यह कार्यकारण, भेद, अभेद विवर्त, आभास, सघात या और क्या है। इस पर उसे कभी शक नहीं आती है। जहाँ आँख के सामने होनेवाले अकेले मामूली काम के बारे में भी जब तत्त्वज्ञानियों को शक होती है और समीचीन शब्द नहीं मिलता—अकेले को अकेले शब्द (शेषांत पृष्ठ १८९ पर)

गांधीजी और शांति-सेना

प्यारेलाल नेयर

मैं आपके आगे शांति-सेना के सिद्धांतों का विश्लेषण रखूँ, जिससे बेहतर है कि दो-चार ऐसे अुदाहरण दूँ कि जिनमें शांति-सेना के सिद्धांत आ जाते हैं। फिर आप समझ सकेंगे कि शांति-सेना की जड़ में कौनसी चीज है।

मैंने एक बार एक हसी लेखक की एक गद्य कविता पढ़ी थी, उसमें उसने एक ऐसी घटना का वर्णन किया था जो उसकी आँखों के सामने गुजरी थी। एक दफा वह अपने बगीचे में सैर कर रहा था, तब उसने देखा एक चिड़िया और उसका बच्चा ठंड से बेहाल होकर बगीचे की पगडंडी पर पड़े हैं, अुड नहीं सकते हैं। बहुत दफा आपने देखा होगा कि कुत्ता का पक्षियों से वैर होता है। वे पक्षियों पर घोंस जमाते हैं। उस चिड़िया के बच्चे पर एक कुत्ता लपका, चिड़िया ने अपने पल के प्रहार से कुत्ते

को मोड़ने की कोशिश की। उसका कुछ असर नहीं हुआ, तो चोंच से प्रहार किया। उसका भी असर नहीं हुआ तो फिर चिड़िया ने अुडकर अपने शरीर को कुत्ते के तीक्ष्ण दाँतों के बीच में डाल दिया, कुत्ता झुल्लाया और उसे काट कर उसके फड़फड़ाते शरीर को एक तरफ फेंक दिया। बल्लु अिसके बाद वह कुत्ता रुक गया और चिड़िया के बच्चे को छोड़कर एक तरफ चला गया। यह एक ऐसा अुदाहरण है, जिसमें चिड़िया के अन्दर शारीरिक बल नहीं था तो भी उसने बड़े बलवान् प्राणी से मुकाबला किया। उसमें थोड़ी सी शक्ति होती, और वह कुत्ते के खून की अेवाध बूद निकाल देती तो कुत्ता गुस्से से बच्चे को मार ही डालता। पर उसने ऐसा तरीका लिया जिससे कुत्ते की अुध-लाहट खतम हो गयी।

(पृष्ठ १८८ का नोपण)

ठीक मालूम होता है, तो दूसरे का उसमें समाधान नहीं होता, तब आत्मानुभव में अक का एक शब्द ठीक लग और दूसरे का उससे समाधान न हो, तो आश्चर्य ही क्या है? जिसलिअे शब्दों को अलग कर सभर का ग्रहण हाना चाहिये।

सारास अब हमें जीवन में अिस्लाम, बौद्ध, ओमाओ, वैदिक हिन्दू धर्म आदि का समन्वय करना चाहिये। मैं चार विश्व-व्यापक धर्मों के नाम लिये। उनमें और भी नाम जाड सकते हैं। अिसके आगे जो समन्वय करना है, अिसके लिअे तटस्थ वृत्ति से सबकी ओर देखना होगा

और यह मान ही लेना होगा कि जिन ग्रन्थों के पीछे करोडों लोग लगें हैं वे ग्रन्थ सत्य-निष्ठ हैं, सत्य-प्रकाशन की कोशिश करते हैं। उन ग्रन्थों के अुपासक जिस श्रद्धा से उनका अध्ययन करते हैं, उसी श्रद्धा से हमें भी अध्ययन करना चाहिये।

मैं आपके सामने तीन वाते रखना चाहता हूँ। १ शब्दों का अध्ययन और उनमें मेल साधने की कोशिश। २ भिन्न-भिन्न धर्मों की अुपासनाओं का एकत्र अनुभव और ३ जिस-जिस धर्म या ग्रन्थ ने जो जो देन दी है, उसका अुपयोग कर, सब मानवधर्मों का समन्वय कर मानव जीवन समृद्ध बनाने की योजना।

अब अंक दूसरा अुदाहरण लीजिये । अंक आदमी शराब पीकर रात को घर आया । उसकी पत्नी ने उससे पूछा कि क्यों शराब पी । वह गुस्से में आकर पत्नी की तरफ दौड़ा । उसका बच्चा पास ही था । उसने जब देखा कि मा पर आक्रमण हो रहा है तो उसने बाप को लिपटने की कोशिश की । किन्तु वह गिर पड़ा और पास के टेबल को नोक से उसके सिर से रक्त की धारा बहने लगी । वह देखकर बाप का गुस्सा और नशा दोनों अुतर गये । पहले अुदाहरण में चिडिया में तर्क शक्ति नहीं थी । स्वभाववश होकर ही उसने सब कुछ किया । लेकिन दूसरे अुदाहरण में बच्चे में अितनी पहिचान थी कि यह मेरे बाप और मा हैं । दोनों मुझपर प्यार करते हैं । मैं बाप को पकड़ूंगा तो कुछ असर होगा । अितनी तर्क शक्ति उसमें थी । इस तरह बच्चे ने न हाने लायक घटना होने से बचा लिया ।

तीसरा अुदाहरण नौआखाली की अंक घटना का है । मुशीला वहन अंक गाव में रहने गयी थी । वहा चारो तरफ सब घर जला दिये गये थे । कभी सी मन चावल भी जला दिये गये थे । उसकी राख वहा बिखरी पड़ी थी । अुन दिनों हिन्दू-मुसलमानो के झगडे चल रहे थे । वहा पर मुसलमान ८५ प्रतिशत और हिन्दू १५ प्रतिशत थे । मुसलमानो का यह तरीका था कि पहले लोगो को लूटना, घन जेवर आदि हासिल करना फिर जबरन लोगो का धर्म परिवर्तन करना, लडकियो को अूठा ले जाना, पीछे घर जलाना और आदमियो को मार डालना । जिस पर में मुशीला वहन जाकर बसी थी, वहा अंक कपाअूडर रहता था । बल्के के समय गुठो ने अुस घर में घुस कर चीजो

को तोडना सुरू किया था । दीवार में कुछ तस्वीरे लटकी थी । अुनमें कोअी देवता की तस्वीर होगी । अुसको जब तोडा गया तो शीशे का अंक टुकडा टूट कर बलवाअियों के नेता के पांव में लग गया । पाव से लहू निकलने लगा । अुस कपाअूडर ने झट से पैर से शीशा निथाला और मरहम पट्टी कर दी । जिसका अितना असर हुआ कि बलवाअियों के नेता ने हुक्म दिया कि यहा अत्याचार न किया जाय । इस तरह सिर्फ वही अंक मकान बचा था, जो जलने से बचा । यह अंक तीसरा दर्जा है जिसमें अंक पक्की अुभार का आदमी सोच विचार करके अंक अंसा असाधारण काम करता है, जिससे धर्मान्धता के नशे में चूर आदमी भी अपनी धर्मान्धता को भूल जाता है और अुसमें मनुष्यत्व का भाव अुभार आता है ।

चौथी मिसाल पश्चिम पंजाब की अंक घटना है जो अुन्नीस-सौ सैतालिस में हुअी थी । अुस वक्त हिन्दुस्तान के दो हिस्से हो चुके थे । और हिंसा प्रति-हिंसा की क्रियायें अितनी बढ गयी थी कि व्यक्तिगत काटमार को छोडकर सारे की सारी जाति के ही सर्वनाश (genocide) की बात चलती थी । क्रूरता की कोअी हद नहीं थी । मनुष्य मनुष्य न रहकर पशु बन गये थे । अुस वक्त गुडे के दल गाव-गाव जाते थे और कहते थे कि गाव की सारी वस्ती धर्म परिवर्तन करे तो ही बचेगी । औरतो और लडकियो को ले जाते थे । अगर कही किसी ने मुकाबला किया तो अुसका अंसा नमूनदार बदला लिया जाता था जिससे कि दूसरो को पदार्थ-पाठ मिले । वहा पर अंक सिक्खो के गाव में कुछ लोग पहुचे । गाव के गिदं घेरा डाल दिया और वहा कि तुम मुसलमान हो

जाओ और तुम्हारी औरते हमारे हवाले कर दो, वे हमारी बनेंगी। औरतों ने यह सब सुना और कहा कि ठीक है मगर पहिले हम जरा हमारे गुरुद्वारे में हो आयें। वहाँ पर अंक नया कुआर बना है उसका पानी हमने अभी तक नहीं पिया। तो वहाँ जाकर जरा पानी पीने दो और प्रार्थना करने दो। उन लोगों ने मान लिया। वे वहाँ चली गयी और प्रार्थना करने लगी। अतने में बाहर से आवाज आयी कि जल्दी से बाहर निकलो, बहुत देर हो गयी। अंक वृद्ध स्त्री ने जवाब दिया “जिसकी हिम्मत हो वह हमें ले जाय”। जिसके साथ ही सब के सब बुझासी वहाँ कुओं में कूद पड़ी। सारा कुआर अपर तक लाशों से भर गया। सिर्फ अंक लड़की बची। यह सब देखकर वे लोग सहम-से गये। और वहाँके लोगोंका धर्म-परिवर्तन करने के लिये अन्हें मजबूर नहीं किया। अिन वहाँों ने धायद कमी सत्याग्रह का नाम तक नहीं सुना था। शान्ति सेना क्या चीज है, यह बात अिनकी समझ से बाहर थी, किन्तु अन्होंने अपने आत्म-बलिदान से अपने पुरुषों का धर्म और प्राण भी और अपनी अिज्जत बचायी। यह अस जमाने की बात है जब कि बलात्कार से धर्म परिवर्तन करना धर्मकार्य माना जाता था। धर्मान्धता के साथ क्रोध और बदले की भावना भी थी। क्रूरता में दोनों तरफ से कोअी किसी से पीछे नहीं था। लोग मानते थे कि दूसरे पक्ष के लोगों को मारना हमारा कर्तव्य है, क्योंकि हमारे लोगों को दूसरे हिस्से में अन्होंने कल किया है, असका बदला लेना चाहिये। अैसी हालत में उन स्त्रियों ने अपने आत्म-बलिदान से अपने और अपने पुरुषों के धर्म की रक्षा की यह कोअी कम चमत्कारी बात नहीं थी।

अिन चार बुदाहरणों में शान्ति-सेना के मूल सिद्धान्तों की लगभग पूरी कल्पना आ जाती है। लेकिन सयोजित रूप से शान्ति-सेना की स्थापना अभी तक कल्पनामात्र ही है, असका पूरा रूप हमें कही नहीं मिलता। जगत् में कही भी असकी पूरी आजमाअिष नहीं हो सकी है। असका विकास देश में किस तरह होगा असका अभी पूरा अित्र हमारे पास नहीं; अंक अज्ञात सागर पर हमें हमारा पय दूटना है।

१९१९ में पंजाब में मार्शल ला हुआ, तब बहुत-सी जगहों पर जनता ने पागलपन के काम किये। रेल की पटरी बुझाडना, घर जलाना आदि काम हुअे। अंग्रेज सरकार ने भी असका बदला सब मर्यादा छोडकर लिया। जलीयानवाला बाग का हत्याकाण्ड हुआ। लोगों को अपमानित करने के कअी नये नये तरीके अंग्रेजों ने निकाले, लोगों को पेट के बल चलने पर मजबूर किया। टिक टिकी से नये बायकर शरीर पर बेंतें लगायें, आदि। जब बापू ने यह देखा तो कहा कि यह सहन नहीं हो सकता। अस समय रोलट अेक्ट के खिलाफ अनका सत्याग्रह चल रहा था। लेकिन जब जनता ने अैसे पागलपन के काम किये तो बापू अिचार में पडे कि अिन लोगों द्वारा मे सत्याग्रह कैसे चला सकता हूँ, क्योंकि अिनके हाथ भी निर्दोष रक्त से रगे हैं। अस समय अंग्रेजों को अपनी जान खतरे में लगती थी, अंग्रेज सरकार भयभीत हुअी थी। सत्याग्रह का अंक महत्वपूर्ण नियम यह है कि भयभीत के सामने अैसी चीज कोअी न की जाय जिससे कि वह और भी भयभीत हो। असलिये बापू ने वाअिसराय को चिट्ठी लिखकर नौटीस दी की हम सत्याग्रह की स्थगित करते है। आप अपनी

पूरी फौजी तैयारी कर लीजिये जिससे कि कोभी कही बलवा हो तो उसे आप आसानी से कुचलने को समर्थ हों। किन्तु जिसके पीछे अगर लोगों का अपमान करना बंद नहीं हुआ तो मैं अकेला सत्याग्रह करूँगा। नतीजा यह हुआ कि वे सब चीजें वाक्सराय के हुक्म से बंद हुई। यह "बन्-मैन-फोर्स" की शान्ति सेना का पहला अंशुदाहरण है। एक आदमी ने अकेले शान्ति-सेना का काम किया। उसने पहले विरोधी को निर्भय किया, फिर अपने लोगों की भूलों के लिये खुद अनशन करके प्रायश्चित्त किया और सरकार का बतलाया कि जनता के पागलपन से आपको जितना दुख है उतना ही मुझे भी है। अपने अनशन से और सत्याग्रह को बंद करके उन्होंने लोगों को पदार्थपाठ भी सिखाया कि आप अगर समझते हों कि मेरे दिल में एक घात है, और बाहर दूसरी है तो वैसा नहीं है। कुछ लोग समझते थे कि बाहर कहने में तो शान्ति की बातें करनी हैं, लेकिन मौका आते ही मार काट शुरू कर देना है। जिस भ्रम को बापू ने जिस तरह हपोडे की चीट से अपनी जान को खतरे में डाल कर दूर किया। फिर वाक्सराय ने भी जय देखा कि यह आदमी सच्चा है, युद्ध के समय जिन आदमी ने अपनी जान को जोखिम में डालकर भरती का काम किया था वही आदमी जिस हद तक पहुँचा है कि मुल्लम मुल्ला बग़ावत का झंडा खड़ा करता है तो यह बात समझने की है।

१९२१ के सत्याग्रह के दौरान में प्रिंस ऑफ वेल्स हिन्दुस्तान में आये तो कायेम ने अंगुवा स्वागत न करने का तय किया था। लेकिन चम्पबी के कुछ लोग, जिनमें पार्सी अधिक थे और कुछ मुसलमान और जिन्नाबी भी थे जो

सरकार की वफादारी का दम भरते थे, स्वागत करना चाहते थे। जिस पर लोगों ने दंगा शुरू किया। हड़ताल होने पर जिन्होंने दूकानें बंद नहीं की थी, उनका अपमान करना शुरू किया। कुछ पारसी स्त्रियों को भी अपमानित किया गया और गुडापन चलने लगा। परिस्थिति कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के हाथ से निकल चुकी थी। सरकारो पुलिस राह ताक रही थी कि देखें अब गांधी क्या करता है? अगर गांधी सहायता के लिये सरकार के पास आयेगा तो उसके असहयोग का खात्मा होगा, नहीं आयेगा तो अमकी अहिंसा का खात्मा होगा। जिस तरह भट्टी या भाड़ में गिरने की बात थी। लेकिन बापू ने तो अमरण अपवास शुरू कर दिया। और उसके साथ-साथ हिन्दू, मुसलमान, पार्सी, ईसाई, अिनमें से जो लोग हमारे अस्तर में थे उन सब को कहा कि मिश्रित टोलीया बनाकर जहाँ दंगा हो रहा है वहाँ जाओ और जनता से कहो कि पहले हम पर पत्थर फेंको। सब लोग उस सयुक्त टोली में थे। कौन किस पर पत्थर फेंकता? बुधर बापू का अपवास तो चल ही रहा था, लोगों के मन में मन्थन शुरू हुआ कि हमने क्या किया? उस वक्त बहुत से कांग्रेस के लोग मानते तो थे कि ऐसी चीज नहीं होनी चाहिये। परन्तु वे उसे रोकने की पूरी कोशिश नहीं करते थे। और आम जनता में भी वही-वही दंगे के प्रति अदासीन भावना थी, तो वही दंगा करने वालों के साथ सहानुभूति भी थी। दंगे के दरम्यान आम जनता का क्या हाल है—क्या दंगा करनेवालों के प्रति उसकी निष्प्रिय सहानुभूति है? पूरी सहानुभूति है या अदासीन भाव है—यह एक महत्व की बात होती है। जिन तीनों में से एक भी न हो तो तुफान करने वाले आदमियों को

बल नहीं मिलता, क्योंकि वे तो थोड़े ही होते हैं। परन्तु अक्सर ऐसे मौके पर आम पागलपन की हवा (मास ट्रिस्टिरिया) पैदा होती है। यह एक अजीब चीज है कि हम व्यक्तिगत रूप में जो चीज नहीं करते वह समूह में कर डालते हैं। रसायन-शास्त्र में भी यह बात आती है कि थोड़े प्रमाण में जो क्रिया होती है, प्रमाण बढ़ने पर होनेवाली क्रिया उससे भिन्न होती है। "मास-अक्शन" अलग प्रकार का हो होता है। अणु में यूरेनियम के दो टुकड़े पास-पास रखे जाय तो कुछ नहीं होता है, परन्तु दोनों को मिला देने से एक "क्रिटिकल लिमिट" पहुँचने पर विस्फोट होता है। मानवी जगत् में भी सामूहिक मानस-शास्त्र को कुछ अंसा ही नियम लागू होता है। आपूने अपने अपवास द्वारा जनता की शिक्षितता या निष्क्रिय सहानुभूति को दूर किया। जिसके परिणाम स्वरूप बम्बई की हवा बदली और तीन दिनों में शांति स्थापित हुई। जिस अुदाहरण के अन्दर एक गहरा सिद्धान्त भरा है। जैसे डायनेमो और मोटर दो चीजें होती हैं—डायनेमो के बल मोटर चलती है—वैसे ही यहाँ एक छोटे बल के पीछे दूसरा एक बल था जिससे यह काम हुआ। वह बल गांधी जी का तप था। उस वक़्त जो समुक्त टोली दगे वाले हिस्से में जाती थी उसके पीछे अपवास शय्या पर पड़े हुअे गांधीजी की तपस्या अपना काम करती थी। उस समुक्त टोली में ऐसे लोग थे जिन्हें सब जानते थे। अुन्होंने जनता की बहुत सेवा की थी और आम जनता में अुनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। अुनमें सब धर्मवाले शामिल थे। जिसलिये क्षेत्र में अुनके निकलने से एक चमत्कारी काम हुआ।

अेक और अुदाहरण सावरमती आश्रम का

है। अेक वक़्त आश्रम के नजदीक क्रिमिनल ट्राइबुज (जुरायम पेक्षा) लोगो ने डेरा डाला था। अुन्होंने आश्रम में रात को आकर चोरी करनी शुरू की। कुछ लोगो को अुन्होंने पीटा भी। बापू ने कहा कि यह ठीक नहीं है कि आप जिस तरह अपने को लुटाते रहे। अुसके लिये कुछ न-कुछ करना ही होगा। पहली बात तो यह है कि आप सोचें कि यह चोरी होती है, अुसका अर्थ क्या है। क्या जिसमें हमारी भी कुछ जिम्मेदारी है, हमारे साथ कहीं कोअी बुराअी होती हो तो अुसका कारण अपन अन्दर ढूढना चाहिये। खुद हममें बुराअी न हो तो हमारे आसपास भी बुराअी नहीं होंगी। यहाँ चोरी होती है, अुसका अर्थ यह है कि आश्रम-वासियों के पास ज्यादा सम्पत्ति है आप लोग अपरिग्रह के नियम का भग कर रहे हैं। बोलने में तो अपरिग्रह की बातें करते हैं, परन्तु अुसका पालन नहीं करते। जिसलिये पहले तो अन्त-मुख होकर परिग्रह को आप छोड़ें। अगर आप परिग्रह नहीं छोड सकते हैं तो फिर अेक ही रास्ता आपके पास रह जाता है—यान कि हमला करनेवालो का मुकाबिला करो और अुसमें मर भी जाओ। अगर मरने से डर लगता है तो बेशक बन्दूक रखो। किन्तु वह अहिंसा नहीं होगी। अुसे मैं क्षम्य हिंसा मानूँगा। कायरता को मैं अक्षम्य समझता हूँ। अगर जिसके साथ-साथ आप यह भी समझ ले कि फिर आप जिस आश्रम का नाम सत्याग्रह आश्रम नहीं रख सकते। बापु की जिस बात से सब सोचने लगे कि हम अपरिग्रह का नाम तो लेते हैं, लेकिन परिग्रह करते हैं। यह अेक मूल का दोष है। हमें चोरीपेक्षा लोगो के पास जाना चाहिये, अुनके आगे अपना दोष स्वीकार करना

चाहिये और अन्तर्गत जीवन में प्रवेश करके अन्तर्गत आर्थिक-संकट को दूर करना चाहिये कि जिससे वे चोरी करने पर मजबूर न हों। चुनावों अतः तरह आधुनिकवादी अन्तर्गत लोगो के बीच गये, अन्तर्गत परिचय किया, कुछ सेवा की तब उनके बन्द हुए।

असहयोग आन्दोलन के दरमियान-खास करके प्रिंस आफ वेल्स के आगमन के समय-हिन्दुस्तान में कांग्रेस की तरफ से स्वयं-सेवक दल बनाने की एक योजना बनायी गयी थी। अन्तर्गत अन्तर्गत यही था कि कही भी दगा न होने पाये और हो तो अन्तर्गत अहिंसक कार्रवाई से मिटाया जाय। अन्तर्गत दल की नियमावलि में एक नियम यह था कि अन्तर्गत भरती होनेवाला अन्तर्गत नहीं रखेगा, लाली नहीं चलायेगा। दूसरा नियम था कि वह वेतन की अपेक्षा नहीं रखेगा। तीसरा नियम यह था कि अन्तर्गत लोगो की एक खास विस्म की खादी की वरदी होगी, जिससे वे पहिचाने जायेंगे। चौथा नियम था कि दल के नेता का आदेश सारे सैनिक पूर्णतया अमल में लायेंगे। पाचवा नियम था कि वे मन, वचन और कर्म से अहिंसा का पूरा पालन

करेंगे। छठा था कि अन्तर्गत दाखिल होनेवाले सब धर्मों को समान समझेंगे। अन्तर्गत कट्टरपन और घमान्धता नहीं होगी। अहिंसक स्वयं-सेवक दल की यह कल्पना बहुत आगे न चली। अन्तर्गत दल वालों का काम मुख्यतः यही रहा कि कांग्रेस के जलसों में व्यवस्था करता और मौका आने पर जेल जाना। अन्तर्गत मित्र प्रकार के लोग थे। कुछ तो अहिंसा को मानते थे और कुछ नहीं मानते थे। परन्तु जो नहीं मानते थे, वे भी नियमन रूप अहिंसा का पालन करते थे। अन्तर्गत शान्ति-सैनिकों द्वारा हमने नमक सत्याग्रह की लड़ाई भी लड़ी और अन्तर्गत में जीत हासिल की। अन्तर्गत मर्म की चीज यह निकली कि यद्यपि लोग अहिंसा को पूरी तरह नहीं समझते थे फिर भी अन्तर्गत एक नेता का नियमन वे स्वीकार करते थे जो कि अहिंसा को पूरी तरह मानता था। अन्तर्गत तरह साधारण लोगो से भी हम एक बड़ी शान्ति-सेना खड़ी कर सकते हैं अगर हमारे बीच कुछ अन्तर्गत अग्रसर लोग हों जिनकी अहिंसा पर पूरी निष्ठा हो और सैनिक जिन लोगो के सब नियमन का श्रद्धापूर्वक पालन करते हों।

(कमरा.)

मैंने अन्तर्गत विचार का विरोध किया कि अहिंसा सिर्फ बहुत अन्तर्गत दर्जों के लोगों के लिये संभव है और मेरा दावा है कि अगर अन्तर्गत शिक्का दी जाय तथा ठीक नेतृत्व किया जाय तो सर्व साधारण लोग भी अहिंसा का अन्तर्गत कर सकते हैं।

—गांधीजी

गांव ही शाला बन गया

राधाकृष्ण

शाला की चार-दीवारी के बाहर आकर समाज में-जिस समाज में शाला है-जो समस्याएँ, साधन और संपत्ति मौजूद है, बुन्हीको शिक्षा का माध्यम और जरिया मानकर शिक्षात्रम चलाने का प्रयोग शिक्षा-जगत् के लिये कोशिश नही है। नही तालीम के आरम्भ से ही हम ने यह मान लिया था कि शिक्षात्रम राष्ट्रीय आवश्यकताओं को और समस्याओं को सुलझाने का या पूरा करने का जरिया होना चाहिये। प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण दोनों से शिक्षाक्रम को सीचना है, भुसी से शाला का कार्यक्रम अदृश्य-पूर्ण और तेजस्वी बनेगा। समाज की संपत्ति और साधनों को शिक्षण के जरिये मान कर अमेरिका देश के कुछ राष्ट्रों में और फिलिपाइन्स में लोक-शिक्षण के प्रयोग हुये हैं, और अिन प्रयोगों के आधार पर लोक-शिक्षण आन्दोलन-कम्प्यूनिटी स्कूल मुव्मेंट-प्रसिद्ध है।

अिन लोकशालाओं के आधार अिस सिद्धान्त पर है कि शाला का कार्य शाला में आनेवाले विद्यार्थियों को शिक्षण ही नहीं, बल्कि समाज का समग्र विकास ही अुसका ध्येय है [टोटल कम्प्यूनिटी डेवलपमेंट]। समाज में जो संपत्ति और साधन हैं, अुनकी खोज, अुनका अुपयोग, और अुनका विकास यह सब शिक्षण-कार्य का अग है, शैक्षणिक प्रक्रियाएँ हैं। समाज में जो प्राकृतिक या सांस्कृतिक साधन अुपलब्ध हैं, संपत्ति मौजूद है, वे सब शिक्षण के साधन हैं, और शिक्षण के साधन बन कर ही समाज का

स्तर अुचा अुठाने के काम में आने चाहिये। अुससे दोहरा फायदा होगा। अेक तो शिक्षण को जीवित बना सकेगे, वह सोईश्य होगा और समाज का विकास भी साथ-साथ सधेगा। संपत्ति के विकास से समाज के जीवन के स्तर में कुछ अुन्नति शायद सभव हो सकेगी। अिन शालाओं में समाज के सब समस्याएँ आ जाती हैं, और अुन्हे हल करना शिक्षण की प्रक्रिया है। अिन शालाओं में यह बताना मुश्किल होगा कि शाला का काम कहा खतम होता है, और समाज का काम कहा आरम्भ होता है। कभी शालाओं हैं, जिन्होंने अपने शिक्षाक्रम में नैसर्गिक और सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन करने का कार्यक्रम बनाया। पुस्तकों के जरिये शिक्षण जो चलता था, अुस क्षुप्त कार्यक्रम को सजीव बनाने और परिपुष्ट करने में अिससे मदद मिली। कभी शालाओं के विद्यार्थी समाज में जो अुद्योग धन्धे चलते हैं, अुनमें जाकर शरीक हुअे। अिससे विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिये अुपयुक्त काम खोजने और अुनकी दिलचस्पियों को पहिचान कर मौके के अनुसार अपने कार्यक्रम में जरूरी परिवर्तन करने का अवसर अिन शालाओं को मिला। अैसी कुछ शालाओं भी हैं, जहा शाला की जिमारतें, आगन, वाचनालय या रंगमंच समाज के कामों में आता है। अुत्सव-स्पोहार, जो शाला में मनाये जायेंगे, वे समाज के लिये भी हैं, समाज के लोग अुसमें भाग लेते हैं, और शाला और समाज का अेक धनिष्ठ सम्बन्ध निष्पन्न होता है। शालाओं के शिक्षा-

का प्रबन्ध करना कुछ समय के लिये शाला का मुख्य काम, मुख्य कार्यक्रम बन जाता है।

अंक शाला की कहानी है—शाला चट्टान पर स्थित है। आसपास के गांवों से करीब छ मी तक विद्यार्थी आते हैं। विद्यार्थी रोज देखते हैं कि टुक में भर कर आसपास के जंगल की कटी हुई लकड़ी स्कूल के सामने से ही मिली के लिये रवाना होती है। शाला के मुख्य को जिस बात की चिन्ता हुई कि यह ध्यापक तक चलेगा और क्या जिस ढंग के शोषण से वहां का आर्थिक चित्र बहुत बदल नहीं जायगा। सारा जंगल काटने के बाद क्या हालत होगी? जिस समस्या पर शिवपका ने चर्चा की। यह शाला की समस्या बनी और विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिल कर लोगों के साथ चर्चा करके वृक्षारोपण की अंक बहुत बड़ी योजना बनायी। कुछ ही सालों में उस जिला के का रंग और रूप अतना बदला और अजुड जाने वाले समाज की वहाँ बसने का मौका मिला। यह कहानी बड़ी रामायण है।

दूसरी अंक शाला में सिर्फ विद्यार्थियों को दाखिल नहीं करते, बल्कि परिवार दाखिल होता है। शाला के लिये जो छोटा सा खेत है, उसमें शाला के विद्यार्थी ही नहीं बल्कि सभान भी मिलाये गये, उन लोगों ने भी खेती की और सामाजिक जीवन बिताया। कभी परिवार पाज-पाच साल रहकर गये। नया ज्ञान और कुशलता तो प्राप्त की ही, और खेत में काम करने से जो पैसे बचे उससे घर लौटने के पहले कुछ साधनों को खरीदने का मौका भी प्राप्त हुआ। और वे सभान भी सिर्फ अपनी खेती नहीं करते हैं, पति मो विवास में पूरा-पूरा भाग लेते हैं।

माचिगन की लोकशालायें मचहर हैं। कुछ

शालायें चुनकर लोकशालाओं में परिवर्तित करने की योजना बनायी गयी। इन शालाओं के कुछ सुविधादी असूल सोचे गये।

१ शाला को समाज के सामाजिक, आर्थिक राजकीय और नैतिक जीवन के साथ अकरूप होने के लिये कोशिश करनी चाहिये। समाज के नागरिकों के व्यक्तिगत जीवन के साथ सम्बन्ध बढ़ाने के लिये और सामाजिक जीवन को जहरतो को पूरा करने के लिये यत्न करना चाहिये।

२ शिक्षाकार्यक्रम में शाला समाज में अपलब्ध साधन सामग्री व सपत्ति को शिक्षण का साधन मानकर पूरा उपयोग में लाने के लिये कोशिश करेगी, समाज के हित के लिये काम करने वाली सस्थाओं के साथ पूरा सहकार करके समग्र समाज विकास की भी कोशिश करेगी। समाज में ऐसे व्यक्तियों को ढूँढेगी, जो सच्ची और सस्थाओं से अलग रहकर भी समाजहित के लिये मदद दे सकेंगे।

३ शाला की सुविधायें समाज के सब कामों के लिये प्राप्त हो सकेंगी। शाला समाज में लोक कल्याण के लिये किये जाने वाले सब कार्यक्रमों का समन्वयस्थान बन जायगी और प्रत्यक्ष रूप में समाज सेवा में योग देकर समाज विकास को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान देगी। जिससे विद्यार्थियों को सगठन और व्यवस्था की शिक्षा देने में भी मदद मिलती है।

४ अपने समाज का वाहर के समाज के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध जोड़ने के हेतु जो राष्ट्रीय, प्रदेशीय या अन्तर्राष्ट्रीय सस्थायें विश्वकल्याण के काम में लगी हैं, उनके साथ सम्पर्क स्थापित करना। दूसरे देशों की समस्याओं को

और अनु समस्याओं के हल किस प्रकार किये जाते हैं, अतः ज्ञान को अपने समाज में पहुंचाना ।

५. समाज की व्यवस्था में प्रजातांत्रिक-पद्धति की स्थापना और विकास करना ।

अन बुनियादी अमूलों को लेकर शाला के शिक्षक और समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने कभी दिन बैठकर चर्चा की और योजनाएँ तैयार की । स्थानीय सरकारी अधिकारियों की मदद से लोक शिक्षण का काम जोर से चला । सब का काम स्कूल कालों में प्रमुखों की मदद और मार्ग दर्शन में चला, जिससे समय-समय पर काम की जाच करने में सुविधा हुई । आरोग्य-स्थिति, धार्मिक और सामाजिक समस्याएँ, अद्योग और व्यापार, व्यक्तिगत भारकियत, आर्थिक परिस्थिति अन सब के आकड़े तैयार हुये । कभी अध्ययन मण्डलिया बनायी गयी । कभी खेती सुधार का अध्ययन करते, कभी आरोग्य केन्द्रों के बारे में, कभी जीवन सधम के बारे में कभी तालीम के प्रबन्ध के बारे में । अन अध्ययनों के फलस्वरूप कभी आरोग्य केन्द्र आरम्भ हुये, व्यापार मे आपसी समझ और सहकार स्थापित हुआ । यायों का सुधार हुआ, कुछ ही सालों में नये और बेहतर नवले श्रुतपत्र हुओ और दूध का अुत्पादन वडा । और अन कार्यक्रमों की वजह सामाजिक जीवन का बोध अतः समाज में फैलने लगा । परस्पर सुख-दुख और क्षेम का विचार लोगों के मन में अुत्पन्न हुआ । सामूहिक तौर पर खेल और मनोरंजन के कार्यक्रम आरम्भ हुये ।

यह तो रहा कुछ शालाओं का नमूने का काम । ये सब शालायें यह अुम्मीद रखती हैं कि लोकशाला आन्दोलन से एक समाज में अुपलब्ध सम्पत्ति और साधनों का पूरा-पूरा

अुपयोग हो जाना चाहिये । लोगों को भरपूर आहार और वस्त्र और रहने के लिये मकान मिलना चाहिये । समाज की तन्दुरुस्ती बडे और लोगों का जो साली समय है, अस का अुपयोग सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों के विकास में हो । अतः समाज में लोग नागरिकता और प्रजातन्त्र के ध्येय और धर्म को अच्छी तरह समझें, धार्मिक और नैतिक मूल्यों को पहिचानें और अपने जीवन में लागू करने के लिये कोशिश करे । समाज में सब को काम का भौतक मिले और वह काम समाज को भौतिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की ओर ले जाने वाला हो । अस कार्यक्रम से विद्यार्थियों को यह कुशलता प्राप्त होने की अुम्मीद की जाती है, जिससे वह व्यावहारिक तालीम खूब पा सके, कभी समस्या की लेकर अुसकी सब पहलुओं पर विचार करके परिस्थिति को समझकर हल की योजना बनाने की योग्यता प्राप्त करे । काम अकेले न कर सब के साथ मिलकर योजना तैयार करने और अुसको सब की सहकारिता से अमल में लाने की अुमकी दक्षता हो । कभी अुद्योग धन्धों मे काम करने की कुशलता अुसे प्राप्त हो । विद्यार्थियों को लोगों के स्वभाव का परिचय हो । प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण का पहिचान हो । वे अपने विचारों की प्रामाणिकता और स्पष्ट रूपसे रख सके । अुन्हें खुले ढंग से विचार-विमर्श करने की शक्ति हो । सौदर्य-बोध का निर्माण हो । चारों ओर की प्राकृतिक संपत्ति में सौदर्य को पहिचानने की और अनुभव करने की वृत्ति हो । साहित्य, विज्ञान, कला और लोक जीवन में अुनकी अच्छी आमर्षि हो । अुन्हे जीवन के सही मूल्यों का बोध हो ।

बाल शिक्षा की कुछ प्राथमिक बातें

काशीनाथ त्रिवेदी

(गताक से आगे)

अब तक की चर्चा से हमने यह देखा है कि हमारे घरों में बच्चा जब दुखी होता है, तो वह अपनी किसी कमजोरी, कमी, खामी या अयोग्यता के कारण दुखी नहीं होता बसके दुख की जड़ में प्रायः हमारा अज्ञान होता है। हम चाहते हैं कि बच्चा हमारे घर में आये, पर बसके आने से पहले बसके लायक न हम अपने को बनाते हैं और न अपने घर को बना पाते हैं। बहुत ही अघबचरी और अघपकी हालत में हम बच्चे के माँ बाप बन बैठते हैं, और फलतः हमारे घर में घड़ी मिन्नतो के बाद भगवान् का भेजा जो बालक आता है, बसकी कोभी सतोपजनक व्यवस्था हम कर नहीं पाते। जहाँ ध्यान का ठिकाना नहीं, पहनन का ठिकाना नहीं, आसरे का ठिकाना नहीं, वाम घड़े का ठिकाना नहीं, वहाँ माँ बाप के बुलाने से बच्चे को तो आना ही होता है, पर आने के बाद बसको जिन हालतों में से गुजरना पड़ता है बसके कारण बसका जीवन आदमी के बच्चे के जैसा नहीं बन पाता और वह माँ बाप के लिये एक समस्या खड़ी कर देता है। गरीबी पैसे की हो तो चल सकती है, पर दिल की और दिमाग की गरीबी बच्चे के लिये बहुत ही

नुकसान पहुँचनेवाली होती है और यह गरीबी तो बच्चे को अच्छे-अच्छे घरों में भी भुगतना पड़ती है। जिन घरों में खूब पैसा है, वहाँ भी दिल और दिमाग की गरीबी के कारण बच्चे को अनगिनत सकटों में से गुजरना पड़ता है और बसका जीवन जिस तरह तिलना चाहिये, खिल नहीं पाता। इसलिये समाज और राज दोनों को जिस गंभीर समस्या के बारे में बहुत गहराभी से सोचना चाहिये। अभी तक जिस तरह सोचने का सिलसिला हमारे देश में व्याप्त रूप में शुरू नहीं हुआ है, और इसी से हम सब अंधेरे में भटक रहे हैं।

अबतक हमने बच्चे के जीवन की कठिनाई का कभी पहलुभी से विचार किया। और बससे बचने के कुछ उपायों की चर्चा भी की। आगे हम यह देखेंगे कि आज की हमारी सामाजिक हालत में घर और समाज के अंदर बच्चे के सही-सही विकास में रुकावट डालनेवाली और कौन-कौन सी खतरनाक बातें हैं। जिस छोटे से लेख में सारे खतरों की चर्चा करना तो सम्भव न होगा फिर भी कुछ थोड़े बातों का विचार हम नीचे करेंगे—

(पृष्ठ १९८ का समाप्त)

अन कार्यक्रमों से विद्यार्थी अपने आपको अपने ही छोटे समाज के सदस्य न मानकर विद्वत्परिवार का सदस्य बनने की कोशिश करें। सब समस्याओं को मानवता की दृष्टि से देखें और सबुचित मनोवृत्ति को छोड़ दें। यही लोक-

शाला के अन्तिम अद्देश्य रहेंगे। शाला और समाज के परस्पर सम्बन्ध और परस्परवलम्बन अनि-कार्यक्रमों से प्रकट होते हैं। शाला को समाज के समग्र जीवन के विधास के लिये एक जरिया बनाने का मौका मिलेगा।

१. बच्चे को विश्वास दोजिये :

अक्सर यह देखा जाता है कि हमारे घरों में बच्चों को विश्वास का वातावरण नहीं मिलता। बच्चा तो जन्म से ही विश्वासी होता है। अपने माता पिता पर और विशेष कर माता पर तो उसका अटूट विश्वास रहता है। किन्तु जैसे-जैसे घर में बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे हमारे अपने गलत व्यवहार के कारण हम पर से उसका विश्वास अटने लगता है। अनुभव से बच्चा भिस नतीजे पर पहुँचता है कि माता अथवा पिता की बात का सदा ही भरोसा नहीं किया जा सकता। मरुमुच बच्चे के जीवन के लिये यह एक कठिन अवसर होता है। अगर हम चाहे और कोशिश करें, तो बच्चे को भिस कठिनायी से बचा सकते हैं और घर में ऐसी हवा बना सकते हैं जिससे बच्चे का विश्वास घर के बड़ों के प्रति बराबर बढ़ता चला जाय। किन्तु थोड़े ही अंसे भाम्यदाली घर होते हैं जहाँ बालकों को आरम्भ से अत तक अपने बड़ों का पूरा विश्वास सहज भाव से मिलता है।

अक्सर पाया यह जाता है कि हम खुद बच्चे के सामने कुछ ऐसी बातें कह देते हैं और उसे कुछ अंसे बचन दे देते हैं जिन पर हम बराबर टिके नहीं रहते और न जिनका ठीक में पालन कर पाते हैं। डेढ़-दो साल का बच्चा अपने माता पिता को जब वहाँ घर से बाहर जाने देता है तो वह भी उनके साथ जाने के निशे तैयार हो जाता है। माँ बाप अंग अपने साथ ले जाने की हालत में नहीं रहते। अगलिये तैयारी बच्चे को सम्मानने के लिये अंगों से थोड़ा थोड़ा धाँप दे करके जाने हैं, जिन्हें पूरा करने की असमर्थता में उनको कोशिश तैयारी नहीं होती। लेकिन बच्चा तो माँ बाप की

बात पर पूरी तरह भरोसा कर लेता है और जिस आशा से कि माँ-बाप दिये गये वादे को पूरा करेंगे, वह घर पर रह जाता है और माँ-बाप के वापस लौटने को राह देखता रहता है। जब अपना काम-काज करके माँ बाप घर आते हैं तो अन्हें बच्चे के साथ किये गये वादे का ध्यान नहीं रहता। शुरू से ही वे अपने मन में चोर रखकर बालक से एक झूठा वादा करते हैं और फिर उसे पूरा करने का कोशिश नहीं रखते। जब बालक को पता चलता है कि माँ-बाप जो वादा करते हैं, उसे वे फिर के साथ पूरा नहीं करते तो उसके विश्वास को जोर का धक्का लगता है, और जब उसे कभी बार भिस तरह से अनुभव होते हैं, तो उसका विश्वास अकदम अट जाता है, और वह बहुत दुखी हो जाता है। उसके सामने एक बड़ा सवाल खड़ा हो जाता है कि वह अब घर में किसका भरोसा करे। अपने मन की बात किसे कहे? अपनी जरूरत किसे पूरी कराये और अपना 'खजाना' किसके हाथ में सौंपे? बालक को कोशिश रास्ता नहीं सूझता। नतीजा यह होता है कि वह अपने पास की कोशिश चीज, जो उसे अंग अंग में बहुत प्यारी और बहुत कीमती मालूम होती है, माँ-बाप को नहीं दिखाता और उसे वही किसी अंग अंग जगह में छिपाने की कोशिश करता है। जब बालक की ऐसी मन-स्थिति बनती है और अंगों के व्यवहार में भिस तरह का फरक पैदा होता है, तब माँ-बाप के सावधान होने का और अपनी भूल को तत्काल सुधार लेने का अंग मोका रहता है। लेकिन अगर समय रहते वे सावधान नहीं हूँ, और अन्होंने अपने को नहीं समझा तो अंगों और बालक के बीच की

खात्री बढती जाती है और फिर अमुका कोअी अिनाज करना बहुत ही कठिन हो जाता है। अकसर अच्छे पढे लिखे समझदार और जिम्मेदार माता पिता भी बालको के व्यवहार में जिस प्रकार की भूलें कर बैठते हैं। अिन भूलों या बहुत ही बड्डा फल अुन्हें भोगना पडता है और दोनों तरफ से गांठें कुछ अँसी मजबूत होती जाती हैं कि फिर अुन्हें पाटना बहुत ही कठिन हो जाना है। अिसलिये बच्चे के साथ व्यवहार करते समय हमें सावधानी बरतने की जरूरत है। बचपन में हम बच्चे को जितना विदवास देंगे, अुतना ही बडेपन में वह दूसरो का विदवामपान बन सकेगा और अुसके व्यवहार में अुतनी ही सुदृढता रहेगी। आज समाज में परस्पर विदवास की जो बर्मी पायी जाती है अुसकी जड में बचपन में पैदा हुआ यह अविदवास ही बडी हद तक काम करता है। दुनिया तो विदवास से ही चलती है। बालक का जन्म भी विदवास के भरोसे ही होता है। अुमका जीवन भी विदवास पर ही आगे बढता है। पर जब अपने मा-बाप से ही अुमे अविदवाम मिलता है तो वह परेशान हो जाता है। नतीजा यह होता है कि अुसके व्यवहार में जिद्द की जगह मिल जाती है, वह हठी बनता है, झगडालू बनता है, रो-रो कर और झगड-झगड कर या दूसरो तरह के अपद्रव खडे करके भी वह घर के बडों से अपने मन का काम कराने की तरफाँवें सोचता रहता है और समय-समय पर जून तरकीबों के अनुसार काम भी करता रहता है। जेअ अुमे सीधी तरह से और सहज भाव से विदवाम नही मिलता तो वह टेढ़े-मेढ़े रास्ते अपना कर घर के लोगों को, हैरान-गरेसान करता है और खुद भी हैरान होता है। अिसलिये यह बहुत जरूरी है कि हम अिस

मामले में खूब चीबन्ने रहे और जान बूझ कर अँसा कोअी काम न करे, जिससे बालक में हमारी बात पर से भरोसा बूढ जाय।

२ बालक को भय और लालच से बचाअिये—

आज के हमारे समाज में भय और लालच को चलते सिक्के का रूप प्राप्त हो गया है। आम तौर पर लोग यह मानते हैं कि किसी से कोअी काम कराना हो तो या तो डरा कर कराया जा सकता है या लालच दे कर। बिना डराये या या बिना ललचाये प्रेम-प्रीति के रास्ते किसी से कोअी काम कराने की बात पर आज आम तौर पर भरोसा नही रहा है। अिसलिये क्या घर में और क्या घर के बाहर समाज में तथा राज में हम अकसर अपने छोटे बडे काम निकालने के लिये भय और लालच के हथियारा से ही काम लेते हैं। अिम तरह भय और लालच को शक्ति में जो अँक गलत विदवास हमारे अंदर पैदा हो गया है, अुसका प्रयोग हम बच्चों पर भी करते रहते हैं। नतीजा यह हुआ है कि बच्चों को डराने और ललचाने के कअी तरीके हम ने ग्योज लिये हैं। और हम रामबाण हथियार की तरह अुनका पूरे विदवास के साथ अुपयोग करते हैं। लेकिन जानकारा का कहना है कि अँसा करके हम बडी गलती करते हैं और खास कर बच्चों को गहरा नुकसान पहुचाते हैं। हमने मान लिया है कि बिना डराये और बिना ललचाये बच्चे हमारी बात मुँगे नही और हमारा कहा करेगे नही। डर या सब से बडा साधन मार पीट है। मारने पीटने का डर दिखा दिता कर हम अपना मर्जी का काम बच्चों से करा तो लेते हैं। लेकिन बच्चों के मन पर और अुनके जीवन पर अुसका बहुत ही बुरा असर होता है। विचार-

वान लोग कहते हैं कि मनुष्य अेक विचार करने वाला प्राणी है। विचार अुसकी बहुत बड़ी शक्ति है अिसलिये अुससे जो भी नया काम हमे कराना हो, विचार समझा कर और जचा-कर ही कराना चाहिये। डर का विचार के साथ कोअी मेल नहीं बैठता, जहा डर है वहा विचार नहीं टिकता और जहा विचार है वहा डर नहीं टिकता। अिसलिये समझदारी का तबाजा यह है कि बच्चों के साथ व्यवहार करते समय हम डर का सहारा लेना छोड दें और विचार का सहारा लें। मारने पीटने से, डराने-धमकाने से बालक के मन में तरह-तरह की गांठें बघ जाती हैं। वह निडर नहीं बन पाता। सच बोलने की अिच्छा और भावना रहते हुअे भी डर के मारे अुसे झूठ बोलना पडता है धोखा देना पडता है, दबना पडता है और कमजोर बनना पडता है। हम तो जोश में आकर होश खो बैठते हैं। बच्चे को डरा देते हैं। मार पीट देते हैं। परतु बच्चों के लिये हमारा यह व्यवहार बहुत महंगा पड जाता है। अिसलिये बच्चे सामने हो तो अुनको मारने पीटने डराने धमकाने या और किसी तरह से परेगान करने से पहले हमें दिल दिमाग ठण्डा रखकर हजार बार सोचना चाहिये। आजाद हिन्दुस्तान में हमें तो निडर बालकों की बड़ी जरूरत है। जब तब बालका और बटों में अूचे दर्जे की निडरता नहीं आयेगी तबतक स्वराग्य के काम को अच्छी तरह चलाना और सफल बनाना हमारे लिये संभव नहीं होगा।

जिस तरह बच्चा को डराना गलत है, अुसी तरह ललचाना भी बहुत गलत है। आज हम अपने घरा में और पाठशालाआ में भी

बालको को ललचाते हैं। लालच दे दे कर अुनसे अपनी मर्जी के काम कराने की कोशिश करते हैं। बाल-जीवन के लिये लालच का यह विष बहुत घातक होता है। लालची आदमी की तरह लालची बालक भी जीवन में दुख पाता है, और गहरी निराशा का अनुभव करता है। अुमके व्यवहार में कअी तरह की खराबिया पैदा हो जाती हैं। और वह सचाअी से ओमा-नदारी से और वफादारी से कोसो दूर चला जाता है। हम बालको को पैसों का लालच देते हैं, मिठाअी का लालच देते हैं, छोटे बडे अिनामों का लालच देते हैं। अिसके सामने होड का विचार रखते हैं, हार-जीत का विचार रखते हैं और अुसे अेक तरह का नशा पिलाते हैं। जबतक लालच या अिनाम का यह नशा अुसपर सवार रहता है तबतक वह भूत बन कर काम करता है, आगा-पीछा नहीं सोचता, विवेक और विचार से बहुत दूर भटक जाता है और अपने को कअी तरह से गिरा लेता है। अुसके मन में अेक ही धुन रहती है कि किस तरह अिनाम जीता जाय, किस तरह खुद लाभ में रहा जाय और दूसरो को हानि पहुचायी जाय। अिस वृत्ति का शिखार होने के बाद मनुष्य के हाथों बडे-से बडे दुष्कर्म होने लगते हैं, और अपने जीवन में वह भयंकर रूप से लालची बन जाता है। अुससे घर, समाज, देश सब को ब्रे-हिंसाब नुकसान होता है। लालची आदमी को बुरे-से-बुरे काम के लिये खरीद लेना आसान हो जाता है। वह कब किसके साथ धोखा करेगा अिसरा कोअी ठिकाना नहीं रहता है। समाज में अुसकी कोअी साख नहीं रह पाती। और भी बअी अनर्थ अुसके हाथों होते रहते हैं। अिसलिये शुद्ध जीवन और शुद्ध आचार-विचार का आग्रह रखने वाले विचारक लोग

हमें सलाह देते हैं कि हम घरों में, पाठशालाओं में और समाज में भी लालच का सहारा लेकर कोअी काम न करें। सचमुच मनुष्य जीवन के लिये लालच अंक बुरी बला ही है। अतएव जो माता पिता या शिक्षक बच्चों के साथ व्यवहार करते समय लालच का प्रयोग करते हैं, वे बहुत बड़ी गलती करते हैं और बच्चों को गहरे नुकसान में भुतारते हैं। आज बल समाज में होडाहोडी की हवा बहुत जोर पकड़ रही है। अपने देश में हम जो नया समाज खड़ा करना चाहते हैं, उसके लिये होडाहोडी की यह हवा बहुत ही नुकसान-देह है। हमारी इच्छा यह है कि समाज के सब लोग हिल मिल कर रहें, कंधे से कंधा मिटा कर काम करें, सुख-दुख, हानि-नाम का बोझ मिलजुलकर भुठाने। और इस प्रकार समूचे देश को अंक बड़े सहयोगी समाज के रूप में बदल दें। अगर हम चाहते हैं कि हमारा यह सपना सही मानों में जल्दी से जल्दी सिद्ध हो तो हम को उसके लिये घर में और समाज में सहयोग की हवा यनानी ही होगी। लालच का और होड का सहयोग के साथ कोअी मेल बैठ नहीं सकता। इसलिये हमें विचार पूर्वक डर और लालच का त्याग करके अपने जीवन में दृढ़ पूर्वक प्रेम और सहयोग को जगह देनी चाहिये। तभी हम अस समाज की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। जिसे आज सन्त विनोबा सहयोगी अथवा साम्य-योगी समाज का नाम दे रहे हैं। यह नाम अंसे ही दूसरे कामों की तरह विचार के बल पर ही पूरा किया जा सकेगा। कानून के सहारे या सरकारी फरमानों के भरोसे हम इसे अमली रूप नहीं दे सकेंगे यदि आज के हमारे माता पिता इस विचार को इस तरह समझ

ले और अस पर अमल करने का अपना निश्चय कर ले तो आज हमारे घरों में बच्चों का जीवन जिस तरह दुखी बना हुआ है, अस तरह उसके दुखी बनने का कोअी कारण न रह जाय।

३. बच्चों को नौकरों से बचाइये :

बच्चों के जीवन के लिये नौकर भी अंक बड़ा खतरनाक प्राणी है। हमारे समाज में नौकर को परपरा काफी पुरानी पड़ गयी है और असने गहरी जड़ जमा ली है। शहरों में खुशहाल घरों में और गाँवों तक में आज बच्चों को नौकरों के भरोसे छोड़ने का अंक रिवाज ही बन गया है। मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र के जाननेवालों का कहना है कि बच्चों को छोटी उमर में नौकरों के भरोसे छोड़ने से उनकी ब-हिसाब नुकसान होता है। उनके जीवन में अितनी खराबिया पैदा होती है और अंसी गाँठें बंध जाती हैं कि आगे चल कर उन पर विजय पाना या अुन्हे काट कर फेंकना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। अच्छे से अच्छा सद्गुणी और सदाचारी बालक भी नौकरों के हाथ में पड़ कर बिगड़ जाता है। भाग्य से ही किसी परिवार को कोअी अंसा सुसकारी सेवक मिलता है जो अस परिवार के बालकों को बिगाड़ने के बदले सुधारने में मदद करता है। आम तौर पर अमीरों के, अफसरों के, साहूवारों के और खुशहाल लोगों के घरों में जो नौकर काम करते हैं, वे बहुत ही गलत आदतों वाले और बिगड़ी हुआ रुचिवाले-वृत्तिवाले होते हैं। जीवन के बारे में उनका अपना कोअी खास विचार भी नहीं होता, बाल-जीवन के महत्व को जानने समझने की उनकी कोअी तैयारी भी नहीं रहती है। उनके सामने तो अपनी रोजी कमाने का और जैसे भी बने मालिक, मालकिन या

अनुके बच्चों को राजी रखने का सवाल रहता है। अगर झूठी खुशामद से अनुका काम बनता है, तो झूठी खुशामद कर लेते हैं। अगर डर या लालच का उपयोग करने से उन्हें अपना काम बनता नजर आता है तो वे जिसका प्रयोग करने में भी हिचकिचाते नहीं। अनुके सामने जीवन का कोई भी अंधा नक्शा नहीं रहता। जिसलिये जिन दुधमूँहे बच्चों की परवरिश का काम बड़े घरों में बिन्हे सौंपा जाता है तो अनुकी सही सही सार-सम्वाल रखना अनुके बस का नहीं रहता। वे बच्चों को न केवल तरह तरह से सताते, डराते और धमकाते हैं, बल्कि उन्हें आगे बरके बच्चे के मा बाप से भी वे अपने मन की करा लेते हैं। जिस तरह देखा जाता है। नीकरो के जरिये बालको का और अनुके मा-बाप का अंक बड़ी हद तक बहुत घोषण होता है। जिसमें बच्चों का जीवन तो गलत रास्ते पर चला ही जाता है। अकसर समूचे घर या परिवार को भी बहुत बड़ी कीमत चुपानी पड़ जाती है। यही कारण है कि आज चारों तरफ से समझदार लोग मा-बाप को यह सलाह देते पाये जाते हैं कि वे अपने बच्चों को नीकरो के भरोसे हरगिज न सीपें। यदि हम नये समाज की रचना में विश्वास रखते हैं और मानते हैं कि आनेवाले समाज को अकसर समाज का रूप लेना है और समाज में हुजूर तथा मजदूर के दो अलग-अलग वर्ग नहीं रहने हैं तो अपने-अपने घरों में घर का सारा काम स्वयं करने की तैयारी करके हमें घरेलू कामों के लिये नौकरों की जमात खड़ी करने में बचना चाहिये। जिसमें हम और हमारे बालक अधिक मुरक्षित रहेंगे और बालको का जीवन भी गलत रास्ते जाने से बच जायगा। समाज में स्थापन की प्रतिष्ठा वनेगी और बच्चों में

अपना काम खुद करते रहने की वृत्ति पैदा होगी।
अभुसंहार ।

वैसे तो बाल-जीवन और बाल-शिक्षण के विषय में अभी बहुत कुछ कहने या लिखने की गुजाबिग है किन्तु जहाँ तक जिस लेख का प्रश्न है, हम अपनी जिस चर्चा को यही समाप्त करना चाहेंगे। यह सच है कि ऊपर जो कुछ कहा गया है उसमें बच्चे के जीवन की सारी समस्याओं का समावेश नहीं हो पाया है। जितने थोड़े स्थान में यह चीज आ भी नहीं सकती। बालक का जीवन अनंत है और उसकी समस्याओं का भी कोई पार नहीं है। हर बालक अपने साथ अपनी समस्या लाता है। किसी तरह हर पालक की और हर मा तथा हर बाप की भी अपनी समस्याएँ होती हैं। जिस लेख में अनु सब का विचार नहीं किया जा सकता। मेरा निवेदन है कि यदि जो कुछ अभी आपने पढ़ा है, उसमें आपको कोई सार नजर आया हो और आपके मन में जिससे भी अधिक जानने की भूख जागी हो तो आप जिस विषय की किताबों को और पत्र पत्रिकाओं को पढ़ने की कोशिश कीजिये। हिन्दी में और हिन्दुस्तान की दूसरी भी कहीं भाषाओं में आज जिस विषय का कुछ अभुयोगी साहित्य मौजूद है। हमारा आपका अवतक यह दुर्भाग्य ही रहा कि हम जिस विषय में स्वतंत्र रूप से सोचने, समझने के मामले में बे-खबर से रहे। अपने आप में यह विषय जितना विनाश और गहन है कि सारा जीवन जिसके पीछे खपा देने पर भी हम जितना पार नहीं पा सकते। अवतक न जाने कितने अनमोल जीवन जिसकी खोज में अपने को खो चुके हैं और न जाने आज जिसकी खोज में अपने को खो कर खोये हुये हैं। जिन्होंने

(संपाद्य पृष्ठ २०५ पर)

दो महीने के काम की योजना

अ ना. जयपुरकर

दीवाली की छुट्टी के बाद १८ जनवरी को आनन्द निकेतन शाला का काम शुरू हुआ। शिक्षक समिति में तय हुआ था कि अब जनवरी अन्त तक के काम की योजना बना लेगे, फिर उसके अनुभव के आधार पर आगे अप्रैल महीने तक की योजना बाद में बनायेगे। छुट्टी के पहले सब विद्यार्थियों की प्रगति की समीक्षा हो गयी थी, जिसलिअे किन विद्यार्थियों को कौन कौन से विषय में प्रगति ठीक हो रही है, कहा कमी है, और कहा ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है, इसका ठीक अन्दाज हो गया था।

अस समय शाला में कुल विद्यार्थी ६२ हैं, उनमें से ज्यादातर छात्रालय में रहते हैं, २० विद्यार्थी आसपास के गांवों से आते हैं। छात्रालय में रहनेवाले लड़के लड़कियां सुबह ६½ से ७½ बजे तक अेक घण्टा सामूहिक खेती-काम में और छात्रालय की सफाई में भाग लेते हैं। उसके बाद नाश्ता होता है और ७।। बजे शाला का काम शुरू होता है।

(पृष्ठ २०४ का संपास)

अस तरह अपने को भुला कर बच्चे के जीवन की अिन समस्याओं के बारे में हमारे सामने नश्री-से-नश्री जानकारी रखी है और हमें अपने घरों तथा समाजों में बच्चों को सभी मानों में सुखों बनाने का रास्ता दिखाया है अुनका हम जितना यश गावें और जितना आभार मानें, अुतना ही कम है। देश-विदेश में आज भी

काम की दृष्टि से शाला में तीन टोलियां बनायी हैं—

१ ली—राम टोली-सख्या १५-अुम्र ६ से ९ तक।
अिसमें १ ली से लेकर ४ वी कवपा तक की योग्यता के विद्यार्थी हैं।

२ री—खेतों टोली-सख्या २७-अुम्र १० से १३ तक-५ वी ६ वी कवपा।

३ री—बुनाबी टोली-सख्या २०-अुम्र १४ से १५ तक-७ वी ८ वी कवपा।

राम टोली . अिसमें ४ बच्चे ७ साल से कम अुम्र के हैं। असल में ये पूर्व-वृत्तिपाटी बालवाड़ी के ही योग्य हैं, लेकिन अस साल यहा अलग बालवाड़ी की व्यवस्था नहीं होने के कारण ये अपने बड़े भाओं-बहनों के साथ आकर बैठते हैं, अपनी शक्ति के अनुसार रुकी सफाई, ओटाई और कुछ कताई भी कर लेते हैं। टोली के बाकी ११ बच्चे सुबह ८ से ९½ तक समग्र कताई की सब प्रनियाओं का अभ्यास करेंगे। अिनमें से ज्यादातर बच्चों ने छुट्टी के

सैंकड़ों हजारों भाओं बहन अपनी-अपनी जगह बांधे जीवन को सुखी बनाने और अूपर अुठाने में लगे हुए हैं। अुन सब को प्रणाम करके अस भगल कामना के साथ अपना यह निवेदन समाप्त करता हू कि भगवान हमें सच्चे अर्थों में बच्चों को सेवा और अुपासना करने की शुद्ध बुद्धि, शक्ति और भक्ति दे।

पहले सूत दुबटा करने का स्टैन्ड बनाया था। अब वे हाथ धनुष्य बनायेंगे। कताओ में अनकी गति अब घण्टा में औसत ६० तार है। अन दो महीनों में ८० तार तक गति होने की अपेक्षा है। ये बच्चे अपने सूत का दुबटा कर के सामूहिक तौर पर वर्ग के सब बच्चों के लिये अक-अक सेट कपडा बना लेंगे, असो योजना बनायी है। असि दो महीने की अवधि में १५ गुडी सूत तैयार होगा।

खेती . असि टोली के बच्चे सुबह अक घण्टे के खेती काम में और कपास चुनना, ज्वार काटना, अित्यादि कार्यक्रम में भाग लेते ही है। असि अलावा अक दो छोटी क्यारिया बनाकर कुछ सब्जी के पौधे लगाअेंगे। अससे अकुर का अुदगमन, और जडो के फलने का विशेष निरीक्षण करेंगे।

गणित : कपास सफाओ और ओटाओ के सिलसिले में कितने कपास से कितनी रओ-निकली, कितना बिनोला, असि अनुपात का जान और तोले, छटाक, पाव सेर आदि वजनो की जानकारी दी जायगी। अभी कुछ बच्चे बीस तक के पहाडे पूरे नही जानते है, असका अम्पास होगा; जोड, घटाव, गुना और भागाकार का अम्पास नियमित होता रहेगा। छोटे बच्चे १०० तक की गिनती और ५ तक पहाडे सीखेंगे। छोटे-छोटे जोड घटाव का अम्पास भी होगा।

भाषा : अन बच्चों की हिन्दी मराठी दोनों भाषाओ का सामान्य जान है। मुख्यतः मराठी का ही अम्पास करेंगे। शुद्ध बोलना और पढना, लिखना, खुद के शब्दों में छोटी कहानिया लिखना यह कार्यक्रम रहेगा। बच्चे छोटी कविताअें और भजन साफ अक्षर में लिख लेंगे,

अनका अर्थ शिक्षक सरल शब्दों में समझायेंगे और फिर बच्चे अनको कण्ठस्थ करेंगे। दिसम्बर महीने की "अंकुर" पत्रिका (आनन्द-निवेतन शाला का हस्त लिखित मासिक) का संपादन और प्रकाशन भी असि दफे यह टोली करेंगी।

सामान्य जान : ठंड के मौसिम के पशु, पक्षी व कीडो का निरीक्षण करेंगे। अब खेत में जो फसल तैयार है वह खाने के लिये कभी-कभी सुअर और अन्य जानवर भी आते हैं। जब कभी अनको देखने का मौका होता है तो बच्चे खुश होते हैं। असि मौसिम के फूल पौधो का भी निरीक्षण करेंगे। ऋतु परिवर्तन का हमारे शरीरों पर असर-अन दिनो चमडा क्यो फटता है, तेल लगाने की आवश्यकता, असिपर चर्चा होगी। कोहरा क्यो होता है, असके कारण, जाडे के मौसिम में जब बादल छाये रहते है तब ठंड क्यो कम होती है, ये बातें लेकर चर्चा करेंगे और बच्चों को समझाया जायगा।

चित्रकला : क्रेयोन से चित्र और मिट्टी के छोटे-छोटे वर्तन बनाये जायेंगे। सौदर्य-बोध निर्माण की दृष्टि से वर्ग का कमरा सजाना, फूल सजाना, अित्यादि बातों पर विशेष ध्यान रहेगा।

खेती टोली : असि टोली का मुख्य काम और अध्ययन का विषय खेती रहेगा। आम तौर पर सुबह दो घंटे खेत में प्रत्यक्ष काम और साथ-साथ यथावसर तात्विक चर्चाअें भी होगी। अलग-अलग मौसिम में कौन सी फसले होती हैं, अनकी देखभाल कैसे करनी होगी, यह पहले समझाकर खेती की योजना विद्यार्थियों के साथ ही बैठकर बना लेते हैं। अभी टमाटर, मिरची, नोलकोल और गोभी की फसलें हैं। अन फसलो की हफ्ते में दो बार पानी देना

होगा। साथ-साथ फसल की निन्दाजी गोडाजी का काम भी चलेगा। नवलकोल और गोभी में कीड़े लगाने से बचने के लिये बीच-बीच में गेमेक्सिन डालना होगा। जिस अवधि में प्याज लगाने का काम भी होगा। उसके पहले खेत में खाद देंगे। क्यारिया बनाकर सिचाओ करेंगे। तैयार भाजी तोड़ने का काम नियमित चलेगा। ज्योंही एक फसल निकल कर खेत खाली हो जायगा, गर्मी में आनेवाली बैंगन की फसल के लिये जमीन तैयार करने का काम भी शुरू होगा।

कताओ : सब विद्यार्थी आधा घण्टा सून-यज्ञ में नियमित कातते हो हें। जिस सूत का उपयोग अनु के वस्त्र-स्वावलंबन के लिये होता है। इसके अलावा खेती टोली के विद्यार्थी समग्र कताई की सब प्रक्रियाओं में अधिक कुशलता पाने की दृष्टि से रोज आधा घण्टा अनु में से एक-न-एक क्रिया का अभ्यास करेंगे। सूत का अक, कस, और समानता निकालने का भी अभ्यास होगा।

गणित : खेती काम से सम्बन्धित गणित की सब क्रियाओं का अभ्यास करेंगे। विशेष कर वपेनफल निकालना उसके साथ अंच, फुट, गज, सेन्ट, अंकड अत्यादि का ज्ञान, जिनको अंक दूसरे में परिवर्तन करना, भाजी के विक्रय और आय का हिसाब रखना सया माह के अन्त में खेती विभाग का जमा खर्च निकाल कर घाटा या बचत देखना अत्यादि होगा। नये और पुराने पैसे, दानों का ज्ञान, जिनको अंक दूसरे में परिवर्तित करना और साथ-साथ मिश्र जोड़, घटाव, गुना का भी अभ्यास करेंगे।

खेत का नाप लेते समय साधारण अपूर्णाक-चीयाजी, आधा, तीन चीयाजी अत्यादि की

जानकारी होगी। अंकमान पद्धति से कीमत निकाली जायगी। खेत के आकार पर चर्चा के साथ चौरस आयात समझ लेंगे। सत्रा पेड़ की क्यारिया ठीक करने के साथ वर्तुल, त्रिजा, व्यास, मध्य बिन्दु आदि की साधारण जानकारी होगी।

भाषा : मराठी-विद्यार्थी नियमित अपनी डायरी लिखेंगे। दैनिक अहवाल जाच करना, काम का अहवाल जबानी सुनाना, भिन्ही से भाषा में अशुद्धियों की दुहस्ती करेंगे। हस्ताक्षर सुधारने का विशेष प्रयास होगा। अकुर मासिक के लिये अलग-अलग विषयों पर निबन्ध और कहानिया अत्यादि लिखेंगे।

समाजशास्त्र : बड़े दिन के अपलकष्य में अीशु खिस्त की जीवनी और अपदेशों तथा सर्वोदय-पक्ष के अवसर पर बापुजी के जीवन के बारे में बच्चों को समझाया जायगा। अपने तालुका और जिले का भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन किया जायगा।

विज्ञान : खेती शास्त्र में पौधे आहार कैसे लेते हैं, पौधों को सूर्यप्रकाश की आवश्यकता, पत्तों का हरा रंग और जिसका काम जिन विषयों का विशेष अध्ययन होगा। कपास में कीड़े लगने से नुकसान, अनु कीड़ों का प्रकार व जीवन और पौधों पर लगने के तरीके, जिनका निरीक्षण करेंगे। हवा में पानी की मात्रा, सुखाजी और नमी का पेड़ पौधों पर और मनुष्य शरीर पर असर आदि विषयों पर यथावसर चर्चा होगी। अभी हमारी शाला में एक विज्ञान कमरे का आयोजन हो रहा है। जिस अवधि में विद्यार्थी कुछ वैज्ञानिक उपकरणों (सप्लिटिक अंपैरेटस) से भी परिचय पायेंगे।

दक्षिणायन की समाप्ति तक और उसके बाद की सूर्य की गति का निरीक्षण करेंगे और विभिन्न ऋतुओं कैसे होती हैं, जिस पर चर्चा होगी।

चित्रकला बच्चे अपने मन से चित्र बनायेंगे। नैयोल और पानी के रंगों का भी इस्तेमाल करेंगे। अपनी अभिरुचि के अनुसार कागज काट कर चिपका कर चित्र बनाने का भी अभ्यास करेंगे।
बुनाओ टोली—

बुनाओ ये विद्यार्थी रोज सुबह दो घंटे बुनाओ करेंगे। काम के दिन ५० होंगे। प्रतिदिन काम का समय ३ घंटा। विद्यार्थी सूत खोलने से लेकर बुनाओ तक की सब क्रियाओं करेंगे। जिस टोली के लिये १० वरष दिये हैं। दो दो विद्यार्थी एक वरष पर काम करते हैं।

पूर्व लिया प्रति बालक को ३५ गुड़ी सूत खोलना पड़ेगा। ८ पूजम ताना, ७॥ पूजम साध, भाडी, परमाण, पाजण, वसारण और सार लगाना जिन क्रियाओं में बीस घंटा समय बुनाओ में देना पड़ेगा। माह में हर एक विद्यार्थी पांच गज कपड़ा बुनाओ करेगा तो जिस अवधि में प्रति विद्यार्थी दस गज कपड़ा तैयार होगा अंसी अपेक्षा है। चार बालकों का एक सूती धान लगाया जायगा।

जिस टोली के विद्यार्थी शास्त्रीय ढंग से बुनाओ करेंगे। हर राज बुनाओ का समय एक घंटा रहेगा। एक दिन में दो बालक ३० तोला बुनाओ करेंगे। जनवरी के अन्त तक ७ सेर बुनाओ होगी। दो-दो बालक पंद्रह दिन शास्त्रीय ढंग से बुनाओ सिरोंगे। बुनाओ तथा बुनाओ बुछोग में आनेवाले साधनों की भरमस्त

करने का साधारण अभ्यास होगा।

विद्यार्थी कताओ कार्यकर्ता के लिये निर्धारित कुशलता प्राप्त करेंगे, अंसी अपेक्षा और प्रयत्न है। हफ्ते में एक दिन घण्टे की गति लेकर सूत का कस, समानता और नवर देखा जायगा और शास्त्रीय ढंग से कताओ में सुधार करना होगा।

खेती प्रतिदिन के एक घंटे के सामूहिक खेती काम के अलावा कपास चुनना, ज्वार काटना, खलिहान का काम अत्यादि में जिस टोली के विद्यार्थी विशेष भाग लेंगे।

गणित पिछले अभ्यासक्रम—खास कर वर्ग-मूल निकालने का अभ्यास जारी रहेगा। काम का अन्दाज-पत्रक, सूत का जमा खर्च, 'बुनाओ' का साप्ताहिक तथा मासिक जोड़ करके घाटे और बुनाओ और कताओ की प्रगति का ग्राफ तैयार करना-ये काम नियमित करेंगे। क्षेत्रफल तथा घनफल का अभ्यास होगा।

भाषा मराठी भाषा के प्रसिद्ध लेखकों की कुछ कृतियों से परिचय कराया जायेगा। भाषा सुधार की दृष्टि से चुने हुये पाठों का अध्ययन करेंगे। व्याकरण में जिस अविधि में विकारी तथा अविकारी शब्दों का फर्क और विभक्तियाँ को समझने का खास प्रयत्न रहेगा। वर्ग में दैनिक काम, मौसम, कोओ विशेष घटना आदि किसी एक विषय पर चर्चा करके उसी पर विद्यार्थी निबन्ध लिखें तथा "अकुर" पत्रिका के लिये लेख तैयार करेंगे। अपने समय पर वाचनालय से किताबें लेकर पढ़ने और रोजाना अखबार पढ़ने के लिये विशेष प्रोत्साहन दिया जायगा।

समाज-शास्त्र ओशु की जीवनी और बौद्ध धर्म का प्रसार, चापूजी का जीवन-

कार्य और भारतीय समाज पर अुसका असर, अिन विषयो का अध्ययन होगा ।

अिस कालावधि में पञ्जाब और राजस्थान की भौगोलिक परिस्थिति के अध्ययन की योजना है । वहा की जमीन का स्वरूप, आबोहवा, यारिप्त, फसल, लागो के रहनसहन, अुनके आचार विचार, अुद्योग, वहा का सांस्कृतिक जीवन, अिन विषयो का सामान्य अध्ययन करेगे । साथ-साथ जगत् की चालू घटनाओ के सम्बन्ध में अुन भागो का साधारण परिचय किया जायगा ।

विज्ञान : जाड़े के मौसिम की विशेषताओं । ठंड क्या होती है ? गर्मी क्या है ? हमें ठंड क्यों लगती है ? तापमान । गर्मी का स्थलांतर-वहन, प्रापण, शोषण । द्रव्य क्या है ? द्रव्य का वर्गीकरण । मिश्र और सयुक्त द्रव्य । द्रवण-सपक्न द्रवण । तराजू के तत्व, चक्कत (पूली), अुससे क्या फायदा होता है । दक्षिणायन और अुत्तरायण में सूर्य की गति । अुत्तुअें क्यों घनती है ।

चित्रकला चित्रकला में यह टोली अेक विनोद प्रयोग कर रही है । सब विद्यार्थी मिलकर अेक बड़ा चित्र बना रहे हैं । अिसके अलावा अपने-अपने चित्र भी बनायेंगे । मिट्टी से वर्तन और मूर्तिया बनाने का काम भी चालू रहेगा । ४ सड़किया अल्पना का अभ्यास करेगी ।

सामाजिक काम छात्रालय में रहने वाले सब विद्यार्थी अपनी अपनी अुन्न और शक्ति के अनुसार सब सामाजिक कामों में पूरा-पूरा

भाग लेते हैं । बाहर से आनेवाले विद्यार्थियो को भी अपने घर के कामों में मा बाप की सहायता करने की आवश्यकता के बारे में समझाते रहेंगे और सबके साथ समय-समय पर अुसकी चर्चा करेगे । बड़ी टोली में से अेक विद्यार्थी सामूहिक अाशाला में सहायक अन्नमत्री के तौर पर काम करेगा । हर सोमवार को पूरे सभाज के लिये शाम का भोजन पकाने की जिम्मेदारी आनन्द-निकेतन शाला की रहेगी । अिसमें सब शिक्षक भी रहेंगे । विद्यार्थियो की दो टोलिया बनाकर प्रत्येक टोली आधा-आधा समय काम करेगी और आधा समय अुनका आहार और दारो विज्ञान के बारे में वर्ग होगा । आसपास के गांवो से आनेवाले विद्यार्थी भी दुपहर का भोजन यही करेगे ।

खेलकूद प्रतिदिन शाम को सब बच्चो के लिये खेल का प्रयत्न होगा । अिस समय कबड्डी, धो खो और रस्सी कूद, अिन खेलो का कार्यक्रम रखा है । हमारे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिये खेल और व्यायाम की जरूरत और वजन बढ़ने घटने के कारणों पर चर्चायें होगी ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम - बड़े दिन के अवसर पर आनन्द-निकेतन शाला के विद्यार्थी श्रीशु की जीवनी के कुछ दृश्यों को नाटक के रूप में प्रस्तुत करेगे । अुस समय नाच, नृत्य आदि भी होगा । सब बच्चे अुसका अभ्यास करेगे । हफ्ते में दो दिन सामूहिक प्रार्थना चलाने की जिम्मेदारी आनन्द-निकेतन की भजन मण्डली लेगी । अुसके लिये भजन गाने का अभ्यास नियमित रूप से होगा ।

बच्चों की भजन मंडली

ख. प्र पांटे

गये बीस साल के तजुबे से मेरा यह पूरा विद्वान हो गया है कि जिस शिक्षक के पास कहानी कहने की, बच्चों के साथ पूरा हिलमिल-कर खेलने की तथा गीत गाने की कला होगी वह बच्चों को लोहचुवक की तरह आकर्षित कर सकता है। पिछले दिनों में बच्चों को भजन सिखाने के सिलसिले में कुछ अनुभव हुए, अन्हे साथी दिवपको के समक्ष रखना चाहता हूँ।

आनन्द-निवेदन छानालय में भजन जैसे कार्यक्रमों को शाला के शिक्पा त्रम के अवातर रूप ही माना गया। हमने देखा कि बड़ी सामुदायिक भजन मंडली में और भिन्न-भिन्न भाषाओं के भजन गाने में बुनियादी शाला के अिन छोटे बच्चों को कोसी रस नहीं आता है। इसलिये छोटे बच्चों की ही अेक अलग भजन मंडली संगठित करने का विचार किया। बच्चों के साथ वंसी चर्चा भी शुरू की। बच्चे काफी अुत्साहित हुए। अिनमें जिनको निस-गंत कठ की देन है वे तो थे ही। अुनके साथ जिनको वह देन नहीं थी अैसे बच्चे भी भजन मंडली में शामिल होने के लिये अुत्सुक थे। अगर ये सत्र के साथ वंटते तो जिनके बेसुर कठ से दूसरों को भी बाधा आती है। तो अिन बच्चों के मन में न्यूनता का भाव न हो और साथ-साथ अुन्हे गाने से भी वैसे रोने, यह सवाल सामने आया। जिस समस्या का हल वैसे करे? अेक वान भूजी। भजन के साथ जिन बाधों का नुपयोग होता है अैसे गुरीठे देहाती बाधों को रूख जुटाया। और कठ की देन से प्रवृत्ति से ही

वचित वालको को अिन बाधों का अिस्तेमाल करना सिखाया। कुछ को छोटे-छोटे मजिरे, किसी को खजरी, किसी को अेकतारा तो किसी को स्वरपेटी दी। ये वजाने लगे और जिनका सुरीला कठ था अुन्होंने भजन गाने में पूरा रस लेना शुरू किया। अिस तरह बाधों के साथ वालको की भजन-मंडली का रग कुछ बनने लगा। हमारी अिस मंडली में आठ साल से लेकर चौदह साल की अुम्र के बालक बालिकाएं शामिल है।

भजन और गीतों का अभ्यास हर दिन शाम के भोजन के बाद नियमित रूप से शुरू हुआ। भिन्न भिन्न सतों के मराठी भजन चुने गये। बच्चों ने सारे भजन कठस्थ किये क्योंकि भजन बिना कठस्थ किये गानेवाला अुसमें मग्न नहीं हो पाता। लिखा हुआ देख देखकर पढ़ने में तो भजन का मजा ही नहीं रहता। भजन लिखवा देने के बाद बच्चों को शब्दार्थ और भावार्थ समझाया जाता है। तथा अुन सतों की जीवनी का अेक छोटा परिचय देने की भी कोशिश होती है। अिस तरह बच्चों के सामने भिन्न भिन्न समय की भाषा के नमूने, कठिन शब्द और अुनके अर्थ तथा सत चरितों की ज्ञाकी आप ही आप अुपस्थित हो जाती है।

अिस वर्ष के गणेश अुत्सव, जन्माष्टमी, गोपाल वाला, तथा अीसा जयती अिन अुत्सवों में छोटे छोटे बच्चों ने ही गीत गाकर कार्यक्रमों में रग भर दिया। बच्चे अधिकतर मराठी भाषा भाषी होने के कारण गीत भी अधिकतर मराठी ही रहे। गीतों में सासवर १. मराठी

ओवियाँ २. श्लोक ३. कृपिगीत ४. निसर्ग गीत ५. ऋतु गीत ६. लोक गीत—ये सगृहीत किये गये। रामटोली के छोटे-छोटे बच्चों ने जिसमें अच्छी प्रगति दिखायी। सभी अब ताल और सुर में गाते हैं। ये सात से लेकर नौ साल की उमर के बच्चे हैं।

हमेशा यह देखा जाता है कि बच्चे जब छुट्टियों में घर जाते हैं तो बाहरी वातावरण से कुछ संस्कार छानावास में वापस आते समय ले आते हैं। सिनेमा के गीत गाने का तो आजकल एक ऐसा ही सर्वसामान्य रिवाज हो गया है जिससे बालक मुक्त नहीं रह पाते। गाना मनुष्य का स्वभाव-धर्म है, फिर चाहे कोभी भी गाना उसके मुँह से क्यों न निकले? अपने मुक्त वातावरण में वह गाने की कोशिश करता ही रहता है। बच्चे भी इसी तरह से बाहरी, सिनेमा के या सुने-सुनाये भले-बुरे गीत गाने की कोशिश करते रहते हैं। उनको जिस वृत्ति को ठीक रास्ते पर कैसे लगाया जाय? कुछ अच्छी ठोस चीजें उनके सामने देकर ही तो यह ठीक रास्ते पर ला सकेंगे? प्रार्थना यहाँ के जीवन का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है ही। बच्चों को भी निश्चित दिन साप्ताहिक प्रार्थना में अपनी भाषा के भजन गाने की जिम्मेवारी देने का निश्चय किया और जिस तरह प्रार्थना के लिये भजन की तैयारी करने की योजना उनके सामने रखी। अभी तक जितने भजन सीखे वे अच्छी तरह से मुखस्थ हैं तथा स्वतंत्रतापूर्वक गाने की हिम्मत उन्हें इस दृष्टि से हर रविवार प्रार्थना के बाद

बच्चों के साप्ताहिक भजन की योजना भी बनी। बच्चे अपने सग्रह में वृद्धि करने लगे। जिस तरह भजन के अभ्यास का एक स्पष्ट अद्देश बच्चों के सामने आया। उनके मन में भूमिका तैयार हुआ। ऐसी अवस्था में सिर्फ शिक्षक की ओर से एक अशारा मात्र की आवश्यकता होती है। बच्चे शिक्षक की ओर कूद पड़ते हैं और उत्साह का स्वर वातावरण में गूँज उठता है। जिस स्वर का नाद दिन रात सोते-बैठते, काम करते-खेलते सभी समय सुनायी देता है। जिससे बच्चों की सुप्त दक्षितया जगी और ठीक रास्ते पर मुड़ गयी ऐसा विश्वास होता है।

जिस कार्यक्रम से शैक्षणिक दृष्टि से निम्न-लिखित अद्देश्यों की पूर्ति की अपेक्षा है।

१. भजनों और गीतों का प्रसंगों के अनुसार चुनाव और वर्गीकरण।

२. सवधित सतों या कवियों की जीवनी का परिचय।

३. भजनों का सव्दार्थ तथा भावार्थ समझना

४. साहित्यिक क्षेत्र में भजन तथा अन्य गीतों का स्थान

५. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भजन गीतों का आयोजन।

जिस दृष्टि को सामने रखकर यदि ऐसे कार्यक्रमों को हाथ में लिया जाता है तो समस्यात्मक बच्चों के भी ठीक रास्ते पर आने में बहुत मदद मिल सकती है।

चर्चाओं के निष्कर्ष

[गांधी स्मारक निधी की पंजाब शाखा ने पट्टीवल्याण (वरनाल) में गत नवंबर ५ तारीख से १२ तारीख तक सभी तालीम में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विचार विमर्श के लिये एक शिविर चलाया था। उसका कुछ निष्कर्षों का सारांश संक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है।—स.]

पिछले शिविर में ग्राम स्वराज्य और सभी तालीम सबंधी जो निष्कर्ष हमारे सामने आये थे उन पर अमल करने का कार्यकर्ताओं ने भर-सक प्रयत्न किया। किंतु शिवपका को अंसा करने के लिए प्रबन्ध अथवा व्यवस्था सबंधी काफी कठिनाभिया सामने आती है, फिर भी यथासंभव अनुपर प्रयोग चालू रहने चाहिये, क्योंकि अन्ततोगत्वा वही हमारा लक्ष्य है।

ग्राम सहकारिता — शाला का परिवार अपनी सहकारिता पर ही केवल निर्भर न रहे बल्कि ग्राम भर में सहकारिता लाना ही अपना ध्येय मान कर उसके लिये काम करे।

समानता — गांव में एक सामाजिक समानता लाने के लिये (जिसमें जाति, धर्म तथा अर्थ आदि का कोई भेद न हो) कार्य करते हुए शाला का परिवार शाला में एक प्रेममय समाज का अंसा नमूना बनाये जो गांव के लोगों के लिये एक आदर्श हो।

गांव का आरोग्य — सफाई तथा स्वच्छता में शाला की ओर से गांव की भरपूर सेवा होनी चाहिये। शाला का अपना पेगाव घर, सडास, खाद का गडडा तथा अन्य सफाई सम्बन्धी सभी प्रबन्ध आदर्श रूप से होना चाहिये। यथा संभव समय निकाल करके शाला का परिवार गांव की गलिया तथा कूड़ा करकट आदि साफ करके लोगों का हाथ बटा सकता है।

आर्थिक विवास — गांव के आर्थिक विकास के लिये गांव की ऐसी तथा अन्य धन्यता का विकास होना जरूरी है, अंसा मान कर ही शाला का परिवार चले। अपनी सुधरी ऐसी तथा नमून के वताओ बुनाओ आदि बुद्योगा से गांव का ध्यान उस ओर डालने के लिये प्रयत्नशील रहे।

ग्राम स्वावलम्बन तथा सांस्कृतिक विवास — जिस प्रवृत्ति में शाला का परिवार खूब भाग गांव के निर्माण में ले सकता है। शाला में समय समय पर ड्रामे, भजन, खेल आदि का आयोजन जिस प्रकार से हो जो कि शाला के परिवार तथा गांव वालों दोनों के लिये ही पूर्ण हितकारी हो। शाला परिवार के जिस प्रकार के आयोजन में ग्राम वासियों को पूर्ण प्रयत्न से शामिल किया जाय और ग्रामीणों के जिस प्रकार के आयोजनों में भी शाला का परिवार यथा सम्भव समय निकाल कर शामिल हो। स्थानीय त्योहारों आदि का उपयोग जिस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में काम में आना चाहिये।

पशु पालन — पशु ग्राम समाज का एक अंग है, पशुओं का सुधार और विधिवत पालन अत्यंत आवश्यक है। यदि संभव हो तो शालाओं में गोपालन का कार्य अवश्य चलना चाहिये और उसकी प्रेरणा गांव वालों तक पहुंचनी चाहिये। शाला को गांव के पशु पालन कार्य में हाथ बटाना चाहिये।

लोक शिक्षण - शाळा के साथ साथ अंक घण्टे की पाठशाला और श्रवण वर्ग का नियोजन किया जावे।

सर्वोदय पात्र - सर्वोदय पात्र को हमारे सामाजिक शिक्षण का अंक अनिवार्य अंग बनाया जाय। वही हमारे कार्य के लिये लोक सम्मति भी होगी।

शांति-सेना - अहिंसक समाज रचना में शिक्षा ही रक्षा का साधन बन जाती है, विनोबा और गांधीजी की शांति-सेना की जिस वस्त्रपना को साकार रूप देने की जिम्मेदारी नमो तालीम के कार्यकर्ताओं पर आ जाती है। जिसलिये कार्यकर्तागण स्वयं में शांति-सेना के गुणों का अधिष्ठान करने की कोशिश करेंगे और जिसका सन्देश जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे। सेवा सैनिक के नाते शाळा के आस पास के क्षेत्र से पूरा-पूरा व्यक्तिगत जन सम्पर्क रखेंगे। और लोगों के दुख मुख में शामिल रहेंगे। स्थानीय समस्याओं को सुलझाने में लोगो की मदद करेंगे। शाळा को विशेष तौरपर बड़े विद्यार्थियों का जिस में अधिक सहयोग लेना चाहिये।

स्वावलम्बन - नमो तालीम शाळाओं में शाळा, विद्यार्थी और शिक्षकों के हर प्रकार के आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक स्वावलम्बन के सम्बन्ध में गत दो शिविरों में बहुत विस्तार से चर्चा की गयी और काफी स्पष्ट मार्ग दर्शन मिला था। तदनुसार कार्य चलाने के प्रयास भी हुये। अनुभव के आधार पर सोचा गया कि विद्यार्थियों का स्वावलम्बन पिछले वर्ष के अनुसार ही आगे बढ़ाया जाय।

शिक्षकों का वस्त्र-स्वावलम्बन तो चलेगा ही, किन्तु विशेषत छोटे वर्गों के शिक्षकों

के लिये अनुकी व्यावहारिक कठिनाई को देखते हुये चार घण्टे का शरीररथम जम नहीं पाता, यद्यपि अनुकी अुसके लिये मानसिक तैयारी है। ऐसी परिस्थितियों में दो घण्टे तक शरीररथम पर्याप्त माना जाय।

विचार किया गया था कि कम-से-कम पात्र प्रतिघात तक शाळा स्वावलम्बी हो। यह केवल शुरूआत के लिये था। वस्तुतः अिस वर्ष में अुस से काफी आगे बढ़ना चाहिये था। परन्तु साधन सामग्री आदि की कमी के कारण व्यावहारिक रूप से वह समभव नहीं होगा। अतः पुरानी मर्यादा ही रखी जाय।

शिक्षण पद्धति व शिक्षाक्रम - गत शिविर के जो निष्कर्ष थे उनके आधार पर शाळाओं में काम करने की कोशिश की गयी। लेकिन सन्तोषजनक काम नहीं हुआ। अिसके निम्न कारण रहे।

(१) गाव के लोगो का रुढिगत शिक्षा से आकर्षण।

(२) लोगो की निजी खेती- गृहस्थी की आवश्यकतायें।

(३) सरकारी शिक्षाक्रम को अपनी शिक्षा का लक्ष्य मानना।

जहा तक पहले और दूसरे कारणों का सम्बन्ध है यह तो ग्राम-स्वराज्य का विचार ज्यों ज्यों लोगो में पुरानी सामाजिक मान्यताओं के विकल्प (alternative) के रूप में आता जायेगा त्यों त्यों अपने आप दूर होते जायेंगे। अिसकी विवक्ष्य का रूप देने में हम कार्यकर्ताओं का सहयोग कैसे हो सकता है, अिसकी अच्छी चर्चा अिस शिविर मे हुयी। लेकिन जहा तक तीसरे कारण का सम्बन्ध है अिसकी

जिम्मेवारी काफी हद तक अपने तन्त्र पर ही है, क्योंकि तन्त्र ने अभी तक कोजी अँसो व्यवस्था नहीं की है जिससे कोजी विद्यार्थी अपना पूरा विद्यार्थी जीवन नजी तालीम के क्षेत्र में कायम रख सके। हमारी शालाओ का शिक्षण समाप्त करने के बाद उन्हें अनिवार्यतः पुरानी तालीम की शालाओ में जाना पड़ता है। अिन व्यावहारिक कठिनाइयों की वजह से शिक्षण पद्धति और शिक्षाक्रम के बारे में किसी अुच्च वैचारिक भूमिका में न जाकर शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षाविधियों के सरक्पक की दृष्टि से व्यवहार, साध्य कुछ निश्चय किये गये।

अनुशासन

गत दो शिबिरो में शारीरिक दण्ड के बगैर अनुशासन-स्थापना की ओर बड़ी गहराई से चिन्तन किया गया था। परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव से प्रतीत होता है कि अुस दिशा में हमारी शालाओ में विशेष प्रगति नहीं है। किसी न किसी रूप में दण्ड दिया ही जाता है। यह हमारे लिये रज्जाजनक बात है। मोष्ठी की सम्मति है कि सत्य और अहिंसा के साधक नजी तालीम शिक्षकों के लिये साधन शुद्धि अत्यंत आवश्यक है। अतः अनुशासन स्थापना में शारीरिक दण्ड के विकल्प का चिन्तन भर भी नहीं होना चाहिये। गत वर्ष के सुझाओ पर आचरण के लिये कष्ट अुठा कर भी हम कटिवद्ध हो और सत्य अहिंसा पर आधारित अनुशासन के लिय खोज की वृत्ति निरन्तर विकसित होनी चाहिये। अिस सम्बन्ध में अुझे प्रत्यक्ष प्रयोगों के और मनो वैज्ञानिक साहित्य का स्वाध्याय किया जाय। अन्तमें फिर यह बात भूलना नहीं चाहिये कि अनुशासन हीनता की पूरी समस्या सुसंस्कृत

नागरिक जीवन के अम्यास से ही हल होगी, जो कि ग्राम स्वराज्य द्वारा ही संभव हो सकता है। अतः अिस समस्या का निराकरण करने के लिये हममें पूरी भक्ति और शक्ति होनी चाहिये।

शिक्षकों की जीवन साधना

कार्यकर्ताओं की जीवन साधना में, काफी अरसे से नजी तालीम का कार्य करते अुझे भी हमें अभी तक कोई विशेष सफलता नहीं मिल पायी। सच्चा शिक्षक सच्चा विद्यार्थी ही है, अिसलिये हम महसूस करते हैं कि हम लोग की अपनी साधना पूर्ण जागरूकता और निष्ठा के साथ करनी चाहिये। कार्यकर्ताओं की अपनी सुनिश्चित दिनचर्या हो अिस में सर्वोदय की दृष्टि से व्यक्तिगत और सामूहिक प्रार्थना, आत्म चिन्तन, स्वाध्याय, स्वावलम्बन के लिये कार्य, शरीररथम आदि की योजना हो। हम अिन प्रवृत्तियों के लिये अपना कुछ रक्ष्याव निश्चित करे और अुस तक पहुचने की कोशिश कर। शिक्षकों के लिये अपने जीवन में मुख्यतः निम्न बातों का ध्यान होना चाहिये।

बच्चों और ग्रामीणों के बीच में शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिये कि हम अुनके साथ कोजी अँसा व्यवहार न कर बैठें अिससे अुनकी दृष्टि में हल्के मालूम हो।

बच्चों के साथ आत्मीयता - जैसे तो बच्चे अपन पास केवल ६ घण्टे ही रहते हैं पर अुनके पूरे समय और दिन चर्या के बारे में सचेत रहना चाहिये। अिस प्रकार अपना बच्चा माता पिता से चाहे कितना दूर हो तो भी अुनको अुसके जीवन की पूरी चिन्ता होती है अुसी प्रकार अुन बच्चा के जावन के विषय में हमें हादिक चिन्ता होनी चाहिये। कोजी भी हमारा

अक शिक्षणतज्ञ का अनुभव

देवीप्रसाद

आनन्द-निकेतन शाला में अक बालक और अक बालिका पिछले सात वर्षों से अपना शिक्षण ले रहे हैं। ये दोनों भाई बहन हैं। अिनके पिता अक मिठाला सार्वोदय कार्यकर्ता हैं। पिछले छ सात वर्षों से हैदराबाद के अक गांव में बड़ी श्रद्धा के साथ पति-पत्नी सेवा कार्य में लगे हैं। पिता अब महबूबनगर जिले के अक गांव में ग्रामशानयन का काम कर रहे हैं।

अपने बच्चों की शिक्षा ठीक प्रकार की हो, अिस बात की अुन्हें हमेशा चिन्ता रहती है। स्वयं अुनका शिक्षण पुरानी शिक्षण पद्धति के द्वारा हुआ था। पुरानी शिक्षा पद्धति के द्वारा बालकों का ठीक विकास नहीं होता और अुनमें अुन पहलुओं का भी विकास नहीं होता जो सामाजिक दृष्टि से अनिवार्य हैं, अैसी अुनकी मांगता है। अुन्होंने अक पत्र में अपनी भावना अिस प्रकार प्रकट की है, "मेरा शालेय और घरेलू अभ्यास पुरानी पद्धति से होने के कारण, जो सामिया मुझ में नहीं है वे मेरे बच्चों में न रह, अिमी विचार से मैं नयी तालीम का पक्षपाती हू। विद्यालय में हफ पर जो शिक्षाक्रम लाया जाता था, उसमें मेरा विकास था। आने के बहा 'बच्चा न सीखता है, अुनको सिखाना नहीं' अिमी तब का मैं कायल हू। आपने बहा जिन सामग्रियों सामाजिक जीवन का अनुसरण होता है, वह सामाजिक जीवन मेरा आदर्श है। मैं शिक्षणगत नहीं हू लेकिन समाज सेवन के ताने यह बात कह सकता हू। अक सामान्य शाला की दृष्टि में यह भी जानता हू कि बालकों के अभ्यासक्रम पूरा करने के लिये अक आर्थिक भर्षा होनी है, यह बात हमारे राष्ट्रीय जीवन के लिये बहुत महत्व की है। नयी तालीम की, अिस कारण से भी बड़ी आवश्यकता है। अिसलिये मेरा यह निर्णय है कि मेरे बच्चा का अुत्तम बुनियादी तब का अभ्यासक्रम सेवाश्रम में हो।"

सेवाश्रम की बुनियादी छात्रा में आठ साल का शिक्षाक्रम पूरा करने के दौरान में जो बालक छात्रालय में रहते हैं, अुन्हें कुल मिठालर लगभग सोलह सौ

रुपया खर्च आता है। क्योंकि विद्यार्थियों की अुत्पादन शक्ति बढती रहती है, अुत्तर बुनियादी शिक्षा की अवस्था में तीन साल के अर्से में खर्च क्रमशः कम होना शुरु हो जाता है। अुत्तर-बुनियादी शिक्षा के तीसरे साल में आकर विद्यार्थी की अुत्पादन शक्ति के द्वारा अुसका खर्च लगभग पूरा पूरा हो निकल जाता है। किसी प्रकार अुत्तम बुनियादी की अवस्था में तो विद्यार्थी अपने काम के द्वारा पूरा स्वावलम्बी हो जाता है।

अिस तरह अुच्च शिक्षा तक का खर्च नयी तालीम की पद्धति से प्रति विद्यार्थी पालकों को लगभग दो-हजार रुपये तक आता है। यह खर्च भी भोजन आदि पर ही होता है। जब कि चालू शिक्षा प्रणाली में अुच्च शिक्षा तक प्रत्येक विद्यार्थी अिसका छ सात गुना तो हा ही जाता है।

अिस प्रश्न को लेकर अिनकी कुछ शिक्षण मन्त्री से चर्चा छिड गयी। "मैंने अुनसे नयी तालीम पद्धति का अध्ययन करने के लिये विनती की। अुन्हें शका थी कि अिस प्रकार के विद्यालयों में विद्यार्थियों की सचित प्रगति होती है या नहीं।" यह बात पिछली दीपावली की छुट्टियों की है। अुन्होंने अपने अिन दोनों बच्चों को अपने अिन मित्रों से से अक के पास अुनके निरीक्षण में तीन दिन रक्खा।

"शाला के मुख्याध्यापक की अक अच्छे शिक्षण-तज्ञ माने जाते हैं। मेरे बच्चों के विद्यार्थी-जीवन के अिमी भी पहलू पर वे असन्तुष्ट नहीं हो सके।"

अिमी बीच मेरे पास थी का भी पत्र आया, जिसमें अुन्होंने अिन दोनों बालकों की की गयी समीक्षा या यह कहिये जिये गये निरीक्षण के बारे में अपने विचार लिखे। "ये दो बच्चे मेरे घर तीन दिन रहे। मैंने अुनके साथ विविध विषयों पर बातचीत की। मुझे यह महन में हर्ष होता है कि बच्चों की हालत हर पहलू से समाधान देनेवाली रही। अुनका शरीर स्वास्थ्य अच्छा था। अुनकी अपनी पढ़ाई में प्रगति ठीक थी। अुनका सामान्य ज्ञान भी बुरा नहीं था। अुनका विकास ठीक तरीके से हो रहा है।"

हमें यह जानकर खुशी होती है कि श्री... ने जिन दो बच्चों की सूक्ष्म समीक्षा करके यह अनुभव लिया कि नयी तालीम के द्वारा उनसे मित्र के बालकों की प्रगति सन्तोषजनक हो रही है। परन्तु उनसे मन में दो प्रश्न अठे हैं। उनका जिक्र भी यहां करना ठीक होगा। उनका कहना है, 'यह अभ्यात्मरूप पूरा करने के बाद जिन छात्रों के लिये विश्वविद्यालय का रास्ता खुला न रहने के कारण उनके दिलपर जरा बुरा परिणाम होगा। वह परिणाम न हो ऐसी व्यवस्था हा यह आवश्यक है।' बात काफी हद तक ठीक है, किन्तु उसका कुछ स्पष्टीकरण होना चाहिये। नयी तालीम जिस समाज-रचना की तैयारी में लगी है, उसमें विश्वविद्यालयों के आज के स्वरूप को बदल कर दूसरे तरह का बनाना होगा। विश्वविद्यालय की तालीम उससे पहले की तालीम की बुनियाद पर रखी जानी चाहिये। अगर बुनियाद की तालीम 'नयी तालीम'

है तो अच्छे शिक्षा का स्वरूप भी उसी आधार पर खड़ा होना चाहिये। पर जिनमें कोई छात्र नहीं कि आज भी नयी तालीम के विद्यार्थियों के लिये "विश्व-विद्यालय का रास्ता" खुला रहना चाहिये। पर यह ज़िम्मेदारी है किसकी? अगर नयी तालीम के जरिये शरीर, बुद्धि और हृदय का 'अधित विकास' होता है तो यह ज़िम्मेदारी जनता और शिक्षाशास्त्रियों की है, और वे देखें कि यह रास्ता खुलता है। "शिक्षा-जगत्" को ही अपनी यह ज़िम्मेदारी महसूस करनी चाहिये।

जिनका दूसरा प्रश्न है अंग्रेजी भाषा का। वह तो पुरानी बात है अतः "नयी तालीम" में भी काफी कहा जा चुका है। अतः यहां जिक्र करने की आवश्यकता नहीं। *

* जिस प्रश्न पर "नयी तालीम" के ये अंक देखिये।

—अक्टूबर १९५६ नवम्बर १९५७

(पृष्ठ २१४ का संपादन)

कार्य या व्यवहार ऐसा न हो जिससे बच्चे को यह महसूस हो कि यह कोई अपने लोगों से भिन्न है।

कार्यकर्त्ता गण जब सारे गांव को परिवार बनाने का प्रयत्न करेंगे तो कम से कम एक शाला में काम करने वाले कर्मियों का तो एक अनौपचारिक (अनफार्मल) परिवार बनना ही चाहिये। हम लोगों का एक दूसरे के लिये पूर्ण अनाग्रही अत्यन्त प्रेम हो। और यदि कोई मतभेद हो भी तो आपस में समझ-समझाते, आपस में किसी प्रकार की निन्दा वृत्ति न हो।

हमारे परिवारों में भी हम अधिक से अधिक सर्वोदय विचार धारा को कार्यान्वित करने की कोशिश करें।

हम अपने व्यक्तिगत जीवन में अधिक से अधिक सादगी लाने का प्रयत्न करें और उसे सार्वजनिक जीवन के साथ मिलाने की चेष्टा करें।

शिक्षक गण अपनी जिस साधना के सम्बन्ध में होने वाले अनुभवों और मुझावों का आदान प्रदान अन्तर्शालीय पत्रिका द्वारा करेंगे तो अच्छा होगा।

नयी तालीम के तत्त्व

धीरेन्द्र मजूमदार

सब से पहले हम जिस बात पर विचार करें कि बुनियादी शिक्षा के लिये आवश्यक भूमिका क्या होनी चाहिये ? जैसे कलाकार जिस प्रकार की भी तस्वीर का निर्माण करना चाहे, उसके लिये उसे एक सामान्य पटभूमि बनानी होगी। उसी तरह चाहे जिस पद्धति का शिक्षण हो, अगले लिये एक सामान्य पटभूमि की आवश्यकता है। जिस पटभूमि को हम वातावरण कहेंगे। वातावरण याने शिक्षा की हवा। हमें शिक्षा चाला में शिष्टाचार, अनुशासन आदि की आवश्यक हवा पैदा करनी होगी। जिस हवा को पैदा करने के लिये प्रथम साधन शिक्षा है। अर्थात् जिस तरह पटभूमि की सफाई-लिपाई करने और चित्र बनाने का काम कलाकार करता है, उसी तरह शिक्षा की हवा पैदा करना और शिक्षा प्रदान करना भी शिक्षण का ही काम है। इसलिये शिक्षक शिक्षा का प्रधान अपादान है।

ऐसे शिक्षकों के स्वभाव और चरित्र में सब से पहले गुरुत्व होना चाहिये। गुरुत्व का मतलब यह नहीं है कि शिक्षक हमेशा गंभीर और भारी मुंह करके बैठ रहे। गुरु शिष्य के साथ हमेशा खेलेगा, उसके प्यार करेगा। शिष्य भी गुरु के साथ हँसेगा, खेलेगा, गुरु को प्यार करेगा, उससे डरेगा नहीं। नेत्रिन हमेशा उसके गुरुत्व का अनुभव करेगा। मैंने कहा कि शिष्य गुरु से डरेगा नहीं, लेकिन निर्भय होना एक बात है और बदतमीज होना दूसरी बात है। शिष्य गुरु के साथ बैठकर बात भी करेगा। लेकिन पर गुरु के शरीर में छू गया, तुरत शिष्य के मन में ग्लानि होगी और वह उसे

प्रणाम करेगा। हो सकता है कि दो बच्चे आपस में कुछ हल्की बातें कर रहे हों, लेकिन गुरु के सामने आते ही स्वभावतः सभल जायेंगे। तभी समझना होगा कि शिष्य गुरुत्व का अनुभव कर रहा है। जिस बनाना पहला काम है। यह शिष्य में स्नेह और श्रद्धा का समर्थ नित्य बढ़ता रहे और परस्पर-शिष्टाचार हमेशा कायम रहे, तभी गुरुत्व स्थिर रह सकेगा।

शिक्षक के लिये दूसरी आवश्यकता निष्ठा की है। वह अपने काम के प्रति अर्वाग्र हो। परन्तु अक्सर देखा जाता है कि शिक्षक विद्यार्थी-केन्द्रित नहीं होता है, वह स्वयं-केन्द्रित होता है, तो वह चाहे आत्मोन्नति का बड़ा साधक हो, लेकिन वह शिक्षक नहीं है, क्योंकि वह आत्म-निष्ठ है, शिष्यनिष्ठ नहीं है। वह अपने स्वास्थ्य के लिये व्यायाम करता है, प्रणायाम करता है या आसन करता है। अपने बौद्धिक विकास के लिये पढ़ता है आध्यात्मिक विकास के लिये दूसरी कोड़ी साधना करता है, तो वह आचरणीय और अच्छा अवश्य है, लेकिन अगर वह शिष्यक है, तो समझना होगा कि शिष्य के प्रति उसकी अर्वाग्रता नहीं है। ऐसा पूछा जा सकता है कि क्या इसका मतलब यह है कि शिष्यक की शारीरिक, मानसिक, नैतिक या आध्यात्मिक अग्रति नहीं होनी चाहिये ? अवश्य होगी चाहिये। लेकिन शिष्यक की निष्ठा इसी में हो कि वह माने कि बच्चों की अग्रति की चेष्टा में ही आत्मोन्नति है, बच्चों के विकास की निरंतर कोशिश ही अपने लिये साधना है। बच्चों को पूरी तरह अग्रति करना है। इसलिये कहना है कि शिष्यक की दूसरी आवश्यकता निष्ठा है।

अब हम नजी तालीम के शैक्षणिक पहलू पर विचार करेंगे। बचपन से हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसका तरीका क्या हो और प्राप्त ज्ञान को कैसे टिकाऊ बनाया जाय, शिक्षा में ये ही दो प्रश्न मुख्य हैं। आज यह सर्वमान्य है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान प्राप्ति तथा उसको स्थायी बनाने का प्रामाणिक तरीका है। हाथी के विभिन्न पहलुओं पर चाहे हजार पृष्ठों की किताब पढ़ डालिये, लेकिन हाथी के बारे में आपका अतना सही ज्ञान नहीं होगा, जितना हाथी देखने में होगा। घर पर हाथी है, तो बचपन से बड़े होने तक हाथी के बारे में बिना प्रयास से पूरी जानकारी हो जाती है। यह भी सही है कि हाथी के बारे में हजार पृष्ठों की किताब पढ़ कर हाथी को समझने में जितना समय लगता है, उससे अत्यन्त अल्प काल में प्रत्यक्ष दर्शन में उसकी जानकारी हो जाती है। हमारे देश में जो ज्ञान-भंडार संचित है, उसका नाम 'दर्शन' है। वास्तविक दर्शन से ही उसकी प्राप्ति हुआ है। यही कारण है कि वह ज्ञान अक्षय्य है।

जिसलिये गांधीजी ने शिक्षा-पद्धति में जो नयी बात कही है, वह यह कि जीवन के पुरुषार्थ में जो कुछ कम-सूची निहित है, वही शिक्षा का माध्यम है यानी उसीमें से मनुष्य का बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास होना चाहिये। जीवन-सघर्ष की प्रत्यक्ष अनुभूति से जो ज्ञान प्राप्त होगा, वही सही ज्ञान हो सकता है, न कि परोक्ष अनुभूति से प्राप्त ज्ञान। आज के शिक्षाशास्त्री भी यही मानते हैं। जिसलिये वे नित्य नय प्रयोग, करते रहे हैं, "किडरगार्डन" "प्रोजेक्ट"-नाना प्रकार की पद्धति वास्तविकता की प्राप्ति के लिये बनाते हैं।

लेकिन वे जीवन के हर अंक विषयों को कृत्रिम बना कर शिक्षार्थियों के सामने पेश करना चाहते हैं। जिससे अनुभव वास्तविक यानी प्रत्यक्ष नहीं होता है। आखिर वह कृत्रिम ही है। जिसलिये गांधीजी जीवन सघर्ष में प्रत्यक्ष सहयोग से ही शिक्षा-प्राप्ति का मार्ग उपस्थित करते हैं।

यह तो हुआ ज्ञान-प्राप्ति का सहज तथा प्रामाणिक तरीका। लेकिन जिसका अंक सामाजिक पहलू भी है। अगर प्रत्यक्ष जीवन-सघर्ष से ही बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास के स्रोत का आविष्कार नहीं हो सकेगा, तो कर्मभूमि अलग और ज्ञान-मंदिर अलग रहेगा। आज वैसा ही है। ज्ञान-प्राप्ति के लिये ज्ञान-मंदिर अलग जगह खुलते हैं और कर्म के लिये अलग साधन हैं। जिसका नतीजा यह होगा कि समाज में ब्राह्मण-वर्ग और दूध-वर्ग अलग-अलग रहेंगे। आश्चर्य की बात यह है कि आज देश और दुनिया के तमाम पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि जाति-भेद मिटना चाहिये। पर वह मिटेगा कैसे? अगर कर्मभूमि से भिन्न ज्ञानमंदिर और सांस्कृतिक-गृह अलग-अलग रहेंगे, तो नि सदेह थोड़े ही मनुष्य कर्मभूमि से छुट्टी लेकर अिन मंदिरों में प्रवेश पा सकेगा। अगर हर अंक को उसमें प्रवेश कराने की कोशिश की जायगी, तो प्रथम तो अिन मंदिरों में स्थानाभाव होगा और दूसरी बात यह होगी कि जिदगी की आवश्यकता-पूर्ति का कार्यक्रम समाप्त होगा। अगर आप यह कहते हैं कि सत्तार से जाति-भेद और श्रेणी-भेद मिटना चाहिये, तो कर्म-क्षेत्र को ही ज्ञान-क्षेत्र बनाना होगा। कर्म में से ज्ञान के विकास की जो पद्धति है, उसीको समवाय शिक्षण-पद्धति यानी नजी तालीम कहते हैं।

सामूहिक साधना

साधना सामूहिक तौर पर होनी चाहिये, याने पन्द्रह बीस मनुष्यों को अंगठे होकर साधना करनी चाहिये अतना ही जिसका अर्थ नहीं है, बल्कि जिसका अर्थ यह है कि समूह जीवन ही जीवन है। व्यक्ति का जीवन जितने हितों में समाज का हित है, अतने ही अर्थ में वह जीवन है, असा माना जायगा। समाज से अलग जीवन हो ही नहीं सकता। जिसलिये हमारा हरभेक सद्गुण सामाजिक होना चाहिये।

अब वैराग्य की बात लीजिये। यह अचित है या अनुचित, कितनी मात्रा में अचित और कितनी मात्रा में अनुचित है, भिन्न चारों प्रश्नों का भुत्तर कुल समाज के लिये सोचकर दिया जायगा। समाज के लिये कितनी मात्रा में यह जरूरी है, अतसे अधिक मात्रा में अगर कितो में वैराग्य है तो या तो वह अबांगी विशेषज्ञ है या अममें विकृति है। अिस तरह सब गुणों के बारे में सामाजिक दृष्टि से सोचना होगा।

हर भेक गुण को अ्यक्तिगत नहीं रखना चाहिये, समुदाय में अ्यापक बनना चाहिये। जब तक गुण को सामूहिक रूप नहीं देते हैं तब तक गुणों की सारत प्रकट नहीं होती। हिन्दुस्तान में अ्यक्ति की महिमा बहुत प्रकट हो चुकी है। लेकिन हम नहीं कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान के अीतत लोगों की अूँचाओं बुनियाँ के दूसरे देशों से ज्यादा है। वहाँ केवल अूँचे-अूँचे हिमालय जैसे सप्तपुष्य दिखायी पड़ते हैं। बाकी सारी जमीन अपनी जगह है। तो अिसमें कीभी लाभ नहीं।

आजकल सज्जनता खास लोगों का गुण हो गया है। अुराके लिये महात्मा राव एड हुआ है। लेकिन आत्मा न महान है न अल्प। वह तो कितना है अतना ही होता है। पर हम सब "अप आत्मा" बने और चंद लोगों को "महात्मा" बनाया और कहने लगे कि महात्मा झूठ बिलकुल नहीं बोलता, किना घडा यह सद्गुण माना गया है। लेकिन सब लोगों ने झूठ का भिन्न प्रयोग किया कि झूठ न बोलनेवाला महात्मा कहलाया गया, यानी अुसको योग्यता का आधार दूसरों की अयोग्यता हो गयी। जिसलिये गुणों की प्रक्रिया हमें अ्यापक बनानी होगी। हिन्दुस्तान में यह समझने की जरूरत है कि सत्य, दया, प्रेम आदि गुणों पर महापुरुषों के ही गुण समझकर हम निष्ठुर बने रहेंगे, तो हिन्दुस्तान अपने नहीं बडेगा। जो प्रेम और दया का प्रयोग महापुरुषों ने अपने जीवन में किया वह सारे समुदाय में लागू करना अपना काम है।

—विनोबा

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

मूल्य
र न पं.मूल्य
र न पं.

शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार

१४ अन्तर-युनियादी शिक्षाग्राम

१ शिक्षा में अहिंसक नान्ति १-००

(सक्षिप्त) ०-२५

युनियादी शिक्षा सम्मेलनों की रिपोर्ट

१५ पूर्व-युनियादी शिक्षकों की

ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम ०-६३

२ युनियादी राष्ट्रीय शिक्षा
(डॉ. जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट) १-५०

अन्य पुस्तकें

३ समग्र नयी तालीम २-७५

१६ भारत की क्या (अभिनय तथा
संगीत) ०-५०४ आठवा नयी तालीम सम्मेलन
विवरण १-२५

१७ नयी तालीम का आयोजन ०-०६

५ नवा " " " ०-६३

१८ सेवाग्राम—गांधीलोका ०-३१

६ दसवा " " " ०-७५

१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार
(प्रो. राजीस) ०-०६

७ ग्यारहवा नयी तालीम सम्मेलन १-००

नये प्रकाशन

८ बारहवा नयी तालीम सम्मेलन १-५०

२० शांति सेना ०-१२

युनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत

२१ शिक्षकों से (विनोबा) ०-२५

९ प्रौढ शिक्षा का अद्देश्य (शांता
नाहलकर और भोजपुरी साहित्य) ०-७५२२ नयी तालीम का नया पर्व
(ग्रामदान नयी तालीम ज्ञान गोष्ठी
का विवरण) ०-७५१० जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-
युनियादी तालीम की योजना और
प्रत्यक्ष काम) (शांता नाहलकर) १-२५

२३ विद्यार्थियों से (विनोबा) ०-२५

२४ ग्राम-स्वराज्य नयी तालीम १-००

अलग-अलग विषयों पर पुस्तकें

नोट-१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये
पैसे पर प्रायः ६ नये पैसे के हिस्सा से
द्वार खर्च लगेगा। इसके अलावा
थोड़ी थोड़ी या रजिस्ट्री से मगाने पर
६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

११. मूल अद्योग वातना (विनोबा) ०-७५

१२. खेती शिक्षा (मिसे और पटेल) १-००

पाठ्यक्रम की पुस्तकें

१३. आठ सालों का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम १-५०

नोट-२ प्रत्येक ऑर्डर के साथ एक चौथाई
रकम पेशगी रूप में आनी चाहिये।प्रकाशक - श्री आर्यनायकम्, अण्डस, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम,
मुद्रक - श्री. द्वारका १-१, श्री. नयी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

नई तालीम



संपादक-मंडल

आशादेवी : मार्जरी माउंक्म

देवीप्रसाद



हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ७]

फरवरी १९५९

[अंक : ८

नअी तालीम

“नअी तालीम” फरवरी, १९५१ : अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
१	बापू	—अलबर्ट आगिन्सटोन	... २१९
२	शिक्षण सर्वथा स्वतंत्र रहे	—विनोबा	... २२०
३.	गांधीजी और शांति सेना	—प्यारेलाल नय्यर	... २२३
४.	जीवन की तैयारी ही साला का वस्तुत्व	—निमिता सरस्वत	... २२९
५.	मेक्सिको में नयी शिक्षा	—वे. अंस. आचार्य	... २३४
६	सरल सेप्टिक पाखाना	—अणासाहेब पटवर्धन	... २३९
७	गोशाला मंत्री का मासिक प्रतिवेदन	—गोशाला नायक	... २४४
८	अंक पत्र—	—	... २५०
९	पारिवारिक समाचार		बचर पृष्ठ ३
१०.	तेरहवाँ अ. भा. न. ता. सम्मेलन सूचना		”

‘नअी तालीम’ के नियम

१ “नअी तालीम” अग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवासाम से प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य तीन रुपये और अंक प्रति की कीमत २५ नये पैसे हैं। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अचक्षुष सञ्जन तीन रुपये मनीऑर्डर से भेजें, ता अतुम होगा। बी पी से भगाने पर अन्हे ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अंक साल से कम अवधि के लिये ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

३ पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहको को भेज दिया जाता है। अगर दस दिन के अंदर अंक न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिये। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

४ तीन महीने से कम के लिये पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से अतिज्ञाप कर लें।

५ ग्राहको को चाहिये कि रेपर पर पते के साथ दी हुई अपनी ग्राहक सरप्रा हमेशा याद रखें और पत्र-यवहार में ग्राहक सग्या लिखना न भूले, वरना अनुरो शिकायत पर कोअी कारंवाओ न की जा सकेगी।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७]

फरवरी १९५९

[अंक ८

बापू

गांधीजी अपनी जनता के अेक अैसे नेता थे जिन्हें किसी राह्य सत्ता का आधार प्राप्त नहीं था, वे अैसे राजनीतिज्ञ थे जिनकी सफलता न किसी कूटनीति पर या नहीं ही प्रावैधिक तरीकों की दक्षता पर आधारित थी, बलिक वे अपने व्यक्तित्व की शक्ति मात्र से ही दूसरों को कायल कर देते थे । वे अेक निजयी योद्धा थे जिन्होंने हमेशा बल-प्रयोग को धिक्कारा । उनमें ज्ञान और नम्रता थी । उन्होंने दृढ संकल्प और सातत्य के साथ अपनी सारी शक्ति अपने देशवासियों को ऊपर उठाने और उनकी दशा सुधारने में लगा दी । उन महापुरुष ने यूरोप की पाशविकता का सामना सरल मानवता के गौरव से किया और जिस तरह हमेशा वे ऊँचे उठे ।

आनेवाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि ऐसा कोई रक्तमास का देहधारी जिस धरतीपर चला था ।

—एलबट आगिन्स्टोन

शिक्षण सर्वथा स्वतंत्र रहे

विनोबा

हमारे देश के इतिहास में देखा गया है कि देश को जिन्होंने बचाया और जिनका देश भर ज्यादा-से-ज्यादा असर रहा, वे "आचार्य" या "गुरु" कहलाये। शंकर, रामानुज ये आचार्य हो गये और कबीर, नानक आदि गुरु। हिन्दुस्तान के दिलो और दिमागो पर जैसे ही लोगो का असर रहा है। राजा महाराजा आये और गये, लेकिन वे कोओ कायमी असर न डाल सके। लोग अन्हे भूल गये। इतिहास पढाते समय शिवपक लडको से अिन राजा-महाराजाओ के नाम कठ करवाते हैं, जिसलिअे कुछ बेचारे याद रह गये, नहीं तो अुनकी कोओ स्मृति नहीं रहती।

दिल्ली से पचास मील दूर, नुह तहसील में मुसलमानों को अेक सभा में मै बोल रहा था। मैव लोगो को बसानेका काम चल रहा था। जब मै शरणाधियो के काम में लगा, तो मैवो का भी काम मुझे करना था। अुस सभा में मुझे अुदाहरण देना था, तो मैने कहा-अकबर बादशाह का नाम आपने सुना होगा। अुस सभा में चार-पाच सौ स्त्री-पुरुष आये थे। अुन्होंने जवाब दिया "अकबर का नाम हमने नहीं सुना।" मैने अुनसे पूछा-"अकबर यह शब्द तो आपने सुना होगा" तो अुन्होंने कहा-"जी हाँ, 'अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर' हमने जरूर सुना है"। सारास, अल्ला मिया के सिवा बाकी दूसरो को हम नहीं जानते। प्राचीन नाल में जितने राजा हो गये, अुनमें सब से बडा बादशाह अकबर था। श्रीहर्ष के बाद अुसी का नाम आता है। फिर भी मुसलमानो को भी, जो दिल्ली से सिर्फ पचास मील दूर रहते

थे, अुसका नाम मालूम नहीं। लेकिन कबीर का नाम अुनको मालूम था। अैसी है हिन्दुस्तान की यह अजीब दुनिया।

मतलब यह कि हिन्दुस्तान पर जिनका स्थायी असर हो गया, वे राजा नहीं, फकीर थे। फिर चाहे, वे हिन्दू हो, मुसलमान हो, या सिख। संस्कृत में हजारो ग्रन्थ हैं, लेकिन अुनमें राम, कृष्ण, कौरव पांडव के सिवा दूसरे किन्ही राजाओ के नाम नहीं हैं। अेक ही अैसा ग्रन्थ है, जिसमें काश्मिर के राजाओ के नाम हैं। बाकी सब में मुश्किल से राजाओ के नाम मिलते हैं, फिर भी अुनमें गुरु और आचार्यों के नाम मिलते हैं।

अिन दिनों राज्यनिर्वाह शिक्षण चलता है। कुल शिक्षण पर सरकारी सत्ता है। यह कल्याणकारी राज्य का बहुत ही बुरा परिणाम है। अभी केरल में शिक्षण के बारे में बिल आया, तो सभी पक्षो ने मिलकर हल्ला मचाया। आखिर वह बात राष्ट्रपति के सामने गयी और वहा से सघ-न्यायालय के सामने आयी। किन्तु सघ-न्यायालय ने अुसमें कुछ सुझाव रखे, थोडी कुछ वाते मुधार दी और वह बिल मजूर कर लिया। इस तरहकी खबर आज ही आयी है। विरोधी पार्टियो को इसमें खतरा मालूम पडता था। शिक्षण पर कम्युनिस्ट-सरकार की सत्ता चलना ठीक नहीं, यह अुनकी शिकायत है। अुन्हे जिससे खतरा मालूम होता है। फिर जहा काग्रेस का राज्य है, वहा वह खतरा अुन्हे नहीं मालूम होता। अपना-अपना अलग-अलग दृष्टिकोण होता है। लेकिन लोवशाही में जो

भी सरकार हो, चाहे वह कम्युनिस्ट हो, फासिस्ट हो, पूजावादी हो या सोशलिस्ट, वह वही तालीम देगे जिस विचार को वह माननी है। जिसलिअे स्वतंत्र मत तो दिया जाता है, लेकिन उस स्वतंत्र मत की कोअी कीमत नही, यदि तालीम स्वतंत्र न हो। ।

हिन्दुस्तान की तालीम हमेशा आजाद रही है। यही हिन्दुस्तान की खूबी है, यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। अगर किसी ने यह मान लिया हो कि यहा शिक्षण पर सरकार की सत्ता थी, तो यह गलत है। हिन्दुस्तान में अुन दिनों से तालीम है, जबकि यूरोप में तालीम का आरम्भ भी नही हुआ था। यही बात अुपनिषद् में भी आती है। अुपनिषद् का राजा अपने राज्य का वर्णन कर रहा है—“न अविद्वान्” मेरे राज में अैसा कोअी नही, जो विद्वान् न हो। सिर्फ पढे-लिखे लोग ही नही, सब विद्वान् हैं।

जितना ही नही डा० अैनी चेसेण्ट ने अेक जगह लिखा है कि बंगाल में जब आस्ट अिण्डिया-कंपनी आयी तो अुससे पहले हो वहा के गावों में ग्राम-पचायत और चार सौ लोकसव्था के लिअे अेक मदरसा था। आस्ट-अिण्डिया-कंपनी के रिकार्ड में भी यह लिखा है। जिसलिअे यह स्पष्ट गलत है कि अुन दिनों तालीम का नाम तक नही था। ग्राम पचायत के जरिये ही वह तालीम दी जाती थी और वह स्वतंत्र होती थी। अुसपर किसी का नियंत्रण नही था।

अलावा इसके ज्ञानी लोग शहरो में नही, नदी के किनारे, अेवान्त में, पहाडों में रहते थे। वहा अुनकी वेद, न्याय, मीमांसा की, ज्योतिष की, गणित की, वैश आदि की छोटी छोटी

पाठशालाओं चलती थी। जिस तरह कुछ स्वतंत्र शिक्षण था। यहा तक कि भगवान् श्रीकृष्ण को अुनके पिताने सोलह साल की अुम्र में कस-विभोचन जैसा पराक्रम करने के बावजूद सादी-पनी के पास पढने के लिअे भेजा। वहा अुनको लकड़ी चीरने का काम दिया था। पोरबंदर का सुदामा नामक ब्राह्मण बालक भी अुस आश्रम में पढता था। दोनों को अेक ही प्रकार की तालीम दी जाती थी। कृष्ण राजा का लडका होने से अुसे कोअी स्पेशल बलास नही दिया गया था। राजा वसुदेव भी किसी प्रकार की हिदायत सादीपनी को नही दे सकता था। अिसी तरह विश्वामित्र के पास दशरथने अपने लडके भेजे, किन्तु गुरु को दशरथने कोअी आज्ञा नही दी। साराश, ज्ञानी और विद्वान् पुरुषों को राजा कभी आज्ञा नही देता था। अुनपर राजाओं का किसी प्रकार का नियंत्रण नही होता था।

जिसलिअे मैं हमेशा कहता हू कि विचार की आजादी जो मैंने संस्कृत भाषा में देखी, वह दूसरो भाषा में नही। मैं दुनिया की पंद्रह-बीस भाषाओं जानता हू। किन्तु अैसी कोअी भाषा नही जानता, जिसमें संस्कृत के जैसा विचार-स्वातंत्र्य हो। अेक ही हिन्दू धर्म है, किन्तु अुसका तत्त्वज्ञान कोअी मानता है, तो कोअी नही भी मानता है, कोअी धर्म-काण्ड को मानता है, कोअी अुसे नही भी मानता है। कोअी अीश्वर को मानता है, कोअी अीश्वर को नही भी मानता है। कोअी पुनर्जन्म में विश्वास करता है, तो कोअी नही करता। सभी जानते हैं कि छ-छ दर्शन हैं और धर्म अेक ही है। हा, सदाचरण के कुछ नियम हैं, अुन्हें सबको मानना पढता है। बाकी सब तरह से सर्वथा स्वतंत्र-विचार चलता है। सांख्य, मीमांसा, द्वैत-अद्वैत

आदि अलग-अलग दर्शन हैं। उनमें एक दूसरे के विचार पर प्रहार भी चलता है, फिर भी पूर्णतः विचार-स्वातंत्र्य है। जिसीलिअे कहा कि यहूके शिक्षण पर सरकार का कंट्रोल नहीं था।

विचार स्वातंत्र्य के जिस मामले में शायद अंग्लैण्ड का शिक्पण बराबरी करता हो। वहाँ भी शिक्पण पर सरकार की सत्ता ज्यादा नहीं दी जाती। वहाँ भी स्वतन्त्र-विचार, मुक्त-विचार करनेवाले लोग हैं।

मुझे कहना अतिना ही है कि आप दिमागों को आजाद रखिये। दिमाग की आजादी कभी मत खोविये। दिमाग की आजादी खोना आत्महत्या ही है। शिक्पक और विद्यार्थियों को अपने दिमाग की आजादी नहीं खोनी चाहिये। अन्यथा, वह उनकी आत्महत्या ही होगी। आज अनुशासन आदि का विचार है, अवश्य ही अनुशासित तो रहना ही चाहिये, किन्तु विचार में किसीको भी सत्ता हम पर न चले। आजकल हमारे यहाँ दीक्षान्त-समारोह में विद्यार्थियों को गाउन पहनाया जाता है और फिर डिग्री मिलती है। किन्तु पुराने जमाने में गाउन नहीं पहनते थे। यह सारा ढोंग अभी-अभी आया है। पुराने जमाने में विद्यार्थियों को गुरु स्नान कराता था। तब यह "निष्णात" बनता था। याने विद्या में पारंगत माना जाता था। गुरु अपने हाथों उसे नहलाता था, जिसलिअे यह स्नातक हो जाता था। यह भी एक विधि थी। फिर गुरु उसे ध्याम्पान देते थे—दीक्षान्त भाषण का अन्तिम आदेश। उपनिषद् में जिसका जिक्र किया गया है। वे दीक्षान्त भाषण में "सत्य बोलो" आदि तो कहते ही हैं, अतः जिसके यह भी कहते हैं कि "यान्यस्माकं सुचिन्तानि तानि सेवितानि,

नो अितराणि" याने हमारे जो अच्छे कर्म और अच्छे विचार हों, वे ही लेने चाहिये। हमारी जितनी अच्छी भी है, अतनी लो। दूसरी चीजों को मत लो। याने जिस तरह वे शिष्य को विचार की आजादी दे रहे हैं। जिसीलिअे स्वतन्त्र-बुद्धि का विकास होता था। मैंने ऐसा दीक्षान्त भाषण कही नहीं सुना।

अन दिनों दिल और दिमाग की आजादी नहीं रही है। "लोक-कल्याण" का नाम तो लिया जाता है, लेकिन विचार की आजादी न रखना अवनति का लक्षण है। हिन्दुस्तान ने अभी तक कभी भी अपने विचार की आजादी नहीं खोयी। उसने कभी अपने विचार को संकुचित नहीं बनाया। तीन-सौ, चार-सौ साल पहले गालिलियो और कोपरनिकस जैसे बड़े-बड़े सद्योधक हो गये। उन्होंने जो खोजें की थी, वे "बाइबल" के खिलाफ मानी गयी। वे "ओल्ड टेस्टामेण्ट" के खिलाफ थी, जिसलिअे उन्हें बहुत तकलीफ हुई। यहाँ तक कि वे गालिलियो से कहते थे कि तुम यह लिख दो कि पृथ्वी धूम नहीं रही है। उसके लिअे उन्होंने उसके सामने कागज भी रखे। तो उसने लिखा "धूमती है, धूमती है, मैं कहूँ या न कहूँ फिर भी वह धूमती ही है।" उसे जेल में डालकर बहुत तंग किया गया जिसलिअे बेचारा चाहता था कि पृथ्वी न धूमे, किन्तु ज्ञान को कैसे टाला जाय? अंग्लैण्ड के इतिहास में वह कहानी यदुहर है। यह बारह-सौ, तेरह-सौ साल पहले की बात है।

शकराचार्य के भाष्य में लिखा है कि वेद या शास्त्र में ऐसा कोई वाक्य हो, जो प्रत्यक्ष अनुभव के विरुद्ध हो, तो वेद को नहीं मानना चाहिये। वेद में अगर ऐसा कोई वाक्य

गांधीजी और शांति-सेना

प्यारेलाल नय्यर

(गताक से आगे)

अहिंसा का सब से बड़ा प्रयोग सरहद प्रांत में हुआ। वहा बापू की प्रेरणा से बादशाह खान ने अहिंसा के सिद्धांत को अपनाया था। पठान से बढ़कर बहादुर सिपाही शायद दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। पठान के लिये मरना या किसी की जान लेना बिल्कुल खेल सा होता है। छोटी-सी बातपर वे अके दूसरे को मार डालते हैं। रेडियो सुननेवालों में अके ने कहा कि तुम अपना मुंह बंद करोगे या नहीं? दूसरे ने नहीं बन्द किया तो पहले आदमी ने गोली से अुसका मुंह बंद कर दिया। अके दफा दो पठान सरदारों के बच्चे आपस में लड पडे। अिनमें से अके रोता हुआ घर आया और कहने लगा कि मुझे दूसरे ने मारा है, तो बाप ने कहा कि तू मार खाकर आया है, फिर रोता है? अँसा कहकर अुसने बच्चे को टांग से पकडकर अुसका सिर जमीन पर पटक दिया। जैसे हम नकद लेने देने का

हिसाब रखते हैं, वैसे वहाँ अँक समय कबीले आपस में खूनो का हिसाब रखते थे। अुसके कबीले ने हमारे अितने आदमी मारे तो अुसके बदले में हमें अितने मारने हैं, यह सोचा जाता था। अुनकी सामाजिक व्यवहार नीति की परंपरा का वह अँक मुख्य नियम था। अिसका नतीजा यह भी हुआ कि कभी कबीले बिध्वस्त हो हो गये हैं। अैसे लोपो के बीच बादशाह खान ने अहिंसा का पाठ पढाना शुरू किया और खुदायी खिदमतगारों का सगठन खडा किया। कहा जाता था कि पठान गोली या फासी से नहीं डरता, किंतु कँद से वह घबडा जाता है। वह शेर के जैसा खुली हवा का जानवर है। कँद को वह नहीं सहन कर सकता। परंतु १९३० के आंदोलन में ये ही लोग बड़ी सख्या में जेल गये। अुनमें से अँक भाभी माफ़ी मागकर बाहर आया तो अुसने खुद को गोली से मार

(पृष्ठ २२२ का समाप)

मिले, तो अुसे प्रमाण नहीं मानना चाहिये। यह वाक्य के शकराचार्य बोल रहे हैं, जिन्होंने सारा वेद के आधार पर सिद्धा है। सी श्रुतियों में अँसे वचन क्यों न मिले कि अग्नि अनुष्ण है, तो अुसे प्रमाण नहीं मानना चाहिये। जहा आत्मिक बातें हो, जिन पर प्रत्यक्ष का प्रकाश न पडता हो, अुन्ही बातों में वेद को प्रमाण मानना चाहिये। अिसका अर्थ यह हुआ कि सृष्टिविज्ञान के साथ धर्म का कोभी झगडा नहीं है। शकराचार्य, धर्मा-

चार्य थे और वैज्ञानिक भी। धर्माचार्य को भी यह नहीं लगा कि विज्ञान के साथ धर्म का झगडा है। विज्ञान के लिये धर्म याने मैगना-चार्ट है।

सायरा, अुस जमाने में अिसी तरह स्वतंत्र चिन्तन चलता था। अँसा नहीं था कि अमुक वाद, अमुक धर्म या अमुक सिद्धान्त को ही मानना चाहिये। अगर वह जचे तो मानो और न जचे, तो मत मानो। अिस तरह अुस जमाने में बुद्धि की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

दिया। कश्मियों ने जिसलिखे आत्महत्या कर ली कि हमसे रहा नहीं जायगा और हिंसा हो जायेगी। अंग्रेजों ने खुस वक्त उनको कबी तरह से भुत्तेजित करना शुरू किया। उनके मुह काले किये। उनकी स्त्रियों को बेअिज्जती की। लेकिन पठानों ने हिंसा का जवाब हिंसासे नहीं दिया। पेशावर में गोली छोड़ी गयी तो अंक के पीछे अंक पठान आगे आता था और सोने पर गोली सेलकर जान दे देता था। आखिर अंग्रेजों को कहना पड़ा कि निःशस्त्र अहिंसक पठान हिंसक पठान से ज्यादा भयानक है। बापू को लगा कि अिनकी अहिंसा का विकास पूरी तरह हम कर सके तो हिंदुस्तान का बेडा पार होगा। क्योंकि ये लोग डरपोक नहीं हैं, मौत से नहीं डरते हैं। अन्हें यह जानने की अिच्छा हुअी कि क्या अुनका अहिंसा-पालन बुद्धिपूर्वक है या वह केवल जड नियत्रण के आधार पर है। जिसकी प्रत्यक्ष जाँच क लिअे बापू सरहद में गये और अंक महीने की यात्रा करके अुन लोगो को अहिंसा का मूल स्वरूप क्या है, अुसके नियम क्या हैं, किस तरह अुसका अपने में अुदय और विकास किया जा सकता है, अिसके लिअे 'शांति सैनिक को कैसी तालीम मिलनी चाहिये, शांति सेना का संयोजन कैसा होना है, यह सब विस्तार से समझाया। वह सब मेरी पुस्तक "अे पिलग्रिमेज फॉर पीस" में मिलेगा।

जिम वक्त बापू वहाँ पहुँचे थे, अुससे कुछ असाँ पहले वपू पर बबोले क पठानों ने हमला किया था। डेरा अिस्माअिल शा में दिन दहाडे अुन्होंने टाबा डाला था, और चौदह लाख को गपति लुटकार चलेने बने थे। पुलिसवाले देखते हो रहे थे। अुस वक्त बापू ने वहाँ के लोगो से कहा कि आपके सामने सवाल है कि अंगे समय

पर क्या किया जाय। तीन तरीके हो सकते हैं। अंक तो यह कि अुन लोंगों को रुपया देकर अुनसे मुक्ति पाना; लेकिन यह नामर्दोंका तरीका है। अिससे आपका पतन होगा, और अुन लोगों को दुबारा आने का मानो निमंत्रण मिलेगा। दूसरा तरीका तो अुनसे लडकर मुकाबला करने का है। तीसरा तरीका यह है कि खुदाओ खिदमतगार अपनी जान की बाजी लगा दें कि पहले वे खुद खतमहोगे पीछे डाकू किसी को हाथ लगा सकेगा। आप लोग अुन लोगो के बीच जायें और अुनसे पूछें कि आप अैसा काम क्यों करते हो? क्या माली तगी के कारण करते हो? अगर अैसा है तो अुसे दूर करने की कोशिश करें। अुनसे वित्तय करे कि क्या आप हमें दुश्मन समझते हो? क्या हमें अपने दायरे से बाहर समझते हो? अगर अैसे हो वे मानते हो तो आप अुनकी सेवा करे। पठान के बारे में अंक बात है कि जो सेवा करता है अुसे वे कमी भूलते नहीं; अिसलिअे आपकी सेवा के बदा फिर वे ही लोग आपकी रक्पा करेगे। बापू ने खुदाओ खिदमतगारों से यह भी कहा था कि अेक समय अैसा आ सकता है कि मैं आपको सारे हिंदुस्तान में भेजना चाहूँगा। अिस काम के लिअे बापू ने अुन लोगों की जड अहिंसा को चेतन बनाने की कोशिश की। अुनमें रचनात्मक प्रवृत्ति शुरू की। अुन्हे समझाया कि तीन प्रकार के भय होते हैं। जेल का भय, वह आपने छोडा है। दूसरा मृत्यु का भय, वह भी आपने छोडा। तीसरा सपत्ति खोने का भय। यह सबसे बडा भय होता है। सरकार आपकी अमीन जायदाद छोन सकती है। फिर आपके बच्चे भरो रहेंगे तो आपका दिल अंगार हुअे बिना कैसे रहेगा? अिसलिअे आपको कोअी अंगा हुनर मौख लेना चाहिये जिससे किसी पर

आधार रखे बिना आपका निर्वाह हो सके। और जिससे आप जो बिलकुल गरीब हैं उनको सेवा कर सके। फिर, आप जेल जायेंगे तो आपके घर की औरतों का क्या होगा? जिस-लिसे आपको अन्हें भी स्वाध्यायी बनाने के लिसे कुछ सिखाना होगा। आपको पढ़ना लिखना तो आना ही चाहिये लेकिन दूसरी जगह जायेंगे तो उसके लिसे दूसरी भाषाओं भी सीखनी होगी। अहिंसा की साधना में भाषा का बहुत बड़ा स्थान है। अहिंसा को प्रकट करने का, अमल में लाने का, वाणी ही अब बड़ा साधन है। आखिर हम अपने विचार वाणी द्वारा ही प्रकट करते हैं। मुह से ठीक शब्द निकले जो कि दूसरे के हृदय में जाकर बस जायें, यह एक बहुत बड़ी बात है। इस तरह बापू ने अन्हें भाषा की महिमा सिखायी। किंतु बापू जो प्रयोग सरहद में करना चाहते थे, वह नहीं हो सका। क्योंकि १९३९ से लडाजी शुरू हो गयी। जिसलिसे बापू फिर वहाँ न जा सके।

सरहद के अन्हें के दौरे में बापू से प्रश्न पूछा गया था कि क्या अहिंसा और सगठन ये दो विरोधी चीजें हैं? अगर नहीं हैं, तो क्या अहिंसा का सगठन हो सकता है? और हो सकेता है तो उसके नियम हिंसक सगठन के जैसे ही होंगे या अन्हें से भिन्न होंगे? क्या अहिंसक सिपाही की तालीम हिंसक सिपाही की तालीम के जैसे ही होगी या अन्हें से भिन्न होगी? बापू ने जवाब दिया—अहिंसक सगठन हो सकता है और होना चाहिये। अगर अहिंसा द्वारा सगठन नहीं हो सकता है, तो वह अहिंसा अहिंसा नहीं है, कच्ची चीज है। दूसरे सवाल के जवाब में अन्होंने कहा कि भलाजी का रास्ता बुराओं के तरीके से भिन्न होता है, और कभी

दफा झुटा होता है। जिसलिसे अहिंसा के नियम हिंसा के सगठन के नियमों से भिन्न होंगे, झुटे भी हो सकते हैं। उसी प्रकार तालीम भी भिन्न होगी। जिसका वर्णन मेरी पुस्तक “अपिलग्रिमेज फॉर पीस” में मिल सकेता है।

१९३७ के बाद हिन्दुस्तान के इतिहास में एक नया प्रकरण शुरू हुआ। जैसे राजनैतिक अधिकार हमारे हाथ में आने का मौका आया वैसे ही हिन्दुस्थान में कौमो आग भड़क उठी। अन्हें सुलगाने वाले दूसरे ही थे जो आग सुलगाकर अलग हो गये, लेकिन भाग तो भड़कती ही रही। जब प्रातो के अन्दर हमारे हाथ में सत्ता आयी तो बापू ने सब से पूछा कि क्या आप पुराने तरीके से ही चलना चाहते हैं? क्या पुराने राज्य को ही बदलना चाहते हैं या पुरानी राज्य पद्धति को भी बदलना चाहते हैं? अगर आप पुरानी राज्य पद्धति में परिवर्तन नहीं करते हैं, तो आखिर में आप देखेंगे कि देश कहेगा कि जिस तब्दीली से कुछ लाभ नहीं हुआ। आज तक ऐसा होता था कि कहीं कुछ गड़बड़ी हुयी तो पुलिस को भेजा जाता था। बापू ने कहा कि जा पुलिस अकसर आज आपको सलाम करते हैं वे ही कल आपको हथकड़ी लगायेंगे। जिसलिसे जिस पुलिस पर आधार रखना आप छोड़ें।

मोरारजी भाभी ने बापू से पूछा कि जब हुल्लड बाजी होती है तब हम क्या करे? बापू ने कहा—“वहाँ जाकर आग में कूद पडो। जिसमें मर जाओगे ता कोभी परवाह नहीं है। आखिर मरना तो है ही। हिंसा की लडाजी में भी खाली सिपाही ही नहीं, कमांडर भी मरते हैं। अहिंसा की लडाजी सिर्फ सिपाहियों के मरने से नहीं जीती जाती है।”

खैर साहब ने वापू से पूछा कि क्या हम देश के अंदर अराजकता फैलने दें। हम हमारी जिम्मेदारी को कैसे छोड़ दें? वापूने अन्हें समझाया कि—“आप जनता से कहिये कि आपके भेज हम यहा है। किंतु आप जानते हैं कि कांग्रेस ने तो अहिंसा को अपनाया है, जिसलिये अगर अमन कायम रखने में आप हमारा साथ नहीं देते हैं तो हम यह स्थान छोड़ देते हैं। यह बहकर बिस्तीफा दे दें। फिर दुबारा चुनाव होगा। उस वक़्त आपका मुह अुजला रहेगा। दूसरे लोगो को भेजना चाहे तो भले भेजें, लेकिन आपको भजेंगे तो आपका कहा मानना पडगा। आप काला मुह करके वहा से नहीं निकलेंगे। अग्रजो के शासन के नीचे पत्नी हुअी फौज और पुलिस का बिस्तेमाल किये वगैर हमें आग को रोकना चाहिये। चाहे हम असमें खतम भी हो जाय। लेकिन यह नहीं करेग तो आज जो हिन्दू मुसलमानो के बीच हुल्लड चल रहा है अेक दिन वह यादवी “सिविलवार” का रूप लेगा और अेक जमाना आयेगा जब आपके सामने यह सवाल पैदा होगा कि या तो जिस बढती हुअी आग को रोकन के लिये हमें अग्रजा से बहना पडगा कि आप यहाँ से मत जाभिये या देश के दो टुकडे वरने हागे। यह बीमत चुकानी होगी।”

बबअी में बीमी आग की मिटाने में १९४६ में अेक हिन्दू अेक मुसलमान—दो ब्यक्तियो ने बलिदान दिया। अुगले पहले १९३० में बानपुर में गणेश शर्कर बिद्यार्थी ने अपने जीवन की आहुति दी। वे खतम हुअे। बाग ॥ न बूझी, परंतु वे हमेसा के लिये अेक दोपस्तर बन गये। आग तात्कालिक हेतु में वे क्या असफल रहे, भिगपर हमें साबना चाहिये। जिन सोमा के

बीच वे गये थे क्या वे अुन्हे अपना मित्र समझते थे। अुन्हे क्या लगता था कि अिनको घाव लगे तो हमारे भी कलेज पर हो घाव लगा है? अगर नहीं, तो असफलता का यह अेक कारण हो सकता है कि अुनकी मित्रता का दावा सामने के पक्क के गले नहीं अुतरा था। असमें से यह चीज निकलती है कि जिन लोगो के बीच शांति सैनिक को जावर खडा होना है वे समझें कि यह आदमी हमारा हितैषी है। हम पर अुसका हक है। जिसलिये शांति सैनिक के लिये जरूरी है कि अुसने लोगो की सेवा की हो। सभी लोग अुसे अपना मित्र समझेंगे। सभव है कि आग को रोकन में वह खतम हो जाय लेकिन अुसका परिणाम आगे जरूर आयेगा। लडाअी में जानेवाला हर सिपाही यह अुम्मीद नहीं करता है कि मैं खुद आगे जाकर दुश्मत के किले पर झडा फहराअूंगा। हजारो सिपाही खाअी में पडते हैं तब कही अेक कोअी आग बढकर झडा लगाता है। परंतु जो सिपाहा खाअी में पडते हैं वे यह नहीं समझते हैं कि हमन लडाअी हारी। बल्कि यह समझते हैं कि हमन लडाअी जीतो। यह नियम अहिंसा को और भी ज्यादा लागू है। अहिंसा उहुव सूक्ष्म और गूढ शक्ति है। पता ही नहीं चलता कि वह कब, किस तरह और कैसे काम करती है। अक्सर जब अैसे लगता है कि कुछ भी काम नहीं हो रहा है तब पीछे जाकर देखते हैं कि बहुत काम हुआ है। जिसलिये अुपर अुपर से अहिंसा की सफलता का मान निबालन स बढो गनती होती है। जब आदमी अपने अन्दर अेक बिल्कुल निष्काम बर्म की भावना रखता है और यह समझता है कि मैंने अपन बर्तव्य का पालन किया, बाकी सब ओइवरपर निर्भर है, तब काम बनता है। अगर जिसना ओइवर पर थड्डा रखे बिना कोअी कर

सकता है तो जरूर करे। जो ओश्वर को नहीं मानता है उसको हम अवगणना न करें। वह जब देखेगा कि मैं जो करना चाहता हूँ वह ओश्वरनिष्ठा से ही होगा तब वह उसे अपनायेगा।

नीआखाली में जब हत्याकांड शुरू हुआ तब बापू वहां गये। वहां पर बहुत-से अंसे जिलाके थे जहां फौज भी नहीं घुस सकती थी। जिन्होंने कल, खून में हिस्सा लिया था और स्त्रियों पर अत्याचार किये थे वे लोग वही खुले घूम रहे थे, और लोगों के "रक्षक" होने का दावा करते थे। वहाँ जब बापू गये तब लोग समझे कि अंतरिम गवर्नमेंट में कांग्रेस है, इस-लिज्जे वह सारा सैनिक दल लाकर आतंकवादियों को हमेसा के लिये पाठ सिखायेगी। लेकिन बापू ने जाते ही उन लोगों से कहा कि मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ जो भी फौज है वह सारी की सारी वापिस खींची जाय। यह सुनकर लोग हक्के-बक्के हो गये। और कजिअों ने भागना भी शुरू कर दिया। तब बापू ने अपने साथियों से कहा कि जो अपनी जान पर खेलने को तैयार है उसीको यहाँ रहना है, बाकी सब को चले जाना है। जानेवाले की निंदा नहीं होगी। जिसे रहना है उसे अहिंसा का सिपाही बनकर रहना है। इस तरह अन्होंने अपने सब पुराने साथियों को अकेले अकेले अंक-अंक गांव में जाकर रहने को भेज दिया जिससे कि वे अपने अुदाहरण से भयभीत लोगों को निर्भयता सिखायें। जाते समय अन्होंने समझाया कि आप लोगों से यह तो नहीं कह सकते हैं कि हम तुम्हारी "रक्षा" करेंगे, परंतु यह अनसे जरूर कह सकते हैं कि यहाँ आप पर कुछ हो इसके पहले हम खतम होंगे। अहिंसा में आधार सख्यावल पर नहीं

होता है। अहिंसा को सिद्धि कितनी है, उसकी गहराई कितनी है, इसपर होता है। ओश्वर हमारे साथ है तो अंक होते हुअे भी हम असह्य हैं और ओश्वर साथ न हो तो असह्य होते हुअे भी हम कुछ नहीं हैं। आपके साथ संख्यावल हो तो आपको इसमें से झूठा घमंड हो सकता है और विरोधी को बेकार डर का कारण। भय से डरता आती है, इसलिज्जे सत्याग्रह का अंक महत्वपूर्ण नियम यह है कि विरोधी को निर्भय करना, जिससे कि अुसमें अिन्सानियत की भावना को जागृत होने का मौका मिले। जब हम शस्त्र का आश्रय लेते हैं तो हम ओश्वर को सिंहासन से अुतारकर शस्त्र को अपना भगवान बना लेते हैं। इसलिज्जे सब प्रकार का शस्त्र-त्याग, सत्याग्रह की बुनियाद है। थद्दा वहाँ शुरू होती है जहाँ पुश्र्पार्थ खतम होता है। जब हम अपने हथियार डालकर केवल ओश्वर की शरण लेते हैं तब वह निर्बल के बल राम हमें प्राप्त होते हैं। नीआखाली में बापूजी का अपने साथियों से यही आग्रह था कि वे और सब आश्रय छोडकर केवल 'निर्बल के बल राम' का ही आश्रय ले।

अिसी साधना का अुदाहरण अन्होंने खुद वहाँ दिया। अंक अुजडे हुअे गांव में वे जाकर अकेले रहने लगे। दो-चार व्यक्ति साथ रहे सही, लेकिन वे बापूजी की निजो सेवा के लिज्जे नहीं, बल्कि आसपास की पीडित और भयभीत जनता की सेवा के लिज्जे और इस तरह की सेवा की तात्वीम और अनुभव लेने के लिज्जे। अपना सब काम बापूजी यथासभव खुद ही करते थे। जो काम और साथी करते थे उसकी भी अतिम जिम्मेवारी वे अपने कंधे पर ही डालते थे। कुछ काम विगडे तो अुसका दोष किसी को

नहीं, अपने को ही देंगे जैसे बुढ़ोने अपने साथ
अिकरार किया था ।

३

अपनी तरफ से बुढ़ोने अंकात जीवन की
यहाँ तक तैयारी कर ली थी कि सब साथी अंक
अंक कर छोडकर चले जायें तो भी बुढ़की अपनी
साधना निविघ्न चला करे। इसकी तैयारी रूप
अठतर वर्ष के होते हुअे भी अंक खजूर के डडे
पर बिना सहारा या किसी की सहायता लिये
चलकर नालो को पार करने का अभ्यास करना
भी शुरू किया, क्योंकि वहाँ नालो पर अंसे ही
पुल होते हैं । अकेले अंसे पुल पार न कर सके
तो क्या वे अपनी यात्रा छोड देंगे ? वह तो नहीं
हो सक्ता था । इसलिये बुढ़ोने अकेले पार
करना सीखा । जनता के हृदय में प्रवेश कर
सके इसलिये बगला सीखना शुरू किया और
जीवन के अन्तिम दिन तक अंक बार भी धूँके
बिना यह साधना चलायी । इससे भी बढकर
तो बात यह थी कि जो कुछ स्थानिक जनता दे,
अुत्तम से जो ग्राह्य हो, वही खाना । बाहर से
बहरी वा दूध तर नहीं मगाना । अगर अपने
घरो में किसी गाव में लोग जगह न दें तो जंगल
में सोना होगा अंसा सख्त्य बुढ़का था । और
अगर इस तरह की सख्ती झेलने से या और
बिनी कारण से स्वास्थ्य बिगडे तो वह बुढ़की
नालायकी का चिह्न होगा अंसे बुढ़ोने घोषित
कर दिया था ।

/

मरी नियम बुढ़ोने अपने पुराने साथियों
पर भी लागू किया था । अगर कोई बीमार
पड जाय तो अुसे रामनाम ओर नैसर्गिक
चिकित्सा से ही अरुद्ध होना है, नहीं तो वही
मरना है या हार मानकर कार्यक्षेत्र में नै निवृत्त

हो जाना है । डाक्टरी जिलाज की किसी को
अपेक्षा नहीं रखनी है ।

बुढ़ोने तय किया था कि इस तरह
अवधूत की तरह वे आजीवन तब तक गावगाव
में अविघ्नात घूमते रहेगे और हिंदू मुसलमान
सब की करुणा-प्रेरित सेवा करते रहेगे जब तक
अुनके इस अुदाहरण से हिंदुओ के दिलो में
वीरता और हिम्मत आ जाय और यह समझने
लगे कि वे मुसलमानो के शत्रु नहीं किंतु सच्चे
मित्र हैं । हिंदू मुसलमान भाभी-भाभी हैं और
भाभी-भाभी की तरह बुढ़े रहना चाहिये ।

बापू के सारे जीवन में वीर की अहिंसा का
यह सब से बडा प्रयोग था । कलकत्ता के
चमत्कार के वक्त लार्ड मॉटबेटन को भापा में
"वनू मेन बाबुडरी फोर्स" बनकर बापूजी ने
वह काम कर दिखाया जो कि पचास हजार
सशस्त्र सैनिक पश्चिम पंजाब में न कर पाये ।
यह बुढ़की अुपरोक्त इसी साधना का परिपक्व
फल था । तीस जनवरी १९४८ के दिन बुढ़की
पूर्णाहुति ने इस साधना के कीर्तिमंदिर पर
फलदा बडा दिया । अुस दिन क्षण भर में रगत
की अुमडती नदियो का प्रवाह घम गया और
भाभी-भाभी का गला वाटने के लिये अुठे हुअे
हाथ हत्या करने की बजाय परस्पर प्रेम आलिंगन
में लिपट गये ।

बापूजी ने अपने आत्मचरित्तान से जिस
अहिंसा शक्ति की पूर्ण कला की हमें शायी
करायी अुसे हमें अपने देस और विश्वशांति के
काम के लिये हमारी जनता में जागृत करना है
और सगठन करना है । यह है शांति सेना का
अुद्देश्य ।

जीवन की तैयारी ही शाला का कर्तव्य

निकिता दहशेचेव

[समाज के नवनिर्माण में शिक्वा का महत्व प्रथम है। नये मूल्यों के आधार पर शिक्वा में मूलभूत परिवर्तन किये बगैर नयी समाजरचना असम्भव होती है। यहाँ तक कि जाने अनजाने शिक्वा में अगर थोड़ी-सी भी प्रतिश्रियावादी बातें रह जायें तो नये समाज में कमी खामियाँ रह जायेंगी।

शायद इस बात को हम पूरी तरह से महसूस नहीं कर रहे हों। क्रांति के बाद के चालीस सालों के सबेरे अरसे के बाद रूस में आज यही बात अनुभव की जा रही है। अिन वर्षों में रूस ने अनेक क्षेत्रों में अपूर्व विकास किया। उन्होंने सोवियत सिद्धांतों के अनुसार शिक्वा पर भी हमेशा ही जोर दिया, तिसरार भी आज अपनी शिक्वा प्रणाली के बारे में श्री दहशेचेव के ये भुद्गार हैं। वे हमारी भी अर्खें खोलन में सहायक हो सकते हैं— स]

सोवियत राज्य की स्थापना के बाद के अिन चालीस सालों में सोवियत संघ में माध्यमिक और अुच्चशिक्षा की बहुत बड़ी प्रगति हुई है, अिसमें कोई शका नहीं। हमारी जो सर्वतोमुख आर्थिक जनति हुई, सोवियत वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और विशेषज्ञों ने जो चमत्कारकारी शोधों की और अुनके परिणाम स्वरूप मिर्फ हमारे ही देश को नहीं समस्त मानव जाति को ही अत्यन्त महत्वपूर्ण लाभ अुठे, यह सब बहुत हद तक हमारी अुच्चशालाओं का ही काम है, जिन्होंने अिन सुयोग्य व्यक्तियों को तैयार किया। फिर भी आज की हमारी माध्यमिक और अुच्चशिक्षा के संगठन या कहना चाहिये कि अुसकी प्रणाली से ही हम सतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हमारी शालाओं व अुच्च शिक्षा की संस्थाओं में अैसी कमियाँ हैं जो अब विलकुल ही सहन नहीं की जा सकती हैं।

अिनकी मुख्य और मूलभूत कमी यह है कि वे जिन्दगी से विच्छिन्न हैं। अिसके लिये शिक्षा-विभाग के कमियों और अुच्च शिक्षा केन्द्रों की

बहुत बार बड़ी आलोचना हुयी है, फिर भी परिस्थिति कुछ विशेष बदली नहीं।

माध्यमिक शालाओं

हमारी शालाओं में बहुत कुछ बातों में क्रांति के पहले की शिक्षाव्यवस्था का ही अनुसरण किया और यही कारण है कि अुनका काम पूरा सफल नहीं हो पा रहा है। अुस समय की शालाओं का अुद्देश्य विद्यार्थियों को कुछ विषयों की अमुक मात्रा तक जानकारी देना मात्र था, जिससे कि वे मैट्रिकुलेशन का सर्टिफिकेट प्राप्त कर सके। अुसके आगे अुनका क्या होता है अिससे न शालाओं को कोअी सरोकार था, न राज्य को।

मैट्रिकुलेशन सर्टिफिकेट के लिये अेक व्यक्ति को तैयार करत समय माध्यमिक शाला का क्या काम होता है? वह कुछ विशेष जानकारी देना मात्र है, जिसका किसी उत्पादक अुद्योग से कोअी सम्बन्ध नहीं। हाल तक हमें माध्यमिक शिक्वा पूरी किये नवयुवकों की कुछ कमी पडती थी। सोवियत शासन के प्रथम काल में

जब कालेजों में मजदूरों, किसानों और अन्य कर्मचारियों तथा उनके बच्चों को भरती करने का सवाल खड़ा हुआ तो माध्यमिक शालाओं ने इन लोगों को उच्चशिक्षा केन्द्रों में प्रवेश के लिये आवश्यक प्रशिक्षण देने के काम के लिये अपने आपको तैयार किया था, लेकिन अकदम अतनी बड़ी सहाय में प्रशिक्षणाधिया को लेने में वे असमर्थ हुए। उससे भी बड़ी समस्या मजदूर, किसान जैसे पहले से ही उत्पादक श्रम से सम्बन्धित लोगों को प्रशिक्षण देकर उच्चशिक्षा के लिये तैयार करने की थी। तब सोवियत सरकार ने ऐसे कमियाँके लिये कुछ शिक्षा केन्द्र शुरू किये थे, जहाँ प्रौढों को दाखिल कर माध्यमिक स्तर तक का शिक्षण देते थे और वहाँ से वे उच्चशिक्षा केन्द्रों में भेज दिये जाते थे।

धीरे धीरे जिसकी आवश्यकता खतम हो गयी और अब कई सालों से ये प्रशिक्षण केन्द्र नहीं रहे। और माध्यमिक शालाओं का अद्देश्य अब सिर्फ कालेजों के लिये नवयुवकों को तैयार करना नहीं रहा। हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने का ध्येय माना गया है और यह धीरे धीरे सध भी रहा है। हम कोशिश कर रहे हैं कि हमारे सब नवयुवक-स्तलों लाखों लड़के लड़कियाँ-माध्यमिक स्तर तक की दस साल की शिक्षा पूरी करें।

जिससे यह बात स्वाभाविक रूप से ही निकलती है कि ये सबके सब कालेजों में नहीं जा सकते हैं, न ही विशेष प्राविधिक शिक्षा केन्द्रों में। जिसलिये यह बहना मूर्खता होगी कि हमारे सब लड़के लड़कियों का जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा पूरी की है कालेजों में दाखिल होना ही चाहिये।

लेकिन हमारी आज की दस साल की शालाओं नवयुवकों को जिन्दगी के लिये तैयार नहीं कर रही हैं। वहाँ सिर्फ कालेजों में दाखिल होने की तैयारी होती है। जो विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके निकलते हैं, उनमें, उनके परिवारों में और शिक्षा विभाग के कर्मचारियों में भी यह विचार जड़ पकड़ कर बैठ गया है कि यह ऐसा ही होना चाहिये, माध्यमिक शालाओं कालेजों के लिये विद्यार्थियों को तैयार करने के लिये ही है, जिसलिये कि उन्हें वहाँ फिर अधिक उच्च शिक्षा मिले।

अतने दिनों के अनुभवों से ही स्पष्ट सिद्ध हुआ है कि यह विचार सर्वथा गलत है। पहले भी जो लड़के लड़कियाँ माध्यमिक शिक्षा पूरी करते थे वे सबके सब कालेजों में दाखिल नहीं होते थे। और अत्र सालों में तो दस साल का शिक्षाक्रम पूरी करनेवालों की सहाय अतनी बढ़ गयी है कि उसका एक छोटा प्रतिशत ही कालेजों में प्रवेश पाते हैं। अधिकतर लड़के लड़कियों को माध्यमिक शिक्षा पूरी करके मेट्रिक्युलेशन सर्टिफिकेट प्राप्त करने के बाद सीधे जीवन में प्रवेश करना होता है और ये उसके लिये सर्वथा अयोग्य होते हैं। उन्हें मालूम नहीं होता कि अब क्या करें ?

क्योंकि माध्यमिक शालाओं के शिक्षाक्रम को जिन्दगी के साथ कोओ संबंध नहीं है अतः लड़के लड़कियों को किसी उत्पादक काम की जानकारी नहीं रहती है। जिसलिये समाज को अतः स्मृति नौजवानों की सेवा से जो लाभ प्राप्त होना चाहिये वह भी नहीं मिलता है। परिणाम स्वरूप बहुत सारे युवक और उनके मा-बाप अतः परिस्थिति से असंतुष्ट रहते हैं। और यह समय के साथ बढ़ता ही जाता है।

अब यह ऐसी स्थितिपर पहुँचा है जिसके ऊपर हमें गंभीरता के साथ विचार करना चाहिये। जिसके चारे में कुछ साधियों से बातचीत करने का मुझे मौका मिला। वे तो जिसपर भी शका करते हैं कि दस साल की सार्वजनिक शिक्षा का आग्रह रखना भी ठीक है क्या ?

एक बात स्पष्ट है—बच्चों की शिक्षा में शुरू से ही यह ध्यान रखना चाहिये कि भविष्य में किसी समाजोपयोगी काम में—शारीरिक श्रम में—लगने की उनकी मानसिक तैयारी हो, उनमें समाजवादी राज्यविकास के लिये आवश्यक मूल्य का बोध हो। हम अभी तक भी शारीरिक और मानसिक श्रम को अलग करके सोच रहे हैं।

पुरानी राज्य-व्यवस्था से हमें पैतृक के रूप में मिला हुआ यह विचार अभी तक चल रहा है कि युवका का एक विशेष दल ऐसा होता है जिनको विश्वविद्यालयों में या अग्रेष्ठ शिक्षा केन्द्रों में जाना ही चाहिये और अग्रेष्ठ फ़ैक्टोरियों और खेतों में काम नहीं करना होगा। बाकी जो अधिकांश लोग हैं वे “अस स्तर पर नहीं पहुँचें” या अग्रेष्ठों ने “अतनी योग्यता नहीं दिखायी” और इसीलिए अग्रेष्ठ काम ही करना है। यह बहुत ही गलत विचार है और हमारे सिद्धांतों व आदर्शों के विपरीत है।

आज आम तौर पर लड़के लड़कियों को यह धारणा हो गयी है कि माध्यमिक शालाओं से निकलने के बाद उनके लिये एकमात्र सम्मान का रास्ता अग्रेष्ठतर शिक्षा पाने का, कम-से-कम किसी विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने का ही है। माध्यमिक शाला से उत्तीर्ण होने के बाद फ़ैक्टोरियों में, अन्य किसी उत्पादक केन्द्रों में या सहकारी क्षेत्रों में काम करना वे पसन्द नहीं

करते और कभी तो जिसे अपने गौरव के प्रतिकूल समझते हैं।

शारीरिक श्रम के प्रति यह निंदा की दृष्टि कुछ परिवारों में भी पायी जाती है। अगर कोई लड़का या लड़की अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान नहीं लगाती है तो उसके मा-बाप और दूसरे लोग यह कहकर उसे डराते हैं कि अगर वह अच्छी तरह से पास होकर सोना-चांदी का कोई मेडल नहीं प्राप्त करता तो उसे फ़ालेज में प्रवेश नहीं मिलेगा और तब उसे साधारण मजदूर जैसे फ़ैक्टोरियों में काम करना पड़ेगा। मतलब यह हुआ कि शारीरिक श्रम बच्चों को डराने की कोई चीज मानी जाती है, अलावा जिस तथ्य के कि ऐसी बातें हमारे समाजवादी देश के मजदूरों के प्रति अपमान सूचक हैं।

ऐसी मिथ्यापूर्ण परिस्थिति जिसमें बच्चों की शिक्षा में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान नहीं है और वह शिक्षा जिन्दगी के यायाव्यों से दूर है अब और सहन नहीं की जा सकती है। क्योंकि समाजवादी समाज में श्रम की प्रतिष्ठा उसकी उपयोगिता के अनुसार होनी चाहिये और ऐसा श्रम करनेवालों को अति पुरस्कार ही नहीं जनता से अत्यंत सम्मान भी मिलना जरूरी है। यह आखिरी बात सबसे महत्व की है। बच्चों के मन में हमेशा यह भावना बढ़ानी चाहिये कि समाज के लिये सबसे अधिक मूल्यवान चीज वह है जिससे समाज जिन्दा रहता है यानी उत्पादक परिश्रम। सब चीजों का निर्माण इसी से होता है। काम करना हर एक सोवियत नागरिक के लिये अत्यंत जरूरी है।

हमें जिस बात का भी ख्याल करना चाहिये कि स्कूल से सोने या चांदी का मेडल लेकर

निकलनेवालों को कालेजों में प्रवेश को विनियम सुविधा देना का जो रिवाज हाल तक था उससे इस परिस्थिति को और भी बढ़ावा मिला है। अपने बच्चा को मेडल मिले इस तीव्र अभिच्छा से कुछ मा बाप शिक्षकों के ऊपर भी दबाव डालने लगे।

असके अलावा अल्प शिक्षा केन्द्रों में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को चुनन के तरीके में और भी गलतियाँ हैं। इसके लिये योग्यता की परीक्षाएँ जरूर होती हैं। लेकिन कालेज में प्रवेश पाने के लिये उनमें सफल होना ही काफी नहीं होगा, उसके लिये मा बापों का समाज में स्थान और प्रभाव भी काम करता है। बहुत दफे विद्यार्थियों को यह कहते हुए सुना जाता है कि परीक्षा में उनके अतीर्ण होने का बाद मा बापों के बीच एक परीक्षा शुरू होती है, जिसमें बहुत तथ्य भी है। कभी कभी तो आखिरी निर्णय अंशपर ही अवलंबित रहता है। इस कारण से अल्प शिक्षा कक्षा में और विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रवेश पाने का सबको समान मौका नहीं मिलता है।

हमारी शालाओं में आनेवाली पीढ़ी को जो शिक्षा दी जा रही है उसके बारे में निश्चय ही पुनर्विचार होना चाहिये। जिसमें सबसे बड़ी बात हमारी वृत्ति बदलने की है। इसके लिये एक नारा ही बना लें जिसे शाला में दाखिल होनेवाले सब बच्चे पवित्र समझें, वह यह कि सब बच्चों को उपयोगी काम करने के लिये तैयार होना है, खासकर साम्यवादी राज्य के निर्माण में। कोओ भी उपयोगी काम चाहे वह फ़ैक्टरी में हो, या खेतों में, ट्रक्टर बनाने के केन्द्रों में हो या प्रशिक्षण संस्थाओं में, कमशालाओं में हो या

कही सरकारी दफतरो में—ओमानदारी के साथ किये हुये काम को हर एक नागरिक के लिये एक पवित्र और सम्मानार्ह चीज समझना चाहिये। जो भी कोओ समाज को वस्तुओं का उपयोग करता है उसको उसके उत्पादन में भी हाथ बटाना चाहिये। साम्यवादी समाज के हर एक सदस्य को उस समाज के निर्माण और विकास के लिये आवश्यक काम में अपना हिस्सा जमा करना है। इसलिये हमारी शालाओं का मुख्य काम हमारी बढ़ती हुई पीढ़ी को ज़िन्दगी के लिये तैयार करने का है—यान उपयोगी काम के लिये। इसी प्रकार से वे साम्यवादी समाज के सिद्धांतों के लिये बच्चों के मन में थड़ा पैदा कर सकेंगी।

शालाओं को जिस बात का ध्यान रखना होगा कि शिक्षा अकतर्फा नहीं बल्कि समग्र जीवन के लिये हो, उनका काम है जैसे नागरिक तैयार करना जिनकी विज्ञान के मूल-सिद्धांतों का ज्ञान हो—और उसी समय नियमित रूप से शारीरिक श्रम करने की तैयारी हो, जो समाज में अपने आप को उपयोगी बनाने तथा समाज के लिये आवश्यक चीजों के उत्पादन करने के लिये अतुल्य हो।

तो जिसके लिये हमें क्या कार्यक्रम बनाना होगा ?

मेरा विचार है कि सब विद्यार्थियों को बिना अपवाद के सात या आठ दर्जे पास करने के बाद औद्योगिक केन्द्रों में या सहकारी खेतों में उत्पादक काम करना चाहिये। यह गाँवों, शहरों, और फेक्टरियों से अनुवर्धित बस्तियों के लिये समान रूप से लागू होगा, कोओ जिससे छूटगा नहीं। जिससे पहली बात तो यह होगी

कि यह पूरी तरह से लोकतन्त्रात्मक होगा— क्योंकि अंशमें सब के लिये बिलकुल समान परिस्थिति होगी। मा-बाप की प्रतिष्ठा या अनुकी विनितियों से कोअी उत्पादक परिश्रम से छूट नहीं सकेगा। दूसरी बात यह होगी कि यह देश के सब युवकों को किसान और मजदूर वर्ग की वीरता-पूर्ण परंपरा में बधुत्व की भावना से बाध देगा।

• हमारी शिक्षा की त्रुटियों को दूर करने का अक्रमान्न तरीका जो कि आज समथ और अनिवार्य भी है सब लड़के लड़कियों को शाला में शिक्पा प्राप्त करते ही फेक्टरियो, सहकारी खेतों और अन्य उत्पादक केन्द्रों में या किसी भी समाजोपयोगी काम में शारीरिक थम के लिये तैयार करना है।

हमारी माध्यमिक व अुच्चशिक्षा का स्वरूप ही अंसा बनाना है जिससे लोगों को काम करने का अच्छा और कारगर प्रशिक्षण मिले। और यह अिजिनियर, डाक्टर, खेतीवाले, वैज्ञानिक, शिक्षक, फेक्टरी के मजदूर सबके लिये होगा। हमें शिक्षा का संगठन अिस दृष्टि से करना है कि सब काम अब से ज्यादा अच्छा और कुशलतापूर्वक हो।

अिस ध्येय को प्राप्त करने के लिये शायद माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को दो हिस्सों में बाट देना अच्छा होगा। पहले हिस्से की शिक्षा सान या आठ साल की होगी और यह सबवे लिये लाजिमी होगी।

बहुत सारे मा बाप और शिक्षाविभाग के वमंचारी भी कह रहे हैं कि अंक आवश्यक निम्नतर सामान्य शिक्षा देने के लिये आठ साल का शिक्षानम ज्यादा अपुथुक होगा। यह ठीक

भी लगता है, लेकिन अिसके बारे में हर अंक राज्य अपनी आवश्यकतानुसार सोचकर अपनी अपनी नीति निर्धारित करे तो ज्यादा अच्छा होगा। अिन आठ सालों के शिक्षाक्रम और अन्तर्गत विषयों के बारे में भी हमें गभीरता-पूर्वक सोचना होगा। ज्ञान प्राप्ति के लिये आवश्यक मौलिक शिक्षा, काम करने की आवत और अुसके बारे में सही दृष्टि, बच्चों का शारीरिक विकास और अुनमें अच्छे सौंदर्य बोध और ठीक सामाजिक मूल्यों का निर्माण अिन बातों को अुसमें प्रथम स्थान रहेगा।

अिस प्रसंग में हमें स्त्रिया की शिक्षा और अुनके काम की विशेष बातों को नहीं भूलना चाहिये। हमारे देश में काम जहां समान होता है वहां स्त्रियों और पुरुषों का वेतन भी समान है। फिर भी दैनिक जीवन में स्त्रियों के और भी कुछ विशेष कार्य होते हैं जो बिलकुल अनिवार्य भी हैं। ये हैं शिशु-संगोपन, गृहकार्य, सिलाअी का कार्य अित्यादि। अिसलिये लड़कियों के शिक्षण में अिस प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिये।

सहरो और औद्योगिक केन्द्रों में आठ साल का शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद बच्चों का शायद किसी विशेष अुद्योग में शिक्षा सेना अच्छा होगा। अुसके साथ साथ अुनकी पढाअी भी चलती रहेगी। लेकिन वह अुनके काम के साथ-साथ पूरा-पूरा सवधित होनी चाहिये। विद्यार्थियों को वस्तुओं के अुत्पादन का ज्ञान और निपुणता से काम करने का अम्यास होना जरूरी है और यह सिर्फ तात्विक नहीं, प्रत्यक्प रूप से होना चाहिये।

देहातों में भी आठ साल की शाला की शिक्पा के बाद विद्यार्थियों को खेती, पशुपालन (सोपास पृष्ठ २३४ पर)...

मैक्सिको में नयी शिक्षा

के. अस्. थाचार्ल

अेक अमेरिकन अतिथि ने सेवाग्राम की सस्थाआ को देखने और नयी तालीम की शैक्षणिक प्रक्रियाओ का निरीक्षण करने के बाद कहा कि मैक्सिको में आजकल जो शिक्षाव्यवस्था चल रही है वह बहुत कुछ हमारे काम के साथ मिलती जुलती है। अन्होंने मैक्सिको की शिक्षा पद्धति का जो सक्षिप्त विवरण दिया उससे मेरी जिज्ञासा जागृत हुयी। और अिस विषय का जो मैंने थोडा सा अध्ययन किया यह लेख अुसका परिणाम स्वरूप है।

मैक्सिको में शिक्षा के द्वारा अेक प्रजातन्त्र कायम करने का प्रयत्न हो रहा है। अुस दश में निरक्षरों की सख्या बहुत है, लेकिन वहा के शिक्षाशास्त्रियों न साक्षरता से ज्यादा अुससे भी गहरी कुछ बुनियादी बातों को प्राथमिकता दी है। अन्होंने दखा कि अक्षर ज्ञान का प्रसार करने के पहले लागू के सामाजिक व आर्थिक स्तर अूचा अुठाना जरूरी है, और बच्चों की शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब कि प्रौढसमाज को भी अुसम शामिल किया जाय। अिसीलिये शुरूआत से ही सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने का ज्यादा प्रयत्न रहा वनिम्बत निरक्षरता निवारण के।

वहाँ की केन्द्रीय सरकार अिस तथ्य से वाकिफ थी कि लोगों के सन्धिय सहयोग के बगैर थान्ति नहीं सध सकती है। अिसलिअे अुनका पहला काम अिस नये विचार का सन्देश गाव गाव में पहुँचाने के लिअे निष्ठावान शिक्षकों को भेजना था और गाववालों से खुद माग आने के बाद ही वही शाला की स्थापना होती थी। शिक्षक भी ययासभव अुसी समुदाय से ही नियुक्त किया जाता है। दूर कहीं से किसी अपरिचित को नहीं बुला लेते हैं। शाला के लिअे मकान बनाने और अुत्तरी-मरम्मत करने में ग्रामसमुदाय पूरी जिम्मेदारी के साथ भाग ले अिस सर्व पर ही शाला शुरू की जाती थी।

खर्चिले मकानों और विपुल साधन सामग्रियों की अपेक्षा नहीं होती थी। वहा की ऋतुओं और आबोहवा के लिअे सादे सरल मकान ही अपयुक्त हैं और ये ग्रामवासी स्थानीय सामग्रियों से अपने ही परिश्रम के द्वारा बना ले सकते हैं। अिसके लिअे जगह भी गाव वाले ही दते थ। केन्द्रीय सरकार सिर्फ शिक्षकों का वेतन देती थी। शाला की पूरी जिम्मेवारी ग्रामसमाज को है। शिक्षा विभाग से केवल मार्गदर्शन मिलता है।

(पृष्ठ २३३ का संपाद)

और अन्य कृषि सबधी विषयों का तात्त्विक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलना चाहिये। वे अग्यान्य अुद्योग भी सीख सकते हैं।

अिस प्रकार शाला से निकलने पर लड़के

लड़कियों को अुचित शिक्षा मिली होगी, जिसमें कम से कम किसी अेक अुद्योग की अच्छी जानकारी भी हो। तब वे भली भाँति तैयार होकर जीवन में प्रवेश कर सकेगे।

शाला का शिक्षाक्रम किसी बाह्य सत्ता का निर्धारित किया हुआ नहीं था। न ही कुछ विशेषज्ञ या समितियाँ बैठकर अलग अलग विषयों की पाठ्यविधि बना देती थी। वस्ति वह समाजकल्याण के लिये शाला के द्वारा किये जानेवाले विभिन्न कामों पर आधारित था। शिक्षक विद्वान नागरिका के मार्गदर्शन में जिस तरह की कौशल प्रवृत्तियाँ चलाता और अन्तर्ही को शिक्षण का माध्यम बना देता था।

जैसे जैसे समाज में समस्याएँ उत्पन्न थी वैसे वैसे उनका हल निकालते जाते थे। अगर पीने के लिये आवश्यक शुद्ध पानी का प्रश्न था तो शिक्षक विद्यार्थियों के साथ पानी के स्रोतों का पता लगाने के लिये निकल जाते, पानी के शुद्धीकरण की विधियों का अध्ययन करते और उसके लिये आवश्यक पथरों की छलनी बगैरह साधन तैयार करते। अगर उस ज़िले में, म को भी सार्वजनिक बीमारी पैदा हुआ तो उसके प्रतिबन्ध के अपायों और अप्रयुक्त औषधों की जानकारी प्राप्त करने में लग जाते और प्रत्यक्ष सेवाकार्य भी करते थे। हर शाला में दवागिरी की एक छोटी पेटी रखी गयी।

कभी कभी उस प्रदेश की खेती या स्थानीय उद्योग मुधारने या उत्पादित वस्तुओं को बाजार में पहुँचाने का काम शाला ने उठाया और वही शिक्षाक्रम का आधार बन गया। मकाना की मरम्मत करने का प्रश्न खड़ा हुआ तो शिक्षक और विद्यार्थीगण उसमें प्रत्यक्ष काम करने लगे। तब बड़बीगिरी का विशेष अध्ययन होता था। और एक समय उस ज़िले में खाद्य की समस्या खड़ी हुई तो पौष्टिक तत्वों की दृष्टि से उत्तम शाकसब्जों व फल के पेड़ लगाने का काम शुरू किया तथा समतोल आहार के

विषय में अध्ययन करके लोगों को अपने भोजन की योजना बनाने में मदद करने लगे। मतलब, शाला की सब प्रवृत्तियाँ और अध्ययन के विषय समाज की तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति में मदद पहुँचाने के अद्देश्य से ही चुने जाते थे और समाजजीवन पर उसका बहुत अच्छा परिणाम देखने को मिलता था।

जिस प्रकार शाला की प्रवृत्तियाँ स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होती हैं, फिर भी विभिन्न शालाओं के कार्यक्रमों में काफी साम्य पाया जाता है। क्योंकि सरकारी निरीक्षकों का अनुभाव जिन कामों में मिलता है अहा कही को भी विशेष अच्छा काम, सफल प्रयोग या नया विचार मिला है उनकी जानकारी दूसरी शालाओं में पहुँचाते हैं और वहाँ के शिक्षक भी उसका लाभ उठाते हैं। जिस प्रकार आज हर एक शाला का अपना बगीचा है। बहुतों में नाट्य, नृत्य आदि के लिये मंचों की व्यवस्था है। प्रौढ शिक्षा और सामाजिक मनोरंजन का कार्यक्रम सार्वजनिक हो गया है। एक शाला में जो मद्य-निषेध का काम शुरू किया था वह अब सारे राज्य में फैल गया।

आज सब शालाओं में खेलने का मैदान है। बच्चों में कर्मशालायें हैं जहाँ बच्चे अपनी रुचि के अनुसार के काम करते हैं। खेती और हस्त उद्योग सब जगह चलते हैं। जिससे बहुत जगह जो स्थानिक बलाओं खतम हो रही थी वे पुनर्जीवित हो गयी। फिर भी खास साक्षरता प्रसार का कोशिश प्रयास कही नहीं दीसता है। वहाँ के शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि जब समाज का जीवनस्तर उठेगा तो साक्षरता आनुपगत रूप में आ ही जायगी।

शाला के लिये कभी जगह पुराने मकानों

और गिरजापरो का अपयोग हो रहा है। जहाँ वच्चे बैठकर पढ़ते या काम करते हैं, वहाँ खूब प्रकाश और शुद्ध हवा मिले, जिसका पूरा ख्याल रखा जाता है और शाला को खूब सुन्दर बना लेते हैं। आमतौर पर वह गांव में सब से आकर्षक जगह होती है। दरवाजे पर लिखा रहता है—लोकगृह। सब उपकरण पयासभव स्थानीय सामग्रियों से तैयार किये होते हैं। दोबारा को वच्चो के बनाय चित्र, कोअी महान वाणी या किसी पुरानी लोककथा के दृश्यों से सजाते हैं।

हर अंक शाला का अंक छोटा पुस्तकालय है। यह बहुत बड़ा न हो तो भी अंक अच्छा उपयुक्त संग्रह होता है। शिक्षा विभाग के द्वारा सब शालाओं में पुस्तकें दी जाती हैं। ये खासकर बच्चों के लिये लिखी और सुन्दर चित्रित होती हैं। छोटी कक्षाओं के लिये उपयोगी पुस्तकों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, ये विशेषज्ञों के द्वारा तैयार की जाती हैं। ये इस देश की संस्कृति व परंपरा के अनुसार ही हो जिसका विशेष ध्यान रखा जाता है।

ज्यादातर स्कूलों में शिक्षक के लिये अंक अलग कमरा रहता है। छोटी-से-छोटी शालाओं में भी कर्मशाला तथा मूर्तियाँ या श्रमगात्र आदि जानवरों को पालने की जगह और उसकी व्यवस्था होती है। कुछ शालाओं के पास खेतों के लिये काफी बड़ी जमीन है और वहीं-वहीं अंक छोटे में आदर्श देहाती घर का नमूना भी रहता है। देहातों के लिये उपयुक्त अच्छे घर बनाने की कुशलता हर अंक रटने की गिराफत अनिवार्य अंग माना जाता है।

अब शिक्षक की बात ले। असल में मेक्सिको में शिक्षक ही शाला है। उनकी नियुक्ति

केन्द्रीय शिक्षा विभाग के द्वारा होती है लेकिन वह हमेशा स्थानीय समाज की सलाह से ही होती है। यह जरूरी माना जाता है कि शिक्षक उसी प्रदेश का रहनेवाला हो। शिक्षकों का चुनाव नये विचारों के अनुसार शाला चलाने की अनुकूल क्षमता पर आधारित होता है। उन्हें अपने काम पर निष्ठा हो, वे लोगों की जरूरतें समझ सके, उनसे हिलमिल कर रहे और उनमें सेवावृत्ति हो जिन बातों की शैक्षणिक योग्यता से भी ज्यादा महत्व दिया जाता है। कभी-कभी तो वह छठे दर्जे तक ही पढा हुआ होता है या कहना चाहिये कि अंक व्यक्ति में शिक्षक के लिये आवश्यक सब गुण अगर हो तो उसका साक्षर होना मात्र पर्याप्त माना जाता है। इस विषय पर अंक पुस्तिका में लिखा है, "वहाँ के शिक्षक अच्छे सहृदय स्त्री-पुरुष हैं। उनमें से ज्यादातर की तो प्राथमिक शाला से ऊपर कोअी वाक्यावदा शिक्षा नहीं हुई है। पढ़ने लिखने की क्षमता के अलावा उनमें से अधिकांश किसी तरह के पाण्डित्य का दावा नहीं कर सकते हैं। फिर भी शिक्षकों में आत्मविश्वास और नैतिक बल है। वे अपने काम के प्रति असाधारण निष्ठा रखते हैं।"

शिक्षा के इस नये दर्शन के लिये अंक नये प्रकार का शिक्षक चाहिये, सिर्फ विद्वानों से काम नहीं चलेगा। पुराने शहरी शिक्षक गांव में जाकर ग्रामवासियों के साथ रहने, उनकी आवश्यकताओं को समझने और नये कार्यक्रम को अपनाने के लिये तैयार नहीं होते थे। वास्तव में अबसर पुराने तरीके का प्रशिक्षण बाधारूप ही होता था। शिक्षाशास्त्र के कुछ कोरे सिद्धांतों को रटने से ज्यादा जिन्दगी को समझना शिक्षक के लिये आवश्यक है।

असका यह मतलब नहीं कि शैक्षणिक तत्वों और पद्धतियों के प्रति अपेक्षा है। शिक्षकों को काम करते करते प्रशिक्षण पाने की व्यवस्था है और इसमें उनको सब शैक्षणिक कमियाँ को दूर करने का भरसक प्रयत्न होता है। शाला का काम साल में दस माह ही चलता है अंक महीने की छुट्टी होती है और अंक महोना शिक्षक प्रशिक्षण-संस्था में अध्ययन करते हैं।

शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये केन्द्रीय शासन की ओर से प्रचलित विद्यालयों के अलावा कुछ "सांस्कृतिक सत्र" भी काम करते हैं। इन सत्रों में कुछ विशेषज्ञों के दल हैं और ये किसी क्षेत्र में न बैठकर चलते फिरते रहते हैं। प्रत्येक सत्र का अपना क्षेत्र है और उसमें कोअी अंक केन्द्र चुनकर वे ३० दिन का प्रशिक्षण शिविर चलाते हैं। वरीय अंक सौ मील व्यास के सब स्कूलों के शिक्षक उसमें अंकटठे होते हैं। वे अंक साथ रहते हैं, अंक साथ भोजन करते हैं और आपस में विचार विनिमय करते हैं।

सत्र के कार्यकर्त्ताओं में अंक खेती का, अंक बुधोगों का और अंक कायिक शिक्षा का विशेषज्ञ रहता है, अंसके अलावा अंक डाक्टर या नर्स तथा अंक समाज सेवक भी होता है। अन्तरी नियुक्ति किसी स्कूल बालेज की अपाधि के नहीं बल्कि प्रत्येक काम के अनुभव और सेवा भावना के आधार पर होती है। ये वैसे सज्जन स्त्री पुरुष होते हैं जो अपनी निष्ठा और अँचे आदर्शों से प्रशिक्षणार्थियों को प्रभावित कर सके। केन्द्रीय शिक्षा विभाग के साथ अन्तका घनिष्ठ सम्पर्क रहता है और विभाग के मार्गदर्शन में ही काम की रूपरेखा तैयार की जाती है।

प्रशिक्षण शिविर उस क्षेत्र के अँसे किसी केन्द्रीय स्थान पर चलते हैं जहाँ अंक आदर्श

पाठशाला भी हो। अुद्घाटन के दो तीन दिन पहले ही शिक्षक अंकटठे होते हैं और बिना विलव के अपना काम शुरू कर देते हैं। सत्र के पास अंक चलता फिरता पुस्तकालय, कायिक शिक्षा के लिये आवश्यक साधन तथा बडईगिरी, गृहविज्ञान, खेती आदि के लिये अपकरण भी रहते हैं। अन्तका अुद्देश्य ग्रामीण परिस्थिति में व्यावहारिक शिक्षा दन का होता है।

अंक बहुत महत्व की बात यह है कि स्थानीय ग्रामसमाज भी अंस संस्था के काम में रुचि लेता है। अन्तम से कुछ लोग खेती, औद्योगिक शिक्षा व गृहविज्ञान के वर्गों में शामिल भी होते हैं। संस्था का अंक मुख्य अुद्देश्य शिक्षा के कामों में समाज का सहयोग और विश्वास प्राप्त करना है। वह ग्राम-समाज और शाला अंक तरह से संस्था की प्रयोग शाला बन जाती है। और प्रत्येक प्रशिक्षण शिविर उस स्थान के लिये कोअी न कोअी स्थायी लाभ छोड़ कर जाता है—जँसा अंक अच्छा बगीचा, खेल का मैदान, नाट्यमंच, सफाअी की सुविधायें अित्यादि। शिविर का समाप्ति दिवस समाज के द्वारा बडे अुत्साह के साथ मनाया जाता है। गाव की तरफ से शिक्षकों को दावत दिया जाता है और प्रदर्शिनिया, खेलकूद, नाट्य, नृत्य आदि मनोरंजन कार्यक्रम भी रहते हैं जिनमें गाव के लोगों के साथ शिक्षक भी भाग लेते हैं।

। अिन सत्र का मतलब यह निकलता है कि शाला का काम बच्चे तक ही सीमित नहीं रहता है, बयोंकि यह पूरी तरह से जान लिया गया है कि समाज के विश्वास और सक्रिय सहकार के बिना शाला का काम सफल नहीं हो सकता है। अगर समाज के विचारों में

परिवर्तन नहीं हुआ तो शाला की शिक्षा पाने के बाद बच्चा बुरा समाज में जम नहीं पायेगा। इसीलिए शाला की प्रवृत्तियों में प्रौढ शिक्षा और लोगों के सामाजिक व आर्थिक स्तर बूँचा अठाने के काम को ज्यादा महत्व देते हैं वनिस्वन पुस्तकीय शिक्षा के। हरभेक शाला में रात को प्रौढ शिक्षा के वर्ग चलते हैं। कभी दफे तो रात की शाला में उपस्थिति दिन की शाला से ज्यादा नहीं है। अिनमें नागरिक स्त्री-पुरुष आते हैं, कभी कुछ पढना होता है, कभी संगीत वा कार्यश्रम, कभी किसी विषय पर व्याख्यान और कभी किसी सामाजिक समस्या पर चर्चा होनी है। यहा स्वास्थ्यरक्षा-सबन्धी जानकारीय दी जाती है, घरों की व्यवस्था सुधारने के बारे में सुझाव मिलते हैं। अपने सस्कार व परंपराओं को कायम रखने के बारे में ये शिक्षक हमेशा जागरूक रहते हैं।

केन्द्रीय शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से अिन शालाओं का निरीक्षण होता है। ये निरीक्षक शिक्षा के अिस तम पर दर्शन के तहत होते हैं और निरीक्षण का अुद्देश्य शाला के संगठन और शिवपण पद्धतियों को सुधारना तथा समाज के साथ सबन्ध बढ़ाने में शिष्यरु की सहायता करना होता है। शाला के काम और विद्यार्थी की प्रगति के आलेख रखने में सतत सुधार वा प्रयत्न होता है।

निरीक्षक हफ्ते में तीन दिन शिष्यरु के साथ मिलकर चर्चयें करते हैं और तीन दिन विभिन्न शालाओं के काम का निरीक्षण करते हैं। व्यवस्था और दफ्तर का काम कम-से-कम किया जाता है। ज्यादातर शाम का समय या रविवार ही अिसके लिये दिया जाता है। निरीक्षक यह देखता है कि समाज के लिये शाला का क्या काम हो रहा है, बच्चों के लिये औषधों का प्रबन्ध है क्या, पीने के लिये शुद्ध पानी की व्यवस्था है क्या और समाज के साथ शाला का सबन्ध कैसा है।

अिस प्रजातन्त्र देश की शिष्या व्यवस्था के अेक सामान्य पर्यवेक्षण से भी यह पता चलता है कि लोगों के जीवन पर शिष्या विभाग की नीतियों और व्यवहारों का क्या असर होता है। अिनकी नीति में समाज-कल्याण के कामों में शिक्षक से नेतृत्व की जो अपेक्षा की जाती है शिक्षक और शाला को जो अेकरूप मानते हैं, समाज के साथ शाला के सबन्ध पर जो जोर दिया जाता है, सांस्कृतिक और कलात्मक पहलुओं को धति न पहचाने हुए व्यावहारिक कामों को शिक्षाक्रम में जो स्थान दिया जाता है और सामाजिक शिक्षा को बालशिक्षा की बुनियाद माना जाता है ये कुछ अैसी बातें हैं जिनके अूर हमारे देश के शिक्षणशास्त्रियों को भी श्रद्धापूर्वक विचार करना लाभदायक होगा।

मे आर्थिक समता चाहता हूँ, पर यह कहना से, धर्मनिरपेक्षता से आनी चाहिए, तभी यह कल्याणकारी साबित होगी। नहीं तो विषमता में अेंते दुःख पैदा होने हैं, जैसे ही दुःख समता में दूसरी तरह से पैदा होंगे। यह गुणविकास की दृष्टि बड़े महत्व की है। शरीर-धर्म और कहना याने नीचे देखने की आवत, हमें अिन गुणों की समाज में स्थापना करनी है। अिसी से समाज में समता स्थापित हो सकती है।

सरल सेप्टिक पाखाना

अप्पा साहेब पटवर्धन

८

[हमारे देश के गावों और शहरों में भा अनेक मुख्य समस्या पाखानों की है । नओ तालीम के और अन्य रचनात्मक केन्द्रों में भी सस्ते और सरल पाखाने के कभी प्रयोग हुअे हैं । सेवाग्राम में डॉ केसल नाम के अमेरिकन डाक्टर ने अस विषय में कुछ शोधें की थी और अन्होंने अनेक नये किस्म का पाखाना बनाया जिसका विवरण नओ तालीम के जनवरी १९५७ के अंक में प्रकाशित किया गया था । श्री अप्पासाहेब पटवर्धन ने असमें और कुछ सुधारनके अनेक पाखान का प्रकार निकाला है जिसमें यह दृष्टि है कि वह स्थानीय कुम्हारों से ही बनाया जा सके । असका विवरण जो यहाँ दिया जा रहा है, अस विषय में काम करनेवालों के लिये अपयोगी होगा । —सं]

देहातों में जहा जगह की खास समस्या रहती है यह अत्यंत सस्ता, स्वच्छ और सरल पाखाने का प्रकार है ।

खनन-असमें सेप्टिक या पल्ला के तरीके का किंतु थोडा-सा फेर-बदल कर बनाया हुआ मलपात्र रहता है । स्थानीय कुम्हारों द्वारा वह बनवाया जा सकता है । अससे असकी कीमत कम हाती है और गाव के कुम्हारों को काम भी मिलता है । अस पात्र के पीछे के हिस्से में तिरछी अतरती हुआ अनेक नली होती है । अस नली के मुह के पास अनेक परदा रहता है । वह परदा मल को जाने के लिये रास्ता बना देता है और मल जाने के बाद बंद हो जाता है । मल पीछे गड्ढे में गिरता है और यह गड्ढा पूरा ढका हुआ होता है । मल परदे को खोलकर बंद गड्ढे में गिरता है । गदी हवा बाहर निकलने के लिये गड्ढे के बीच में अनेक अूची चिमनी-पात्रिप लगाया जाता है । गदी हवा बाहर आने का तथा मक्खियों को मल पर बैठने का मार्ग परदे से बंद रहता है । असलिअे स्वास्थ्य की दृष्टि से यह पाखाना पूर्ण सुरक्षित

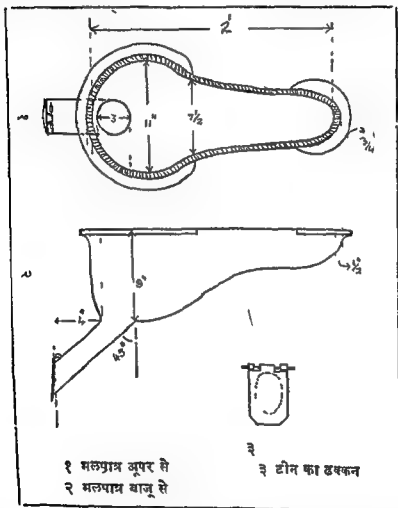
है । कुआ के आस-पास २५ फीट के भीतर पाखाना न हो असका ध्यान अवश्य रहे ।

तालीमी सच, सेवाग्राम में टीन के बनाये और खर का परदा लगाये अैसे पाखाने की योजना पहले बनायी थी । अस योजना में थोडा फेर-बदल कर यह पाखाना बनाया गया है । सेप्टिक टैंक पाखाने की सारी अच्छाइयाँ असमें हैं बल्कि यह कम पानी से साफ होता है और खर्च तो बहुत ही कम है । वैसे ही असकी रचना भी बिल्कुल सरल है । असलिअे असका सरल सेप्टिक नाम यथार्थ ही सिद्ध होता है ।

पाखाने की रचना

गड्ढे का नाप-गड्ढे की खाद निकालकर और जगह अपयोग किया जा सकता है या गड्ढे में ही रखा जा सकता है । अस गड्ढे पर फल का पेड लगा सकेगे या चार-पाच गड्ढे भर जाने के बाद वोच में फलों के झाड लगाने से अुनकी जड़ों को आस-पास की खाद मिल सकती है । खाद निकालकर ले जानी है या गड्ढे में ही रखनी है असपर गड्ढे का माप निर्भर रहेगा । गड्ढे में न अतरते हुअे फावडे से ही खाद

निकाल सकें इसलिये गड्ढे की चौड़ाई ढाजी होगी । गड्ढे का सामने का हिस्सा लव फीट और गहराई तीन फीट से अधिक नहीं गोलाईकार बनाया जाय । जिस गड्ढे का होना चाहिये । लबाई चार फीट रख सकेंगे । ऊपरी हिस्सा पक्का बाध लेना चाहिये जिससे गड्ढे की खाद यदि निकालनी न हो तो चौड़ाई कि वर्षा का पानी गड्ढे में और गड्ढे के भीतर तीन फीट तक भी रख सकेंगे । गहराई का गदा पानी बाहर न आ पाये ।



जितनी चाहिये झुतनी रख सकेंगे जिससे गड्ढा अधिक समय तक चल सके ।

गड्ढे का आकार—गड्ढे का आकार चौकोन हो । गड्ढे की दीवारें अन्दर की ओर झुकी हुई हों जिससे अंनुके गिरने की कम सम्भावना

गड्ढे के लव गोलाईकार हिस्से की ओर ९" अंचा २७" x २५" आकार का मिट्टी का अंक् चबूतरा बनाकर उसमें मलपात्र का सामने का हिस्सा अंचा रखा जाय जिससे नली को अधिक ढाल मिल पाये और मल आसानी से

फिसल जाय । पर रखने के लिअ मलपात्र के कम चौड़े हिस्से के दोनो बाजू दो पायदान भी बनाने चाहिये । पायदान का पीछे का हिस्सा अूचा करने से चबूतरे के पीछे की ओर किये गये ढुलाव की पूर्ति हो जायगी और बैठनेवाले का तोल पीछे की ओर नहीं जा सकेगा । चबूतरा पक्का लीप पोतकर ठीक बनाने के बाद अपूर रेती की पतली-सी तह दी जाय । सूखने के बाद रेती और सिमेंट को ४ : १ के अनुपात में मिलाकर पतला-सा थर दिया जाय और अपूर सिमेंट की पोलिश की जाय । अुसको गोले बोरे से ढककर १०-१२ दिन रखने से चबूतरा पक्का बनेगा और पानी से चबूतरे को कोओ नुकसान नहीं पहुँच सकेगा । सफाओ करते समय चबूतरा धो सकेंगे । मलपात्र को भीतर से कोलत्तर लगाना चाहिये ।

पाखाने का घेरा—यह घेरा कामचलाभू, मध्यम और कायम—तीनों प्रकार का बना सकेंगे ।

कामचलाभू घेरा चार कोनों में चार खम्भे गाड़कर चटाओ, घास, बोरे, पत्ते या पेड़ों के पत्तों से बनाया जा सकता है । वर्षाकाल में अपूर घास-फूस, टोन या पेड़-पत्तों का छप्पर बनाया जा सकता है ।

मध्यम प्रकार का घेरा लवड़ी की चौकट बनाकर अुस पर बास के टट्टे, बोरा या टोन आदि ठोकने से बनाया जा सकता है । यह घेरा अेक जगह से दूसरी जगह कभी भी ले जा सकेंगे । हवा से अिसके गिरने का भय रहता है अिसलिअे दो विरुद्ध दिशाओं में खम्भों के पास खूटे गाड़कर चौकट अुसमें बाध देनी चाहिये ।

कायम घेरा पक्की दीवार का बनाया जा सकता है । गड्ढे की ओर की दावार दो अिच

से ज्यादा चौड़ी नहीं होनी चाहिये क्योंकि अुसमें से मलपात्र की नली गड्ढे में निकलनेवाली है । अिसलिअे दीवार का यह हिस्सा चटाओ या पत्तों से ही बनाया जाय । सिमेंट काश्चीट की दो अिच चौड़ाओवाली दीवार भी बनायी जा सकती है । अुसके बीच में लाहे के सलाकों के बदले बास की लकड़िया दे सकते हैं ।

मलपात्र का ढक्कन—मलपात्र के गड्ढे के मुँह पर टोन का ढक्कन दिया जाय । अिस ढक्कन के दोनो किनारों में दो हँडल लगाये जाय । पात्र के मुँह के पास अपूर के हिस्से में अेक छिद्र रखा जाता है । छत्री के तीर का अेक टुकड़ा ढक्कन के अेक कान से पारकर पात्र के मुँह के छेदमें से ढक्कन के दूसरे कान में से निकाला जाय । अिससे खुलने मिड़नेवाली ढक्कन तैयार हो जायगी । गड्ढा ढकने के पहले अुसे घास-फूस और पत्तियों से भर देना अच्छा होगा किंतु जिनको गड्ढा अधिक समय तक चलाना है अुन्हे खाली गड्ढा ही बद कर देना चाहिये ।

गड्ढे का ढक्कन—गड्ढे के चारों ओर किनारी की जो छोटी दीवार बनायी जाती है अुसके गोली रहते समय ही बास की कलमिया चार-चार अंगुल के अतर पर गड्ढे के अपूर फैलाकर रखी जाय ताकि वे पक्की जम सकें । पात्र के मुँह के अपूर कम से कम दो अिच अतर रहे अितनी अूचाओ पर बास की लकड़ियों लगानो चाहिये । अिन लकड़ियों पर अेक चटाई बिछायी जाय । चटाई में दोनो बाजू डामर पोतने से अुसमें दीमक नहीं लगेंगी । अिस चटाई पर गोबर-मिट्टी का अच्छा-सा पुट देना चाहिये । चटाई में गड्ढे के पीछे की ओर अेक छेद बनाकर अुसमें छ-सात फिट अूचा बास या

और किसी चीज की नली वास की कंचो के सहारे खड़ी करनी चाहिये। सहारे के दो वास और चिमनी की नली अिन तीनों को अेक साथ बाध दिया जाय। नली के नीचे के हिस्से में मिट्टी का लेप भी देना चाहिये। अिस नली के द्वारा बद गड्ढे की दूषित हवा बाहर निकल जायगी। नली के अूपर के हिस्से में अेक वारीक जाली बाधी जाय अिससे मच्छर अन्दर नहीं जा सके। गड्ढे के चारो ओर काटो का घेरा बनाना चाहिये अन्यथा मवेसी या बालक के पैर पडने से अुसके टूटकर गिर जाने की सभावना है।

अिस्तेमाल का तरीका- पाखाने का अुपयोग करते समय मलपात्र के मुह के पास का हिस्सा पानी डालकर थोडा गोला करना चाहिये। अिससे मल पात्र से चिपकेगा नहीं और सीधा निकल जाने में मदद होगी। शौच के बाद पानी लेते समय पानी के प्रवाह के साथ साथ मल तो फिसल जायेगा ही। अिसके बावजूद भी थोडा-सा मल चिपककर रह गया तो झाडू व थोडे से पानी की सहायता से पात्र साफ करके रखना चाहिये। अैसा न होने से मल अधिकाधिक अिकट्ठा होता चला जायेगा और बाद में शौच के लिये आनेवालों को बडो दिक्कत होगी। पाखाने में पानी और झाडू हमेशा रहे। मल-पात्र की नली में सस्ता तेल बीच बीच में लगाते जाने से मल फिसलने में मदद होगी।

गड्ढे में अेवत्रित होनेवाले मल को कचरा, मिट्टी, राख से न ढकने से भी चलेगा क्योकि मलपर हमेशा पेशाब और पानी गिरते रहने से मल अपने आप ही पतला होकर गड्ढे में फैल जाता है। मल का अेक ही जगह ढेर होगा अैसी आसका करने की कोअी आवश्यकता नहीं।

कंपोस्ट-अिस गड्ढे में मल-पात्र के द्वारा घर का कचरा, भाजी के सडे गले सराब टुकडे, केले के छिलके, कागज के टुकडे, फटे पुराने कपडो के बियडे, अिस तरह की सडनेवाली वस्तुअें डाली जा सकती हैं अिससे मल की गदगी कम होने में तथा अधिक कंपोस्ट बनाने में मदद होगी। यह कचरा नडो से अपने आप फिसल नहीं पायेगा अिसलिये लकडो से अुसे ढकेल देना चाहिये। हर परिवार में यह पाखाना साथ-साथ कचरे के गड्ढे का तथा मूत्री घर का भी काम देगा। पारिवारिक खाद गड्ढे के भी खुले और बंदमूरत दीखने के बदले और मुर्गी, कौअो के द्वारा और भी गदगी फैलाने के बदले अैसी पेटो-बद व्यवस्था विशेष अच्छी होगी। पास-पास में दो मलपात्र और गड्ढे बनाये जाने से अुन्हे बदल-बदलकर अुपयोग में लाया जा सकता है। और खाद भी निकाली जा सकती है।

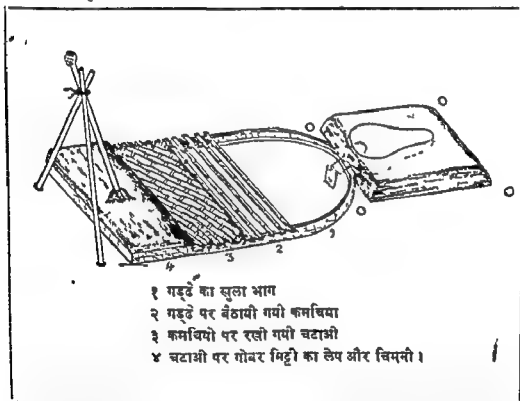
बार-बार गड्ढे की खाद बाहर निकालते समय गड्ढे की दीवारे गिर न पायें अिसलिये जमीन के प्रकार के अनुसार गड्ढे का मुह, मलपात्र की ओर की दीवार या तो चारो दीवारे पत्थर या आडो से बनवानी चाहिये। तल कच्चा ही रहे। पाखाने का घेरा यदि पक्का रहता है तो गड्ढे की दीवारे भी पक्की होनी ही चाहिये।

बच्चो के लिये छोटे पाखाने-देहाती में सर्वत्र और अहरो में भी अनेक स्थानो पर प्रौढ लोग किर्स, तरह के पाखानो में या दूर जगलो में शौच के लिये जाने पर भी छोटे बच्चो को घर के आस पास खुले में शौच के लिये बिठाते है और अुनका मल कौअे, मुगियां और कुत्ते फैलाकर गदा कर देते है। अिसलिये छोटे

बालको के लिये छोटे से मलपात्र का छोटे गड्ढे पर पक्का किया हुआ पाखाने का होना विशेष रूप से जरूरी है। रात के समय प्रौढ़ लोग मूत्रीघर के रूप में उसका उपयोग कर सकते हैं।

पूति—रत्नागिरी जिला खादी सघ—मु० पो० गोपुरी, जिस समस्या से मिट्टी के या टीन के परदे लगाये हुअे मलपात्र ढाँधी रूपसे में

रत्नागिरी जिला खादी सघ ने प्लास्टर ऑफ पेरिस के साचे भी तैयार किये हैं। अनुकी कीमत प्रति साचा १५ रु रखी गयी है। ढलायी खर्च इसमें शामिल नहीं है। अंक साचे की सहायता से चाहे जितने मलपात्र बना सकेगे। छोटे मलपात्र और साचे भी त्रमश डेढ़ और बारह रूपये में मिल सकेगे। पात्रों में कलजी करने का भी प्रबंध किया गया है।



मिल सकते हैं। मिट्टी के मलपात्र को दूर तक ले जाना सुविधाजनक नहीं है जिस कारण स्थानीय कुम्हारों द्वारा बनवाकर सस्या के या ग्राम सेवक के मार्फत लेना ज्यादा अच्छा होगा। अन्हें बनाने की विधि सरल हो और निश्चित माप के पात्र बन सके जिसलिये

मदद—अंसे पाखाने अपने घर के उपयोग के लिये रखनेवालों के लिये गांधी स्मारक निधि की ओर से मदद भी मिल सकती है। उसके लिये श्री चाल्क, महाराष्ट्र शाखा गांधी स्मारक निधि, काकावाडी, वर्धा जिस पतेपर पूछताछ करनी चाहिये।

गोशाला मंत्री का मासिक प्रतिवेदन

माह-दिसम्बर १९५८

[सवाग्राम नञी तालीम परिवार में जितनी प्रवृत्तियाँ चलती हैं उन सबका विस्तृत विवरण हर महीने पारिवारिक आम सभा के सामने पेश किया जाता है। इसमें अक्सर महीने में जिस विभाग में काम की प्रगति, अक्सर सुवर्ध में अर्जित ज्ञान, अर्थात् वस्तुओं और आमद खर्च के आकड़े तथा काम में जो भी कठिनाइयाँ आयी हों वे और उनके निवारण के लिये अपायों का सुझाव भी रहता है। महीने के आखिर में हर विभाग के मंत्री अपना-अपना विवरण तैयार करते हैं, फिर वह अपने वर्ग में पढ़कर अगले चर्चा और आवश्यक संशोधन होता है। और उसके बाद यह आम सभा के सामने आता है। दिसम्बर महीने के हमारे गोशाला नायक का यह विवरण नञी तालीम के पाठकों के सामने पेश किया जा रहा है- स]

पूज्य अध्यक्षजी, गुरुजनो, तथा बहना और भाजियों ?

आप लोग ने मुझे गोशाला नायक बनाकर जो अच्छा मौका दिया वह अविस्मरणीय है क्योंकि जिससे मैंने बहुत चीजें सीखी। मैं गोशाला कार्य का संक्षिप्त विवरण आपके सामने पेश करता हूँ। मेरा काम सुबह ४ बजे से शुरू होता था। जिस समय दूध दुहने की पूरी व्यवस्था और गोशाला सफाई का काम करता था। शाम को ४ बजे पूरी टोली के भाजी आकर अपने-अपने कार्य में जुट जाते थे, जैसे चारा काटना, गायों की बर्सीम घास देना, खुराक गायों को देना, अर्थात् ब्रश लगाना घोंना आदि। हमारी टोली में नये भाजियों दिनकर ३-१२-५८ को प्रवेश किया। जिससे काम चलाने के लिये कोअी कठिनाई महसूस नहीं हुयी। माह के आखिरी दिनों पाँच भाजी बीमार पड़े थे। लेकिन दाकी जो भाजी थे अन्होंने सब कठिनाइयों को झेलते हुए पूरे कार्य को आनन्द के साथ निभाया। दिनकर १६ को गेव बछड़ा का देहात कैसे हुआ, किस बीमारी

से हुआ, यह जानने के लिये जिसका शरीर परीक्षण किया गया। जिसमें बहुत चीजें सीखने लायक थी।

दुनिया में जितने भी गोशाला प्रेमी हैं उनका कहना है कि गाय, बैल या बछड़ा बछड़ी के शव काटकर देखना और अक्सर जानकारी लेना गोसेवा का ही एक अंग है। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर हम लोगोंने बर्गर किसी प्रकार के संकोच के चोरफाड़ का काम आनन्द के साथ किया।

पोस्ट मार्टम के जरिये हमको कई प्रकार की शिक्षा मिल सकती है। जानवर के शरीर में क्या बीमारी है। विष या अन्य परिस्थिति के कारण मृत्यु हुयी है या और किसी तरीके से हुयी है यह जानना जरूरी है ताकि दूसरे जानवरों के बारे में हम सावधान रहें।

जानवरों की साधारण बीमारियाँ हम जान सकते हैं, लेकिन साप का विष या हृदय बन्द होने की जैसी भयानक बीमारियाँ हम नहीं जान सकते हैं। इसीलिये अँसे मृत्यु का कारण

Colostrum

तारीख	समय	रक्त-मोटर	तापमान	रंग	गंध	चिक्कनाओ	स्वाद	विशेष
२५-१२-५८	शाम	३८	८४	बहुत पीना	गंध जितनी कुछ दिक्कता भी बहुत कम भलके सरब लगता है।		आता है कि खाने से मुली होगी	आटा प्यास ग्यास और जल्दी फट जाना
२६-१२-५८	सुबह	३७	८१	पीना	"	"	"	"
२७-१२-५८	शाम	३७	८१	"	"	"	"	आटा प्यास और सीन मिनिट के बाद फट जाना।
२७-१२-५८	सुबह	३६	८१	आज से पीने रंग में कुछता पहले से कम चिक्कनाओ में भी परि वतन होना शुरू हुआ है।	गंध कुछ जैसी ही आती चिक्कनाओ कुछ जैसा लगता था	गंध से रसाद लेने मुली जैसा खतरा नहीं है।	आटा प्यास ग्यास और जल्दी फट जाना	
२८-१२-५८	शाम	३६	८१	"	"	"	"	"
२८-१२-५८	सुबह	३४	८३	रंग दूध से थोड़ा पीना	"	"	"	"
२९-१२-५८	शाम	३३	८४	"	गंध दूध जैसी ही आती चिक्कनाओ कुछ जैसा लगता था	गंध से रसाद लेने मुली जैसा खतरा नहीं है।	आटा प्यास ग्यास और जल्दी फट जाना	
२९-१२-५८	सुबह	३१	८२	दूध जैसा ही रंग था	गंध दूध की गंध के समान चिक्कनाओ में भी परि वतन होना शुरू हुआ है।	गंध से रसाद लेने मुली जैसा खतरा नहीं है।	आटा प्यास ग्यास और जल्दी फट जाना	

कुछ कारण से शाम को दूध का परीक्षण नहीं किया।
छठवें दिन से दूध साला ॥ दूध के रूप में जाने लगा। यह जो मिश्रण चला रही थी उसने दूध के रूप में परिणत होकर समाज को खाने लायक हो गया।

कुछ कारण से शाम को दूध का परोक्षण नहीं किया।
छठवें दिन से दूध साला ३ दूध के रूप में जाने लगा। यह जो त्रिया चढ़ रही थी उससे दूध के रूप में परिणत होकर समाज को खाने लायक हो गया।

३०-१२-५८

जानने के लिये पोस्ट मार्टम की ज़रूरत होती है। अतः मृत्यु के कारण का सही सही पता चल सकता है।

हमारे यहाँ का जो बछड़ा मरा था उसका कारण कमजोरी ही थी। हमारी यह मनोकामना थी कि मरे हुए जानवर को ठीक तरह से अप्रयोग में लाया जाय या तो ठीक तरह से दहन या दफन किया जाय जिससे गंदगी फैलन की कम संभावना हो। अतः भी सर्वोदय में गो सेवा का अंक अग माना है।

दिनांक १७ को और २५ को पार्वती और सीता गायो न गोशाला परिवार में दो बछड़ों को जन्म दिया। दिनांक १६ को अब बछड़ा मरा और दिनांक १७ को अक बछड़ ने जन्म लिया। मराठी में कहावत है कि "आजा मेला नातु झाला घरचे लोक बराबर" ठीक वैसा ही हुआ। कुछ गायें दूध कम देने से वन्द कर दी गयी। गाय ध्याने से कितन दिनपर दूध होता है और दूध बनने तक चीक (कोलास्ट्रम) में क्या परिवर्तन होता है यह देखा गया। खुद हम लागो न प्रत्यक्ष काम किया, अतः पता चला कि दूध में क्या परिवर्तन होता है।

दिनांक २५ १२ ५८ को सुबह ५ बजे गाय ब्यामी। ब्याने में कुछ तकलीफ नहीं हुयी। ऊपर दिये हुये कोलास्ट्रम के आलेख के बारे में सविस्तर जानकारी निम्न प्रकार की है।

कोलास्ट्रम का माने वह चीज जो गाय ध्यान के बाद देती है वह दूध से भिन्न होती है। उसको ही चिक कहते हैं। उसके लेक्टोमीटर अंक, तापमान रंग, गंध, चिकनाई और स्वाद दूध से निराले होते हैं।

लेक्टोमीटर अंक - दूध का साधारण तरह से देखा जाय तो ३०, ३१ रहता है। लेकिन

कोलास्ट्रम का वैसा नहीं। गाय ध्याने के बाद जा चीक निवाला जाता है अतः लेक्टोमीटर अंक ४० रहता है। हर दिन यह अब कम होकर ६ वे या ७ वे दिन में दूध जैसा बन जाता है।

तापमान - दूध का तापमान कम रहता है और चीक का तापमान ज्यादा रहता है।

रंग - दूध का रंग बिलकुल सफेद होता है और चीक का रंग पीला होता है। उसके रंग को दूध जैसा बनने के लिये सात दिन का समय लगता है।

गंध - दूध से चीक की गंध भिन्न रहती है। हम किसी चीज की गंध लेते हैं तो जल्दी पता लगता है कि यह चीज गंदी है। चीक का वास लेने से वैसा ही होता है। दूध की गंध ज्यादा नहीं आती लेकिन दूध के काम में आनेवाले कपड़े को अगर चार पांच दिन तक न धोया जाय तो उसको जैसी अंग गंध आती है ठीक वैसी ही चीक की आती है।

चिकनाई - दूध में ज्यादा प्रमाण में चिकनाई रहती है चीक में अतनी नहीं।

स्वाद - देखा गया कि पहिले दिन का जो चीक था उसको गरम करने के बाद तीन मिनिट दो सेकंड के बाद फट गया। खाकर देखा तो मीठापन बिलकुल नहीं था। चबान से उसका टुकड़ा अघर अघर फिसल जाता था। चबान से कच-बच आवाज आती थी। इसी तरह तीन चार दिन तक चला। फिर उसमें थोड़ा परिवर्तन होना चालू हुआ। ६ व दिन दूध बन गया। पाँचवे दिन में शामको १५ मिनिट तक दूध ठीक तरह से आवाज गया, फटा नहीं, पीकर देखा तो शुद्ध दूध की तरह स्वादिष्ट लगा।

पशु संख्या -

खर्च :

माह के शुरू में पशु संख्या ७१	
सीता और पार्वती नाम की गायें व्याया २	
माह में बेचे गये गोरे ४	
माह में मृत्यु १	
माह के अन्त में पशु संख्या ६८	
१ गायें २३	
२ बछड़े ४०	
३ बल ४	
४ सांड १	
कुल— ६८	

खुराक खर्च	रु न. पै.
मजदूरी	५१५ ४६
विद्यार्थी खर्च	१४७ २३
नगदो खर्च	५० ००
कोठार खर्च	३१ ६२
व्यवस्था खर्च	१०.२५
	१२५ ००

कुल खर्च ८७९.५६

कुल आमद ११५९ ००

„ खर्च ८७९ ५६

बचत— २७९ ४१

कार्य विवरण :

हिसाब — दूध देने वाली गायें ९ रही जिनसे १०५२ पौंड दूध मिला । एक गाय का एक माह का औसत दूध ११७ पौंड और एक गाय का एक दिन का औसत दूध ३॥ पौंड ।

सबसे ज्यादा दूध देनेवाली गाय गंगा ने २४२॥ पौंड और सबसे कम दूध देनेवाली गाय विद्वनारा ने ६७ पौंड दूध दिया ।

पिछले और इस माह के दूध में तुलना

पिछले माह में कुल १०३८॥ पौंड और इस माह में १०५२ पौंड दूध हुआ । पिछले माह से १३॥ पौंड दूध बढ़ा ।

आमदनी .

	रु न पै
१०५२ पौंड दूध जिसकी कीमत	२६३ ००
बेचा गया खाद ३४ गाड़ी—कीमत	१०२ ००
बेचे गये बछड़े ४ जिसकी कीमत	७९० ००
गाय धनाजी	४.००
कुल आमद	११५९ ००

गोशाला सहायक धीरेन्द्र भाभी थे । जानवरों की खुराक तैयार करने की जिम्मेवारी भिनकी थी । अन्होंने अपना काम बड़े चाव से दिलचस्पी के साथ पूरा किया । अन्होंने इस काम के लिये ९० घंटा समय दिया ।

खुराक हिसाब	मन	सेर	रु न पै
अुत्पादन खुराक	२१	३७	२७४ ० २
बछड़ा खाते	२०	५	२४१ ४७
कुल खुराक			५१५ ४९

बछड़ा नायक गोविन्द भाभी थे । भिनका काम था बछड़ों की देखभाल करना । अन्होंने बछड़ों की हालत सुधारने के लिये एक छोटीसी योजना बनायी ।

पहली बात तो यह थी बछड़ों को ठीक समय पर और नियमित परिमाण में खुराक देना । दूसरी बात थी बछड़ों को ठीक समय पर नहलाना और बिस तरह से अच्छे दिखाना । दंगे इसके बारे में सोचना । कुछ दिन तक तो

अन्होंने काम अच्छा सभाला लेकिन बीमार पड़ जाने के कारण अُنकी जगह पर दूसरे भाभी ने काम किया और बछड़ा नायक की योजना अُنके मन में हो रह गयी। बछड़ा नायक ने १६ बार बछड़ा घर की सफाई की। माह में ३ बार बछड़ा को तेल मिलाया। जब गोविन्द भाभी स्वस्थ होकर आ गये तो अपने काम में फिर से दिलचस्पी के साथ लग गये।

खेती नायक मिहिर कुमार भाभी थे। वे माह में चार दिन बीमार पड़ गये थे। बाकी दिन अन्होंने खेती काम लगन के साथ किया। अिनका काम जिस प्रकार रहा - खेती में अेक टोली लेकर काम करते थे। अेक चाटें बनाकर प्लाट नम्बर और अुससे कितना घास निकला यह अुस चाट में भरते थे। पूरे माह तक घर्सीम काटना, खेत में खाद डालना, और समय समय पर घास को काटना, किसी भी प्रकार काम में ढीलाई ना जाय तो अुसका सामना करना और अुसको ठीक रास्ते पर लाना। हरदिन औसतन ४ भाभी काम के लिये आते थे, अन्होंने २ घंटे के हिसाब से ३१ दिन में २४८ घंटे समय दिया।

सात क्यारियों से २४२ मन २ सेर बर्सीम निकला और २ क्यारियों से २७ मन ९ सेर लूसर्न निकला। अिनका आखिर तक यही प्रयत्न रहा कि मेरा काम और भी अच्छा हो। असल बात तो यह है कि बूढ़े राघोबा दादा ने सवदिन अुसके पोछे पड़कर हमारे खेती कार्य की दोभा बढ़ाई। अभी जो गोशाला की खेती हरी भरी दिखाई देती है वह अुनके और हमारे गोशाला साधियों के परिश्रम का ही फल है।

कम्पोस्ट नायक सीताराम भाभी थे। अन्होंने अपना काम माहभर ठीक से चलाया।

अिन पर समाज के सहकारी कोठार की जिम्मेवारी होते हुये भी अन्होंने जिस कार्य को चलाने की भी जिम्मेवारी ली और वह अच्छी तरह से सभाली, जा कठिनाई थोच में आयी अुसको पार करके अपना रास्ता ठीक किया। अभी तक जो खाद बनाने का काम चलता था वह जापानी पद्धति से होता था किन्तु जिस माह में अिन्दौर तरीके से काम किया। जिससे यह अनुभव हुआ कि देहात में यह तरीका अपनाना आसान न होगा, क्योंकि अुसके लिये पानी ज्यादा चाहिये, हरा घास भी चाहिये और अुसका घोल बनाना अित्यादि काम भी बठिन है। लेकिन जापानी पद्धति से खाद बनाना आसान है। जापानी तरीके से खाद बनाना देहातवालों के लिये आसान होगा।

जिस काम के लिये ६० विद्याविधियों ने १२० घंटा समय दिया। कुल औसत हाजरी २ रही। कम्पोस्ट ६४८ घन फिट बना और ३१ गाड़ी गोशाला से गोबर लिया। ३४ गाड़ी खाद बेचा गया जिसकी कीमत १०२ रु हुई।

चिकित्सालय की जिम्मेवारी मेरे ऊपर थी। अेक गाय को पहले से ही फोड़ा हुआ था। अेक बैल के पाव को चोट आयी थी, अेक बछड़ा फूल गया था। अुनके उपचार के लिये तेल पिलाना, चोट को धोकर दवाअिया लगाना, ड्रेसिंग करना और अुमकी देखभाल करना अित्यादि कार्य किये।

दूध शाला - दूध शाला की जिम्मेवारी रामचंद्र भाभी पर थी। अिनकी सहायता के लिये कमलकान्त भाभी ने तीन दिन तक काम दिया लेकिन अुसके बाद पूरा महीना वह बीमार रहे। अुनके बदले में और अेक भाभी दूध शाला

का काम करने के लिये जाते थे। कुछ दिन साधारण काम दूध देने का और हिसाब का ब्रिन्होंने अकेले काम सभाला, जिसके लिये मैं रहा। ब्रिन्होंने जिस के लिये २५० घन्टा समय उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। ब्रिन्होंने माहभर दिया। दूध शाला का माहभर का हिसाब जिस दूध का काम अच्छे ढंग से सभाला। ब्रिन्का प्रकार है।

दूध प्राप्ति—

सहकारी दूधशाला के उत्पादकों से	३९४० पौंड	जिसकी कीमत	९४८ रु. ८३ न. पै.
हमारी गोशाला से	१०५२ पौंड	जिसकी कीमत	२६३ रु. ०० न. पै.
कुल प्राप्ति	४९९२ पौंड	कुल कीमत	१२११ रु. ८३ न. पै.

दूध वितरण—

संस्थागत—३६०६ पौंड जिसकी कीमत	६८१ रु. ६६ न. पै.
व्यक्तिगत—१४५० पौंड जिसकी कीमत	३८ रु. ५७ न. पै.
कुल वितरण	५०५६ पौंड
	१३६६ रु. २३ न. पै.

आमद

खर्च

दूध विक्री १३६६. ११

उत्पादकों को	९४८. ८३
गोशाला	२६३. ००
विद्यार्थी-श्रम	५०. ००
मकान किराया	१०. ००
दूध दूहने की मशीन	२७. १७
नगद खर्च	५. ८६
सहकारी कोठार	१. ०९
कुल खर्च	१२८५ रु. ९८ न. पै.

गोशाला साधियों ने माह भर लगन के साथ काम किया और जितनी भी कठिनायी सामने आयी उसको दूर हटाकर अपना मार्ग खुला किया। मेरे काम में साधियों की हर समय मदद मिली, जिससे मुझे कौड़ी कठिनायी महसूस नहीं हुयी। जैसे ही हर समय किसी भी कार्य में सबको अपने साधियों की सहायता मिलती रहेगी तो हमारे सामने कितना भी कठिन से कठिन काम आ जाय तो भी हम उसका हसते हसते हल कर सकते हैं।

गोशाला नायक—

बुत्तर बुनियादी भवन
दूसरी टोली।

सेवाग्राम

मकर संक्रांति, १४ जनवरी ५९

प्रिय नजी तालीम परिवार की बहनों और भाजियों

॥ महीनों की विदेश यात्रा के बाद हम दोनों आज सेवामाम लौटे हैं। हमारी जिस शैक्षणिक यात्रा का साक्ष्य अद्भुत रहा साम्यवादी राष्ट्रों में और विशेष करके रूस में बच्चों के विकास से लेकर विश्व-विद्यालय तक की समग्र शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना। जितनी थोड़ी अवधि में किसी भी शिक्षा व्यवस्था का सम्यक् अध्ययन करना संभव नहीं है यह हम जानते हैं। तथापि जिस यात्रा में हमें साम्यवादी शिक्षा व्यवस्था का जो प्राथमिक परिचय मिला वह लाभप्रद रहा, ऐसा हम मानते हैं।

हमारी शैक्षणिक यात्रा के अनुभव हम धीरे धीरे नजी तालीम के मार्फत आप लोगों की सेवा में उपस्थित करेंगे। आज सिर्फ आप सयूक्त हमारा सप्रेम नमस्कार विवेदन करते हैं और आशा करते हैं कि अप्रैल के आखिरी सप्ताह में पंजाब में होनेवाले अखिल भारतीय नयी तालीम सम्मेलन में आप सचका दर्शन मिलेगा।

भवदीय

आर्यनाथकम्।

आशादेवी।

सूचना

‘नजी तालीम’ का आगामी अंक मार्च के पहले सप्ताह के बदले तीसरे सप्ताह में प्रकाशित होगा और वह दसवे सर्वोदय सम्मेलन, अजमेर का विशयांक रहेगा। नजी तालीम के ग्राहक कृपया इसका ख्याल रखेंगे।

श्री आर्यनायकम् और आशादेवी के छ महीने की विदेश यात्रा के बाद १४ जनवरी १९५९ को सेवाग्राम वापस लौटने पर तालीमी सघ परिवार तथा बरोरा और सेवाग्राम के लागाने सेवाग्राम स्टेशन में उनका बड़े आनंद से हार्दिक स्वागत किया। स्वागत के लिअ स्टेशन पर आयी मंडली के साथ वे बापू-कुटो पहुँचे। वहाँ प्रार्थना होन के बाद उनके स्वागतार्थ शांति भवन में सभा हुअी। तालीमी सघ परिवार की तरफ से दादुजी और श्री छगनलाल गांधी ने उनका स्वागत किया। स्वागत के अन्तर में आर्यनायकम्जी ने कहा—

“यहा से छ माह पहले आप लोगो से विदा करर हम विदेश गये। लेकिन लगता तो यही है कि हम कल ही यहा से गये थे। विदेश में कही भी हम रहे हो सेवाग्राम का स्मरण हमेशा रहता था—जिस वजह से समय की दूरी महसूस नहीं हो रही है। हम विदेश में कभी

जगहा पर घूमे। जिस यात्रा में दो चीजा का हम पर सास असर पडा। पहली बात तो यह है कि सब वही अज्ञाति है और सब में शांति की भूस है। वहा सब महसूस कर रहे हैं कि शांति कायम करने के लिअ बापू का रास्ता ही सही है। जिसो वजह से सब कही लोगाने बापू की विचार धारा को समझने और अुसे अमल में लाने की अुत्सुकता प्रकट की।

“दूसरी बात जिसका हम पर काफी असर पडा वह यह है कि विदेश में सब वही बच्चा पर और बच्चा की शिक्का पर अधिब जोर दिया जाता है। विदेश क बच्चा को देखते समय मुझे अपन सेवाग्राम परिवार क बच्चो की याद आती थी। जिस बात का भी ख्याल था कि सेवाग्राम क बच्चा क पास खात्री हाथ नहीं लौटना है। जिसलिअ यहा के नन्ह बच्चा क लिअ कुछ सीगात से आया हूँ।’

तेरहवां अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन

आगामी २५ अग्रेज से २७ अग्रेज १९५९ तक राजपुरा (पंजाब) में तेरहवा अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन बुलाने का निश्चय हुआ है। जिस सम्मेलन में पूज्य विनोबाजी उपस्थित रहेंगे।

सम्मेलन के पहले तीन दिन कायकताआ की अध्ययन गोष्ठी रहेगी। जिसमें नअी तालीम के कार्यक्रम के बारे में गहराअी से चर्चा होगी। सम्मेलन के साथ नअी तालीम की अक प्रवर्गनी का आयोजन किया गया है। जिसका के द्वारा राष्ट्रजनविवास के कार्यक्रम में दिलचस्पी रखनेवाले सभी भाअी-बहना का जिस सम्मेलन में भाग लेने के लिअ सादर निमन्त्रण है।

राजपुरा दिल्ली से अमृतसर के रास्त में अम्बाला के बार का शहर है। यह रेलवे-स्टेशन अम्बाला, चल्थीगड और पटियाला में सवह मील की दूरी पर स्थित है। पिछले दस साल से राजपुरा में हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की ओर से बुनियादी तालीम का काय चला है और अब चार बुनियादी विद्यालय और अक अन्तर बुनियादी विद्यालय है। राजपुरा में वस्तूरवा सेवा मंदिर का स्नायी ग्रामोद्योग काम का मुख्य केन्द्र है।

सम्मेलन में भाग लेने के लिअ प्रतिनिधि शुल्क तीन रजय सम्मेलन मअी हिन्दुस्तानी तालीम म न, सेवाग्राम वर्षा को भअत्तर प्रतिनिधि पत्र और रेलवे रियायत फाग प्राप्त किया जा सकता है। प्रतिनिधियो को अक तर्फी रेट किराय पर आने जान की रियायत मिअने क लिअ व्यवस्था की जा रही है। यह रियायत अुही प्रतिनिधियो को दी जाती है जिह सरकार से या निआ संस्था से सफर भत्ता नहा मिलता है। सम्मेलन में प्रवर्गना, निआसस्थान आदि विषयो के सम्बन्ध में मअी स्वागत समिति तेरहवा अखिल भारत नअी तालीम सम्मेलन वस्तूरवा सेवा मंदिर, राजपुरा से प्राप्त किया जा सकता है।

राधाकृष्ण,

मअी, हि ता सघ, सेवाग्राम

नई तालीम

संपादक-मंडल

आशादेवी : मार्जरी सार्डवस

देवीप्रसाद



हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ७]

— मार्च-अप्रैल १९५९

— अंक : ९-१०

नञी तालीम

“नञी तालीम” मार्च-अप्रैल १९५९ : अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
१	शांति-सेना	-विनोबा	२५१
२	शांति-सेना भारत और सत्तार के सामने चुनौती	-विनोबा	२५३
३	यह धृष्टा आप रक्षियेगा	-विनोबा	२५५
४	हमारी निवृत्त माता	-आतादेवी	२६३
५	सर्वोदय आन्दोलन तथा युवसमाज	-भनमोहन चौधरी	२६७
६	कल के स्कूल कैसे हो ?	—	२७२
७	प्रेम कैसे मरता है ?	-श्रीमती पेन	२७४
८	मेरा हस की शिक्का का निरीक्षण	-अडलाबी स्टीवन्सन	२७५
९	कोरापुट का शिविर	-अण्णा सहस्रबुद्धे	२७८
१०	हटुडी परिसवाद	-देवीप्रसाद	२७९
११	साहित्यको से	-विनोबा	२८६
१२	समाजवाद, सर्वोदय, सत्याग्रह और व्याख्या	-जैनेन्द्र कुमार	२८८
१३	हमें विश्वव्यापक बनकर सेवा का काम करना है	-विनोबा	२९४
१४	कला परिचय	-देवीप्रसाद	३००
१५	कला का अर्थ	-पाब्लो पिकासो	३०४
१६	परीवर्षाओं	-मार्बेरी साभिक्स	३०५
१७	हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की बैठक	—	३११
१८	राजपुरा नञी तालीम सम्मेलन का कार्यक्रम	...	३१३

‘नञी तालीम’ के नियम

१ “नञी तालीम” अग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य चार रुपये और अंक प्रति की कीमत ३७ नये पैसे है। वार्षिक मूल्य पैदागी लिया जाता है। बी पी से भगाने पर उन्हें ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अंक साल से कम अवधि के लिये ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

३ ग्राहक को चाहिये कि रेपर पर पत्रों के साथ ही हथी अपनी ग्राहक सख्या हमेशा याद रखें और पत्र-यवहार में ग्राहक सख्या लिखना न भूलें।

—व्यवस्थापक, “नञी तालीम”

सेवाग्राम (वर्षा) बम्बई राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७]

मार्च १९५९

[अंक ९

शांति सेना

विमोक्षा

शांति सेना का आरंभ तो बापू ने कर ही दिया था। वे शांति सेना के सेनापति थे तथा प्रथम सैनिक भी थे और दोनों नावों से अपना काम पूरा करके वे चले गये। 'शांति सेना' की बात नयी तो नहीं है, पुरानी है। सन्तों ने ऐसी सेना बनायी भी है। दुनियाँ के भिन्न भिन्न देशों में उसका इतिहास भी पढ़ने को मिलता है। मैंने जब तेलंगाना में प्रवेश किया था, तब जाहिर किया था कि मैं यहाँ पर शांति सैनिक के नाते आया हूँ। तो, उसका आरंभ मेरे लिये वहीं से हो गया और तब से आज तक यही ख्याल मन में रहा कि शांति सैनिक के नाते ही मैं घूम रहा हूँ और अभी काश्मीर जाने का सोचा गया है, उसमें भी मेरी यही दृष्टि रहेगी। अपनी काश्मीर-यात्रा से, बहुत ज्यादा अपेक्षा मैं नहीं रखता, केवल निरीक्षण की अपेक्षा रखता हूँ। जीश्वर ने चाहा, तो काश्मीर में बहुत अच्छी सेना बन सकती है।

मैं आशा करता हूँ कि हिन्दुस्तान का दुख मिटाने में यह छोटी-सी सेना कामयाब होगी। जिस सेना में बूढ़े हैं—उन्हें है, बीमार लोग भी हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि हिन्दुस्तान का व जगत का दुख मिटाने का काम यह शांति सेना करेगी। जिस प्रकार भूदान ग्रामदान आदि का थोड़ा कार्य चला, उसके मसले के बारे में दिमाग साफ हुआ और आगे का रास्ता साफ हुआ। उसी तरह जिस काम से दूसरी राह खुल जायगी।

शांति सैनिकों के दैनंदिन जीवन के बारे में एक बात मेरे मन में है। भेने माना है कि शांति सैनिकों को बीमार पड़ने का हक नहीं है। कोशिश तो मेरी भी रही है, पर लोग यह समझते हैं कि शरीर के विषय में मैं बहुत बे-दरकार हूँ। बचपन में जरूर बे-दरकार था। उस समय ज्ञान-प्रधान कृत्ति थी और दूसरे कहीं पर मेरा ध्यान भी नहीं जाता था। उस समय शरीर का भी कुछ कम ही ज्ञान था। अैसे कुछ कारणों से बचपन में बे-दरकारी थी। लेकिन अिन दिनों मैं अपने शरीर के प्रति बे-दरकार नहीं हूँ। मैं आज जो भी काम करता हूँ बहुत सावधानी के साथ करता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि शांति सैनिकों को और दूसरी चीजों का हक हो, लेकिन बीमार पड़ने का हक नहीं हो सकता; क्योंकि उनका जीवन समाज-सेवा के लिये अर्पित होता है, हम अपनी असावधानी से समाज-सेवा में विघ्न पैदा करें तो वह हमारी प्राथमिक अयोग्यता ही मानी जायगी।

शांति-सेना : भारत और संसार के सामने चुनौती !

अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

महात्मा गांधी के निर्वाण के बाद देश भर में फैले हुए उनके साथी तथा अनुयायी सेवाप्राप्त में मिले। वहाँ सर्वोदय-समाज नाम के अनेक भाओ-चारे की स्थापना की गयी। तब से हर साल सर्वोदय-समाज का अनेक सम्मेलन देश के विभिन्न स्थानों पर होता रहा है। अनेक सम्मेलनों में भारत के विभिन्न प्रान्तों के सर्वोदय प्रेमी भाओ-बहन अकट्ठा होते हैं और साल भर के काम का सिंहावलोकन करके भावी कार्यक्रम की चर्चा तथा कार्य अथवा तत्त्व के सबंध में चिंतन-मनन करते हैं। आरम्भ के तीन वर्ष नवी परिस्थिति में सर्वोदय का मार्ग खोजने में बीते। १९५१ में भूदान-यज्ञ का आरम्भ हुआ और उस रूप में देश को अनेक अगला मार्ग मिल गया। देश में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अनेक सफल अहिंसक प्रयोग हो चुका था। जिसमें भूदान कार्यक्रम द्वारा आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अहिंसक तरीका स्पष्ट हुआ। विनोबाजी को भूदान-यज्ञ प्राति-कार्य में ज्यो ज्यो सफलता मिलती गयी, एधो-रधो न सिर्फ देश के सारे सर्वोदय-प्रेमियों का, बल्कि देश के अन्य विचारकों का ध्यान भी जिस ओर आकर्षित होता गया। फलतः सन्, ५२ के सेवापुरी-सम्मेलन के बाद से सभी सर्वोदय-सम्मेलन देश को अहिंसा की दिशा में ले जानेवाले मार्ग के सीमा-चिह्न-से बनते गये।

भूदान वा वरुणामूलक विचार क्रम-क्रम से ग्रामदान के समत्व-विचार में विकसित होता गया। ग्रामदान ने अनेक अंसा रास्ता खोल दिया जिससे आर्थिक क्षेत्र में भारत के गाँवों की समत्वयुक्त प्रगति हो और साथ ही सामाजिक

क्षेत्र में जनता का नैतिक गुण विकास भी होता जाये। जिस आन्दोलन के छह वर्षों में भूमि-समस्या सबंधी सर्वोदय-दृष्टि का दर्शन हुआ। भूमि-प्राप्ति, भूमि-वितरण, ग्रामदान और उसके नव-निर्माण का चित्र भी हमारे सामने स्पष्ट होता गया। पिछला वर्ष सर्वोदय-सेवकों के लिये अनेक प्रकार से आराम-निरीक्षण और सबल-सचय का रहा। जिस आराम-निरीक्षण के फलस्वरूप अनेक नयी स्फूर्ति मिली और कुछ नये प्रेरणाप्रद कार्यक्रम भी सामने आये।

ग्रामदान ने हमारे लिये ग्राम-स्वराज्य की राह खोल दी। जिसने हमें गांधीजी के स्वप्न को साकार करने का मौका दिया। स्वेच्छापूर्वक किये गये त्याग के कारण पैदा होनेवाली जन-शक्ति तथा स्वामित्व-विसर्जन के कारण पैदा होने वाले समत्व की भूमिका ने ग्रामदान की नींव डाली। पिछले कुछ वर्षों में संसार की ओर साथ ही भारत की जो स्थिति रही, उसने स्पष्ट कर दिया कि अहिंसा-प्रेमियों के लिये शांति का प्रश्न अनेक चुनौती है। जब तक हम अपने देश में अहिंसक साधनों द्वारा शांति-स्थापना की जिम्मेदारी नहीं ओठाते हैं, तब तक हम ग्राम-स्वराज्य को न तो खड़ा कर सकते हैं और न टिका सकते हैं। परिस्थिति की जिस चुनौती के अन्तर-स्वरूप ही शांति-सेना का कार्यक्रम निबला है। शांति-सेना और ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम अनेक-दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि शांति-सेना के जिस कार्यक्रम का अभी आरम्भ ही है, फिर भी जिसे देश के प्रायः सभी प्रमुख विचारकों का समर्थन प्राप्त हुआ है। जिस साल केरल, गुजरात और देश के दूसरे

कुछ हिस्सों में अशांति-शमन के जो प्रत्यक्ष कार्यक्रम हुआ, उनसे शांति-सैनिकों का आत्म-विश्वास बढ़ा है।

हर प्रकार की सेना को लोक-सम्मति की आवश्यकता रहती है। शांति-सेना के लिये लोक-सम्मति और लोक-आधार में सर्वोदय-पत्र का कार्यक्रम आया, जिसने जिस सारे क्रान्ति-कार्य को व्यापक रूप से जनाधारित करने का अवसर दिया है।

जिस वर्ष अन्य देशों की सर्वोदय-प्रवृत्तियों से भी हमारा अधिक संपर्क हुआ और जमीन के अलावा अश्व, व्यापार आदि क्षेत्रों में गांधीजी के ट्रस्टीशिप विषय रिचार्डो के प्रयोग के सबब में अध्ययन-मनन भी हुआ। जिस वर्ष सर्वोदय की दिशा में बढ़नेवाला एक अन्तर्जननीय कदम यह भी है कि देश के सभी प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं ने आने काम को ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य की दिशा में मोड़ने का निश्चय किया है।

आज हमारे सामने सर्वोदय-पत्र, ग्राम-स्वराज्य और शांति-सेना का त्रिविध कार्यक्रम है। सर्वोदय-पत्र द्वारा भारत के हर घर से शांति के लिये सम्मति मिलेगी और जन-मानस में सर्वोदय विचार का प्रवेश होगा। यह आवश्यक दोषता है कि ग्राम-स्वराज्य के लिये मुख्यतः दो प्रकार से प्रयत्न हो, एक तो ग्राम-दान द्वारा जमीन के विषय में व्यक्तिगत स्वामित्व का विपर्यय और उसका ग्रामीकरण, दूसरे, ग्राम-संकल्प के द्वारा ग्रामों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ग्रामों में ही करने का दृढ़ संकल्प। इन दो कार्यक्रमों के जरिये हम अपने सारे रचनात्मक कार्यक्रमों को ग्राम-

स्वराज्य की ओर मोड़ सकेंगे।

यह भी जरूरी है कि हम अपने अब तक के काम का समुचित मूल्यांकन करें और जो भी जमीन दान में प्राप्त हुई है, उसमें से वितरण के योग्य भूमि को यथाशीघ्र बांट दें और शेष भूमि की स्थिति स्पष्ट करें। जनता के द्वारा संकल्पपूर्वक किया गया नव-निर्माण का काम भी अहिंसात्मक क्रान्ति को आगे ले जाने का एक साधन है।

स्पष्ट ही है कि जिस सारे कार्यक्रम के आधार हमारे कार्यकर्त्ता हैं। यह जरूरी है कि हमारे कार्यकर्त्ता निष्ठावान और कार्यक्षम हों तथा वे जन-साधारण से अंतरात्मा में उसके लिये कार्यकर्त्ताओं की अचित तालीम की व्यवस्था होनी चाहिये। सम्मेलन अखिल भारत सर्व सेवा संघ की जिस दिशा में अचित कार्यवाही करने की वितति करता है।

शांति-रक्षा प्रत्येक नागरिक का कार्य है, किन्तु आज के संदर्भ में इसके अनंतर भी शांति-रक्षा का दायित्व शेष रहता ही है और इसके लिये शांति-सेना एक अनिवार्य आवश्यकता है। शांति-सैनिक अशांति के अवसरों पर शांति-स्थापना के लिये दौड़े आयाँगे और वहाँ अपने प्राण न्योछावर करने को भी तैयार रहेंगे। सामान्य स्थिति में वे अपने क्षेत्र और आस-पास के लोगों की नित्य सेवा करने वाले सेवा-सैनिक होंगे। सम्मेलन भारत में अहिंसक क्रान्ति के प्रयोगे भागी-बहनों से जिस शांतिमय क्रान्ति के प्रत्यक्ष कार्यक्रम में अपना पूरा योग देने और सर्वोदय-समाज की स्थापना में अपने पुरुषार्थ द्वारा सहायक होने की नम्रतापूर्वक अपील करता है।

यह श्रद्धा आप रखियेगा ।

बिनोबा

मेरे अत्यंत प्रिय मित्रो, सम्मेलन मेरे लिये दर्शन का आनंद प्राप्त करने का मौका होता है । मैं यहाँ दर्शन के लिये आता हूँ । विचार-प्रचार, चर्चा वगैरा रोजमर्रा चलती ही है । चार-चार घंटा पदयात्रा चलती है, उसमें अनगिनत चर्चाएँ चला करती है, परन्तु सालभर में कभी मित्रों से मिलना नहीं होता है, तो सालभर में एक दफा मिलने का यह अंक प्रसंग आता है । इसमें आगे क्या काम करना है, इसकी चर्चा भी होती है । मिलना भी होता है । इसी के लिये मैं यहाँ आता हूँ ।

हमारे साथी अंक-के-बाद अंक परमेश्वर के पास पहुँच रहे हैं, जिनके साथ हमने काम किया है, अंसे साथी जा रहे हैं । किशोरीलाल भाभी, जाजूजी, बाबा राघवदास, गोपदाबू, लक्ष्मीदाबू, भारतनू, देवदास सारे चले गये । यह तो यात्रा चल रही है, अखंड यात्रा । लोग जा रहे हैं, इस लोक से परलोक में । नये-नये जा रहे हैं । इस बीच हमारी भी छोटी-सी यात्रा चल रही है । इस साल दो दफा मैं थोमार पड़ा था । उसका मुझे दुःख है । मालूम नहीं कब तक चलेगा । जितना मालूम है कि जैसे गुरु नानक ने कहा है “हुकम रजाजी चल्लणा, नानक लिखिया नाल”, उसके हुक्म से सारा चल रहा है । यही अंक विश्वास और यही आशा और यही भरोसा लेकर हम काम कर रहे हैं ।

यह अकारण प्रेम करनेवालों की जमात है । मैं तो कैसे बोलना यह जानता भी नहीं हूँ ।

मैत्रीभाव कैसे रखना यह भी नहीं जानता हूँ, लेकिन अन्दर अंक तड़पन, जलन है, स्नेह है—तो रूखा-सूखा राम का टुकड़ा है और हम अंक दूसरे को मिलने आते हैं, यही हमारा सम्मेलन का मुख्य कार्य है ।

मेरे प्यारे भाजियो, रोज हम जहाँ कुछ-न-कुछ बोलते ही हैं, वहाँ नयी बात हम क्या रखें, सिवाय इसके कि मौन की महिमा प्रकट करें ? शब्द से भी हम वह महिमा प्रकट कर सकते हैं ।

हम समझते हैं कि यह साल हमारे लिये अंक आत्म-परीक्षण का और निरीक्षण का साल था । १९५७ तक हमने जाहिर किया था कि जो दिशा हमें सूझती है, उस दिशा में हम आगे बढ़ते जायेंगे । कुछ नयी बातें हमें सूझी हैं, वे हमने आपके सामने रखी हैं । जो असफलता हमें मिली है, उसकी पूर्ति के लिये आप काम में लगे हैं । जहाँ काम का सम्बन्ध आता है, वहाँ हमें कुछ-न-कुछ सूझता ही है । अंक अवधि तक काम का अनुभव लोगों को आया । अब थोड़ा चिंतन, ध्यान करना, बहुत जरूरी है । इसलिये यह हमारे लिये अंक साल से ध्यान-काल चल रहा है । अंक-अंक शिखर चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं । अंक-अंक शिखर चढ़ते हैं, बीच-बीच में ठहरते हैं और देखते जाते हैं तो स्पष्ट दर्शन होता है । अंग्रेजों में कहा है—

“यत् सानो सानु आरुहन्

यह प्रक्रिया अक्सर बतायी है। अंक शिखर से दूसरे शिखर पर चढ़ते हैं, तो फिर-फिर से दर्शन होता है। चढ़ने के बाद जरा रुककर देखते हैं तो पता चलता है कि हमने गलतियाँ कौन-सी की हैं। कहाँ तक आगे बढ़ना है, यह भी हम देख सकते हैं। अिन दिनों टीकाकारों ने भी हमें बहुत मदद पहुँचायी है। अिस आंदोलन पर बहुत टीका हुआ है। अुनका हमें बहुत सामं हुआ है। अुन सब टीकाकारों का हम अुपकार मानते हैं। हम चाहते हैं कि अिस तरह से आन्दोलन पर टीका हो, चर्चाएँ चले और कुछ दोष-दर्शन भी हम चाहते हैं। वह सारा हमारे काम में मदद देगा। अिसलिये हम अुनका अुपकार मानते हैं जिन्होंने अिम आन्दोलन पर टीका की। अुस अनुभव को पाकर हमें कुछ सूझा है और जो सूझा है, वह मैं आपको सामने रखता हूँ।

समझने की जरूरत है कि अभी दुनिया का कुछ विचार-प्रवाह बदल रहा है। कुल दुनिया जिसमें हम भी हैं, अुसमें वह प्रवाह जोरों से बह रहा है और वे विचार के प्रवाह हमें प्रेरित कर रहे हैं। अभी अंक भाभी अिंग्लैंड से आये थे। अिस तरह बीच-बीच में परदेश के भाभी मिलने आते हैं। अुस भाभी ने हमें कहा कि भूदान आन्दोलन से हम कुछ लेना चाहते हैं और अिसमें से कुछ देखना भी चाहते हैं। अुन्होंने कहा कि हम आशा रखते हैं कि हिन्दुस्तान दुनिया को शांति की राह दिखायेगा। हिन्दुस्तान भी दिखायेगा, लेकिन अिंग्लैंड भी दिखा सकता है। अुन्होंने पूछा कि अिस आशा के लिये आपको क्या आधार है? तब हमने कहा कि हमें आधार मिला है, क्योंकि हिन्दुस्तान की मालकियत अिंग्लैंड मानता था और वह मालकियत अिंग्लैंड ने छोड़ दी, तो

अुससे अिंग्लैंड की नैतिक शक्ति बढ़ी है, अंसा हम मानते हैं और यह मालकियत छोड़ने का विचार ही वह है, जिसके आधार पर ग्रामदान का आन्दोलन चल रहा है। तो अुसका आरम्भ अिंग्लैंड ने किया है। बहुत लोग समझते हैं कि अिस आन्दोलन का आरम्भ १८ अप्रैल १९५१ को हुआ था। यह मालकियत विसर्जन का आरम्भ हैदराबाद स्टेट में हुआ था। परंतु हम तो मानते हैं कि अिसका आरम्भ अिंग्लैंड ने १५ अगस्त १९४७ के दिन किया है और अुससे हमें स्फूर्ति मिली है। यह सुनकर अुस भाभी को बहुत आनंद हुआ और कुछ आश्चर्य भी हुआ कि हमारा स्फूर्तिस्थान अिंग्लैंड है। हमने यह भी कहा कि हम बहुत आशा रखते हैं कि अिंग्लैंड जैसा बलवान देश जो बहुत बड़ा साम्राज्य था और जिसकी सत्ता कुल पृथ्वी पर थी, अुस देश ने अाखिर अुस सत्ता को छोड़ दिया। यह हिम्मत वह कर सकते हैं तो यह हिम्मत भी कर सकते हैं। अिंग्लैंड हिंसा-वर्जित का भी सन्ध्या ले सकता है। अिस तरह वहाँ अहिंसा का प्रयोग हो सकता है। हमने यह भी कहा कि लंदन जैसा स्फूर्तिदायी शहर दूसरा कौनसा हो सकता है, जहाँ दुनिया भर के स्वातंत्र्य-प्रेमी लोगों को आश्रय मिला है। मैक्सिमो को वहाँ आश्रय मिला है। डा. सम्यतसेन वहाँ रहे थे। कार्ल-मार्क्स भी लंदन में रहे हैं। गांधीजी भी वहाँ से प्रेरणा पाकर आये थे। दुनिया के स्वातंत्र्य प्रेमी लोगों का स्फूर्तिस्थान लंदन था यह मानना पड़ेगा। अिंग्लैंड से यह आशा मैं करता हूँ कि वह सामने आये और शांति का काम वहाँ अुठाये। यह सुनकर अुस भाई को बहुत ही आनंद हुआ। यह कहानी मैंने आपको अिसलिये सुनायी कि मेरे दिल में क्या चल रहा

है यह आप जानें । मैं अपने जिस काम को राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं मानता हूँ, जागतिक आन्दोलन मानता हूँ । जागतिक पृष्ठभूमि में उसका विचार मैं करता हूँ कि जिसमें कौन से कदम उठाये जाय ? उसके लिये हमें सही तरीके ढूँढने होंगे और यह हम तभी कर सकते हैं जब हम जागतिक परिस्थिति में अपने को रख सकेगें । इसीलिये "जय जगत्" का अुद्धोष हम करते हैं । सयुक्त्त कर्नाटक अब हो गया । एस् आर सी के बाद बहुत सकोणं मनोवृत्ति का दर्शन हिन्दुस्तान में हुआ था । वह कर्नाटक में भी हुआ । जब हम वहाँ पहुँचे थे तब सयुक्त्त कर्नाटक हो चुका था । हमने वहाँ कहा था कि सयुक्त्त कर्नाटक सयुक्त्त विश्व बनाने के लिये कदम हो तो उसका गौरव है । वहाँ के लोगो ने बहुत प्रेम से जिस विचार को माना । हमने यह कहा था कि सयुक्त्त कर्नाटक बनाया तो क्या हिन्दुस्तान से अलग होने के लिये ? नहीं, तो क्या सयुक्त्त विश्व बनाने के लिये ? जिस विचार का अुन लोगो को आकर्षण मालूम हुआ और वहाँ के बच्चे बच्चे ने "जय जगत्" की पुकार शुरू की । बच्चे बच्चे जय जगत् बोलने लगे । यहाँ राजस्थान में हम आये तो गाव गाव के लोग हमें अभिवादन करने के लिये "जय जगत्-जय जगत्" अँसा बोलते हैं । यह कोई छोटी बात नहीं है । दस ग्यारह साल में हम जब हिंद से जय जगत् तक पहुँच गये हैं । यह अँक सक्त्त दुनिया में काम कर रहा है जो कुल दुनिया को अँक करके ही रहेगा, और जिसमें राष्ट्र-राष्ट्र के भेद टूट जायेंगे । जिसके लिये विज्ञान अुत्तुव है और अुसका बल हमारे पीछे है । अिन दिनों जितना विज्ञान का बल मेरे पीछे महसूस करता हूँ अुतना जिसके पहले कभी नहीं

किया था । परन्तु आत्मज्ञान का भी बल ग्राम-दान और भूदान के पीछे है । तो जिस विचार के पीछे जितना विज्ञान का बल है अुतना ही वेदान्त का बल है । विज्ञान सक्त्त मनोवृत्ति को नहीं रखने देगा । वह जिसके खिलाफ हो है । वह आवाहन कर रहा है कि हे मानव ! तू याता मिट, या तू अँक बन, व्यापक बन । दो के सिवाय तीसरी बात नहीं । वह कह रहा है कि हे मानव ! तू अगर मिटना चाहता है तो मैं तुझे मिटा सकता हूँ और अगर व्यापक बनना चाहता है तो अुसमें भी मैं मदद दे सकता हूँ । अुसके लिये वातावरण तैयार है । जब हम जिस पर सोचेंगे, तब ध्यान में आयेगा कि हमें अपने को अँक बनाना चाहिये और व्यापक बनाना चाहिये । यह कैसे करना है तब हमें सूझेगा । यह विचार हमें अँसी कल्पना में ला रहा है जिससे अब हमें ध्यान में आयेगा कि हम समन्वय की भूमिका में काम करते रहे हैं । आस्ट्रेलिया से अँक भाजी हमें मिलने आये थे । अुन्होंने पूछा था कि आस्ट्रेलिया के लिये भूदान का क्या सदेश है ? मैंने कहा कि चीन और जापान के लोगो को यह आवाहन करो कि भाजियो आप लोग हमारे देश में आजियो, हम आरका स्वागत करते हैं । यह भूमि आपका स्वागत करती है । यहाँ ज्यादा भूमि पड़ी है । इसलिये आप यहाँ खुशी से आजियो । यही भूदान का विश्व-मानवता का सदेश है । भूदान विश्वमानव बनाना चाहता है । अब वे दिन लद गये जब हम अपने देश का अभिमान रखते थे और अुसो अभिमान में मस्त थे । "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा ।" क्यों ? क्योंकि हमारा है । यह हमारा नहीं होता, तो सारे जहाँ से

अच्छा उसको हमने नहीं कहा होता । यही हम जगह-जगह देखते हैं । हमने एक राष्ट्रीय गीत पढ़ा था, फ्रेंच में । फ्रेंच लोग अपने देश का गौरव, महिमा गाते हैं तो उसमें अंग्लैण्ड, हिन्दुस्तान वगैरा दूसरे देशों की कमियां बताकर गाते हैं । "हमारे देश में ऐसी-ऐसी कमियां नहीं हैं, जैसी अंग्लैण्ड में हैं, हिन्दुस्तान में हैं ।" मैं देखने लगा कि हिन्दुस्तान की कौनसी कमियां उन्होंने बतायी हैं जो फ्रान्स में नहीं हैं ? जिस तरह अपने देश का गौरव दूसरे देशों को कुछ न्यूनताओं के साथ करने में लज्जित और शायद इज्जत भी मालूम होती थी । लेकिन आज तो ऐसा नहीं हो सकता है । अपने देश का गौरव गाने में, दूसरे देश का अगौरव करने में आज न लज्जित है न अिज्जत । अपना यह सार्वराष्ट्रीय आन्दोलन है । उसकी पृष्ठभूमि में हमें काम करना है ।

हमें बहुत लोग पूछते हैं कभी छोटे-छोटे सवाल हैं, दुख है, अन्याय है, भूमि के क्षेत्र में बहुत अन्याय होते हैं । तो छोटे-छोटे सत्याग्रह भी क्यों नहीं चलने चाहियें ? ऐसी सूचना लोग हमें देते हैं तो उनसे हम कहते हैं वापु के जमाने में जो सत्याग्रह हो गये उसी का अगर अनुकरण जिस जमाने में करेंगे, उसीका अनुवर्तन, बाह्य अनुकरण करेंगे तो ऐसा ही होगा जैसा राणा प्रताप का और शिवाजी का अनुकरण करके हम किले बनायेंगे । जिस जमाने में राणा ने जैसे किले बनाये वैसे बनाने से देश की रक्षा नहीं होगी । उन दिनों किले देश की रक्षा कर सकते थे । अिन दिनों तो किले बनायेंगे तो बमवालों को बहुत आसान हो जायगा, अनुकूल हो जायेगा । जिसलिये हम स्कुल अनुकरण, स्कुल अनुवर्तन कैसे करें ? किस तरह करें ? लोग हमें कहते हैं—भाभी, गांधीजी तो बहुत पुराने

जमाने में नहीं हुये उनका जमाना अभी पुराना नहीं हुआ है तो अितने में क्या बहुत फर्क पड़ गया ? मैं कहता हूं भाभी, हां अितने में बहुत बहुत फर्क पड़ गया है । एक फर्क तो यह है कि वे परराज्य में काम करते थे और हम स्वराज्य में काम कर रहे हैं । दूसरा फर्क यह हुआ है कि वे अनियंत्रित सत्ता में काम करते थे और हम लोकताही में काम कर रहे हैं । तीसरा फर्क जो मेरी दृष्टि से सबसे महत्व का फर्क है वह यह कि आज अणु-बुग का अवतार हुआ है । ये बातें हम भूल नहीं सकते हैं । गांधीजी के जमाने में वह अणु शुरु ही हुआ था, आज उसका नया दर्शन हो रहा है । विज्ञान में जो शक्ति है, वह संहारक शक्ति है, रक्षक शक्ति है । वह रक्षावतार हो सकता है और वह विष्णु का भी अवतार, साबित हो सकता है । अब एक विशाल शक्ति का अवतार हुआ है और हमें सोचना चाहिये कि लोकशाही में, स्वराज्य में और विज्ञान के जमाने में यह विचार गौण नहीं है । यह सब से महत्व का विचार है कि सत्याग्रह का विज्ञान के जमाने में रूप क्या होगा ? मेरे भाबियो, यह हम सबको सोचना होगा । अगर हम सत्याग्रही नहीं हैं तो हम कुछ भी नहीं हैं । अगर हम कोओ हैं तो सत्याग्रही ही हैं । याने हमारा और कोओ दावा ही नहीं हो सकता है । हमारे जो मार्गदर्शक थे, वे सत्याग्रह के गुरु नहीं थे तो और किस बात के थे ? उनके पीछे उनके विचार के प्रचार की जिम्मेवारी आप और हम पर आयी है और उनके पीछे वह जिम्मेवारी बढ़ गयी है । जिसका चिन्तन हम सबको करना होगा । हिंसा करनेवाले आज एक जगह बैठकर कुल

दुनिया का सहार कर सकते हैं । अंसी शक्ति मनुष्य के हाथ में जहा आ गयो है, वहा मेरे सामने सवाल खडा होता है कि अब सत्याग्रह का स्वरूप क्या होगा ? अगर मेरे सामनेवाला मनुष्य असत्याचरण कर रहा है, अंनुके खिलाफ मैं खडा हूँ, तो मेरे चेहरे में वे कण्ठा देख सकते हैं । मेरी जवान में अगर कहो माधुर्य सुन सकते हैं, मेरी चाल-चलन में अंनुको प्यार का दर्शन होता है तो अंनुमें परिवर्तन हो सकता है । परन्तु न बाणी में, न आत्म में, न चेहरे में, न मेरी चाल चलन में अंनुसे कुछ नही दोखता है, तो अंनु सत्याग्रह का परिणाम क्या होगा ? कोअी अंसी शक्ति सत्याग्रहो के हाथ में चाहिये कि घर बैठे बैठे जैसे वे सहार कर सकते हैं, वैसे हम घर बैठे-बैठे सारी दुनिया का बचाव कर सकते हैं, यह सोज का विषय है । अंसी अन्दर से प्रेरणा मानव के हृदय में जिनने की, वह जिन हाथो से बम बनें, अंनुही हाथो से अंनुको समुद्र में डलवा देगा । मैं नही जानता कि समुद्र में बम डालने से क्या होता है या अंनुका क्या करना पडता है । लेकिन जिन हाथो से वह पैदा हुआ है, वे ही हाथ अंनुकी समाप्ति करे, अंसी प्रेरणा अंनुको हो, जिस तरह अंनुके हृदय में प्रवेश करने की शक्ति हममें होनी चाहिये । अब अमेरिकन भाओ मुझे अमेरिका के लिये सदेश मागन आये थे । मैं तो जिस तरह कभी सदेश नही देता हूँ । मैंने कहा अमेरिका को सदेश देने की घृष्टता मैं नही करूंगा, तो भी वे भाओ कहने लगे कि आप कुछ बताजिये । तो मैंने कहा कि आप सोच ये जो शास्त्रास्त्र बनाते हैं जिस तरह के शास्त्रास्त्र आपको खूब बनाने चाहिये । अंनुमें कोअी कमी नही रखनी चाहिये क्योंकि अंनुमें अम्प्लायमेन्ट का सवाल

थोडा हल होगा जिसलिये वह काम तो आपको खूब करना चाहिये । परन्तु आगे जब ख्रिस्तमस का दिन आयेगा अंनुस दिन हिम्मत के साथ भगवान ओसामसीह का नाम लेकर वे सारे शास्त्रास्त्र समुद्र में डुबो दीजिये । नही तो आज क्या होता है । आपके शास्त्रास्त्र को रूस खत्म करता है और रूस के शास्त्रास्त्र को आप खत्म करते हैं । जिस तरह परस्पादालम्बन का काम क्यों करना चाहिये ? तुम स्वावलम्बी बनो । अमेरिका के हवाओ जहाज अमेरिका डुवायेगा, रूस के हवाओ जहाज और दूसरे अस्त्र रूस खत्म करेगा । जिसकी क्या जरूरत है कि मेरे हवाओ जहाज वे तोड़ें और अंनुके में तोड़ ? अंसा मैंने अंनु भाओ को कह दिया ।

हमें गणपति की कहानी याद है । बचपन में हमारे दादा गणपति अुत्सव करते थे । तो हम चदन घिस घिस कर अपने हाथो से गणपति की मूर्ति बनाते थे, अंनुको पूजा करते थे और हमें अंनुमें बडा सतोष मालूम होता था । १३-१४ दिन अंनुकी पूजा और आरती वगैरह होती थी और आखिर अंनु गणपति का तालाब म या कुओं में विसर्जन करना पडता था । हमें अितना दुःख होता था क्योंकि हमारे हाथो से ही गणपति बना हुआ था, हमारे हाथो चदन घिसा हुआ था और हमारे दादा अंनु सुंदर मूर्ति की पूजा करते थे, आरती करते थे और अब सद्भावना हमारे मन में पैदा होती थी और आखिर आज गणेशजी को डुबोने का दिन आता था, तो हमें दुःख होता था । आवाहन के बाद विसर्जन अपने ही हाथो से करना पडता था । अंनुका अर्थ यही है कि आपने अंनुसे भगवान के तौर पर बनाया, याने भगवान को बनानेवाले हम हैं । यही हमारा शास्त्र कहता है कि भगवान

को बनानेवाने तुम हो। जिसलिये सबसे श्रेष्ठ देवता मानव है। इस तरह हमारे गणेश की पूजा की प्रक्रिया हमारे पूर्वजों ने हमें दिखायी है। तुम पूजा तो करो, पर तुम यह पहचानो, कि तुमने जिसको बनाया है और जिसकी प्राण-प्रतीष्ठा करनेवाले तुम हो। तुम्हारी ताकत से भगवान बना है। अग्नि में यह मग्न आता है। "अय मे हस्तो भगवान्, अय मे भगवत्तर" मैं भगवान् और भगवान से भी श्रेष्ठ हूँ। जिससे बेहतर मग्न और कौन-सा हो सकता है? यहाँ भूमि कहता है कि मैं भगवान हूँ और दूसरे वाक्य में कहता है कि "भगवत्तर" याने भगवान से श्रेष्ठ हूँ। आगिर भगवान अध्यस्त है और हम व्यस्त हैं। हमारे हाथों से जो रोया होगी वह ध्वजा होगी और अस्त सेवा के कारण अस्तवा गौरव होगा। अस्त पूजा से भगवान का वैभव घट गया है। यह समझाने के लिये हमारे पूर्वजों ने गणपति विमर्जन की प्रक्रिया हमें सितायी है। यह प्रक्रिया आवाहन की प्रक्रिया है। अमर्ष आवाहन के बाद विसर्जन किया है। तब हमने भुग अमेरिकन भाषा को समझाया कि त्रिमर्ष के दिन कुछ अपने-अपने सम्पत्ति दियो दीजिये। यही हमारा मदेश है।

हम कहना चाहते थे कि जिस आन्दोलन का केन्द्र अथ राष्ट्रीय भूमिका पर मत मानो। जागतिक भूमिका जिसके पोछे है, अंसा माना तो अग्रगण्य थावेगा। मेरी समझ में नहीं आता है कि कौनसी ताकत मुझ में है। लोग मुझे कहते हैं कि भाग्य तो बहुत कम मानते हैं तो मैं अन्तर्गत कहता हूँ कि मैं आकाश मानता हूँ। भाग्य तो मेरी दाया दायर है। मेरा आकाश-

सेवन चल रहा है। अस्से मुझे ताकत मिलती है। जिसलिये भरने के समय के पहले मैं कभी मरूंगा नहीं। लेकिन मुझे तो भास ही नहीं होता है कि मैं कुछ काम कर रहा हूँ। अक बहुत बड़ी ताकत, अक बहुत बड़ा विचार मुझे घुमा रहा है, मैं खुद नहीं घूम रहा हूँ। आखिर हम और आप कौन हैं? बिलकुल नाचीज हैं। हमारी कोअी हस्ती नहीं है। तमिलनाडु में मैं घूम रहा था। माणिक्यवाचकर के भजन मैं गाता था। माणिक्यवाचकर के भजन का अक ध्वनि मुझे याद है।

'नान वारु ? वार अरिवारु एरु'

तमिलनाडु का सर्व श्रेष्ठ महाकवि माणि-क्यवाचकर है, वह कह रहा है, 'मैं कौन हूँ, मुझे कौन जानता है? मुझे कोअी नहीं जानता है।' यह भजन मैंने पढ़ा, तो मुझे लगा कि यह मुझे लागू हो सकता है। मुझे जिस दुनिया में कौन जानता है? मैं कौन हूँ? मैं बिलकुल नाचीज हूँ और आप भी कौन हैं? जिन्होंने अतना काम किया है, अत्यन्त अपेक्षित लोग अगर कोअी हों, तो यह आप लोग हैं। नयवायु की यात ही लीजिये दो साल लगातार सगडा कर बरके अन्होंने मुक्ति पायी है। जिस आन्दोलन में वे बूढ़ पड़े। मैं अन्तर्गत तारीफ तो क्या करूँ? जिसके पहले भी कभी वार मुझे मिलने का सोचा आता था, लेकिन अक दाय से भी मैंने अन्तर्गत यह भी नहीं गुमाया कि आप यह काम लीजिये। ध्वनिगत बर्तन के घारे में गुमाने का मेरा स्वभाव ही नहीं है। लेकिन अन्तर्गत दिल में आग थी, जिसलिये अन्होंने यह पद छोड़ा। अब अन्तर्गत तारीफ में कर तो अमर्ष घोभा नहीं है, जिसलिये मैं गुप्त रहा। अन्तर्गत मान हुआ या सात-आठ महीने अमर्ष मुझे टीक

याद नहीं है परतु अन्के त्याग की अितनी अपेक्षा हुआ थी कि अितनी गनीमत समझो कि अन्होने मूल्यता की, असा किसी ने नहीं कहा । अन्होने बहुत बड़ा त्याग किया था, परतु उसे काओ त्याग समझकर वह काम अन्होन नहीं किया । अुसमें अुनको आनंद महसूस हुआ । और यह आनंद का काम है, या समझकर अन्होने यह निर्णय लिया, परतु मुत्से रहा नहीं गया और अेक सभा में घेन कहा—माणिक्यवाचकर भी अेक राज्य के मुख्यमन्त्री थे और अन्होने अुस राज्य के प्रधान मन्त्री-पद का त्याग किया था । यह बात मशहूर है । अुसका जिक्र मैंने अुस दिन अुनके गाव म अुस सभा में किया और मैंने कहा कि असा ही भगवान बुद्ध न किया था असा ही काम माणिक्यवाचकर ने किया था और असा ही काम नवरात्रु न किया । असा अेक वाक्य मुझ जाहना पडा, अल्पन्त लाचारी से, क्योंकि अुनक त्याग की अितनी अपेक्षा हुआ, जो मुत्से सहन नहीं हुआ । यह तो नवरात्रु की बात हुआ । अेक हमारो लडकी अच्छी पढी लिखी है । पहले प्रोफेसर थी । वह छोड कर मेरे पास आयी । सात-आठ साल से मेरे साथ घूम रही है और काम कर रही है । कुछ ग्रन्थ भी अुसन लिखे हैं । अेक रचनात्मक कार्यकर्ता, गांधीवादी, बुजुर्ग अुसे सलाह दे रहे हैं कि अरो लडकी, तू यह क्या कर रही है ? तू तो अभी जवान है । विनोबा बूढा हो गया है । अभी तो तेरी जवानी का काल चल रहा है, तू जरा सोच । आगे चलकर कमजोर हो जाओगी, असलिये तुम जरा जीवन स्थिर कर लो । अंसी सलाह वे अुसे देते हैं । अितनी अपेक्षा, हृद दर्ज की । अंसी हालत में भी आप लोगो ने काम किया है ।

मैं जानता हू कि भगवान काम चला रहा है । भगवान को ही कृपा है और असलिये यश-अपयश की तुलना आप मत कीजिये । कुछ लोग कहते थे कि आपन अितना काम किया है, अितने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, लेकिन उसके आगे का काम करने में आप फेल हो गये । मैंने कहा, मेरे फेल होन स आप पास होते हैं तो मैं पचास दफा फेल होन के लिये तैयार हू । मुझ बडी खुशी होगी । मेरे फेल होने से आप पास होते हैं और यह बोलने में आपको अिज्जत मालूम होतो है क्या ? क्या असमें आपको सोभा है ? क्या यह मेरे घर की लडकी की शादी थी ? अस तरह मैं जब गर्जना करता हू, सिंह-गर्जना, तो वे मेरे सामन नहीं टिकते हैं । मेरा असा दशन होता है, मेरी गजना सुनते हैं तो चुप हो जाते हैं । तो क्या असमें तुम्हारी अिज्जत है, असा सवाल मैं अुनको पूछता हू ।

कल की बात है । अस भूदान में चालीस लाख अेकड़ जमीन मिली है और आठ लाख से ज्यादा बटी है, अुसमें अच्छी फसल पैदा होती है । बाकी जमीन वाटता बाकी है । अुसमें मदद की जरूरत है । बहुत मेहनत का काम है, और लोग अुसे कर रहे हैं । अुसमें कुछ अंसी भी जमीन है जिसपर रिक्लेम करना पडगा । अुसके लिये कुछ पैसा सरकार न भजूर किया है । जयप्रकाश जी ने मुझे कहा, बिहार के मन्त्री कहते थे कि जो थोडा-सा पैसा असमें आप लगाते हैं अुसके आधार से अुत्तम फसल पैदा हो सकती है । वे मन्त्री कहते थे कि बिहार में अितनी जमीन में अितनी फसल तान के लिये हमें हजारो रुपये खर्च करने पडते हैं, लेकिन अितने कम खर्च में यहा कितनी अच्छी फसल हो रही है । लेकिन

असके बाद भी अतिनी कजूसी से अन्होने पंसा मजूर किया-तीस लाख रुपया। जहा आर्मी के लिये तीन सौ करोड रुपया खर्च होता है और केवल डर से। और वे हमें कहते हैं कि तुम्हारी बेसिक अंजुवेशन कितनी महंगी है, जिसलिये अंसमें जरा खर्च कम करो, अंसका मूल्य बड़ा है। हम कहते हैं कि अच्छी तालीम सस्ती होनी चाहिये यह आपको किसने कहा? आपकी आर्मी के खर्च को जरा कम करो। अच्छी तालीम महंगी जरूर होनी चाहिये यह खूब ध्यान में रखो। कुबेर का दर्शन भिलारी को हुआ, तो भिलारी ने तरवारो के लिये चार पैसे मागे। और कुबेर ने अंसको दो पैसे दिये। वाह रे कुबेर। मागा कितना और दिया कितना। कभी लाख अंकड जमीन अभी पड़ी है। अंसमें भी मागनेवालो ने बहुत जोर लगा कर कुछ लाख रुपये ही मागे। मैंने कहा कि गलती तुम्हारी ही है। तुम जरा करोड मागते तो क्या जाता?

मैं कहता यह चाहता हू कि अिप आदोलन को तराजू में डालकर नापना नहीं है। हमें यह नहीं देखना है कि हमने कितने ग्रामदान प्राप्त किये हैं, कितनी जमीन प्राप्त की है। हमें जागतिव दृष्टि से सोचना है। तब सत्याग्रह की बात आप इस तरह नहीं करेंगे। विज्ञान युग में छोटे सत्याग्रह नहीं होते हैं। सत्य तो यदा ही होता है। जो सबका ध्यान खींच सकता है, सबका ध्यान खींचने की प्रेरितस हमें करनी चाहिये। तो भाजियो, सत्याग्रह का पास्त्र विकसित करने की जिम्मेवारी आप पर और हम पर विज्ञान युग ने दासी है। जिसलिये हमें सोचना चाहिये और हमें अंसी युनि को गोज करनी चाहिये जिसे बि सामनेवाला अपने अन्दर देनेगा और अंगके हृदय में परमेश्वर,

कुरुक्षेत्र शुरू होगा। लडाओ का क्षेत्र शुरू होगा। मैं कहता हू कि सत्याग्रह की लडाओ सामनेवाले के हृदयक्षेत्र में होनी चाहिये। अंस को अन्दर यह महगूस होना चाहिये कि मैं गलती कर रहा हू, निरी गलती कर रहा हू।

बड़ी मशहूर कहानी है-सेट पाल की, जिसने बीसाओ धर्म को खूब फैलाया। वह पहले कोओ महापंडित था और क्रिश्चियनिटी के विरोध में था। पर बीसा के शिष्य तो बिलकुल सीधे-सादे थे। कोओ मच्छीमार था, कोओ बुनकर था। मच्छीमार को क्राजिस्ट ने कहा था "मेरे पीछे तुम आओ, मच्छीमार नहीं लेकिन मैं तुम्हें मनुष्यमार बनाअुगा।" तो वह अपना जाल छोड़के क्राजिस्ट के पीछे गये। अंक के बाद अंक मारे जाते थे, सताये जाते थे, और यह पाल अुनको बहुत सताता था। अंक दिन क्राजिस्ट के अनुयायी कही जा रहे थे और अुनको पास सतानेवाला था। पर अंसके पहले दिन का रात में पास को नींद नहीं आयी। सपने में भगवान आये और बोले "मुझे क्यों सताते हो"। अंसने पूछा "तुझको मैं नहीं सता रहा हू, मैं तुझको बब सता रहा हू"। तब भगवान् बोले, "तू मेरे लडने को सताता है, तो मुझे ही सताता है।" यह बाक्य अंसने सुना और दूसरे दिन अंसका परियतन हुआ और वह सेण्ट पाल बना। क्राजिस्ट का अुत्तम, सब से श्रेष्ठ शिष्य बना और जिसके दिलमें भगवान का प्रवेश हुआ। इस तरह सामनेवाले के हृदय में ही हमारा प्रवेश होना चाहिये। मनु ने कहा है, "हे मेरे प्यारे भाईयो, तुम्हारी असफलताओ से तुम अपने को अपमानित मत करो।" मैं आपसे कहना चाहता हू कि हमें जो अगफलता मिली है वह अत्यन्त अुज्जयल है (संपादक पृष्ठ २३३ पर)

हमारी शिक्षण यात्रा

प्रिय नञी तालीम परिवार,

मैंने पिछले पत्र में आपसे निवेदन किया था कि हम अपनी शिक्षण यात्रा पूरी करके सेवाग्राम लौटे हैं और धीरे-धीरे हमारा अनुभव आपके साथ बांट लेगे।

हमारी शिक्षण यात्रा पहली सितम्बर १९५६ से शुरू हुई। वैसे तो हम जुलाही महीने में ही यूरोप पहुँचे थे। लेकिन जुलाही और अगस्त के महीने यूरोप में ग्रीष्म ऋतु के दिन माने जाते हैं। और सारा यूरोप अन्धे छुट्टी के रूप में मनाता है। स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, बालवाडिया सब बंद हो जाते हैं, विद्यार्थी-विद्यार्थिनी, अध्यापक-अध्यापिकायें, दफ्तरी और कारखानों में काम करने वाले स्त्री-पुरुष, बच्चे, यहाँ तक कि राजा, रानी, राष्ट्रपति, मन्त्रीमंडल और लोक सभा, धारा-सभाओं के सदस्य कर्तव्य के तौर पर गर्मी की छुट्टी मनाने निकल पड़ते हैं। कोअी पदयात्रा

करते हैं, तो कोअी नावो में, मोटरों में, या यान-वाहनो से घूमने निकलते हैं। कोअी छुट्टी मनाने के लिये दुर्गम पर्वतों के सिखरों पर चढ़ते हैं, कोअी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक अनुसंधान के लिये निकल पड़ते हैं और कोअी सिर्फ़ ग्रीष्म ऋतु की मुनहली धूप के आनंद का अंशुभोग करने के लिये दक्षिण की ओर यात्रा करते हैं। क्रियाशील प्रवृत्तिशील पाश्चात्य समाज में छुट्टी मनाना भी अंक प्रबल प्रवृत्ति ही है।

सच कहे तो ग्रीष्म ऋतु यूरोप में प्रकृति का अंक आनंदोत्सव ही है। हमारे देश में जब हम ग्रीष्म ऋतु, अिस शब्द का अुच्चारण करते हैं या गर्मी के दिनों के बारे में सोचते हैं तो हमारी कल्पना दृष्टि के सामने प्रकृति का अंक रूक्ष कठोर चित्र खड़ा होता है। प्यासी और तपी हुई धरती के अपूर तपे हुए आकाश से अग्नि का वर्ण हो रहा है। प्रचण्ड ग्रीष्म से अस्त शान्त मानव, पशु पक्षी छाया का आश्रय

(पृष्ठ २६२ का संपाद)

और अगर नहीं मिली है, तो अुज्जल है ही। अिसलिये हम अपन को बभी अपमानित न करे, यह मैं आपसे कहना चाहता हूँ। यह समझें कि हमारा काम हम नहीं कर रहे हैं। हम नाचीज हैं। वह हमें चला रहा है, हिला रहा है, बुला रहा है, धुमा रहा है। अँसी भावना लेकर हम काम करेंगे तो हम आपको यकीन दिलाता चाहते हैं कि यह जमात हमीर बनेगी। दुनिया के भास को परिवर्तित करेगी अिसमें कोअी सदेह नहीं है। यह शक्ति हमारी नहीं है, भगवान

हमसे यह काम करा रहा है। हमारी कोअी हस्ती नहीं है, लेकिन यह अुसकी लीला है, वह नाचीज और कमजोर औजारों से काम कराना चाहता है। अँसी भावना, अँसा विदवास लेकर आप काम कोजिये, परीवपण कोजिये, निरीक्षण खूब कोजिये। आप गलतियाँ सुधारे और यह ध्यान में रखिय कि बावजूद अिन सब गलतियों के अंक पवित्र हाथ, भगवान का हाथ हमारे सिर पर है। अुसने वह रखा है, यह थढ़ा आप रखियेगा।

दूढ़ रहे हैं। हमारे देश में ग्रीष्म ऋतु में भगवान का स्वरूप प्रगट होता है।

लेकिन पश्चिम की ग्रीष्म ऋतु में भगवान की प्रसन्न मूर्ति दीखती है। आकाश अञ्जल, नील, दयामला धरती, भुसके ऊपर रग-बिरंगे फूलों का आलिपन और सुनहली धूप। सारी पृथ्वी जैसे हस उठती है। ठंड और अंधेरे के कारागार से छुटकारा पाकर स्त्री-पुरुष सृष्टि के अस्ति सुंदर रूप को देखने के लिये पागल होकर निकल पड़ते हैं। अस्तिअस्ति गर्मी के दिनों की छुट्टी पश्चिमो दुनिया का अतना बड़ा आनन्दोत्सव है।

अन दिनों में स्कूल-कालेज आदि शिक्षण संस्थाएँ तो बंद रहती हैं, लेकिन शैक्षणिक प्रवास, शिक्षण-शिविर वगैरा प्रवृत्तियों के द्वारा शिक्षण का काम चलता हो रहता है। कुछ देशों में, खासकर साम्यवादी देशों में, शिक्षा विभाग अपने ही खर्च से स्कूल के बालक-बालिकाओं को शैक्षणिक प्रवासों के लिये भेजते हैं। ये देश राष्ट्र के बच्चों को शैक्षणिक प्रवास के लिये भेजना, शिक्षा के कार्यक्रम का अंक आयोजन अंग मानते हैं और अस्ति के लिये खर्चा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। जिन देशों में शिक्षा का संपूर्ण राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ है वहाँ भी माता-पिताओं की ओर से, शिक्षण-संस्थाओं की ओर से और समाज-सेवा की संस्थाओं की ओर से अधिक-से-अधिक विचारधायियों को शैक्षणिक प्रवासों का लाभ मिले, अस्तिअस्ति गर्मी की छुट्टियों में शैक्षणिक प्रवासों का अंक व्यवस्थित यूरोप-व्यापी कार्यक्रम चलना है।

शैक्षणिक प्रवासों के बलावा बड़े विचारधायी और अध्यापकों के लिये विविध प्रकार के

सम्मेलन, शिक्षा शिविर और ज्ञानगोष्ठियों (सेमिनार) का आयोजन किया जाता है। अन सम्मेलनों और शिविरों में राजनैतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक हर प्रकार की समस्याओं पर चर्चा-विचार होते हैं। पिछले वर्षों में तरुण समाज में श्रम शिविरों (वर्क केम्प) का संगठन बढ़ता जा रहा है और यह अंक शुभ संकेत है। पहले विश्वयुद्ध के बाद स्विट्ज़रलैण्ड के अंक शांतिवादी अंजिनीयर ने विश्वशान्ति के लिये श्रम शिविरों का आंदोलन शुरू किया था। अस्ति आन्दोलन की बुनियाद में यह विश्वास रहा कि युद्ध के परिणाम स्वरूप या दगा आदि हिंसात्मक कार्यक्रम के परिणाम स्वरूप जो ध्वंस होता है अन्ही स्थानों में विभिन्न राष्ट्रों के तरुण-तरुणी अगर अपने सम्मिलित शरीर श्रम के द्वारा पुनर्निर्माण कार्य करें तो यह विश्वशान्ति की ओर तैयारी का अंक कार्यक्रम बन सकता है। धीरे-धीरे श्रम शिविरों का कार्यक्रम बढ़ता गया। और दुनिया के सब शिक्षा-शास्त्री, समाज सेवक और दान्ति प्रेमियों ने अस्ति का स्वागत किया। आज श्रम-शिविरों का संगठन करने के लिये बहुत-सी संस्थाएँ स्थापित की गयी हैं। और युनेस्को (अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संघ) का श्रम शिविर विभाग सारी दुनिया में श्रम शिविरों के संगठन में सहायता करता है। अस्ति प्रकार तरुण-तरुणियों के लिये श्रम शिविरों में भाग लेना भी छुट्टी का अंक कार्यक्रम रहता है।

हम भी विद्यार्थी की हैसियत से ही यूरोप गये थे। अस्तिअस्ति छुट्टी के शैक्षणिक कार्यक्रम में भी हमने प्रयासभव भाग लिया। पुराने मित्रों से मिले। और प्रत्यक्ष अनुभव से और

आपसी बातचीत से वर्तमान यूरोप की समस्याओं को समझने का प्रयत्न भी किया। क्योंकि यूरोप की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक समस्याओं को समझे बिना शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन वास्तविक नहीं होता।

जिस बार हमारी शैक्षणिक यात्रा का मुख्य अद्देश्य रहा साम्यवादो राष्ट्रों में और खास करके सोवियत संघ के राष्ट्रों में नन्हें बच्चों के पोषण और शिक्षण से लेकर विश्व-विद्यालय तक की पूरी शिक्षा-व्यवस्था और शिक्षा-पद्धति का निरीक्षण और अध्ययन करना। सन् १९३० में श्री आर्यनायकमजी विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकूर के साथ रुस गये थे और उस समय अन्होंने साम्यवादी शिक्षा पद्धति का पहला अध्ययन किया था। जिस भूमिना को लेकर वे यह भी समझना चाहते थे कि पिछले २९ वर्षों में सोवियत संघ में शिक्षा के क्षेत्र में किस हद तक और किस दिशामें प्रगति हुई।

लेकिन साम्यवादी शिक्षा का अध्ययन हमने सोवियत संघ से प्रारम्भ किया। वर्तमान दुनिया में सबसे नया साम्यवादी राष्ट्र है पूर्वी जर्मनी जिसका नाम जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक रखा गया है। इसी नवीनतम साम्यवादी राष्ट्र में हमने साम्यवादी शिक्षा का अध्ययन शुरू किया और जेकोस्लावेनिया में जिस बार के लिये भुंसे समाप्त किया।

जिस अध्ययन का कार्यक्रम शुरू करने के पहले शान्ति से पूर्व तैयारी के लिये बेल्जियम के एक छोटे-से गांव में हमारी एक शान्तिवादी बेल्जियम ब्रह्म के पास हम गये थे। यह बहुत बेल्जियम की एक प्राचीन अभि-

जात वंश की है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय अन्होंने घर जर्मन सेना के अधिकार में था। जिस प्रकार अन्होंने हिंसा का व्यक्तिगत अनुभव मिला था। युद्ध के बाद जब से अन्होंने पति की मृत्यु हुई तो तब से वे विकराल विश्व-परिस्थिति के समाधान के लिये एक शांतिमय मार्ग ढूँढ रही थी। बहुत भक्तिमती रोमन कैथलिक है, जिसलिये सब से पहले, अपने गांव में भ्रमदान द्वारा एक गिरजा बनाने का काम अन्होंने हाथ में लिया। वर्तमान यूरोप की जनता आज धार्मिक जीवन के बारे में अंधासीन है और गिरजाघर दूर होने के कारण अन्होंने गांव के अधिवासियों ने गिरजा जाना करीब करीब छोड़ ही दिया था। जिस गिरजाघर के निर्माण के सिलसिले में भ्रम शिविर आंदोलन के साथ अन्होंने सफल स्थापित हुआ और अन्तर्राष्ट्रीय भ्रम शिविर सम्मेलन के अवसर पर यूरोपीय प्रतिनिधि की हैसियत से वह भारत आयी थी। अपनी भारत यात्रा में अन्होंने कभी भ्रम शिविरों में भाग लिया, सेवाग्राम आयी और विनोबाजी के साथ भी पदयात्रा में रही। जिस प्रकार सर्वोदय के विचार और कार्यक्रम के साथ अन्होंने परिचित हुआ, अद्धा अल्पन्त हुआ और वह अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोदय परिवार की एक बहन बन गयी।

जब हम अन्होंने घर पहुंचे तब भारत सेवक समाज के चार कार्यकर्ता भ्रमशिविरों का अध्ययन करने के लिये यूरोप आये हुअे थे और अन्होंने घर ठहरे थे। अन्होंने घर उस समय एक प्रकार का सर्वोदय शिविर ही बना रहा। हम अन्होंने नाम और पता नीचे देते हैं। कोअी भी सर्वोदय कार्यकर्ता यूरोप जाने पर जिस बहन के घर में जायें तो सप्रेम आतिथ्य मिलेगा।

श्रीमती दी कक

गाव-मेरेलवेके

वाया गैं-(Via gand)

बेलजियम (Belgium)

अगस्त के अंत में देहाती यूरोप की शोमा अनिवंचनीय सुन्दर होती है। हरे-भरे खेतों के ऊपर सूर्य भगवान् की प्रसन्न अज्ज्वल किरणें जैसे कि प्रसाद-वर्षण करती हैं। किसान परिवारों के स्त्री-पुरुष बच्चे और घोड़े दिनभर खेतों में काम करते हैं। हम जब बेलजियम में थे उस समय ब्रसेल्स नगरी में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी चल रही थी। ब्रसेल्स नगरी में देश-विवेकों के यात्रियों की भीड़ थी, लेकिन बेलजियम के गावों में वह आलू निकालने का मौसिम था। घुटने टेककर स्त्री पुरुष मिट्टी खोदकर हाथों से आलू निकाल रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि बेलजियम के गावों के स्त्री पुरुष अपने खेतों की भूमि पर प्रार्थना कर रहे हैं।

बहन के घर के चारों ओर पुराने सायेदार अूँचे-अूँचे वृक्षों का एक गहन वन था। जिस वन के आगे गाव, गाव के घर, गाव के खेत, गाव का गिर्जा और गाव की झाला। गाव के आगे प्राचीन नगरी Gand या Ghant-गैंट नगरी में टूरिस्टों की भीड़ थी। लेकिन गाव तक आसका असर नहीं पहुँचता था।

जिस शांतिमय परिवेश में एक सप्ताह बिताकर पहली सितंबर को हम बर्लिन के लिये

रवाना हुये। बहुत दिनों की बात नहीं है कि अंश्वर्य के प्रताप में व्यापार और अद्योग के बपेत्र में, कला, ज्ञान और विज्ञान में बर्लिन का स्थान यूरोप में ही नहीं सारी दुनिया में बहुत अूँचा था। देश विदेश के लोग बर्लिन का अंश्वर्य देखने आते थे। यूरोप के पिछले बीस बरसों के इतिहास के परिणाम-स्वरूप आज बर्लिन में युद्धोत्तर यूरोप की सब समस्याओं का, सब दुखों का अेकत्र-दर्शन मिलता है। आज बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक समस्याओं की मुख्य रंगभूमि है।

पिछले विश्वयुद्ध में प्रस्फोट वर्षण से बर्लिन नगरी करीब करीब खतम हो चुकी थी। पिछले चौदह वर्षों में थोड़ा बहुत पुनर्निर्माण का काम हुआ है। पश्चिमी बर्लिन फिर से एक आधुनिक समृद्धिशाली यूरोपीय नगर का रूप ले रहा है। लेकिन पूर्वी और पश्चिमी दोनों बर्लिनो के बहुत-से हिस्से अभी खडहूर के रूप में ही खड़े हैं। हम जब रात को बर्लिन पहुँचे बिन्ही खडहूरों के ऊपर रात्रि की छाया अुतर रही थी। पूर्वी बर्लिन के जनशून्य रास्तों में और अघकार-विपादाच्छन्न खडहूरों में वर्तमान यूरोपीय समाज का जो दर्शन मिला उसी की पटभूमिका में हमने साम्यवादी यूरोप की शिक्षा-व्यवस्था का अध्ययन शुरू किया।

सेवाग्राम

२०-३-५९

--आशादेवी

सर्वोदय आन्दोलन तथा युवसमाज

मनमोहन चौधरी

सर्वोदय की जाति के लिये भारत की युवकशक्ति जुट पड़ने पर ही वह सफल हो सकेगी। इसमें विद्यार्थी वर्ग का महत्व विशेष है क्योंकि अन्ही में से ही भविष्य के निर्माता तैयार होंगे।

आज वास्तव में सर्वोदय आन्दोलन के साथ विद्यार्थी समाज का संबंध बहुत ही कम है। अतिना ही नहीं किसी प्रकार की सेवा या समाज-सुधार के काम में उसका संपर्क कम होता जा रहा है। अल्टे आज विद्यार्थी समाज अनुशासन-हीन बनता जा रहा है। अंसा आनपेप हम चारो ओर से सुनते हैं, तथा देखते भी हैं कि जगह जगह पर विद्यार्थियों की हलचलो को पाबू में रखने के लिये पुलिस का अपयोग किया जा रहा है।

सिर्फ शहर में नहीं गावों में भी मने कअी कार्यकर्ताओं से सुना है कि नवयुवक भूदान ग्रामदान आदि के कार्यक्रम में रस नहीं लेते हैं। इसलिये युवक समाज को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये तथा क्रांति के काम में उनकी शक्ति के अपयोग के लिये विशेष प्रयत्न करना पडगा। हम नये कार्यकर्ताओं की प्राप्ति के लिये कोशिश करते हैं तथा हमें अिके दुवके कार्यकर्ता मिल भी जाते हैं। अब विनोबाजी ने अेर लाख शांति संनिको को माग की है। हमें अितनी भारी तादाद में सेवक प्राप्त करने के लिये कही अधिक सख्या में विद्यार्थियों तथा युवको के सपर्क में आना होगा। अगर हम बरोडो की तादाद में विद्यार्थियों तथा ग्रामीण युवको में

सर्वोदय के लिये सिर्फ आकर्षण ही नहीं बल्कि अत्साह पैदा कर सकेगे तभी हमको लाख की तादाद में सेवक मिलेगे।

असके लिये हमें जरा बुनियाद में जाकर सोचना होगा। हर नयी पीढी के विचार पुरानी पीढी से अलग होते हैं। भारत में अेर दूसरा वैचारिक भेद भी है। भारत का समाज परंपरा को माननेवाला हो गया था। नयी पीढी पुरानी पीढी के ही विचार को बिना सोचे समझे मान लेने की आदी बन गयी थी। लेकिन जब से हमारा पश्चिम के साथ संबंध हुआ तब से व्यक्ति स्वातंत्र्य के नये विचार देश में आये और पुराने प्रचलित विचार तथा नये विचारों में भेद ज़ोरो से शुरू हुआ।

आज भारत में सिर्फ विचार के स्वाभाविक विकास का भेद नहीं, बल्कि दो सांस्कृतिक भूमिकाओं का ही भेद चल रहा है। पुरानी पीढी गावों की पुरानी संस्कृति, गीता, रामायण आदि की बुनियाद पर रची हुअी है। तथा स्कूल कालेज के विद्यार्थी जो तालीम पाते हैं, उसकी बुनियाद पश्चिम के विचारों पर है और जिसमें विज्ञान का दृष्टिकोण अधिक से अधिक महत्त्व का स्थान ग्रहण कर रहा है। आचार के भेद भी असके कारण पैदा हुअे हैं।

पिछले दिनो हमने राष्ट्रीयता के नाम से अस पाश्चात्य विदेशी संस्कृति का विरोध किया था, और हमने अपनी जाति को देश की संस्कृति की बुनियाद पर खडा करने की कोशिश की। यद्यपि गांधीजी भारत के सबसे ज्यादा पाश्चात्य

सम्पत्ता को समझने वाले जैसे मनुष्यों में से ये जिन्होंने पश्चिम के सारे अच्छे विचारों को आधुनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया था, फिर भी उन्होंने अपने विचारों को भारतीय परंपरा का जामा पहनाया। यहाँ तक कि गांधी-विचार पश्चिम में पनपनेवाले वैज्ञानिक विचार का व सारी पाश्चात्य संस्कृति का विरोधी था, ऐसा भास होने लगा। उस समय गांधीजी के सामने जिसके लिये एक परिस्थिति का तकाजा भी था। शक्तिपत वर्ग में तथा जनता की सामाजिक भूमिका में भेद अतना गहरा और गहरा दस्त था कि दोनों की समझ में आ सके ऐसी सामान्य भाषा का उपयोग असंभव था। अगर 'रामराज्य' शब्द शिक्षित वर्ग को रुचता नहीं था तो 'लोकतन्त्र और समाजवाद' जैसी भाषा जनता की समझ के बाहर की थी। तिसपर भी गांधीजी ने जनता की ओर ही देखा और उसकी भाषा का उपयोग किया। मगर आज जिस छाँटी को पाटने का समय तथा वर्तमान हमारे सामने आ खड़े हुए हैं

आज भारत के शक्तिपत वर्ग सर्वोदय विचार को बहुत ही साधु, अच्छा, पवित्र, त्याग पूर्ण मानने के साथ साथ अव्यवहार्य और आज की दुनिया में न चलनेवाला मानते हैं। उनमें उसके लिये कुछ सहानुभूति तो पैदा होती है लेकिन असाह्य पैदा नहीं होता।

सर्वोदय विचार मूलतः भारतीय है और अमुका जन्म भारतीय राष्ट्रीय संग्राम की कोख में से हुआ है। उसको भारतीय राष्ट्रीयता का रंग लगा हुआ है। उसकी भारतीय विशेषता पर हम फुल भी भरते हैं। विचार हमें आगे चलकर उसे अंतराष्ट्रीय भूमिका पर खड़ा करना है तभी हम अति निविष्टों के दिमाग को छू सकेंगे।

विनोबाजी विज्ञान पर, अंतराष्ट्रीय संस्कृति पर काफी अरसे से जोर देते आ रहे हैं। लेकिन उनके अति विचारों को शक्तिपत वर्ग के पास पहुँचाने का काम हमें जितना करना चाहिये था उतना हम नहीं कर पाये हैं। वैज्ञानिक विचार की भूमिका भी सामान्य कार्यकर्ता की समझाने का काम कम हुआ है।

एक तीसरी बात भी है जो पुराने धर्म की परंपरा में से आयी हुई है। मनुष्य स्वभाव से बुरा है और उसको दबाव से हर प्रकार की जजोरो में जकड़कर, बाँधों में घेरकर ही अच्छा किया जा सकता है, शुद्ध रखा जा सकता है, यह विचार सारी दुनिया भासती आयी है। ऐसी मान्यता में से कानून बनते हैं और ऐसी मान्यता में से धर्म के नीति नियमों को बंधनों का रूप आता है। मा-त्राप अक्सर यही मानते हैं कि बच्चों को घर में बंद करके रखने से ही वे अच्छे रहेंगे। जीवन की स्वाभाविक स्फूर्ति तथा आनंद के साथ नैतिकता का, धार्मिकता का एक प्रकार का विरोध है ऐसी कल्पना हममें है। सर्वोदय विचार भी इसी प्रकार मनुष्य को हर प्रकार की नीति के बंधन में जकड़कर सन्मार्ग पर रखनेवाला एक विचार है असा भास सामान्य जनता तथा शक्तिपत वर्ग दोनों को होता है। सामान्य जनता बंधन स्वरूप धर्म से अभ्यस्त है, जिसलिये उसे यह अखरता नहीं है। मगर शक्तिपत वर्ग अपने को परंपरा के बंधन से मुक्त मानता है और इसीलिये बंधन रूपी धर्म को स्वीकार करने को तैयार नहीं होता।

सर्वोदय विचार अहिंसा तथा सत्याग्रह की जिस बुनियाद पर खड़ा है वह विचार अति परंपरागत विचार से बिल्कुल अलग तथा अलगा

है। मनुष्य का स्वभाव मूलतः सत् है और अस्वत् पर हर प्रकार के जो दबाव तथा बधन हैं उनसे अस्वत् को मुक्त करने पर ही वह अपने सत् स्वरूप में प्रकट होगा। गांधीजी के असहकार तथा सत्याग्रह के आन्दोलन ने भारतीय जनता को अस्वत् तरह के दबाव से मुक्ति दिलायी और फलतः भारत में जागृति तथा अस्वत् का ज्वार आया। अस्वत् जमाने का सत्याग्रह अस्वत् अर्थ में अभावात्मक (negative) था कि हमने तो छुद दबाव से मुक्ति पायी, मगर हमारे प्रतिपक्षी पर दबाव डालना सही मार्ग है ऐसा हमने समझा। मुझे नम्रता के साथ कहना पड़ रहा है कि अस्वत् तरह मनुष्य को मुक्ति दिलाकर नहीं, बधन में बाधकर सन्मार्ग पर रखने की वृत्ति हममें अब भी बची है। और यही कारण है कि हम लोगो में सर्वोदय के लिये भक्ति (रूढ़िगत अर्थ में) पैदा करने में जितना सफल होते हैं अस्वत् पैदा करने में उतना नहीं। जब हम लोकसेवक का निष्ठापन, सर्वोदय-पान या किसी भी चीज पर सोचने बैठते हैं तो हमारा सोचने का ढंग यही होता है कि अमु मनुष्य को हम किस तरह के नियमों में अकड़ें, जिससे वह फिसलने, खिसकने न पावे। हम अक्सर विकेन्द्रीकरण, शरीर-श्रम-निष्ठा आदि अपनी योजनाओं को अस्वत् तरह समझते हैं और समझाते हैं मानो वे लोहे के चौबटे हैं, जिनमें डाल देने पर समाज को बुरा बनने का मौका ही नहीं मिलेगा। हर मनुष्य आठ-दस घंटे मेहनत करता रहेगा तो शैतान को मौका मिलेगा ही नहीं।

जिस प्रकार से अल्पवयस्क हिंदू विधवा को चारों ओर से घेरकर वैधव्य धर्म पालन करने के लिये मजबूर किया जाता है, उसी प्रकार भारत में

धर्म को आचरण में लाने का सनातन रूप, कम से कम जनता में रहा है। हमारे सर्वोदय की व्रत-नियम निष्ठाओं आधुनिक जमाने के व्यक्ति को आकर्षक नहीं लगती। लोगो को लगता है कि सर्वोदय याने सब की भलाही, शांति, अहिंसा आदि के लिये हमें जीवन की कभी मूल्यवान् सरसताओं को छोड़ना पड़ेगा और अपने को बचित करके ही हम सर्वोदय समाज की रचना कर सकते हैं।

जब तक हम यह न समझेंगे तथा समझा सकेंगे कि अपने को बचित करके सर्वोदय करना नहीं है, झुलटे आज के समाज में हम कभी प्रकार से बचित हो गये हैं, और सर्वोदय में अन्हें भर-भरकर पावेंगे तब तक अस्वत् के लिये अस्वत् पैदा नहीं होगा।

लोगो को लगना चाहिये कि अपरिग्रह से हमारे बालबच्चा की आर्थिक सुरक्षा मिटेगी नहीं, झुलटा ही प्रतिष्ठित आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा (total social security) मिलेगी। शरीरश्रम से हमें सृजन, स्वास्थ्य तथा तेजस्वी बुद्धि का नया मजा मिलेगा। आज की तालीम से हम जितना आगे बढ़ सके हैं नही तालीम से अस्वत् कभी गुना अस्वत् आगे बढ़ सकेंगे। राष्ट्रमाया को स्वीकार करने से विज्ञान का विकास कुठिन नहीं होगा बल्कि वह अधिक तेजस्वी होगा, मगर वह विचार सामान्य कार्यकर्ता तक कम अंतरा है। हमारा दृष्टि कोण अक्सर नैतिकता की सीख पर भाषण देने का ही होता है। आज के शहर के लोगो के आचार बाहर से आये हुये हैं। विद्यार्थी द्रागुजर पहनते हैं, सिनेमा देखते हैं, सिगरेट पीते हैं आदि बातों पर ही हमारा ध्यान पहले जाता है और अस्वत् का निषेध हम पहले करने लगते हैं। प्रेम करुणा

आदि को प्रथम महत्व दिया जाय और जिन चीजों को जरा गौण स्थान दिया जाय तो हम ज्यादा कामयाब हो सकेंगे। मनुष्य के रहन सहन, आचार अन्तर्राष्ट्रीय रूप लेगे यह भी हमें समझ लेना चाहिये।

जिस पुराने अनुशासन की हमने चर्चा की हमारे समाज में तथा पुरानी तालीम में वही चलता है और जो क्रमशः अपनी शक्ति खो रहा है। पिछले पचास सालों से अधर शिक्षण-शास्त्र में अहिंसा के जो तत्व दाखिल हुए हैं, और सारे जगत् में सर्वमान्य हुए हैं, उनका स्पर्श तक हमारे विद्यालयों और घरों को नहीं हुआ है। अधर समाज की व्यवस्था, विचार आदि इस तरह बदल रहे हैं कि पुराना अनुशासन-घर में बदल करने का अनुशासन—बेकार साबित हो रहा है और अधर नये अनुशासन का कही दर्शन नहीं हो रहा है। ऐसी परिस्थिति में अगर युवक अपनी मनमानी राह चल रहे हैं तो अभिमान आचरण की कोई बात नहीं।

फिर यह भी अंध मुसीबत है कि युवकों में जो स्वाभाविक प्रेरणायें होती हैं, उनके स्वस्थ प्रकटन के लिये, खास करके शहरी में, कोई अवसर नहीं है। पराक्रम का शौक युवक को होता है। सिनेमा में उसका अभोग झुलटे ढंग से होता है, दगैर टिकट के रेल बसा में सफर करना, किसी की मोटर लेकर भाग जाने में उसका प्रवास होता है। निसर्ग के साथ शहर के विद्यार्थियों का कोई संबंध ही नहीं होता। हमारे समाज में लड़के लड़कियों के स्वाभाविक मेलजोल का रिवाज नहीं है और अधर प्रेम के अपने साथी चुन लेने के नये आदर्श तथा विचार समाज में आ गये हैं। जिन सबके कारण हमारे स्कूल बालेजा

में लड़के-लड़कियों का संबंध विकृत हो रहा है। काम के जरिये अपनी सृजनात्मक शक्तियों के स्फुरण का मौका उन्हें नहीं मिलता। इसलिये भी अत्यन्त निराशा उनमें पैदा होती है। अक्सर अधिक सख्त विद्यार्थी जो देहातो से आकर शहर में रहते हैं वे अंध तरह से शरणार्थियों का-सा जीवन व्यतीत करते हैं। उनके जीवन में किसी तरह का प्रेम का स्पर्श तथा आश्रय नहीं होता जो उन्हें अपने घर में कम व देश मिल सकता था। उनकी बुद्धि में सहानुभूति के साथ, दृढ़ता के साथ उनका मार्गदर्शन करनेवाला कोई नहीं होता। अतः उनका भावनागत विकास कुठित हो जाता है और सर्वोपरि आर्थिक अरविपता का, बेकारी का विकट प्रश्न, धंधा प्राप्त करने की समस्या उनके सरपर मड़राती रहती है।

हम विद्यार्थियों में काम करना और सर्वोदय क्रांति के लिये उनमें उत्साह पैदा करना चाहेंगे तो उनके जीवन को छूनेवाली समस्याओं के हल में सर्वोदय क्रांति की कारगरता को व्यक्त करना होगा। अपने कार्यक्रम में इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ रखनी होंगी जो उनके जीवन की जिन वचनानुओं के अभावों की पूर्ति में सहायक हों। "आत्म-प्रकटन के द्वारा आत्म नियंत्रण" इसके लिये अनुकूल स्थिति पैदा करनी होगी। पालकों तथा शिक्षकों को हमें इसमें दिलचस्पी दिलानी पड़ेगी तथा उनमें इस प्रश्न के बारे में समझदारी पैदा करनी होगी। मेरा अनुभव है कि अपने पुत्र-पुत्रियाँ के, अपनी सत्तान के भविष्य के बारे में पालकों को आजकल काफी चिंता रहती है और आज के जमाने में अमुक-अमुक प्रकार के अवाञ्छनीय चरताव युगधर्म हैं ऐसी मानकर वे

असहाय रूप से सहन करते रहते हैं। अगर हम उनके सामने जिस युग आन्दोलन का एक रचनात्मक कार्यक्रम रखेंगे तो हम मध्यम वर्ग के पालकों को खुसमें दिलचस्पी दिला सकते हैं और शहरों के लिये भी यह एक शुद्ध कार्यक्रम बन सकता है।

पालक भी जिसमें आगे आये और अपने लड़के-लड़कियों को साथ लेकर सेवा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जुटे यह हमारी अनुसंधान मांग होनी चाहिये। जिसके द्वारा लड़के-लड़कियों के आपस में स्वस्थ और स्वाभाविक मेलजोल का सौम्य परिदृश्य बन सकेगा। दोनों पीढ़ियों में भी मानसिक सयोग और सहयोग स्थापित हो सकेगा। जिस आन्दोलन में हम देहातों में पदयात्रा आदि का आयोजन करेंगे तो खुसमें पराक्रम तथा प्रकृति के रसग्रहण के प्रति भी ध्यान होना चाहिये। युवकों के जो क्लब आदि हैं उनमें भी हमें रस लेना चाहिये।

विद्यार्थियों के लिये शमल के केन्द्र स्थापित

हो सकते हैं जिनमें श्रम का सृजनात्मक आनन्द-दायक पहलू सामने आये। जिसके जरिये गरीब विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता का भी एक मार्ग मिल सकता है। हमारे आन्दोलन में शहर में घर छोड़कर आये हुए विद्यार्थियों को भावनात्मक भूख मिटाने की खुराक भी मिलनी चाहिये। सज्जनों की, पालकों तथा शिक्षकों की असी मंडली शहर में या मुहल्ले में बने जो विद्यार्थी तथा दूसरे नवयुवकों के साथ व्यक्तिगत संपर्क में आये तथा उनकी जीवन की व्यक्तिगत समस्याओं में मार्गदर्शन करे।

जिन सबके पीछे सर्वोदय का विश्वासमक विचार तथा प्रेरणा हो सभी यह सारा एक क्रतिकारी रूप ले सकता है।

आज भारत के विद्यार्थीसमाज तथा शहरों के युवकसमाज में एक शून्यता पैदा हुई है। वह शून्यता सर्वोदय आन्दोलन के द्वारा ही भरी जा सकती है। आज दूसरे किसी आन्दोलन या कार्यक्रम में वह क्षमति नहीं है।

संकुचित दृष्टि से व्यापक सेवा करने पर भी यह संकुचित हो जाती है; और व्यापक दृष्टि से, निर्मल बुद्धि से, निष्काम भाव से, छोटी सेवा करने पर भी यह बड़ी बन जाती है। यह सेवा का रहस्य है।

—विनोबा

(‘विद्यार्थियों से’-बंगलोर १७-१०-५७)

कल के स्कूल कैसे हों ?

(“अिडियन ओपीनियन” के १० जून १९११ के अंक से)

[दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी “अिडियन ओपीनियन” नाम का पत्र निकाला करते थे । समय समय पर वे शिक्षा व शिक्षाव्यवस्था के बारे में अपने विचार इस पत्र द्वारा व्यक्त करते थे । उस समय की अन्य पत्रपत्रिकाओं में भी उनके विचारों के अनुकूल अगर कुछ लेख निकले तो वे उन्हें अिडियन ओपीनियन में दिया करते थे । इन लेखों से पता चलता है कि गांधीजी प्रारंभ से ही शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की कल्पना रखते थे ।

न्यूयार्क के पत्र ‘वर्ल्ड्स वर्क’ ने उस समय शिक्षा का काम करनेवालों से लेख मागे थे । लेखकों से अपेक्षा की गयी थी कि वे भविष्य की पाठशालाओं की तुलना उस समय की पाठशालाओं से करें और यह बतायें कि उनकी कल्पना के अनुसार नये स्कूल बालक-बालिकाओं के भले के लिये पुराने स्कूलों की अपेक्षा में क्या क्या करेंगे । उनके पास इस सिलसिले में ३०० लेख आये थे । लेखकों में कालेजों के प्रोफेसर से लेकर गांवों के प्राथमिकी स्कूलों के शिक्षक तक थे । “अिडियन ओपीनियन” के इस लेख में “वर्ल्ड्स वर्क” के संपादक का मतव्य और इस लेख-स्पर्धा के प्रथम पुरस्कार विजेता के विचारों का सारांश दिया गया है-स.]

“वर्ल्ड्स वर्क” के संपादक कहते हैं कि इन ३०० लेखों में इस बात पर सर्वानुमति पायी गयी कि आनेवाली पाठशालाओं “शास्त्रीय पद्धति” और ‘धियरी’ से मुक्त हो जायेंगी । वे बौद्धिक डिसिप्लिन, रटने की परंपरा, परीक्षाओं और अंसी बातों पर कम ध्यान देंगी और इस तरह आगे बढ़ेंगी जिससे कि युवक जो अंसी सीधी शिवपा मिले कि वह उस आदर्श जीवन के लिये तैयार हो सके जिसे वह बितानेवाला है और उस बाम के लिये तैयार हो जो उसे करना चाहिये ।

“आम राय है कि इस तब्दीली-से कोअी भी नुखमान नही होगा । “बौद्धिक” व सांस्कृतिक विवास और शिवपा ने दूसरे भी अुद्देश्य अधिक अच्छी तरह सिद्ध होंगे, क्योंकि उनको अंसी दिशा मिलेगी जिसमें बालकों को अधिक रुचि होती है । पाठशाला को जीवन से अलग रखने

के बदले जीवन का अंक अग बनाने से अनेक लाभ होंगे । यह तब्दीली अितनी शक्तिशाली है कि इसे अंक शंखपणिक क्रांति कहना गलत नही होगा । पुरानी “पेडगोगि”-शिवपा-शास्त्र-अब उन लोगों के साथ की लडाअी में हार चुका है जो पाठशाला को जीवन की अधिक ब्यावहारिक तैयारी का माध्यम बनाना चाहते हैं ।”

इस लेखमाला के पुरस्कार विजेता श्री अे ‘डी. डीन थे । वे उस समय न्यूयार्क स्टेट के शिवपा विभाग के बाणिज्य विद्यालयों के प्रमुख थे । उस लेख में उन्होंने अपने पिता को वास्तविक जीवन में रहते हुआ किस प्रकार शिवपा मिली अुसका वर्णन किया है । अुसे उन्होंने “यूनिवर्सिटी ऑफ हाई नाॅक्स” (कडे धक्को का विश्व विद्यालय) कहा है ।

“मेरे पिता ने मुझे अंक पुराने स्कूल में भेज दिया जिससे कि वे “शिवपा” से वचित न

रह जाऊँ। उनके विचार से जो "शिवपा" उन्होंने कठिनाधी से पायी थी, जो शिवपा पुस्तको से ही मिल सकती है, वह मुझे भी उसी रूप से मिलना जरूरी था। फल-स्वरूप मैं करीब करीब असल शिवपा से वचित ही रह गया। न जाने कैसे मेरे पिता यह भूल गये कि उनका अतना अच्छा स्वास्थ्य, विवेकपूर्ण दृष्टि, काम करने की ताकत और जीवन की ओर सही वृत्ति का प्रारण, शिवपा की उन दक्षितियों के साथ संपर्क या जो स्कूल के कमरे में नहीं मिलती, और बाल्यकाल का सख्त जीवन ही उनकी शिवपा की प्रशिया थी।

"उनके पास दो डिग्रिया थी—अैम् सि (मास्टर आफ केरेक्टर—अुच्च चरित्रवाला) और अैस आभी (मास्टर ऑफ अिडस्ट्री—कर्म कुशल)। ये डिग्रिया अुस विद्यालय की थी जो अुस समय देश का सबसे बड़ा और योग्य विद्यालय था—"कडे घरको का विश्व-विद्यालय।" मुझे दया है कि जिन स्कूलों में मैंने पढ़ा उनका पाठ्यक्रम अिसके पाठनम की बराबरी कर सकेगा। मेरे पिता की शिवपा का प्रारम्भ "न्यू अिंग्लड" के अब अच्छे घर में हुआ जिसका संचालन होशियार, चारित्र्यवान भागा पिता करते थे। अिस घर के शिवपाक्रम में खेत के काम के द्वारा मधेष्ट व्यायाम और प्रकृति के साथ संपर्क होता था। यहा मधु-मक्खियों के गुजन में, अन्न कुटाबी के सामूहिक कार्यक्रम में और गिरजा घर के सायनालीन भोजनों में समुचित मनोरंजन मिलता था। दर असल मेरे पिता को आनवाले स्कूल की शिवपा के मूलतत्त्व अेक न अेक रूप से मिल गये थे। वे थे—शारीरिक व नैतिक शिवपा, अपने धर्म में प्रशिवपण व मार्गदर्शन, प्रकृति

के साथ संपर्क और अुद्देशपूर्ण मनोरंजन।

"आनेवाली पाठशालाओं के दरवाजे पर लिखा होगा—"हम समग्र बालक की सुरक्षा करते हैं।" पुरानी शालाओं का मूल-सूत्र रहा है—"हम पूरे पाठ्यक्रम को बचानेवाले हैं।" जो लोग पुराने स्कूलों को चलाते थे उनकी मान्यता थी कि बालक का जन्म पाठ्यक्रम की अपयोगिता को सिद्ध करने के लिये हुआ है। आनेवाली शालाओं का नियामक सिद्धांत होगा कि पाठ्यक्रम बालक की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये होना चाहिये। आज की शिक्षण की फेक्टरियों के यंत्रसंचालकों की जगह तब ऐसे शिक्षक होंगे जो विषयों को पढ़ाना नहीं, बच्चों को पढ़ाना ही अपना कर्तव्य समझेंगे। अेक दफे मैंने कुछ शिक्षकों से पूछा कि वे क्या पढ़ाते हैं। अेक ने कहा "गणित" दूसरे ने कहा "अंग्रेजी" और अेक ने कहा "विज्ञान"। लेकिन खुदा हाफिज चौधू ने कहा "जनाब, केवल लड़कों को पढ़ाता हूँ"।

"आनेवाले स्कूलों में काम के द्वारा स्वास्थ्य और आनंद की प्राप्ति उनका अुद्देश्य होगा। अिसलिये उनका कार्यक्रम अत्यधिक छट्टियां से बाधा नहीं पायेगा। दर असल शिक्षा की प्रक्रिया अिस प्रकार होशियारी से स्कूल के व घर के काम में सतुलन रखते हुअे संगठित की जायगी कि हर दिन काम का दिन होगा और छुट्टी का भी। स्कूल अपना कार्यक्रम मौसम की आवश्यकता के अनुसार बनायगा।

"आनेवाले स्कूल में शिक्षक कुशल वारीगर होगा। वह कलाकार होगा, मशीन का पूजा नहीं। वह मानवरूपी माध्यम को अुसके अपने लिये अपयुक्त तरह तरह के आकार देगा, न कि

परपरा और अकेले-से स्वरूप के आम साचे में कुशल होगा। शिक्षक और विद्यार्थी-जो भावी ढालने के लिये अस्म में थोप देगा। उनके सामने मानव हैं—कल के सामाजिक ध्येयों की पूर्ति के नमूने के लिये आनेवाले आदर्श मनुष्य की के लिये अपने अनेक गुणों को सेवा में अर्पित मूर्ति होगी, जो मनुष्य शरीर से स्वस्थ सुख करेगा। और सुंदर होगा। वह मनुष्य बुद्धिमान "आप पृथ्वी में कि यह सामाजिक ध्येय क्या है? सवेदनाशील श्रद्धापूर्वक और उत्पादन शक्ति में वह केवल भौतिक नहीं, मानवीय समृद्धि भी है।"

प्रेम कैसे मरता है—

सन् १९४० की बात है। महापुत्र के समय अकेले जर्मन बोम्बर हवाई-जहाज स्कॉट-लैंड के फर्थ-ऑफ फोर्थ पुल को बम्बारी करके तोड़ डालने के प्रयत्न में स्वयं गिरा दिया गया। आठ साल का बालक टोनी सयानो को उसके बारे में चर्चा करते सुन रहा था। वह बड़ा परेशान हुआ, अस्म की कोमल दृष्टि वाली आँखें फाड़ फाड़ कर पबराहट से देख रही थी। वह दौड़ कर छात्रालय की मुख्य अध्यापिका के पास यह बात कहने गया। बेचारा परेशान था, और अस्म का दम फूल गया था। बोल भी कठिनाई से पाया। अस्मने कहा, "आपको मालूम है, अस्मने अस्से गोलो मारी और अस्से चोट पहुँचायी। अस्से लगभग मार ही दिया। अस्मने ऐसा क्यों किया?" स्पष्ट था कि टोनी बड़ा दुखी था, अस्मका कण्ठ भी वेदना से भरा था। मुख्य अध्यापिका नहीं जानती थी कि टोनी को क्या जवाब दे, वह खुद भी लड़ाई को नयानक चीज समझती थी। परन्तु कमरे में अकेले और स्त्री थी जिसने क्रुद्ध भाव से कह दिया,— 'पर टोनी, जर्मन लोग हमारे पुल को तोड़ना चाहते थे। वह बड़ा खराब आदमी था, अस्से यहां नहीं आना चाहिये था।' परन्तु टोनी अपनी बात पर डटा रहा, और अस्मने कभी बार दोहराया, "हमें अस्से मारने की कोशिश नहीं करनी चाहिये थी।"

पर, दो सप्ताह के बाद अकेले दिन टोनी बगीचे में अकेले भूर्गी की गरदन भरौडते हुअे पाया गया। यह भूर्गी गोभियों में पुस आयी थी। जब अस्मकी चर्चा टोनी से की गयी, तो अस्मने अपने कन्धे सिकोड़ कर कहा, 'वह बड़े खराब भूर्गी थी। वह हमारी गोभिया खा रही थी और अस्से यहां नहीं आना चाहिये था।'

भीमती पेन की 'क्रिएटिव मेमोरेंडम'
नाम की पुस्तक के १२ वें अध्याय से।

मेरा रूस की शिक्षा का निरीक्षण

अंडलाओ स्टीवनसन

[पिछली गमियों में अंडलाओ स्टीवनसन रूस की यात्रा करने के लिखे गये थे । श्री स्टीवनसन अमेरिका के बड़े राजनीतिज्ञ हैं ।

अन्होंने अपनी यात्रा के सम्मरण और उसके बारे में अपने विचारों को प्रकट करते हुए एक लेखमाला "न्यूयार्क टाइम्स" में दी है । यह उस लेखमाला का दसवां लेख है, जिसमें अन्होंने रूस की शिक्षा का जो निरीक्षण किया उसका वर्णन दिया है । लेख की जो राजनैतिक या अेकतर्फी बातें हैं वे हमने छोड़ दी हैं ।

पाठकों को याद होगा कि "नयी सालीम" के पिछले फरवरी के अंक में धी नुश्चेव, रूस के प्रधानमंत्री के अपने भाषण का कुछ हिस्सा दिया गया था । उसमें अन्होंने रूस की शिक्षा पद्धति के बारे में बुनियादी बातें रखी थी । —स.]

सोवियत राष्ट्रसंघ की औद्योगिक सस्याओं में सर्वत्र ही शिक्पकों की काबिलियत और अपने काम के प्रति निष्ठा देखकर मैं प्रभावित हुआ । सब जगह बहुत अच्छे उपकरण थे और सस्याओं खूब कार्यकुशल । नम्र पड़ी । अंक पितामह की हैसियत से मेर, ध्यान जिस ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ कि वहाँ के बच्चे बहुत कम रोते हैं । बहुत छोटे बच्चे भी शांत थे और अनुका बर्ताव सुन्दर था ।

रूस का शिक्पा विभाग मानता है कि औपचारिक (फार्मल) शिक्पा शुरू करने के लिखे छ साल की उम्र बहुत छोटी है । जिसलिखे सात साल के बाद ही बच्चों का 'स्कूल' शुरू होना है । देहातो में सात साल की ही शिक्पा लाजिमी मानी जाती है और शहरों में दस साल की । श्री नुश्चेव ने आजकल ही कहा था कि रूस के बीस प्रतिशत बच्चे सात साल का शिक्षाक्रम भी पूरा नहीं करते ।

स्कूलों में बच्चों के बौद्धिक और आद-शात्मिक विकास की तरफ पूरा पूरा ध्यान तो

दिया जाता है, लेकिन स्कूल के बाहर के समय की भी अपेक्षा नहीं होती है । ७ से २६ साल तक के सब नव-यु को से अपेक्षा है कि वे किसी न किसी युव - संगठन में शामिल हों । रूस में कभी प्रकार के युवक संघ हैं और ये शारीरिक शिक्पा, न्गारमक प्रवृत्तिया, दस्त-कारिया, साम्यवादी सिद्धांतों का अध्ययन जिन सबका एक सुचिंति समतोल कार्यक्रम युवकों के लिखे अपस्थित करते हैं ।

हम लोग यूरेल राज्य में स्वरह्लोस्क नाम की जगह युवकों के एक "महल" (यंग पायोनियर पेन्स) जो औसत से अच्छा था, देखने गये । यह एक बहुत बड़े अैसे मकान में था जो क्रांति के पहले एक लखपति का घर था । यहा स्कूल के विद्यार्थी अपनी फुरसत का समय, खेल-कूद, कला प्रवृत्तियों, दस्तकारियों, विज्ञान के अनुसंधान, फोटोग्राफी आदि में लगाते हैं । वे कोयले की खान से लेकर अणुशक्ति अनु-संधान के केन्द्रों तक सब प्रकार की अुद्योग शालाओं के नमूने (मोडल्स) बनाते हैं । बगीचे में बच्चों की अपनी लगायी हुआ बगारिया थी,

यहां वे वनस्पति-शास्त्र का अध्ययन और प्रयोग करते थे। अंक बहुत ऊँचे स्तर का छोटा नाट्य मंच भी यहां था जहां बच्चे खुद ही तैयार किये नाटकों का अभिनय करते थे। बच्चों का अंक अखबार भी यहां प्रकाशित होता था जिसके द्वारा १०-१५ साल के बच्चा को बड़ी खबरे दी जाती हैं जो रूस का अधिकृत अखबार "प्रवडा" बड़ों को देता है।

सात या दस साल की अनिवार्य शिक्षा की अवधि के बाद जिन्होंने "विशेष योग्यता नहीं दिखायी" वे सब काम में लग जाते हैं। जो ज्यादा बुद्धिमान हैं या समाज में जिनका स्थान ज्यादा ऊँचा है वे उच्च प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में प्रवेश पाते हैं।

मैं इस प्रकार का अंक केन्द्र देखने गया था। यह अंक बहुत बड़ी अंसी फेक्टरी के साथ सलग्न है जहां विभिन्न यंत्रों का निर्माण होता है। इसमें १५ साल के ऊपर के आठ सौ नव-युवक तीस शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। फेक्टरी के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ भी इनकी मदद करते हैं। प्रशिक्षण काल के पहले डेढ़ साल में उन्हें अपने चुने विषय के अलावा इतिहास और रूसी भाषा की भी शिक्षा मिलती है। लेकिन बाद के पांच सालों का विनियोग प्राथमिक शिक्षा के लिए ही होता है और उस समय का भी ३० प्रतिशत फेक्टरी में प्रत्यक्ष उत्पादक काम में जाता है।

यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा केन्द्रों में प्रवेश पाने के लिए "मैत्रीपूर्ण स्पर्धा" खूब चलती है। रूस में सात सौ विशेष प्राथमिक शिक्षाकेन्द्र और ३५ विश्व-विद्यालय हैं। दस साल का संपूर्ण शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद जो

विशेष परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं अन्हीं को अिन में प्रवेश मिलता है। ये परीक्षाएँ काफी सख्त होती हैं, पिछले साल सात लाख लड़के-लड़कियाँ अिनमें असफल हो गये थे। प्रति साल साढ़े चार लाख विद्यार्थियों को अिन प्राथमिक शिवपण केन्द्रों में प्रवेश मिलता है। अिनमें से आधे दिन में अध्ययन करते हैं और आधे रात में। विश्व-विद्यालय की उच्चतर कक्षाओं में स्पर्धा और अधिक सख्त होती जाती है। यूरल राज्य की स्वास्थ्य मन्त्रिणी श्रीमती मेरिया कोव्रिजिना ने मुझे कहा कि मेडिकल कालेज के प्रत्येक स्थान के लिये १५ आवेदन पत्र आते हैं। दूसरे राज्यों में भी यह अंक के पीछे आठ या दस के अनुपात में होता है।

कोओ गरीब लड़का शिक्षा के लिये मुश्किल महसूस कर रहा हो, अंसी परिस्थिति रूस में अज्ञात है। ८० प्रतिशत से ज्यादा विद्यार्थियों को राज्य की ओर से छात्रवृत्ति मिलती है, यह अनुकी योग्यता के अनुसार कम या ज्यादा होती है। समाज में बुद्धिजीवियों की जो प्रतिष्ठा है उसके कारण उनमें निर्वाह का कोओ प्रश्न नहीं उठता है। अधिक बुद्धिमान लोग विश्व-विद्यालय का शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद शिक्षा या अनुसन्धान के काम में लग जाते हैं।

विश्व-विद्यालय की फेक्टरी के अधिकतर सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी के नहीं हैं। मुझे अंसा लगा कि कम्युनिस्ट सिद्धांतों और आदर्शवाद के प्रति विद्यार्थियों का उत्साह कुछ मन्द ही है। अगर यह सही है तो १९२६ में रूस के नव युवकों में मार्क्सवाद और जागतिक क्रांति के बारे में जो तीव्र उत्साह मंने देखा था उससे आज की स्थिति में बहुत फरक है। आज

धुनकी अभिरुचि कार्यक्षमता, अधिक उत्पादन, जीवन का स्तर अच्चा अठाने और बाहरी दुनिया के साथ संपर्क बढ़ाने में ज्यादा है।

शिक्षा के काम में स्त्रियां जो प्रमुख भाग लेती हैं उसका मेरे मन पर बहुत प्रभाव हुआ। विश्व विद्यालय के कर्मियों की अंक तिहाजी अथवा विद्यार्थियों की आधी सख्या स्त्रियां हैं। श्रीमती कोव्रिजिना ने मुझे कहा कि मेडिकल स्कूलों में दो तिहाजी स्त्रियां हो हैं। इस स्थितिपर उन्होंने कुछ आशंका भी प्रकट की, क्योंकि स्त्रियों की अभिरुचि अपने घरे से ज्यादा विवाह और अपने परिवार को तरफ रहती है।

मुझे विशेष रूप से कहना यह है कि सोवियत सभ अब अपनी शिक्षा व्यवस्था को बहुत बदल रहा है। शिक्षा विभाग के अधिकृतों और विशेषज्ञों से जो मेरी बातचीत हुई उससे मालूम हुआ कि अर्ध शिक्षा केन्द्रों में प्रवेशार्थियों की बड़ी भारी भीड़ है जब कि फेक्टोरियों और अन्य जगह काम के लिये कम लोग मिलते हैं। और अगले कुछ सालों में यह परिस्थिति और जटिल होने की आशंका है।

जाहिर है कि इस "मजदूरों के राज्य" में अधिकतर नौजवान सफेद पोपाकवालों में शामिल होना चाहते हैं, विशेषज्ञ और व्यवस्थापन बनना चाहते हैं। योजना बनानेवाले स्कूल के शिक्षाक्रम को बालेज ही तैयारी नहीं, बल्कि काम की तैयारी बनाकर इस समस्या का हल करना चाहते हैं। इसके लिये वह आज के दस साल के शिक्षाक्रम को बदलकर स्कूलों में अंक आठ साल का दुनियादी शिक्षाक्रम शुरू करने का सोच रहे हैं। जिसमें सब बच्चों को अंक "सामान्य बहुधर्मी शिक्षा" मिलेगी

और साथ-साथ विज्ञान के अध्ययन की नींव भी पक्की डाली जायेगी। वे इस बात पर बहुत जोर दे रहे थे कि बच्चों में काम करने की पक्की आदतें डालने मान से नहीं होगा, धुनमें यह भावना पैदा करनी होगी कि "धन के बगैर मानव जीवन अविचारणीय" है। परियम की जिन्दगी के लिये अनुकी मानसिक तैयारी होगी।

आठ साल के शिक्षाक्रम के बाद विशेष अर्ध विद्यालयों में अनु लडके-लडकियों को लिया जायेगा जिन्होंने असाधारण योग्यता दिखायी हो। लेकिन अधिकतर नौजवान १६ साल की उमर में अद्योग या खेती के क्षेत्र में अपना काम शुरू करेंगे। जो लोग अपनी पढाई आगे भी चालू रखना चाहते हैं वे काम करते-करते कुछ समय अखिर लिये दे सकते हैं। और अगर ये सच्ची कारबालयत दिखाते हैं तो बाद में कालेज में दाखिल भी हो सकते हैं।

सोवियत शिक्षा विभाग के अधिकारी आशा कर रहे हैं कि इस योजना के परिणाम स्वरूप सोवियत नौजवान मेहनत से जी पुराने-वाले या 'सफेदपोश' बनने से बच जायेंगे।

यह नवी योजना १९६० में कार्यान्वित की जायेगी। तो भी यह कहना गलत नहीं होगा कि अर्ध शिक्षा पाने का सपना वहां बढ़ता ही जायेगा और साथ साथ प्राथमिक दक्षता का स्तर भी और अच्चा अठेगा।

सोवियत शिक्षा व्यवस्था की अंक खूबी के बारे में यहां कहे बिना नहीं रह सकते। वह अनुकी भाषा शिक्षा की प्रणाली है। वहां के पुराने पंडित भाषा के बिषय में हम से कुछ विशेष अच्छे नहीं हैं। परन्तु अब नवयुवकों को पांच साल तक कोओ न कोओ विदेशी भाषा

कोरापुट का शिविर

अण्णा सहस्रबुद्धे

मैंने तीन महीने का एक प्रशिक्षण-शिविर चलाया। कोरापुट जिले के अपठ आदिवासियों का यह शिविर था। जिस शिविर के लिये कोअी शिक्षाक्रम निश्चित नहीं किया गया। मैं अभी तक के अपने अनुभवों में जिस शिविर के अनुभव को अग्रगण्य मानता हूँ और दूसरों के लिये अनुकरणीय कह सकता हूँ। यह शिविर हर दृष्टि से सफल रहा।

ग्रामीण अिकट्ठे हुअे। पूछा—'आप लोग क्या सीखना चाहते हैं?' उत्तर मिले—'हम लोग आदिवासियों के लिये बने सरकारी कानून जानना चाहते हैं। गांव की पचायतो और सहकारी समितियों के व्यवहार समझना चाहते हैं। महाजन का व्याज लेन का गणित, उसके ठगने का तरीका पढ़ना चाहते हैं और कुछ चिट्ठी पत्री लिखना सीखना चाहते हैं।' यही शिविर के विषय मान लिये गये।

शिविर शुरू हुआ। सुबह शिविरार्थी काम करते थे। काम के समय मुक्त चर्चा चलती रहती थी। शाम को भुक्त विषयों का शिक्षण चलता था। जिस बाच दिन में वे कतामी, बुनाओ और बुनी हुअी खादी को देखते रहते थे। दूसरे अुद्योगों की प्रक्रियायें भी भुनके देखने में आती थी। पर खादी ग्रामोद्योग का भुन्हें कोअी शिक्षण नहीं दिया गया और न भुनसे शिक्षण लेन को कहा ही गया। केवल भुनकी अिच्छा के भुक्त विषय सिखाय गये। तीन महीने तक यह शिविर चलता रहा।

शिविर की समाप्ति पर आगे के शिक्षण के लिये जब भुनस पूछा, तो भुनका उत्तर रहा—

"अबकी बार हम लोग अपनी स्त्रियों और बच्चों को भी लायेंगे। भुनको आप अम्बर चरखा और ग्रामोद्योग सिखायिअेगा। हमारा लिखना-पढ़ना कुछ और बढ़ा दीजियेगा। फिर बाद में हम भी अम्बर चरखा व ग्रामोद्योग सीखेंगे।"

ये शिविरार्थी अपने-अपने गांवों के प्रभुत्व थे। भुनको भुनके गांवों का नेता भी कह सकते हैं। शिविर के बाद गांव में पहुँचने पर स्वभावतः गांववालों के पूछने पर वे सीखी हुअी बातें दुहरायेंगे। सच्चे अर्थों में ये ग्रामसेवक हुअे।

आज जो हमारे ग्राम-सेवक हैं, चाहे वे सरकार के विकास विभाग के ग्राम-सेवक हों, चाहे समाज कल्याण विभाग के या गांधी स्मारक निधि के, सब व्यथस्थापक वर्ग की श्रणी में आते हैं। भले हों वे मैट्रिक पास हों या ग्रेजुअेट और भुनको सरकार की ओर से अेक वर्ष या दो वर्ष का ग्रामसेवा-प्रशिक्षण भी मिला हो, पर ग्राम सेवा में वे गांव के बड़ओ, लुहार या कस्तिनो के मुकाबिले में कोरे साबित होते हैं। जो कस्तिन वर्षों से महीने सूत कातती रही हैं, जो बड़ओ वर्षों से गांव की जरूरत के हल-फावड़ और अन्य आवश्यक वस्तुअें बनाता रहा है, वह ग्राम सेवा के क्षेत्र में ग्रेजुअेट से कहीं अेक्सपर्ट है। हाँ, शिक्षण-विधि सम्बन्धी भुसे 'रिफ़िशर कोर्स' दिया जा सकता है। भुसे काम करना सिखान की शिक्षा दी जा सकती है।

कोरापुट में जब गांव-गांव में गांव की सहकारी दूधान खोलने की योजना हाथ में ला, तब पहल पहल अेक गांव का बड़ा प्रेरक भुनभव (गणेश पण्ट २८५ पर)

हटुन्डी परिसंवाद, अजमेर

जनवरी २१-२५-१९५९ ।

सर्व सेवा सघ ने पिछले साल पढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के पहले लगभग पचास सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का एक परिसंवाद आयोजित किया था । यह परिसंवाद पढरपुर के नजदीक खरडी नाम की जगह तीन दिन तक चला । खरडी परिसंवाद के अनुभव को देखकर यह सोचा गया कि अिस प्रकार के परिसंवाद समय समय पर होते रहें तो सर्वोदय दर्शन का संपूर्ण स्वरूप कार्यकर्त्ताओं के सामने स्पष्ट होता रहेगा । और अिसीलिजे अजमेर सम्मेलन के पहले भी एक परिसंवाद हो, अैसा निर्णय किया गया । सघ ने परिसंवाद के आयोजन की जिम्मेवारी श्री देवीभाभी को सौंपी । और अुनकी मदद के लिजे तीन ब्यक्तियों की एक समिति भी नियुक्त की गयी ।

समिति की एक बैठक सोखोदेवरा आश्रम में ८ और ९ दिसम्बर १९५८ को हुयी । अुसमें निमन्त्रिता की सख्या और सूची व परिसंवाद की अवधि अेव विषय योजना के ढांचे पर चर्चा हुयी । सख्या के सिलसिले में तय हुआ कि हालांकि १५० की सरया बहुत बडी होती है, तो भी अधिक से अधिक १५० ब्यक्ति हों अैसा अिन्तजाम किया जाय । परिसंवाद की अवधि पाच दिन की रखी जाय और अुन पाच दिनों में क्या क्या विषय चर्चा के लिजे रखे जायें यह भी तय हुआ । स्थान हटुन्डी में श्री हरिभाऊ उपाध्याय का आश्रम निश्चित किया गया ।

अध्यक्षपद ग्रहण करन के लिअ श्री जयप्रकाश नारायण से प्रार्थना की गयी जो अुन्होंने मजूर की ।

ता २१ की सुबह १०-३० बजे महिला-शिक्षा सदन की महिलाओं के एक गीत से परिसंवाद का कार्यक्रम शुरू हुआ । महिला शिक्षा सदन के प्रमुख श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने अतिथियों का स्वागत किया । अुसके बाद देवीभाभी ने परिसंवाद की पृष्ठभूमि और योजना पेश की । जिन जिन विषयों पर चर्चा करनी है अुनको कौन प्रारम्भ करेगे और कौन अुनका समारोप करेग, यह पहले से ही तय करके सबको सूचित कर दिया गया था । प्रारम्भ करनेवालों से प्रार्थना की गयी थी कि अपन अपन प्रारम्भिक भाषण को वे सक्षम म लिखकर भेज दें ताकि ये निमन्त्रित ब्यक्तियों को सकुलेट किय जा सके ।

पहले दिन की चर्चा का विषय सर्वोदय आन्दोलन का सिंहावलोकन था । अिसके मुख्य दो विभाग हैं—अेक तो आन्दोलन के अूपर की गयी टीकायें और आलोचनायें, और दूसरा आन्दोलन की हमारे अपने द्वारा की गयी समीक्षा ।

हमें मुख्य बात तो यह समझनी चाहिये कि आन्दोलन पीछे हट रहा है, यह टीका गलत है । आन्दोलन दरअसल बढ़ रहा है । खास बात तो यह है कि कमिया की सख्या कम होने पर भी अितना बडा काम हो गया । परिसंवाद के सामने विनोबाजी के साथ हुयी चर्चा का सार रखा गया । अुन्होंने कहा है कि अेलवल सम्मेलन म ग्रामदान आन्दोलन लोकमान्य बना । अब हमें अुसे लोकप्रिय बनाना चाहिये । अुसके लिये कार्य-

कर्ता चाहिये। कार्यकर्ताओं को आध्यात्मिक और भौतिक आधार सर्वोदय-पात्र द्वारा मिलेगा। हमें अंक साल तक यानी अगले वर्ष अन्य कार्यों को समेट कर सर्वोदय-पात्र के काम में लगना चाहिये। कार्यकर्ताओं का निर्वाह सर्वोदय पात्र, सूत्राजलि और सम्पत्तिदान द्वारा ही हो। योगक्षेम के लिये सरकारी सहायता और सचित निधि का सहारा वर्ज्य माना जाय। निर्माण कार्य के लिये सरकारी मदद कितनी भी ली जा सकती है।

हमें निर्माण कार्य के कुछ नमूने पेश करने चाहिये, अतः देश को कुछ रास्ता दोखेगा और कार्यकर्ता भी मिलेंगे।

जनशक्ति का विकास करने के लिये जो असहयोग आन्दोलन और पुराने ढंग के सत्याग्रह की आवश्यकता कुछ लोग महसूस करते हैं, उसके बारे में भी स्पष्टीकरण हुआ। सत्याग्रह का आज का सन्दर्भ अलग है। लोकशाही में जो अधिकार लोगों को मिले हैं, उन्हें हमें संकुचित नहीं करना है बल्कि उनकी वृद्धि करनी चाहिये। पिछले सात वर्षों में सत्याग्रह का काफी विकास हुआ है। तात्कालिक प्रश्नों का हल पुराने सत्याग्रह द्वारा नहीं हो सकता। हमारा आन्दोलन शार्टकट का नहीं है। यह तो हृदय परिवर्तन का है। उस परिवर्तन को लाने के लिये सत्याग्रह का स्वरूप सीम्य से सीम्यतर और फिर सीम्यतम करना होगा।

सर्वोदय आन्दोलन केवल भूमि की समस्या तक ही सीमित है अतः बात नहीं। वह समाज का मूल रूप से परिवर्तन करना चाहता है। हमारे आन्दोलन को अंधोग और व्यापार में भी प्रवेश करना चाहिये। अंधोग और व्यापार

का कोई मालिक नहीं, वह तो सामाजिक क्षेत्र होना चाहिये। उसके लिये कुछ सद्भावी व्यापारियों और अंधोगपतियों को तैयार करना चाहिये।

मुख्य बात तो यह है कि जनता हमें हमारी तराजू से ही तोलती है। अतः लिये अतः ध्यान हमें सतत रखना चाहिये।

दूसरे दिन सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना का विषय था। सर्वोदय-पात्र लोक सम्मति का चिह्न है। वह काम प्रारम्भ हुआ जो कुछ समय हुआ है उसके अनेक अनुभव हमें मिले हैं। अनुभवों के आधार पर जो चर्चा हुई अतः जो खास खास मुद्दे निकले उनका सार अतः प्रकार रहा :—

अहिंसक समाज का प्रतीक चर्खा है; क्या सर्वोदय-पात्र चरखे की जगह नये समाज का प्रतीक हो सकता है? अतः प्रश्न पर आम राय यह रही कि सर्वोदय-पात्र का अर्थ यह नहीं है, वह तो लोक सम्मति का प्रतीक है और क्योंकि लोक सम्मति के लिये ऐसी चीज चाहिये जो लोअेस्ट कामन डेनामिनेटर हो, यानी कार्यक्रम ऐसा हो जिसे हर कोई फौरन प्रारम्भ कर सके। अतः लिये सर्वोदय-पात्र ही उसके लिये उपयुक्त कार्यक्रम है।

सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम में सातत्य का रहना अत्यन्त आवश्यक है। अतः लिये यह जरूरी है कि पात्र की स्थापना के बारे में लोगों के पास बार बार जायें। हमारी पत्रिकाओं से परिचित करायें। जब भी उनके पास जायें पत्र-पत्रिकायें लेकर जायें। उसके लिये गांव में और मूल्यों में रात को प्रौढ वर्ग आदि लेना चाहिये। शान्ति-सेना यानी सेवा-सेना का

जितना काम चलेगा उतनी ही हमारे सर्वोदय-पात्र की ध्येयसिद्धि होगी ।

पात्र की व्यवस्था की तफ़सील के बारे में यह जरूरी है कि हमारी दृष्टि शिक्षा की हो और हमें जनता की ओर हमारी अपनी शक्ति को समर्पण कर ही काम हाथ में लेना चाहिये । पात्र की स्थापना के बारे में यात्रायें करे पर यात्राओं में उनकी स्थापना न की जाय । क्योंकि स्थापना के बाद वहाँ बार-बार जाना पड़ता है जिसके लिये संगठन की आवश्यकता है । महापात्र की जगह निश्चित होनी चाहिये । साथ साथ यह भी विचार आया कि हमें सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम को कुछ और सहज बनाना चाहिये । कुछ लोग जो रोज़ मुट्ठी डालने में कठिनायी महसूस करते हैं अथवा माहवारी अकेलापन डालने से शुरु कराया जा सकता है । धीरे धीरे अथवा बाकायदा सर्वोदय-पात्र स्थापित करने में प्रवृत्त किया जाय । यह काम केवल नियमों से नहीं चलेगा । अगर हमारा परस्परविश्वास समग्र होगा तो ही यह काम ठीक चलेगा । क्योंकि यह संस्कार और गुण-विकास का कार्यक्रम है ।

यह काम अंसा नहीं है कि जिसे हम दो चार मास या अंकाध वर्ष में पूरा कर सकते हैं । इसे करने में तो लम्बा समय लगेगा । परन्तु इसे हमें अब कुछ गति से करना पड़ेगा, जिसमें कि एक अच्छा खासा ढाँचा आठ-दस महीनों में खड़ा हो जाय । उसके लिये जिस कार्यक्रम पर कुछ अधिक ध्यान देना होगा । और दूसरे कार्यक्रमों से जिस पर अधिक जोर देने के लिये अन्य कार्यों को कुछ सीमित भी करना पड़े तो करना चाहिये ।

शान्ति-सेना के प्रश्न पर जो चर्चा हुआ उनमें से ये प्रश्न मुख्य थे —

शान्ति-सेना में प्रवेश के लिये पत्रपत्राचार होने का सवाल महत्वपूर्ण है । व्यावहारिक दृष्टि से यह आम तौर पर सम्भव नहीं होता कि एक पत्र में रहते हुए शान्ति-सेना का काम निष्पक्ष वृत्ति से किया जाय । हालांकि अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि व्यक्ति पक्ष में रहते हुए भी पक्षातीत हो सकता है । परन्तु आज यह आवश्यक है कि हम पक्षमुक्ति की मर्यादा कायम रखें ।

शान्ति-सेना आन्दोलन है या संगठन ? यह प्रश्न भी प्रसिद्धिवाद के सामने आया । यह साफ़ है कि शान्ति सेना बुनियादी तौर पर क्रान्तिप्रेरित विचार है । इसलिये वह आन्दोलन ही है । परन्तु उसके लिये जो थोड़ा संगठन करना आवश्यक होगा, करना पड़ेगा । ख्याल यह रहे कि जिस संगठन के द्वारा क्रान्ति की प्रक्रिया और शान्ति-सैनिक की स्वयं प्रेरणा को धक्का न लगे ।

शान्ति-सेना का मुख्य अद्देश्य समाज परिवर्तन है, यह उसके सब कार्यक्रमों की बुनियाद है और यही आकांक्षा है कि सामाजिक मूल्यों का आमूल परिवर्तन हो । परन्तु बिना शान्ति स्थापना के शान्ति-सेना का काम कोअी अर्थ नहीं रखता । इसलिये तात्कालिक सामाजिक बिचाव और तनाव को मिटाने के लिये जो शान्ति स्थापना का काम करना है, वह शान्ति-सेना का ही कार्यक्रम है ।

शान्ति-सेना का सबसे बड़ा प्रश्न शान्ति-सैनिक की तालीम का है । हमें उसके लिये भरसक प्रयत्न करना चाहिये और तनावों का संगठन और जिस प्रकार के केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिये जिनमें शान्ति-सैनिक की ठोस तालीम हो सके । तालीम के लिये शिवप्राप्त

आदि मुख्य नहीं है मुख्य तो यह है कि निविराधी अैसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में आय जो सच्चे और अनुभवी शान्ति सैनिक हो।

तीसरे दिन दो विषयों की चर्चा हुई, सर्वोदय आन्दोलन और सर्व सेवा सघ और आन्दोलन के विकास के लिये सर्वोदय अिकाशियों का निर्माण। सर्व सेवा सघ की स्थापना दस साल पहले हुई थी। भूदान यज्ञ जब प्रारम्भ हुआ तो सघ ने उसे अपना मुख्य काम मानकर अपना लिया। तब से सघ की वृत्ति रही है कि वह और व्यापक बने। आज समय आया है कि सघ एक असा स्वरूप ले जिसके द्वारा लोगों को एक जन आधारित अहिंसक आन्दोलन का स्वरूप सामन दीख सके। सघ के तन्त्र मुक्ति के निर्णय के सन्दर्भ में सगठन आवश्यक है या नहीं? अगर सगठन हो तो कैसा हो? वह ऊपर से बनकर नीचे से 'प्रो' करे। उसकी अिकाशी क्या हो? ग्राम अिकाशी, नगर या मोहल्ला अिकाशी और प्रान्तीय अिकाशियों का निर्माण। केन्द्रीय सगठन सर्व सेवा सघ हो जो विचार प्रचार और मार्गदर्शन का काम करे। परन्तु नीचे की अिकाशियों को अपना काम करने के लिये पूरी पूरी स्वतन्त्रता हो। अहिंसा के सगठन में चुनाव का कोई स्थान नहीं है। हमारा सारा काम सर्वानुमति से होना चाहिये। अिसके पीछे यह सिद्धान्त है कि हम हर व्यक्ति के अन्दर विस्वास करते हैं, उससे चेतन में विस्वास करते हैं और सबसे बड़ी बात है कि अेक व्यक्ति के अुपर भी दबाव न दिये बिना हमारे निर्णय लिये जाय।

अि बातों को ध्यान में रखते हुअे सर्व सेवा सघ के मौजूदा स्वरूप को किस प्रकार बदल जाय? सघ का समार की अन्य अिस

दिशा में काम करनेवाली सस्थाओं और व्यक्तियों के साथ किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित किया जाय? शान्ति और अहिंसा के क्षेत्र में शोध के काम किस तरह किये जाय, अिन प्रश्नों पर गहरा चिन्तन हुआ।

सर्वोदय आन्दोलन की बुनियाद तभी पक्की होगी जबकि हम गावों में, मुहल्लों में और शहरों में अैसी मण्डलियों का निर्माण करे जो अपना जीवन अहिंसक सहजीवन के आधार पर विताने के लिये तैयार हो। अिस तरह की अिकाशियाँ जितनी होगी अुतनी ही हमारे काम की गहराई बढ़ेगी। अिसलिये हमें सर्वोदय अिकाशियों का निर्माण करने के काम में लगना चाहिये। अिस सिलसिले में क्वेकर मित्रमंडल की बात आयी और अिस परिसवाद की यह राय रही कि अुस परम्परा का गहरा अध्ययन करना चाहिये और अुससे प्रेरणा लेनी चाहिये। अिन सब बातों की पृष्ठभूमि में अेक मोटा ढाँचा सर्वोदय सगठन का और सर्वोदय अिकाशियों का तैयार किया गया जिस पर सर्व सेवा सघ में और गहरा चिन्तन किया जायगा।

चौथे दिन का विषय था—सर्वोदय आन्दोलन और युवक। आज सामाजिक कार्यों में युवक कम आते हैं और जो आते भी हैं अुन्हें किसी भी कार्यक्रम में तृप्ति नहीं मिलती। हमारे पास युवकों को अिस ओर काम देने, अुनका विकास करने और अुनकी शक्ति मानवीय कार्य के लिये सगठित करने का रास्ता है। अिस सिलसिले में नीचे लिखे मुद्दे सामने आये।

विद्यार्थी और युवकों का आज का सांस्कृतिक और सामाजिक सन्दर्भ अलग है। हमें अुनकी आवश्यकताओं को समझना चाहिये। अुनकी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

करना चाहिये। जिसलिये जल्दो है कि हम युनके सामने सर्वोदय समाज का भावात्मक (पाजिटिव) स्वरूप पेश करे। अन्हे यह दर्शन हो कि सर्वोदय समाज में केवल त्याग पर ही जोर नहीं, बल्कि शुद्ध तृप्ति पर भी खूब महत्व दिया जाता है। हमारे कार्यक्रम अंसे हो जिनमें युवकों की पराक्रम की (अडवेंचर) भावना की तृप्ति हो और शिविरो में अगर शरीरश्रम हो तो वह आनन्दमय हो। अन्हे सृजनारमक प्रवृत्तिया के लिये मौका मिले। सच्चे ज्ञान और विज्ञान को समझने के लिये स्वाध्याय मण्डल आदि की स्थापना हो। और यह अत्यन्त आवश्यक है कि युवकों को सर्वोदय आन्दोलन के साथ सम्पर्क होने पर सच्ची फेलोशिप और "डेमोक्रेटिक वे आफ साजिफ" का अनुभव हो।

जिसके लिये सब से कारगर योजना सर्वोदय इकाइयों का निर्माण है। वही सर्वोदय आन्दोलन का दर्शन देनेवाला कार्यक्रम होगा।

हमें शिविर चलाने होंगे। विद्यार्थियों के छात्रालय और क्लबों में हमारा प्रवेश होना चाहिये। सामूहिक पदयात्रायें, कलापथकों का निर्माण, लेक्चर-टूर अत्यादि हमारे कार्यक्रमों के अंग ह। विद्यार्थी और शिवपक का सम्बन्ध आमीयता का हो जिसका प्रयत्न किया जाय।

विद्यार्थियों के प्रश्न की ओर कठिनाओं आज राजनैतिक पार्टियों का विद्यार्थियों के बीच कार्य करना है। आज विद्यार्थी बड़े कन्फ्यूशन में हैं। विद्यार्थी जीवन में राजनैतिक भेदभाव के प्रवेश के कारण अनेक मुश्किलें आ गयी हैं। जिनलिअँ अँसा अँक विचार आया कि हमारी कोशिश हो कि देश की सब राजनैतिक पार्टियों में अँसा समझौता हो जिससे वे विद्यार्थियों में बोझो सगठन न करे। हा, वे अपना प्रचार

करना चाहे तो करे पर अनूमें सगठन न करे, अन्हे जिससे मुक्त ही रसों।

युस दिन का दूसरा विषय था, सर्वोदय कार्य की दृष्टि से समाज की तात्कालिक समस्याओं की ओर हमारा क्या रुख रहे? हम अनूमें पडें या नहीं? और अगर पडना है तो कहा तक अन्हे हाथ में ले?

पहली बात मनप्रदर्शन की है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर सब से अनुभवी साथी कार्यकर्ता अपना मत अचित समय प्रकट करे। सर्व सेवा सथ सर्वसम्मति के आधार पर बडे-बडे प्रश्नों पर अपना मत प्रकट करे। स्थानीय समस्याओं पर स्थानिक कार्यकर्ता मिलकर सर्वानुमति से मत प्रकट करे।

जो समस्याअ अपनी पहुच की हों और जिनमें हम आखिर तक जा सके अन्हे अगर शक्ति हो तो ले सन्ते हैं। अधिकतर मौकों पर सलाह मशविरा दें, जनता के साथ रहे, पर जिम्मेवारी लोगों की हो।

जिस तरह की समस्याओं का सामना करते समय यह ध्यान रखें कि जनता के अपर अँसा असर न पडे कि हम पक्षपात कर रहे हैं, या हमारी स्वार्थ-सिद्धि अँसके द्वारा हो रही है।

'दरअसल बात हमारे चेतनत्व की है, हमारी सेन्सिटिविटी की है। वह चेतनत्व कहुना-प्रेरित होता है। जिसलिये अगर हममें सच्ची कहुना होगी तो यह सेन्सिटिविटी भी होगी। परन्तु हमें सदा अपने सामने सामाजिक श्रान्ति और सामाजिक मूल्यों का मूलत परिवर्तन का ही ध्येय रखना है। तात्कालिक समस्याओं के हल करने के पीछे ही पडेंगे तो श्रान्ति नहीं सधेगी। जिसका विवेक हममें हो कि वही काम

हम अपने हाथ में ले जिससे हमारा आन्दोलन आगे बढ़े ।

पाचवे दिन का विषय था निर्माण कार्य और विकास योजनाओं के साथ हमारा सहयोग । निर्माण कार्य की दृष्टि क्रान्ति की ही है । जिसलिये निर्माण कार्य अंसा प्रोसेस (प्रक्रिया) है जो बुनियादी तौर पर शैक्षणिक हो । वह केवल डबलपमेंटल अक्टिविटी ही न रह जाय । निर्माण कार्य का कोअी निश्चित अंक ही ढाचा सारे देश के लिये नहीं हो सकता । गांव की परिस्थिति, हमारी और स्थानिक कार्यकर्ताओं की योग्यता और उनकी व्यवस्थाशक्ति के हिसाब से अलग अलग स्थानों पर निर्माण कार्य का ढाचा अलग अलग होगा । निर्माण कार्य का पहला सवाल नतुत्व का है । हमें यह देखना है कि आखिर नतुत्व स्थानिक हो, और अंसे लोगो के हाथ में हो जो स्वयं काम करनेवाले ही हो । नहीं तो डर जिस घात का है कि अंक मैनजीरियल वर्ग का निर्माण न हो जायगा ।

ग्राम का संगठन ग्रामसभा द्वारा होगा । उसमें यह आवश्यक है कि स्त्री-मुख्य दोनों अपनी जिम्मेवारी महसूस करें और ग्राम-सभा में समान हिस्सा ले । संगठन की दृष्टि से भी सहकारी कार्य, आर्थिक संयोजन का कार्य और शिक्षण का कार्य अलग-अलग होना चाहिए । ग्राम निर्माण का ध्येय और संगठन दोनों साथ-साथ चले । कार्यकर्ताओं का प्रश्न सबसे मुख्य है । अगर कार्यकर्ता बाहर से आर्योग तो फिर वही भद की बात खड़ी हो जाती है । जिसलिये यहीं के कार्यकर्ता तैयार हो और बाहर से कम-से-कम आयें । कार्यकर्ता की दृष्टि निम्न की हो जिससे कि सर्वसामान्य नागरिक

की तालीम का काम हो सके । जिसके लिये अल्पकालीन या लम्बे शिविर भी रख सकते हैं । शिविर का काम निर्माण के प्रत्यक्ष काम के साथ जुड़ा हुआ हो । शिविर में हिस्सा लेनेवालों को लिखना पढ़ना अनिवार्य ही हो अंसा नियम नहीं रखना चाहिये, क्योंकि अनेक बिना लिखे-पढ़े लोग गांवों की समस्याओं को अधिक समझनेवाले होते हैं ।

अन्य विकास कार्यों के साथ सहयोग के बारे में हमें यह समझ लेना चाहिये कि अंक वेल्फेयर-स्टेट में हर जगह इस तरह के कार्य होते रहते हैं । हमें अपने विचारों और तरीकों का विकास करने के लिये सहयोग करना चाहिये । जहां अंसा लगे कि फाति के काम में हम विकास कर रहे हैं वहां साथ काम करना चाहिये और जहां भी हो वहां सुझाव आदि देना और शिविर का संगठन करना चाहिये ।

हम अभी बड़े पैमाने पर निर्माण के काम अपने हाथ में न लेकर देश में बीस तीस स्थानों पर अपने ढंग से काम करना चाहिये । साथ साथ दूसरे कार्यों के साथ सहयोग देते रहना चाहिये । ख्याल यह रहे कि हमारा कार्य फाति का हो । काम करने में यह आवश्यक है कि किस काम को अधिक महत्व देना किसे कम, जिसका विवेक हमें हो ।

ग्राम निर्माण के काम का प्राण बाटकर खाने की वृत्ति है । जितना बाटकर खाने की वृत्ति का विकास होगा उतनी ही गांव की सम्पत्ति बढ़ेगी । कार्यकर्ताओं का यह हादिक विश्वास होना चाहिये कि सहकारिता द्वारा गांव की खेती और अन्य कार्यों का विकास हो सकता है । हमारे प्रशिक्षण केन्द्रों में इस तरह

का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिये कि सामान्य दंग से विकास और ग्रामदानी गांव में विकास में अन्तर होता है।

निर्माण कार्य का सबसे पहला कदम भूमि-वितरण होना चाहिये, यह भी भूमि की क्वालिटी की दृष्टि से। ग्रामसभा की स्थापना भी प्राथमिक आवश्यकता है।

श्री जयप्रकाश ने अपने समारोप भाषण में जिन सब प्रश्नों पर प्रकाश डाला और कहा कि सर्वोदय जिकाइयो का निर्माण करने की ओर हमें अधिक ध्यान देना चाहिये। क्योंकि व्यक्ति का विकास और विशेष तौर पर सहजीवन के साथ साथ व्यक्ति का विकास ही सर्वोदय समाज का प्राण है।

—देवीप्रसाद

(पृष्ठ २७७ का संवाद)

पठाई जाती है। विश्व विद्यालय के स्तर पर जिसके ऊपर और चार सान भाषाओं के लिखे दिया जाता है। करीब आधे लोग अंग्रेजी चुनते हैं, उसके बाद जर्मन और फ्रेंच भाषा जाती है। जिससे रूसवालों का निकट भविष्य में ही दूसरे देशों के साथ सांस्कृतिक, राजनैतिक, और वैचारिक विविध तथा प्रचार के काम में बहुत बड़ा फायदा होगा। सोवियत संघ में शिक्षा के गुणात्मक विकास पर तो अत्यंत

महत्व दिया ही जाता है, उसके अलावा यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि वे जिस पर बहुत खर्च भी करते हैं। कुछ अमेरिकन विशेषज्ञों का कहना है कि हम (अमेरिकन) शिक्षा को जितना महत्व देते हैं उससे दुगुना महत्व रूसवाले देते हैं। अपनी राष्ट्रीय आय का जितना प्रतिशत हम शिक्षा पर खर्च करते हैं वे अपनी राष्ट्रीय आय का उससे दुगुना भाग खर्च करते हैं।

(पृष्ठ २७८ का संवाद)

प्राप्त हुआ। गांव वालों ने डेढ़ रुपया प्रति घर जमा करके गांव की दूकान खोली। उनसे पूछा कि अब जिसे चलायेगा कोन ? गांववालों ने अपने गांव के एक युवक का नाम लिया। फिर पूछा कि जिसे वेतन क्या दोगे, तो वे यह सुन

कर आश्चर्य में पड़े। बात उनकी समझ में नहीं आयी। उन्होंने कहा, हम सब गांववाले जिसकी जमीन जोत देंगे और यह हमारे गांव की दूकान का काम करेगा। सही अर्थों में ग्राम-सेवा की यही आर्थिक व्यवस्था टिकनेवाली है।

साहित्यकों से विनोद

गत सात-आठ वर्षों से साहित्यका ये सामने बोलने का सौभाग्य मिलता रहा है। मुझे भी बहुत खुशी होती है, जब मैं अपने को उनमें जोड़ पाता हूँ। सिर झुकाने के जितने अधिक स्थान मिलते हैं, मनुष्य का विकास उतना ही शीघ्र होता है। जिसे सारी सृष्टि के कण-कण में आत्म दर्शन, परमात्मा की विभूति का दर्शन होता है, उसके लिये तो सर्वत्र ही सिर झुकाने की सहूलियत हो जाती है। ऐसे जितने स्थान उपलब्ध हो, उतना ही मनुष्य के लिये अच्छा है। मेरे लिये साहित्यको का अर्थ ऐसा स्थान है, जहाँ स्वभाव से ही मैं नम्र हो जाता हूँ।

ऋग्वेद में यह वचन आया है कि ब्रह्म जितना व्यापक है, उतनी व्यापक वाणी भी है। यहाँ 'वाणी' शब्द का अर्थ केवल वह स्थूल वाणी नहीं, जिसे हम बोलते हैं बल्कि अक ब्रह्म शक्ति है, जिसके आधार पर मनुष्य चिन्तन करता है, जिसे 'चिन्तन प्रकाशन' कहते हैं। चिन्तन को समझना भी पड़ता है। चिन्तन करना, उसे प्रकाशित करना और उसे समझना ये तीनों वाणी द्वारा होते हैं। मन चिन्तन करता है, वाणी बोलती है और कान सुनते हैं। मन, वाणी और कान के ये भेद तो स्थूल ही हैं, किन्तु यहाँ तो 'वाग' शब्द का ही प्रयोग किया गया है। उसमें मन, वाणी और कान तीनों आ जाते हैं। वह वाक्-शक्ति साहित्य है। साहित्य से ब्रह्म चिन्तन और फिर ब्रह्म प्रकाशन कर सकते हैं। उसके बिना ब्रह्म अप्रकाशित ही रह जायगा। इसीलिए साहित्यिक का ध्यान स्वाभाविक ही सृष्टि को सभी बातों की ओर जाता है। वह भला बुरा

गुप्त-प्रकट, वर्तमान और भविष्य सभी चीजों का ध्यान रखता है। तब जो काम मैंने सात-आठ सालों से बुझाया है, उस तरफ भी जिनका ध्यान होना ही चाहिये। अतः उनसे यह कहना कि 'आजिये, हमें सहायता कीजिये, हमारे काम की ओर ध्यान दीजिये' अज्ञान है। वे जिन बातों पर ध्यान नहीं देते, बल्कि बातें ही उनके ध्यान में आ जाती हैं। असलिये मैं यह महसूस नहीं करता कि वे ध्यान नहीं दे रहे हैं। जब कभी साहित्यिकों से बात करने का मुझे मौका मिला, यही पाया कि उनमें दिल में पर्याप्त सहानुभूति है। हर प्रान्त और हर भाषा में जो मंगल, सत्य और शिव है, उस तरफ साहित्यिकों की स्वाभाविक ही सहानुभूति होती है। भूदान, ग्रामदान, मालिकियत छोड़ने की बात, शरीरपरिश्रम का महसूस, विश्व-मानुष का निर्माण, ये सारी बातें ऐसी हैं, जिनका स्थूल अर्थ करने पर दोष ही पैदा होगा। किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से उनकी ओर देखें, तो वह अक बहुत ही मंगल और शुभ विचार दीख पड़ेगा।

आगे हमारे लिये किसी प्रकार सकुचित बनना या बने रहना सुखकर नहीं होगा। आज विज्ञान की शक्ति मदद में आ गयी है और आत्म ज्ञान की तो अपने देश में पहले से ही थी। आत्मज्ञान हमें व्यापकता तो सिखाता ही था, किन्तु अब विज्ञान उसकी भौतिक आवश्यकता भी बताता है। जिस युग में अगर हम व्यापक नहीं बनेंगे, तो हमारा भौतिक जीवन असंभव हो जायेगा, ऐसी परिस्थिति विज्ञान उपस्थित करता है। कारण आत्म ज्ञान और विज्ञान एक हो गये हैं। तीसरी भी एक शक्ति

है और मुझे अिन तीनों शक्तियों का दर्शन हो गया है। अिस तीसरी शक्ति को मैं 'विश्वास-शक्ति' कहता हूँ। विज्ञान-युग में राजनीति, सामाजिक योजनाओं और समाज-शास्त्र में अिसकी बहुत जरूरत है। हममें जितनी विश्वास-शक्ति होगी, अुतने ही हम अिस युग के अनुरूप बनेंगे। किन्तु अिन दिनों बहुत ही अविश्वास दीखता है। सासकर राजनैतिक, धार्मिक और पाथिक क्षेत्र में यह अविश्वास चला आ रहा है, फिर भी वह टिकनेवाला नहीं है। अगर हम टिकाना चाहें, तो भी वह न टिकेगा। राजनीति में अविश्वास को अेक बल माना जाता है। अुसे सावधानता का लक्षण माना जाता है। लेकिन मैं मानता हूँ कि जिस क्षण मनमें यत्किंचित् भी अविश्वास पैदा हो वह क्षण हमारे लिये असावधानता का है। पूर्ण विश्वास के बिना राजनीति नहीं सुधरेगी। राष्ट्र में झगड़े बढ़ेंगे, पाथिक झगड़े भी बढ़ेंगे और विज्ञान युग में अुसका परिणाम बहुत खतरनाक होगा।

‘वेदान्तो विज्ञानं विद्वांसश्चेति शक्तवस्तिष्ठ ।
येषां स्वयं नित्यं शातिसमृद्धी भविष्यतीजगति ॥’

वेदान्त याने वेद का अन्त, वेद का स्यात्मा। वेद याने सब प्रकार के काल्पनिक धर्म। दुनिया में जितने ‘क्वन्वेनान्स’ धर्म हैं, अुन सब का अन्त ही वेदान्त है। अिसलिये अुसमें अिस्लामात, जेनान्त, बौद्धात, सिखान्त अिन सबका अन्त आ जाता है। सत्य की खोज, सत्य की पहचान और सत्य को मानना ही वेदान्त है। विज्ञान याने सृष्टितत्त्व की खोज अगर हमारा शारीरिक जीवन अुनके अनुकूल बने, तो सपूर्ण स्वास्थ्य की अपलब्धि होगी। आगामी युग का चित्र मैं अपने मन में यही रखता हूँ कि

अुस युग में हर बीमारी के लिये अपाय अपलब्ध होंगे, लेकिन मनुष्य को कोअी भी बीमारी ही न होगी। अपाय अपलब्ध होने पर भी अुनके अपयोग का अवसर ही अपलब्ध न होगा। आँखों के लिये अुत्तम-से-अुत्तम चश्मा अपलब्ध रहेगा, पर आँखों को अुसकी किसी प्रकार की जरूरत ही नहीं रहेगी। हर गाँव में डाक्टर हो, अँसा अेक आदर्श अिन दिनों माना जाता है। लेकिन आगे की दुनिया में डाक्टर का नाम ही नहीं रहेगा, सभी सन्तुष्ट रहेंगे। बीमारियों के वारणा का निर्धूनन नहीं होता, अिसीलिये अपाया के अपयोग करने का मौका मिलता है।

अिस तरह राजनैतिक, सामाजिक या कौटुबिक कोअी भी हो, ये तीनों शक्तियाँ दुनिया के लिये तारक होंगी, अँसा हमने माना है और यही बात हम आपके सामने भी रखते हैं। अिसमें यदि आपको शुद्धि या वृद्धि करनी हो, तो आप कर सकते हैं। सीभाग से मुझे हिन्दु-स्तान की सब भाषाओं के सर्वोत्तम साहित्य से परिचय प्राप्त करने का मौका मिला है और नित्य कुछ-न-कुछ अध्ययन करता ही रहता हूँ। बीच में अेक जापानी भाषी आये थे। वे दो महीना रहे। अुतने में अुन्होंने मुझे जापानी भाषा सिखा दी। अेक जर्मन बहन साथ में थी, अुसने मुझे जर्मन भाषा सिखायी। अिस तरह मैं सीखता ही रहता हूँ, क्योकि मैं स्वभावतः विद्यार्थी ही हूँ। अतएव मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि हम जो कर रहे हैं, अुस तरफ आपका ध्यान तो है ही, किन्तु अुसका परीक्षण भी बीजिये और अुसी दृष्टि से हमारे सामने अपना निचोड़ रखिये। अुससे हमें बहुत मदद मिलेगी। साहित्यिक बंधुओं का आशीर्वाद मिलेगा, तो मेरा काम तीव्र तथा बलवान बनेगा।

समाजवाद, सर्वोदय, सत्याग्रह : अक व्याख्या

जनेन्द्रकुमार

समाजवादी विचार

समाजवादी विचार को आज आम तौर पर सभी जगह मान्यता मिल चुकी है। जिसकी व्याख्या और प्रयोग की मात्रा के बारे में जहाँ-तहाँ मतभेद जरूर हैं, लेकिन अतना तो स्वीकृत हो चुका है कि मूल्य समाजाधिकृत है और व्यक्ति को तदनुरूप और तद्विहित रहना चाहिये। वह समाजवाद, जो अपने को वैज्ञानिक कहता है—यहाँ तक जाता है कि सत्ता, सम्पदा और सामर्थ्य का सब अधिष्ठान समाज के व्यक्त प्रतीक स्टेट में ही होगा। कालान्तर में स्टेट को अनावश्यक हो जायेगा, लेकिन भूसे पहले समाज के विशेषकर बहु-संख्यक दोन-होन के निपुक्त प्रतिनिधि के रूप में स्टेट का ही वह तत्र रहेगा जहाँ अधिकार का स्रोत होगा। समाजवाद के अन्यान्य रूप भी अधिकार (मूल्य) के केन्द्र को अमुक समुदाय या संगठन में निहित करते हैं।

अस प्रकार समाजवादी विचार के अमल के लिये संगठन और चुनाव की पद्धति का आधार आवश्यक होता है। उसके भीतर व्यक्ति को जितनी स्वीकृति आ जाती है, अतनी ही उसे पर्याप्त है, अधिक नहीं।

यों तो आज अधिनायक-तंत्र और लोकतंत्र नाम की दो प्रकार की समाज-व्यवस्थाएँ चलती मानी जाती हैं। पर दोनों समाजवाद के मूल विचार को स्वीकार करती हैं। पूँजीवादी कहे जानेवाले देशों में भी समाजवाद की मान्यता कम नहीं है।

व्यवस्था के क्षेत्र में लगभग यह विचार

अन्तिम बन गया है। भारत में भी कम्युनिस्ट पार्टी की तो बात ही क्या, कांग्रेस और दूसरे दल भी अपनी वंसी ही श्रद्धा जतलाते हैं। दूसरा विचार यदि है, तो वह व्यवस्था के क्षेत्र में मानो गणनीय नहीं समझा जाता। आध्यात्मिक, नैतिक और आदर्शवादी कहकर उसे किनारे रहने दिया जाता है, यानी उसका सबध व्यक्ति भर से है और अन्ततः वह व्यक्तिमत्ता को बढ़ाने वाला और सामाजिकता को घटाने-वाला है। अस दृष्टि से उसे प्रतिक्रियावादी और कभी खतरनाक भी कहा जाता है।

सर्वोदय विचार

मेरी दृष्टि से सर्वोदय-विचार असी प्रकार का खतरनाक विचार है। खतरा दोहरा है। अक यह कि वह आत्मा की ओर से व्यक्तियों को ले और वही अपने ध्यान की सीमा बाध कर समाज से अछूता और अँचा बन रहे। दूसरी ओर खतरा यह भी है कि नाना समाजवादों की भाँति सामाजिक योजनाओं में वह अतना सनिविष्ट हो जाये कि व्यक्ति-संस्कार असे छूट जाये और ऐहिक (सेवमूलर) कर्म योजना ही हाथ रह जाये।

फिर भी सर्वोदय-विचार को अपनानेवालों ने जान-बूझकर यह खतरा भुझाया है। निश्चय ही सर्वोदय-विचार नैतिक और आदर्शवादी है। पर साथ ही दावा है कि वह समाज-परिवर्तन और यदि आवश्यक हो, तो समाज-शक्ति के अिष्ट के लिये भी न केवल संगत है, प्रत्युत समाज और साम्यवादी विचार से वह अँस दिशा में अधिक अप्रयुक्त और अधिक समर्थ है। यह

दावा सर्वोदय में श्रद्धा जतलानेवाले लोगो के लिये स्वयं अपने-आपमें अंक चुनौती है। उसे ही फिर हम अन्तर्गत व्यवहार की परीक्षा के लिये कसौटी भी कह सकते हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समाजवादी लक्ष्य है। सर्वोदय के लिये वह भाषा और वह दृष्टि पर्याप्त नहीं ठहरती। यहाँ से अन्तर्गत को अपने लिये स्पष्ट कर लेना चाहता हूँ।

सर्वोदय गांधीजी की परम्परा से हमें प्राप्त हुआ। अन्तर्गत हम महात्मा कहते हैं और राष्ट्र-पिता कहते हैं। राष्ट्रपिता कहकर हम अन्तर्गत राजनैतिक कर्तृत्व और नेतृत्व का अभिनन्दन करते हैं, पर महात्मा कहकर मानो यह भी जतलाते हैं कि वह कर्तृत्व अन्तर्गत की अग्रगण्यता नहीं है, वह राष्ट्रीय से अधिक है।

असल में जीवन के सदा दो तट रहे हैं। अन्तर्गत दोषण अतन्तु साफ है कि कोई तत्त्ववाद सफलता के साथ अन्तर्गत लाँघ नहीं पाता। विचार बर्मी दूर तक जाता है, तो उसे बढ़ना होता है कि सत्य ब्रह्म है, जगत् मिथ्या है। कभी विचार दूसरे छोर पर जाकर कह अठ्ठा है कि ब्रह्म आदि भ्रम है, जगत् ही सब और सत्य है। भौतिक और आध्यात्मिक, आर्थिक और पारमार्थिक—ये किसी भी अपाथ से पूरे तौर पर अन्तर्गत हो नहीं पाते। अन्तर्गत ओर-ओर के बीच ही जीवन की परिभाषा और अन्तर्गत पुरुषार्थ है।

गांधी अन्तर्गत व्यक्ति अन्तर्गत अतिहास में अन्तर्गत हुआ कि अन्तर्गत या अन्तर्गत ओर बिठा कर अन्तर्गत सभल लेना सम्भव नहीं हो पाता। सन्तों के लिये आदर्श सन्त कहें, तो अन्तर्गत प्रतीत नहीं होता, कूटनैतिक राजनेता के लिये अन्तर्गत

अन्तर्गत का विषय कहें, तो भी अन्तर्गत नहीं लगता। अन्तर्गत घटना अतिहास में यदा-कदा घटित होती है, और होती है तो जैसे अतिहास को जोर से शकशोर जाती है। अन्तर्गत मानस में अन्तर्गत आलोडन मचता है और अन्तर्गत नये समन्वय का आरम्भ होता है।

कर्मक्षेत्र यानी कुरुक्षेत्र वह युद्धक्षेत्र बने बिना नहीं रहता। सधर्ष वहाँ अनिवार्य है। अतिहास जैसे मुख्यता से युद्धो का अतिहास बन जाता है। कितना भी टालिये, सधर्ष सामने दिखायी देता है। अन्तर्गत बचना सम्भव नहीं है। मुड कर हटना बचना नहीं, बल्कि केवल अन्तर्गत बचाना साबित होता है, क्योंकि बाहर के सधर्ष से हटते ही वह द्रुत पहुँच जाता है और वहाँ वह अधिक ही विकरास बनता है।

गांधी के महात्मापन का निर्माण अन्तर्गत कुरुक्षेत्र में से हुआ। शान्ति और शास्त्र में से नहीं, युद्ध और कर्म में से हुआ। अन्तर्गत जीवन सतत युद्ध में से चला और बना तथा मृत्यु अन्तर्गतने योद्धा की ही पायी।

अन्तर्गत योद्धा, महात्मा की युद्धनीति को दो शब्दों से व्याख्या मिलती है। अन्तर्गत सर्वोदय, दूसरा सत्याग्रह।

सत्याग्रह का भाग

सर्वोदय और सत्याग्रह से व्याख्या पाकर गांधी की युद्धनीति, सही शब्दों में जीवन-नीति, समाजवादी लोकनीतियों से मूलतः भिन्न हो जाती है। अन्तर्गत भिन्नता को समझ लेना बहुत आवश्यक है।

समाजवादी विचारसंस्था, समूह और श्रेणी की गणना से छूट नहीं सकता। अल्पमत और बहुमत का आधार अन्तर्गत लिये अनिवार्य है।

अल्पमत को अधिक-से-अधिक सरक्षण देने की अच्छा रखते हुअे भी बहुमत अुसके बल से अपने को वचित किये बिना रह नही सकता । अधिकांश तो अल्पमत के प्रहार से अपने को सुरक्षित बनाये रखने की विन्ता में बहुमत को व्यय होते रहना होता है । जिस और इसी आधार पर वने दूसरे परे-पन (Exclusivism) की अनिवार्यता समाजवादा विचार मे से निकल ही नही सकती ।

सर्वोदय में जिस परे-पन का सर्वथा अस्वीकार है, सौ में निन्यानबे अेकत्रित हो, तो भी वचे सौवे को परे रखने या पराया गिनने का समर्थन सर्वोदय में से नही प्राप्त होगा । अुस अन्तिम को, अेकाकी को, कहो कि असामाजिक को भी—तिरस्कृत या अस्वीकृत करने की सीख सर्वोदय में से नही मिलेगी । सर्वोदय की यह निष्ठा जिस तरह सबको परस्परपूरक बनाने की है और कभी किसी अवस्था में किसी को असामाजिक या अपराधी कह कर समाप्त करने की भावना को वह अनुमोदन नही दे सकता ।

अहिंसा का आधार

जिस तरह सर्वोदय अेक ही बार सदा के लिये अहिंसा को अपना धर्म स्वीकार करता है । अहिंसा का मतलब है बहुमत पर अल्पमत की, सबल पर निर्बल की सुरक्षा का दायित्व । अल्पमत को न केवल अयम मिले, बल्कि समादर प्राप्त हो । अपराधी को समाज की ओर से चिकित्सा मिले, वह पूरी सुविधा और सभाल मिले, जो रोगी को अस्पताल में देने की कोशिश की जाती है, अर्थात् अेक व्यक्ति को भी समावना से वचित रह कर समाज अपने को सतुष्ट न माने । अुसरा प्रयत्न रहे

कि कब और कैसे अुस व्यक्ति की आतरिक सभावनाओ को अवसर और विकास प्राप्त हो ।

गणना के आधार पर निर्मित होनेवाली समाजवादी निष्ठा अन्ततः किसी-न-किसी सीमा पर जाकर परे-पन और पराये-पन की भावना के अधीन हुअे बिना रह नही सकती, । यो चाहे बडे-से-बडा सगठन बनाने में वह सफल हो जाये । मान लीजिये कि राजनीति को मूल म रख कर रूस के नेतृत्व में अधिर कम्युनिस्ट देश और अुधर अमरीका के नायकत्व में मिन देश आपस में आज किसी सन्धि पर आ जाते हैं और विश्व-शान्ति की परिस्थिति बन जाती है । तब वह शान्ति वास्तविक और सजीव होगी, अेसा क्या किसीके मन को आश्वासन होना संभव है ? और यह आश्वासन का अभाव जिस कारण न होगा कि अुस सन्धि की धाराओ मे कुछ त्रुटि होगी, बल्कि जिस कारण कि भेरे-तेरे का भेद-भाव अुसके नीचे विद्यमान रहने ही वाला है । अपने-पराये स्वाधों के हिसाब पर जो समझता है, अुसमें बीज अेकता के विकास के अुतने नही रहते, जितने फूट के रहते हैं । यही कारण है कि दलगत पद्धति परम योजना में कितनी भी सफल होती दीखे, मानव सबधों में अुस कारण दुर्भाव और दुर्गंध भीतर-ही-भीतर मनपे बिना नही रहते । यहाँ तक कि अुससे छुटकारा पाने के लिये फिर अन्त में 'पजेंज' (Purges) की आवश्यकता हो आती है । जिन पजेंज की विकराल हिंसा, आप सच मानिये, द्वेष और आवेगपूर्वक नही होती, बल्कि वैज्ञानिक तटस्थता के साथ होती है । यह मानने का आधार नही है । स्टालिन के मन में अुनके शासन-काल में जा फासियां हुअी, अुनके लिये तनिक भी दोष-स्वीकार का

भाव नहीं था, बल्कि सत्यता यह है कि जिस सब दारुण व्यापार को स्टालिन सह सके, तो जिस मरोसे कि वे क्रान्ति के रक्षण में अपना कर्तव्य पाल रहे और अंक प्रकार की तपश्चर्या कर रहे थे। स्टालिन की महानता नहीं तो और किसी प्रकार भुन कूर काण्डो से मेल नहीं खा सकती, और यही कर्मवादी विचार की विडम्बना है।

दुनिया अंक है

आज विज्ञान की प्रगति के साथ दुनिया छोटी पड़ती जा रही है। मतलब कि हमारा अपनेपन का भाव अब किसी तरह सारी दुनिया तक फैले बिना नहीं रह सकता। वार्ता या यात्रा के साधन अतने द्रुत हो गये हैं कि देश-विदेश की सीमायें हमें साफ फर्जी नजर आने लगी हैं। विमान में जा रहे हैं और नीचे कब कोयी देश पार हो गया, पता नहीं चलता। यह जाने बिना रहा हो नहीं जाता कि पृथ्वी अखंड है। किसी देश की राजधानी लीजिये, वहां आपको सहसा ही विश्व-दर्शन हो जायेगा। सब देश और सब भाषाओं के लोग वहां आपको घूमते-फिरते दिखाओ देंगे। तो आज की जिस हालत में समझ नहीं आता कि कैसे कोयी के विचार काम दे सकता है, जो अपने परायेंपन को आधार में लिय बिना चल नहीं सकता। अनिवार्य है कि अन्नति और विस्तार के जिस युग में हमारे पास सामाजिक और राजकीय कोयी ऐसा विचार हो, जो अनुरूप, विद्याल और मौलिक हो, विभक्त नहीं, समग्र हो, समाज को ही जो न ले, समष्टि को ले, वस्तु का ही न हो, आत्मा का भी हो, विषयगत न हो, जीवन व्यापी हो, सर्वपेक्ष में जो अखण्ड विचार हो और आचार भी, जिसमें गभित हो। सर्वोदय वह अविचल

विचार है, जो मानव-समस्या के हार्द पर पहुचता है। वह व्यक्ति और समाज अिन दो को पृथक रूप से नहीं लेता और न जिस तरह स्व पद की समस्या को तीखी धार मिलने देता है। वह जिस मूल निष्ठा से कभी किसी कारण अच्युत होने को तैयार नहीं है कि विश्व अंक और अखण्ड है और जो चिन्मय सत्य परिपूर्णता को धाम है, अुसके सदर्म में सब आत्मीय है, अनात्मीय कही कुछ नहीं है।

‘सर्वोदय’ शब्द में जिस मूल श्रद्धा की घोषणा है। विश्वासी के लिये मानो वह अंक प्रण है और अुसमें से जो निरपवाद धर्म प्राप्त होता है, वह है अहिंसा अर्थात् शर्तहीन, प्रश्न-हीन जीवन का स्वीकार और प्रेम।

जिस सर्वोदय-निष्ठा और अहिंसा की शर्त से अलग चल कर कोयी विचार स्थिति नहीं दे सकता कि जिसमें सबकी, कुल की, सी में सी की सभावनाओं का लाभ समाज को मिले। जिससे हट कर जो भी विचार होगा, फिर अुसे चाहे अुदारता की अुत्तर्य सीमा पर ही क्यों न ले जायें, वह सी में से निन्यानवे के अंक जुट होने पर नये सीवे को तज रहन या ऋण कर देने की अनुमति दिये बिना नहीं रह सकता। साफ ही वह विचार समाज में हादिक आत्मीयता और अंक रसता खाने में अन्त तक भला कैसे सफल हो सकता है ?

सत्याग्रह-सूत्र

यह तो अुस जीवन-नीति की निष्ठा और भावना का अन्तर-पक्ष हुआ। सर्वोदय अुसका सूत्र है। आगे अुसका दोषार्थ दूसरा है धर्म पक्ष और अुसका सूत्र है सत्याग्रह।

सत्याग्रह में खण्ड का और गणना का विवेक है। सत्य सम्पूर्ण है। पर हम तो अपूर्ण

है। अंसे हमें लगने वाला सत्य भी अश सत्य होगा। पर हमें अपने को ही नहीं टालना है, तो उस अश सत्य को भी हम टाल नहीं सकते। यहाँ से उस सत्य के प्रति जीने और उसके लिये मर जाने तक का धर्म प्राप्त होता है—यही सत्याग्रह।

आग्रह हो नहीं सकता, अगर अपूर्णता न हो। जिस अपनी अपूर्णता का गहरे में यदि भान हो, तो हमारे पास विनय क सिवा दूसरे के लिये कुछ रह नहीं जाता। जिस तरह सत्याग्रह में किसी की अवज्ञा नहीं की जा सकती, न किसी का अनिष्ट विचार जा सकता है, सबके प्रति जिस विनय-भाव, प्रेम-भाव को रखते हुअे अपने को लगने वाले सत्य के प्रति तत्पर और आग्रही रहने का कर्तव्य और अधि-कार स्वयं ही व्यक्ति को मिल जाता है।

बस, यही है सर्वोदयी युद्ध और योद्धा का रूप। जिसमें से हृदय-परिवर्तन की अद्भुत शक्ति या प्रादुर्भाव हो सकता है। हृदय-परिवर्तन के आधार पर व्यवस्था-परिवर्तन अवश्यभावी और स्थायी होगा। उसमें से फिर प्रतिक्रिया न अपेक्षित। जिसमें दृष्टि दिया नहीं जायेगा, सिर्फ लिया और सहा जायेगा। सामने से आये प्रहार का प्रतिरोध प्रहार से नहीं होगा, हिंसा का प्रतिहार हिंसा से नहीं होगा, सत्त्वा-बल अथवा शरीर-बल या मेल उस बल से नहीं होगा, वह केवल सविनय सत्याग्रह से होगा।

यह सूत्र गमित रूप में था तो शास्त्र में, लेकिन जब उसका प्रयोग तत्पर आचरण द्वारा गांधीजी ने व्यापक समस्याओं पर किया तो जैसे अनेक नयी सामाजिक चालना शान्ति (Social Dynamism) का दर्शन और आविष्कार हुआ। अब तो मानव-इतिहास

और मानव-विज्ञान जैसे विरोधी-प्रतिरोधी शक्तियों के संघर्ष के रूप में विकास की प्रक्रिया को समझता आया था, वही से समाज-विज्ञान और समाजवाद ने विकास के अभिक्रम का अपना निर्धारण किया था। गांधी के अभियान से जैसे मानव-चिन्तन को अनेक नया प्रकाश और नया आयाम मिला। मालूम हुआ कि सच्चे क्रान्तिकारी संघर्ष का रूप विरोधी-प्रतिरोधी बलों की टक्कर का नहीं है, बल्कि विरोधी को अविरोधी-शक्ति से मोर्चा देने का है। विरोधी द्वेष का सही परामर्श अविरोधी प्रेम से ही हो सकता है। विरोध का शमन प्रतिविरोध से नहीं साधा जा सकता, बल्कि उस तरह विरोध-चक्र को और तीव्र ही किया जा सकता है।

आज विश्व जिस संकट के कगार पर अपने ज्ञान-विज्ञान के अत्युत्कर्ष के बल पर चढ़ कर आ टिका है, वहाँ जिसके सिवा रक्षा का भुपाय नहीं रह जाता कि वह पहचाने कि विरोध का सामना प्रतिविरोध से करना व्यर्थता और मूर्खता है, वह अवैज्ञानिक है। और अनुभव करे कि उस चिन्तन-पद्धति और विचार-धारा को अकेला छोड़ देना होगा, जो उसीकी भुपाय के रूप में प्रस्तुत करती है। विरोधों के सामने के लिये विरोधी शक्ति के निर्माण की कला सीखनी होगी, अन्यथा निस्तार नहीं है। जीवन के संपूर्ण ध्वंस को दूसरी तरह बचाया नहीं जा सकेगा।

राजनीति का माप

दलगत राजनीति से अलग किसी दूसरी व्यावहारिक राजनीति का दर्शन सहसा हमें नहीं होता, उसकी संभावना यो कल्पना में भी जुटाना कठिन होता है। जिस पर गांधीजी की याद को भी हम सहसा यह कह कर तरह

देते हैं कि वे महात्मा थे और कि अन्हें विदेशी सत्ता से युद्ध करना पड़ा था। अन्हें काम की परिस्थिति परतश्चता की थी, अब स्थिति स्वतश्चता की है। मानो तब जो त्याग का, सेवा का, अकिंचनता का मूल्य था, वह देश की पराधीनता के ही कारण सही था। स्वाधीनता के समय में मूल्य वह नहीं रहना चाहिये, पलट जाना चाहिये। यो महत्व जो सेवा से हट कर शासन में आ गया है, अुससे सहसा अुस विचार और दृष्टि का मोह और गौरव भी बढ़ गया है, जिसमें दल सगठित करना और प्रचार चुनाव के द्वारा सत्ता प्राप्त करना लोक-कल्याण का सबसे अुपयोगी ढंग समझा जाता है।

जिस नौति का सर्वोदय अंक बाजू है, सत्याग्रह अुसीका दूसरा पहलू है। अुसके बिना सर्वोदय अधूरा है। वह फिर जैसे निर्बोय भावुक सदाशयता का रूप हो जाता है। सर्वोदय के बिना सत्याग्रह भी अुसी तरह अंक अधुण्ड और अुच्छल प्रकरण बन जाता है। सर्वोदय अन्तरंग और भावनात्मक किन्तु अन्तर्भाव में यदि वह प्रखर और प्रबल है यानी भीतर सबके प्रति प्रेम की आकुल विह्वलता है, तो किसी-न-किसी प्रकार सत्याग्रही धर्म के रूप में प्रकट हुअे बिना वह न रह पायेगा। भावना सदा सर्वोदयी हो, पर अनुरूप धर्म सदा सत्याग्रही होगा। यह जिसलिये कि प्रत्येक स्थिति में गति की आवश्यकता गभित होती है। जिस आवश्यकता की सुधि जागृत मानस में जिस रूप में होती है कि स्थिति में अ्रमुक दोष है। जिस तरह सत् का आविर्भाव सदा ही असत् को अुसाडता और सलकारता हुआ आता दिखाअी देता है। स्थिति में, हर स्थिति में गभित दोष अर विकार से लडते चलना, गतिशील चेतना

का धर्म हो जाता है। यही कारण है कि अितिहास में सर्जक चेतना को कष्ट भोगना, बलि होना पडता है, जब कि शासन बनने का मान और भोग दूसरे को मिलता है।
अंक ही रास्ता

सत्याग्रह की यह अमोघ, समाज-संस्कारणी चित्-शक्ति यदि चिन्ताग्रस्त, शिथिल और निष्क्रिय होगी, तो सर्वोदय अुतना ही स्वप्न होता जायगा। आदमी के भाग्य में क्या कभी ठडा होना बढा है। न प्रकाश ही अपने में बन्द हो सकता है। अुपर विदेशी सत्ता की स्थिति सत्याग्रह को विहित बनाती और विदेशी हुकूमत अुसे निषिद्ध कर देती है—अिस क्रान्ति का अुस सत्याग्रह से कोअी सम्बन्ध नहीं है, जो सतत और अनिवार्य धर्म है। देश की पराधीन-स्वाधीन स्थिति के अन्तर से मानव-मूल्यों में अन्तर नहीं हो जाना चाहिये। भारत के लिये यह सोभाग्य की बात नहीं है कि मूल्य जो मौलिक थे, अुन्हे परिस्थितिजन्य वह कर जैसे अुनसे छुटकारे का मार्ग पा लिया गया है।

शासन को केन्द्र मान कर जिन जीवन-मूल्यों का निर्माण हुआ और हो रहा है, समाज-वादी विचार अुनमें परिवर्तन नहीं ला सकता। लगभग समाजवाद शब्द से अुन कृत्रिम मूल्यों को पोषण ही दिया जाता है। मूल्य वे स्यायी हैं और वे ही सहायक होंगे, जहाँ केन्द्र में मानव है, सत्ता अथवा सगठन नहीं है। अुन मूल्यों को बुनियाद पर चलने वाला रचनात्मक, सामाजिक या राजकीय काम हमें आगे बढा सकता है और स्थिति में सान्त्वना ला सकता है, अन्यथा काम भी बहुत होता रहेगा और समस्या भी भीतर से अुसडो अुलझती जायगी। छटपटा कर हम बहुत कुछ करते-घरते दीखेंगे। लेकिन
(अेषास पृष्ठ २९४ पर)

हमें विश्वव्यापक बनकर सेवा का काम करना है।

विनोबा

गंगोत्री में गंगा बहुत निर्मल और परिशुद्ध होती है, पर उसकी धारा छोटी होती है। आगे-आगे उसका प्रवाह जोरदार और शुद्ध होता है, उसका विस्तार होता जाता है। सागर-सगम के स्थान पर तो वह अत्यधिक बढ जाता है। फिर भी जैसे-जैसे उसका विस्तार बढता है, वैसे-वैसे स्वच्छता और निर्मलता कम होती है। दुनिया में बहुत दफा ऐसे ही अनुभव आते हैं कि जहाँ सख्या-वृद्धि हुअी, वहाँ गुण का कुछ ह्रास ही हुआ और जहाँ गुण पर जोर दिया गया, वहाँ सख्या कम हुअी। मैं जिस घटना पर बहुत चिंतन करता हूँ। चिंतन का मूल आधार या परम आदर्श परमेश्वर है। जब उसकी तरफ देखता हूँ, तो यही दीख पडता है कि वह परम शुद्ध और परम व्यापक है। वहाँ शुद्धि और व्यापकता का विरोध नहीं दीखता, दोनों अक साथ दीखते हैं। हम आसमान की तरफ देखते हैं तो यही दुष्य दीख पडता है कि उसकी व्यापकता के साथ उसकी निर्मलता में कौअी कमी नहीं है—वह परम निर्मल और परम व्यापक है। लेकिन गंगा की हालत कुछ

दूसरी ही है और हमारी हालत गंगा के समान है। आखिर ऐसा क्यों? हम परमेश्वर की प्रतिमा नहीं बन सकते हैं। उसके साथ हमारे जीवन और अनुभव का मेल नहीं बैठता, जिसकी क्या वजह है?

अकाग्रता में समग्रता साधी जाय

जिस पर जब मैं बहुत सोचता हूँ, तो मालूम होता है कि जो अकदेशीय रह कर शुद्धि की कोशिश करते हैं, उनकी शुद्धि संकोच में टिकती है। हमारा चिंतन अकदेशीय होता है, जिसीलिये व्यापकता याने सख्या और शुद्धि, याने गुण के बीच में विरोध पैदा होता है। व्यापक चिंतन में यह विरोध लाजिमी नहीं है। हमें सोचना पडेगा कि हमारा चिंतन कहा तक ठीक चलता है? हम अक बात निकालते हैं, तो दूसरी बात ढीली पड जाती है। दूसरी निकालते हैं, तो पहली ढीली पड जाती है और तीसरी निकालते हैं, तो दोनों ढीली पड जाती हैं। जिस तरह अकाग्रता और समग्रता में बाधा पहुँचती है। ऐसा जहा होता है, वहा कहना होगा

(पृष्ठ २९३ का संपाद)

जिस वेदना के कारण छटपटाहट हुअी है, वह भी अुन सब चेष्टाओं से बढती और फैलती ही प्रतीत होती है।

मेरी श्रद्धा है कि सर्वोदय विचार में यह पर्याप्तता और अनुकूलता है, जिसमें से स्थिति को, देशीय-अन्तर्देशीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

को पूरा अुत्तर आ सकता है। किन्तु साथ ही आवश्यक है कि वह सत्याग्रह से सयुक्त हो, सभी वह समर्थ कर्मयोगी और श्रान्तिकारी होगी। अन्यथा सर्वोदय-विचार स्वयं दलीय और शास्त्रीय हो बैठेगा, जैसे कि समाज-वाद है।

कि अंकाग्रता की ओर अग्रगण्यता में ही कोई दोष है । कोअी अंसी युक्ति सधनी चाहिये, जिसमें अंकाग्रता और समग्रता अकष हो सके । जबकि साधक अक्षर सब लोगो की टाल कर ध्यान के लिये अंकाग्रता में जाते हैं और वहा परमेश्वर के साथ अकरूप होने की कोशिश करते हैं, भीरा सारे बन्धन तोड दुनिया के सामने नाचती है और कहती है—‘मैं तो गिरधर आगे नाचूंगी,’ तो कहना पडेगा कि अवश्य ही असे कोअी अंसी युक्ति सध गयी है, जिससे समग्रता में अुसकी अंकाग्रता बाधक नही होती है । कोअी अंसी वस्तु असे हासिल हो गयी है, जिससे विविध रूपो से मडित सारी सृष्टि में अुसको अंकाग्रता की अखड अनुभूति होती है, किन्तु जब हम अंक चीज पर जोर देते हैं, तो दूसरी चीज ढीली पड जाती है । बाबा ने सर्वोदय-पात्र की बात शुरु की तो कुछ लोग पूछने लगे कि आपका ग्रामदान का विचार ता पीछे रह गया । यह चिंतन का दोष है । मैं यह सूचित करना चाहता हूँ कि हमें अपने चिंतन का दाप देखना और संशोधित करना चाहिये ।

पक्वमुक्त और पक्वपातीत

पक्वमुक्त और पक्वपातीत यह अंक नयी परिमाणा है । अुस पर अब हमें अुदारता से सोचना है । मैंने ‘पक्वपातीत’ शब्द को स्वीकार करके दरवाजा खोल दिया है । लेकिन मेरा मन दार्शनिक होने से बिसी दरवाजे को खोलने समय सभावित खतरों पर अवश्य सोचेगा । मैंने दरवाजा तो खोल दिया, लेकिन अुसमें जो खतरे हैं वे मेरी आंखो से ओझल नही हुअे हैं । वे मौजूद हैं, फिर भी यह समझ कर दरवाजा खोल दिया कि अगर वास्तव में हममें गुण हैं, तो सत्या-वृद्धि के साथ गुण-वृद्धि भी हो जायगी ।

दृष्टि व्यापक करने से दोनों में विरोध नही आयेगा ।

अंकांगोपन का परिहार करें

मैं समझता हूँ कि गुण और सत्या का विरोध वही होता है, जहाँ प्रयत्न अंकांगी होता है । ओसा मसीह ने यूरोप और अशिया में नव-विचार फैलाने का प्रयत्न किया । अुनके अुत्तम शिष्य थे और विचार भी बहुत ही सुन्दर थे । दुश्मन पर प्यार करना, अपनी सभी चीजों सबके साथ बाँट कर खाना, अंक हो परमेश्वर मानना, ये कोअी अंसी बातें नही जिनमें वैचारिक आक्षेप आयें । जीवन की अितनी सर्वोद्य-सुन्दर दृष्टि लेकर वे निकले थे । लेकिन बाद में अुनके शिष्यो द्वारा अुसमें अंक अंसी चीज दाखिल हो गयी, जिससे विचार अच्छा होने पर भी वह अंक देशीय बन गया और अुसका परिणाम यह हुआ कि जब तक सत्या नही बढी थी, तब तक ता गुण था और जहाँ सत्या बढने लगी, वही गुण छूट जाने का अनुभव आया । वह अंकांगी विचार यही था कि ‘अंकमात्र ओसा मसीह ही परमेश्वर के पुत्र हैं और अिदही के द्वारा हम परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं ।’ अिसके बजाय अगर वे यो कहते कि ‘हम सब मानव मात्र परमेश्वर के पुत्र हैं और अुन पुत्रो में अंक अुज्ज्वल पुत्ररत्न ओसा मसीह भी है’ तो कोअी अुच्छ न होता । अिसीके परिणामस्वरूप यह अंकदेशीय विचार बना ।

पहले सर्वोदय-सम्मेलन की बात लीजिये । गांधीजी के प्रयाण के बाद सेवाग्राम में अंक सम्मेलन हुआ, तो अुस समय अुसके नामकरण की बात चली । कुछ लोगो ने कहा कि अिसे गांधीजी का नाम दिया जाय । मैंने कहा—‘अंसा

क्यों करते हैं ? 'सर्वोदय' शब्द गांधीजी ने ही दिया और वह बड़ा ही सुन्दर है। जिसलिअे अुसको हम क्यों न चलायें ? अुसीको हम चलायें और गांधीजी का नाम न रखें, तो बेहतर होगा।' खुशी की बात है कि लोगो ने यह बात मान ली और अुनकी समझ में वह बात आ गयी। कुरान म कहा है—'ला अिलाहि अिल् अिल्लाह' और अुसके साथ जोड़ दिया "महमदुर्रसूल अुल्लाह"—याने अीश्वर के सिवा कोअी महान नअी, कोअी पूजनीय नही और मुहम्मद हमारा रसूल है। अिसी तरह अगर हम भी यह कहते कि 'सत्य निष्ठा और अहिंसा हमारे अुपास्य देवता हैं और गांधीजी हमारे गुरु हैं,' तो हम नि सन्देह अपने सद् विचार में अक देशीय विचार दाखिल करते। अुसके परिणाम स्वरूप यह आपत्ति आती कि सख्या बढ़ती, पर गुण घटता, लेकिन वह आपत्ति ठली क्योंकि हमने अुस नाम को अपने हृदय में रखा, बाणी में नही आने दिया।

अिस तरह स्पष्ट है कि जहा चिन्तन में अेकदेशीयपन आ जाता है, वहा गुण और सख्या-विरोध खड़ा होता है। किन्तु जहा अकदेशीयपन नही, वहा अिस प्रकार का भय नही रहता। अिन दिनों अिसी चीज पर मेरा चिन्तन चल रहा है।

सत्याग्रह की ही बात लीजिये। प्रश्न यही से आरम्भ होता है कि सत्याग्रह का लोकशाही में क्या स्थान है ? अेक कहता है 'स्थान नही है,' तो दूसरा कहता है 'है।' किन्तु दोनों ही सत्याग्रह की शुद्ध कल्पना से कोसा दूर हैं। वे सत्याग्रह की असत् कल्पना से ही पीडित हैं। अगर हम सत्याग्रह की परिशुद्ध कल्पना कर, तो कहना पड़ेगा कि लोकशाही में अुस अक विशेष

स्थान है। अुसका दूसरी शायियो में जितना स्थान हो सकता है, अुससे अधिक स्थान लोकशाही में है। किन्तु लोकशाही में अुसका अर्थ अेवागी नही, व्यापक ही बन सकता है। अगर हम लोकतन्त्र में सत्याग्रह को व्यापक न बना सके, तो अुसमें भी वही आपत्ति आयेगी—जहा सरया बढ़ाने की बात आयेगी, वहा गुण घटेगा और जहा गुण बढ़ाने की कोशिश होगी, वहा सख्या घटेगी।

वेदान्त की सही समझ

मैंने कहा था कि वेदात, विज्ञान और विश्वास, ये तीन शक्तियाँ अिस जमाने की चाहिये। वेदा त का अर्थ है वेदो का अन्त याने खातमा, याने सभी कृत्रिम धर्मों का अन्त। वेद को अुसका प्रतिनिधि मान ले, तो वेदान्त का अर्थ होता है—वाजिबिलान्त, पुराणान्त, कुरानान्त और जितनी पुस्तके हैं, अुन सबका अन्त। अिस तरह यह वेदान्त अत्यन्त व्यापक वस्तु हो जाती है। यदि मैं वेदान्त का अर्थ अुपनिषद् वगैरह कहूँ, तो फौरन अकदेशीयपन आ जायगा, अिसलिअे मैं सकुचित विचार नही मानता। मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली, सभी कल्पनाओ का अन्त ही वेदान्त है।

विवेकानन्द न अमेरिका की धर्म परिपद में जा गजना की थी वह दहा है। वेदान्त में हम किसी अक पुरुष के साथ बँध हुअे नही हैं जैसे अीसायियत अीसा के व्यक्तित्व के साथ बंधी है या जैसे कुछ धर्म माना में सही, मुहम्मद के साथ अिस्लाम की विचारसरणी गौतम के साथ बौद्ध धर्म की विचारसरणी, जुडो दीक्ष पडती है।

हमारे सामन अक समस्या है 'ग्रामदानी गावो की सरया बढ़ाते चले जाने से कुछ

ग्रामदानी गांव बोगस भी हो जाते हैं ।' मुझसे किसी ने पूछा भी था कि 'क्या ऐसा नहीं होता ?' जिस पर मुझे जो अप्रमत्ता सूझी, वह तो मैंने वह ही दी - 'शिवराजी ने पचास किले बनाये, पर बीस गेवा दिये और तीस हाथ में रह गये ।' पर मैं जानता हूँ कि जिस अन्तर से समाधान नहीं हो सकता । जिसलिये यह सही है कि जिस पर हमें चिन्तन करना चाहिये । हमारे ग्रामदानी गांव ढोले पड़ते हैं, जिसका कारण कुछ भी हो । फिर भी आप हो न मुझे बताया है और आप ही कहते हैं कि 'वे बच्चे हैं,' ता जाअिये, पक्के बनाअिये । खूटा जरा ढोला हो गया, तो पक्का बनाअिये । परिस्थिति ने उसे ढोला बना दिया, तो क्या आप उसे जुटा कर फेंक देंगे ? तब ता आपकी चक्की ही कैसे चलेगी ? जिसलिये आप ही खूटे को पक्का बनाअिये । अगर वह पक्का नहीं बनता, पक्का बनाने में टूट जाता है, तो अलग बात है । लेकिन उसको पक्का बनाने की कोशिश तो करना ही चाहिये । जिसलिये स्पष्ट है कि हम लोगो में जो यह विचार चलता है कि हम थोड़ा-थोड़ा ग्रामदान हासिल कर वहाँ मजबूत काम करें, उसका परिणाम तो अच्छा होगा, पर उससे व्यापकता नहीं आयेंगी ।

दूसरा विचार यह चलता है कि 'बन्द ग्रामदान हासिल करोगे, ता तुम पर जिम्मेवारी आयेंगी ।' मैं कहता हूँ कि जितने ज्यादा ग्रामदान हासिल हाग, उतनी समाज पर जिम्मेवारी आयेंगी, हमारी जिम्मेवारी न रहेगी । उस हालत में विचार व्यापक बनेगा और लोगो को विविध प्रयोग करने होंगे । अगर हम जिसकी व्यक्तिगत जिम्मेवारी लेते हैं, तो क्या कदाचित् हमारे नालायक साबित होने, नाकामयाब होने

पर ग्रामदान का विचार ही नालायक, नाकाम-याब सिद्ध हो जायगा ? मान लो, अंक जगह विनोबा बैठ और उसने कुछ काम किया, तो लोग कहेंगे कि वहाँ विनोबा जैसा व्यक्ति बैठा है, जिसलिये कुछ काम हुआ है, नहीं तो नहीं होता । याने अगर हम यशस्वी हुअें, तो हार गये और हार गये तो मर गये—जैसे आधुनिक लड़ाओ में होता है—जो जीता सो हारा और जो हारा सो मरा ।

अंक भाजी ने मुझ कहा कि आप बाफी घूम चुके, अब अंक जगह बैठ कर कुछ काम कीजिये । जिस पर मैंने उसे वेद मन्त्र सुनाते हुअें यह समझाया कि सबका सृजन करने वाला परमेश्वर है । वही सब कुछ करेगा । उसके काम में दखल देन की जिम्मेवारी मेरी नहीं है । कार्ल मार्क्स न समाज के सामने जो कुछ रखा, उस समय उसे किसी न नहीं कहा कि तुम कुछ करके दिलाओ । फिर मुझ पर कुछ करके दिखान की जिम्मेवारी कहा से आ गयी ? जिसलिये ये दो विचार चलते हैं, वे अंक दूसरे को काटने वाले हैं । उनसे सारा विचार ही सकुचित, कुठिल हो जायगा । दोनों मिल कर अंक ही विचार है । कुछ ग्रामदान मजबूत बनाय जायें और साथ ही नये-नये ग्रामदान हासिल भी किये जायें । ग्रामदान के लिये हवा भी खूब बनायी जाय, प्रचार भी खूब किया जाय । सख्या की वृद्धि से हम डरे नहीं । सख्या-वृद्धि के साथ-साथ गुणवृद्धि होना भी लाजिमी है । अंसी व्यापकता के साथ हम काम करेंगे, तो हमारी ताकत बढ़ेगी । मैं जिस विचार को बहुत महत्त्व दे रहा हूँ । हमारे कार्यकर्ताओं के मन में दुविधा ही नहीं, त्रिविधा और चोविधा भी प्रवृत्त हो सकती है—याने हम यह करें या

वह करे, ऐसा वे सोच सकते हैं। लेकिन पहले हमें यही समझना चाहिये कि हम ही करन वाले कौन होते हैं? सर्वोदय पात्र कहेगा 'हम माने कुल हिन्दुस्तान हैं। फिर हर एक से जितना बन सके, अतना वह करे, वह हमारा काम माना जायगा।

अब इसी तरह शांति सेना के बारे में भी बहुत व्यापक भावना से विचार करना है। किसी तरह का आग्रह हमें नहीं रखना है। नियमों की कैद में लोगों को नहीं फँसाना है। भावना का विकास करना है। यदि हम आग्रह रखेंगे, तो पिछड़ जायेंगे।

स्पष्ट है कि मैं आग्रह छोड़ दिया है। मैं कहा कि सत्याग्रह का अर्थ यही है कि 'सत्य को ही आग्रह करन दीजिये, आप सत्य का आग्रह नहीं, पालन कीजिये।' अगर आप समझते हैं कि हमारा आग्रह ठीक है और सामन वाला भी आग्रह रखता है तो अंक आग्रही मन के सिलाफ दूसरा आग्रही मन खड़ा हो जायगा और दो मनो की टक्कर होगी। फिर विज्ञान युग के निम्ने वह सत्याग्रह का स्वरूप नहीं होगा। विज्ञान-युग में तो मन से ऊपर अठना और मन को टक्करों को टालना पड़ता है। जिस युग में सज्जना के मनो की विरोधी टक्करें नहीं होनी चाहिये। जिसलिअ अगर कोई भी सज्जन आकर मुझसे कहता है कि तुम्हारा विचार समुचित होता है, तो मैं उससे यही बूँगा कि 'तुम्हारे लिअ मैं उस सोल दिया है। मैं सज्जन के विरोध में खड़ा नहीं हो सकता। यद्यपि मैं जानता हूँ कि सामन बाग सज्जन है और वह भी जानता है कि मैं सज्जन हूँ। जिस तरह दोनों अंक-दूसरे को जानते हैं, तो समुचितता नहीं होनी चाहिये। मेरी हमेशा

यही कोशिश रहती है। जिसलिअ समुचितता छोड़ कर परिणाम देखना चाहिये। सही विचार मालूम करना चाहिये और मन में किसी तरह का आग्रह नहीं करना चाहिये।

हम जितने व्यापक बन सकते हैं, अतने व्यापक बने और सबको अंक करे। हम सब सज्जनो को अंक करना चाहते हैं, यही हमारी दृष्टि है। किंतु उस दृष्टि में भी हमने अकुश तो रखा ही है, क्योंकि हम जानते हैं कि बिना अकुश के और काम हो सकता है किन्तु शांति सेना का काम नहीं हो सकता। सिर फूटेंगे, पर सफलता नहीं मिलेगी। फिर सिर फुड़वाना ही हमारा लक्ष्य हो, तो अलग बात है। अत हमें सफलता का अन्तिमाम करके ही सिर फुड़वाना चाहिये। अगर ऐसा नहीं करते, तो वह हमारी मूर्खता ही साबित होगी।

रविशंकर महाराज की बात है। वे हमारे साथ चार-पाच महीन रहे हैं। मैंने भी उनके साथ रह कर अपने विचारों में जो दोष थे, वे दुरुस्त कर लिये। उनके अनुभव की बात है। अहमदाबाद में महागुजरात के प्रश्न पर दगा हुआ और कुछ गोलीबाँ भी चली, यह आप जानते ही हैं। उस समय महाराज न कहा था 'जिनके हाथ में दंड शक्ति है, उन्हें गोली चलानी पड़ी, जिसमें अतना हर्ज नहीं है, किन्तु जब काँग्रेस-आफिस स गोली चली, तो मेरे मन में यह विचार आया कि काँग्रेस आफिस गोली चलान की जगह नहीं है, वह तो मरन की जगह है, मारन की नहीं। जिसलिअ मेरा दिव बगावत करता है।' उनसे मिलन के लिअ काँग्रेस व कुछ भाओ गये थे। महाराज अहमदाबाद स चालीस पचास मील दूर भूदान के प्रचार के काम में थे। अ-होने महाराज

से कहा कि 'अगर आप अहमदाबाद आये, तो शान्ति का प्रचार कर सकते हैं । लोग भी आपकी बात मानेंगे ।' महाराज ने कहा कि 'भे आने को राजी हूँ, जरा प्रयत्न करना होगा । किन्तु कहा तक वह सफल होगा, नहीं कह सकता । लेकिन मैं उसके साथ यह भी कहूँगा कि कांग्रेस-आफिस से गोली नहीं चलनी चाहिये ।' यह बात सुन कर कांग्रेसवाले भाभी सहम गये । फिर उन्होंने महाराज को बहा आने के लिये आपह नहीं किया । यह जिस बात का अुदाहरण है कि पक्षों में रहने से शान्ति-स्थापना का काम कठिन होता है ।

मैं कह रहा था कि हम खूब व्यापक बनना और सबके साथ सम्बन्ध रखना चाहते हैं । फिर भी महाराज अगर गोलीवाली बात पर लोगों के पूछने पर खामोश रहते, तो शान्ति स्थापना में चाहे वे बहुत महान हो, पर नाकाम-यार ही होते । सिर फुड़वाना हो, तो अलग बात है । लेकिन सत्य बोल कर हो वे शान्ति की स्थापना कर सकते थे । निष्पक्ष होकर ही सत्य बोला जा सकता है । यदि कोअी पूछे कि क्या पक्ष के अदर रह कर सत्य नहीं बोला जा सकता है ? तो, मैं यही कहूँगा कि बोल कर दिखाओ, मुझे मत पूछो, मैं मानने को राजी हूँ । पक्षातीत कोअी नहीं हो सकता है, ऐसा मैं नहीं कहता, लेकिन अिन दिनों बहुत मुश्किल मामला है, क्योंकि पक्ष के साथ लड़ाओ-झगड़े जुड हो जाते हैं । भले ही वे पक्षमूलक झगड़े न हों, तो भी पक्ष बोच में आ जाता है और किसी-न-किसी तरह से वे पक्ष के मामले बन जाते हैं । अुस हालत में जो भी हो और जिस किसी पक्ष में हो अगर वहाँ जाकर यह बोलने का हिम्मत करेगा कि अधिक काम चलत हुआ है, वह पक्ष में रह कर भी पक्षातीत ही बन

जायगा । महाराज तो किसी पक्ष में नहीं हैं, जिसलिये वे तो पक्षमुक्त हैं ।

आज हम सब भेद मिटा रहे हैं

हमने जो कुछ मर्यादायें बनायी हैं, वे सकुचित नहीं, कारगर बनने के लिये ही बनायी हैं । शान्ति-सेना के काम में सफल होने के लिये हमें जो मर्यादायें जरूरी मालूम पड़ी, अुन्हे हमने रखा । लेकिन मान लीजिये कि अुन मर्यादाओं से कुछ सज्जनों को, जो अिसमें आने के लिये अत्यन्त अुत्सुक हैं, बाधा पड रही हो, तो अुन्हे हटाने के लिये हम राजी हैं, यही मान कर कि यहाँ अिससे थोडी संकुचितता आ सकती है ।

अपने कार्यकर्ताओं से हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि अिस कार्य के जिस किसी अंग में, अुनको थडा और विस्वास हो, वे लगे रहे । मान लीजिये कि सर्वोदय-यात्र का काम करना चाहिये ऐसा बाबा ने कहा है, तो कोअी जरूरी नहीं है कि आप वही करे । अगर वे जमीन के बँटवारे का काम करने की जिम्मेवारी महमूस करते हों, तो अुसी में लगे रहे । अिस व्यासपीठ (प्लेटफार्म) से किसीको सकुचित करने वाला कोअी भी आदेश नहीं मिलेगा । मुझसे तो और भी नहीं मिलेगा, क्योंकि मेरे विचार में तो वह चीज है ही नहीं । अिसलिये कअी लोग मुझसे पूछते हैं कि अंसी हालत में शान्ति-सेना कैसे बनेगी, तो मैं कहता हूँ, 'देखिये कैसे बनेगी, यह तो प्रयोग करके देखने की बात है ।' मैं चाहता हूँ कि हमारे किसी भी विचार को बाधा न पहुँचाते अुअे काम व्यापक बने । मेरी थडा भी यही है । फिर गुण और व्यापकता में कोअी विरोध आयेगा, अंसा में नहीं मानता ।

[१ मार्च ५९, सर्वोदयनगर, अजमेर]

कला परिचय *

देवीप्रसाद

कला परिचय कला शिवपा का अंक अंग है। कला परिचय का सामान्य अर्थ अपने देश की और अन्य देशों की कला शैलियों से परिचय होना ही माना जाता है। परन्तु हम 'कला परिचय' में केवल अतना ही नहीं, बल्कि "कला-बोध" को अधिक महत्व का स्थान देते हैं। भिसलिअे प्रस्तुत चर्चा में "कला-बोध" का निर्माण करने के लिये क्या कार्यक्रम बनाया जा सकता है और कला शैलियों का ज्ञान, अिन दोनों मुद्दों का जिक्र होगा।

कुछ अुत्र होने पर-करीब करीब किशोर अवस्था में पहुंचने के समय बालकों को प्राचीन और आधुनिक कला से परिचय हो, यह जरूरी है। छोटी अुत्र में न तो अुन्हें अुसकी आवश्यकता होती है और नहीं ही अुससे अुनके अपने कला विकास में कोअी लाभ ही होता है। हाँ, चायद कला परिचय की दृष्टि से जरूर कुछ जानकारी होती है। बच्चों की अपनी कला पर तो वे सोचता हूँ अुससे अगर कुछ होता भी होगा तो वह नुकसान ही होगा। हमने देखा है कि बालक पर प्रौढ की कला का प्रभाव अच्छा नहीं होता। परन्तु अय बालक किशोर अवस्था के नजदीक पहुंचता है और जय अुसे बढों की तरह काम करने की जरूरत महसूस होती है, तब अुसे कला से परिचय कराना जरूरी होता है।

मह परिचय दो प्रकार से होगा। मनुष्य को प्रकृति के साथ परिचय होना चाहिये; अुसे प्रकृति के साथ अंक रूपता का अनुभव होना चाहिये। भिसलिअे कला के माध्यम से प्रकृति तर पहुंचना और प्रकृति की मदद से कला को समझना ये दोनो रास्ते हमें अपनाते होंगे।

अंक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ। आम तौर पर जो "आर्ट अेप्रिसियेशन" "कला इतिहास" का शिक्षाक्रम होता है, अुसमें केवल जानकारी की बात ही होती है। अंक ब्यक्ति भारतीय कला का इतिहास खूब दारीकी के साथ जानता है, वह अुसपर पुस्तके भी पाडित्य की लिखता है, किंतु वह जब बाजार में चित्र खरोदने जाता है, तो वही केलेन्डर वाली तस्वीरें पसन्द करता है। राजपूत शैली की हर तस्वीर को देखते ही कह सकता है कि यह तो फलानी शैली या फलानी शताब्दी की है, परन्तु अुसके बंठकखाने में बाजारू तस्वीरे लगी होंगी। अैसे ज्ञान से कोअी लाभ नहीं। हम 'तो कला-बोध चाहते हैं, सुन्दर और असुन्दर को समझने की विवेक बुद्धि हो, वह पहली नजर में ही अपने बोध के द्वारा अच्छी कलाकृति में प्रवेश कर सके अैसी शक्ति का निर्माण करना है।

अिस तरह की शिक्षा किस प्रकार दी जा सकती है, अुसके बारे में नया लिखने की आवश्यकता हमें महसूस नहीं होती। कलामुद नन्दलाल वसु ने अिसके बारे में अत्यत सुन्दर मुझाव बताये हैं। हम अुन्ही के शब्दों को यहा अुद्धृत करते हैं। यह अुन्होंने आज के विरवविद्यालयों को ध्यान में रखते हुअे कहा था, हम अगर अुन बातों को अपनी परिस्थिति और वातावरण में लागू करे तो अुससे अधिक कोअी सुझाव न देने पर भी यथेष्ट होगा।

"पहली बात है, सडकों के विद्यालयों, पुस्तकालयों में पढने और रहने के कमरों में कुछ अच्छी अच्छी मूर्तिया और दूसरी चारू

* 'बच्चों को कला और शिवा' नाम की पुस्तक का अंक अध्याय।

और कारु शिल्पो के नमूने, (नमूने न होने पर उनके अच्छे फोटो या प्रति छवि) सजाकर रखना होगा ।

“दूसरी बात है, अच्छे-अच्छे शिल्प निदर्शनों के चित्र और इतिहास दिये गये सहज ही समझ में आनेवाली लडकों के योग्य पुस्तके अपुयुक्त व्यक्तियों द्वारा यथेष्ट परिमाण में लिखानी होगी ।

“तीसरी बात है, चित्रपट की सहायता से, बीच बीच में स्वदेश और विदेश की चुनो हुआ शिल्प-वस्तुओं से लडकों को परिचय कराना होगा ।

“चौथी बात है, बीच बीच में अपुयुक्त शिल्पों के साथ जाकर लडके निकटस्थ संग्रहालयों तथा चित्र-मालाओं में अतीत की शिल्प कीर्ति का निदर्शन देख आया करेंगे । विद्यालयों से जब फुटबाल मैच खेलन जाने का कार्यक्रम हो सकता है तो चित्रशाला व संग्रहालय देख आना भी असंभव नहीं होगा । जिस बात को याद रखना होगा कि अंक अच्छी शिल्पवस्तु को अपनी आँखों से देखने और समझन स शिल्पदृष्टि जितनी जागृत होती है, अतनी १०० भाषणा के सुनने से नहीं होती । छोटी वय से अच्छे चित्रों, मूर्तियों को देखते देखते कुछ समझकर, कुछ विना समझ ही लडकों की दृष्टि बनती रहेगी, अपने आप ही अंश में शिल्प के भले-बुरे का विचार करन की शक्ति पैदा होगी और धीरे-धीरे सौंदर्य बोध जागृत होगा ।

“पाचवी बात है, प्रकृति से लडकों या सबध स्थापित कराने के लिये भिन्न भिन्न ऋतुओं व भिन्न भिन्न अस्तवों का आयोजन करना होगा । अंश आयोजन में होगा—अंश ऋतुओं के फल फूलों का संग्रह और शिल्प तथा

काव्य में अंश ऋतुओं के सबध में जो सुन्दर रचनाएँ हुआ हैं, अंशसे यथासंभव लडकों का परिचय कराने की व्यवस्था ।

“छठी बात है, प्रकृति में जो ऋतु अस्तव हो रहे हैं, लडकों का अंशसे परिचय करा देना होगा । शरद में धान के खेत और कमल के सरोवर, बसंत में पलाश, सेम्भल के मेले को जिससे अपनी आँखों से देखकर आनंद पा सके इसकी व्यवस्था करानी होगी । अंश ऋतु अस्तवों के लिये वन-भोजन और ऋतु अपुयोगी वेशभूषा तथा खेल-कूद की व्यवस्था करनी होगी । प्रकृति से अंक बार सबध स्थापित हो जान पर, प्रकृति से वास्तविक प्रेम करना सीख लेने पर, लडकों के हृदय में रस का अद्भुत फिर कभी नहीं सूखेगा, क्योंकि प्रकृति ही धुग धुग से शिल्पी को शिल्प सृजन का अपादान जुटाती आयी है ।

“अंतिम बात है, वर्ष के किसी समय विद्यालयों में शिल्पसंर्जन का अंक अस्तव करनी होगा । प्रत्येक विद्यार्थी को कुछ न कुछ शिल्प वस्तु अपने हाथों से बनाकर जिसमें श्रद्धा के साथ सम्मिलित होना होगा । वह शिल्पवस्तु चाहे कितनी भी सामान्य क्यों न हो, लडकों की संर्जन शक्ति की वस्तुओं अस्तव के अर्थ रूप में संग्रहीत होकर सजायी रहेंगी । नृत्य, गीत, जुलूस आदि के द्वारा अस्तव को सर्वांग सुन्दर बनाने के लिये चेष्टा करनी चाहिये । अस्तव के लिये निश्चित समय ठीक कर देना कठिन है, देश भेद से यह बदनेगा । बंगाल में शरत् ऋतु ठीक मालूम पडता है ।”

शिल्पगुरु की ये बात स्पष्ट करती है कि कला और प्रकृति में कितना सबध है । अंक दूसरे की मदद से ही दोनों समझ जा सकते हैं । अंश गुणावों के द्वारा बालका की शक्ति

तो होगी ही, पर शिक्पको के लिये अनुपर चितन, मनन और आचरण करने से सच्चा लाभ होगा। यह दृष्टि वही शिक्पक दे सकता है जो स्वयम् अस्मि रत हो या कम से कम अस्मि तरह की साधना में लगा हो।

कला बोध के ऊपर कहे गये पहलू के साथ अगर कला इतिहास आदि विषयो पर ध्यान दिया जाय तो अस्मिसे लाभ ही होगा। परन्तु यह ख्याल रहे कि केवल कला का पुस्तकीय ज्ञान होने से कला द्वारा जिस तरह के व्यक्तित्व का निर्माण करने की बात सोची जाती है, वैसा अल्पमाना में भी होता असम्भव है। वह तो सृजनात्मकता और सम्वेदना का विकास करने से ही निर्मित हो सकता है।

स्थायी कलाबोध तभी विकसित हो सकता है जबकि अस्मिसे साथ जीवन का सम्बन्ध हो। जैसा कि पहले भी जिक्र किया है कि बुद्धि से व्यक्ति कला का इतिहास और किसी कला के अच्छे बुरे पहलुओं को समझता हो, पर अस्मिसे अपने जीवन में सौन्दर्य के कुछ दूसरे ही मापदण्ड काम करते हो, तो वह किस काम का। यानी मनुष्य की बुद्धि और अस्मि की रूचि 'टेस्ट'-में अक्षय होना चाहिये। जिसलिये प्रश्न है— शिक्प के द्वारा अस्मि सुख का निर्माण करना। अस्मिसे लिये अस्मि जो सुझाव रख गये हैं अस्मिसे अलावा दो चार बात और सुझाना चाहता हूँ।

कला बोध का निर्माण करने का एक कारगर तरीका है व्यक्ति को ऐसे काम देना जिसमें अस्मिसे सौन्दर्य निर्माण की अपेक्षा हो। कदवा का कदवा या छात्रालय का कदवा पूरा पूरा खाली करके नय ढंग से सजाने का काम अस्मि विद्यार्थी को या विद्यार्थियों की

अस्मि टोली को देना चाहिये। अस्मिसे की दृष्टि से कमरे का सजाना सरल हो; और सजावट की दृष्टि से अस्मिमें अस्मिसे चित्र चुनकर ठीक जगह लगाना और फूलदान में ठीक ढंग से फूल सजाने तक का प्रोजेक्ट आखिर तक पूरा किया जाय। अस्मिमें सादगी और सजावट का सामंजस्य हो, रंगमेल की दृष्टि पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाय। प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद टोली के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत तौर पर समालोचना की अपेक्षा हो, साथ साथ सब मिलकर भी समालोचना करे। अस्मिमें सजावट के मूल सिद्धांतों का अच्छा विस्तार किया जा सकता है। अस्मिसे प्रकार छोटी छोटी प्रदर्शनियों का आयोजन, अस्मिसे त्योहारों के समय सजावट और नाट्यमंच आदि की सजावट में भी विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट दिये जाय।

किसी व्यक्ति या राष्ट्र की रूचि और अस्मिसे सौन्दर्य बोध के स्तर का अस्मिसे बात से भी पता चलता है कि वह 'बेस्ट मैटेरियल' (टूटन) का अस्मिसे कैसे कर लेता है। अस्मिसे सिलसिले में दो अस्मिसे सामने आते हैं। अस्मिसे तो जापान का और दूसरा बंगाल की काया बनाने की परंपरा का। अस्मिसे जापान में टूटन से अस्मिसे प्रकार की सुन्दर-सुन्दर चीजों का निर्माण कर लेते हैं। कपड़े की कतरा से और लकड़ी के टुकड़ों से, तरह-तरह की अस्मिसे सुन्दर गुड़िया बना लेना, कागज की छोजन से पेपर मेन्स-कूट-का काम अस्मिसे बड़ा की विशेषतायें हैं। छोटे छोटे बास के टुकड़ों का अस्मिसे सुन्दर अस्मिसे कर लेते हैं कि देखते ही बनता है। अस्मिसे छोटी सी बास की कमची को लेकर अस्मिसे तराश-तराश कर अस्मिसे कुछ केलीग्राफी या चित्र बना लेना अस्मिसे तौर पर देखा जाता है।

अिसी तरह पुरानी धोतियो और साडियो को लेकर अत्यंत अूची रुचि की सुजनिया, काये बनाने की दगल की परपरा भी अिस बात को द्योतक है कि वहा की स्त्रिया वेस्ट मेटोरियल को लेकर कंसे कलाकृतियो में परिणत कर सकनी है। यही गुण कलाबोध का अेक अरा यन जाना चाहिये। किसी शाला में अिस तरह के वेस्ट मेटोरियल का कितना और कैसा अुपयोग होता है यह देखकर वहा की शिशा के स्तर का पता चलना चाहिये। हमारी शिष्या में अंसे कार्यक्रम रले जाने चाहिये जससे बालको को अिस प्रकार की वस्तुओं का कलात्मक अुपयोग करने की रुचि वा निर्माण हो। अिसके लिये प्रदर्शिनिया भी रली जा सकती है।

मनुष्य का बोध कल्पना के सूक्ष्म विकास के द्वारा भी बनता है। हमने अच्छी रुचिवाले काफी अंसे ब्यक्तियों को तरह तरह की अजीब चीजें सग्रह करते हुअे देखा है। तरह तरह के परयों के टुकडे, पेड की पुरानी टेडी-मेडी जडो या डालियो के टुकडे अिस तरह का वाकार से लेते हैं कि सूक्ष्म कल्पना वाला ब्यक्ति अुसमें अनेक प्रकार के रूपों को देख सकता है। अिस तरह की चीजों में कुछ कल्पना जगत् का निर्माण कर लेना अेक अच्छी ट्रेनिंग है। अुससे ब्यक्ति में बोध वा, सृजनात्मकता वा विकास होता है। शाला में अिस तरह की प्रवृत्तियों को अुत्साह मिलना चाहिये।

आजकल प्रोग्रेसिव शालाओं में अेक और कार्यक्रम चलता है। असबारा और पत्र पत्रिकाओं से फोटो और चित्रों की कटिंग दमा करने का यह विचार अच्छा है, परंतु अुससे अुद्देश्य सिद्धि तभी हो सकती है जबकि वह

कार्यक्रम सुरुचिपूर्ण हो। जैसे तैसे भडकदार चित्र काटकर अलबम में रख लिये, अुससे तो रुचि अच्छी बनने के बदले बिगडेगी।

अिस कार्यक्रम के स्पष्ट दो भाग करने चाहिये। पत्रपत्रिकाओं में से कुछ तो अंसे चित्र सग्रह किये जायगे जो सामान्य ज्ञान-विज्ञान से सबध रखनेवाले होंगे। अिनको भी अलग अलग विषयों के अनुसार अलग अलग अलबम में सजाकर रखना चाहिये।

टेकनीकल दृष्टि के अलावा अिसमें यह ध्यान रहे कि सब चित्र साफ और सुंदर हो। अिसमें अधिकतर फोटो और डायग्राम आदि होंगे। फोटो हो तो टेकनीकल दृष्टि से अच्छे होने चाहिये। अिस प्रवृत्ति का दूसरा विभाग कला के दायरे का होगा। अिसमें अच्छे-अच्छे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और दस्त-कारियों के नमूनों के फोटो या प्रिंट होंगे। अिसके चुनाव के काम को करना कुछ कठिन है। कठिनायी दो कारण से है,—अेक तो किस चित्र को चुनना और किसको नहीं, यह काफी जानकारी के बाद सधता है, दूसरा, चित्र शायद सचमुच माना हुआ अच्छा है, पर क्या वह प्रिंट चित्र के रंग को सचाशी के साथ दिखाता है या छपायी में अुसके मूल रंग अितने बदल गये कि प्राय अुसके सारे गुण समाप्त हो हो गये। अिसलिये अिस काम के लिये विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। मेरा अेक सुझाव अिसके बारे में है। शाला में कुछ अुच्च कोटि के प्रिंट हों। यह बात आसान नहीं है, क्योंकि अंसे प्रिंट बडे महगे होते हैं। हर शाला के लिये अिनपर खर्च करना संभव नहीं हो सकता। अिसके लिये सबसे अच्छा तरीका यह है कि सरकारी पैमाने पर कुछ अच्छे अच्छे सेट सप्तार की

अलग-अलग कला शैलियों के, स्कूलों में घूमते रहें। यह घूमती प्रदर्शनी बीच-बीच में शिक्षकों और बालकों को देखने को मिले, यह उसका अद्देश्य है। इस तरह की परंपरा बनने के बाद जो शिक्षक स्वाध्याय करके अपने स्कूल में पत्र-पत्रिकाओं से कटिंग द्वारा प्रिंट संग्रह करना चाहे कर सकते हैं। उनका संग्रह सुवर्चिपूर्ण होगा।

कला इतिहास और कला के सिद्धांतों का महत्व कम नहीं है। जगत् में जो खजाना मनुष्य की कलाकृतियों का भरा पड़ा है, उसे परिचय करना और उसको जानना कला-बोध के विकास में महत्वपूर्ण कदम है। जिस में विशेष ध्यान जागतिक दृष्टि की ओर रहना चाहिये। भारतीय कला का इतिहास जान लेने से नहीं चलेगा और नहीं ही चलेगा केवल भारतीय कला को पहचान लेने से; क्योंकि उसे सजुचित दृष्टि का निर्माण हो सकता है। मनुष्य ने अलग-अलग देशों में, अलग अलग परिस्थितियों में अलग-अलग उपकरणों से अपने आंतरिक रूप जगत् को किस किस तरह प्रकट करने की कोशिश की है, यह जानना जरूरी है।

बुनियाद में बात अंक ही है। मनुष्य हर जगह अंक ही है। उसकी आकांक्षाओं उसकी आनंदप्राप्ति के रास्ते अपूरी ढंग से देखने में अलग अलवत्ता दोखते हैं, किन्तु उनके अन्दर अंक ही दृष्टि है—सौंदर्य निर्माण की। कहीं वह कुछ काल के लिये अधिक विकसित हुआ, कहीं कभी कुछ पिछड़ा गया; पर वह अमुक जाति या अमुक देश की होने के कारण नहीं। जिस तरह के अपूरी भेद बड़े समुद्र की अलग अलग सहरों की तरह हैं, जिनके नोचे हैं महासमुद्र और यहां है अगाध मनुष्य हृदय।

कला-इतिहास के विषय का इसी दृष्टि से अध्ययन किया जाय। यह आवश्यक है कि जो हमारे अधिक नजदीक हैं, यानी जो ऐतिहासिक नजर से भारतीय हैं, वह पहले देखा समझा जाय। पहले का अर्थ यह नहीं कि उसे देखें और दूसरे को नहीं, पर क्योंकि उसे समझना हमारे लिये सरल और स्वाभाविक है, उसे हम अच्छी तरह से समझें। अगर अपनी सांस्कृतिक बुनियाद अच्छी तरह से समझ ली जाय तो दूसरी परंपराओं को समझना आसान हो जाता है।

कला का अर्थ

हर कीमी कला की समझना चाहता है। पथी के भीतों की क्यों नहीं समझने की कोशिश करते? हम रात्री को, फूलों को, हमारे चारों तरफ की वस्तुओं को बिना समझे क्यों प्यार करते हैं? पर चित्र की समझना पड़ता है। और भातों के परे लोग जितनामात्र समझ लें कि कलाकार केवल अपनी आन्तरिक आवश्यकता के कारण ही काम करता है, और वह जिस संसार का अंक सामान्य छोटा सा अंग है, और यह समझ लें कि उसे उससे अधिक महत्त्व नहीं मिलना चाहिये जितना दूसरी उन अनेकानेक चीजों को मिलता है जो हमें आनंद देती हैं, पर जिनका हम अर्थ नहीं जानते। जो लोग चित्रों का 'अर्थ' समझना चाहते हैं, वे घलत पेड़ की छाल निकाल रहे हैं।

—पाब्लो पिकासो

(‘आर्टिस्ट्स ऑन आर्ट’ नाम की पुस्तक से।)

* पाब्लो पिकासो संसार के सबसे प्रसिद्ध कलाकार हैं। वे स्पेन के हैं और ध्यात में रहते हैं।

परीक्षाओं मॉजरी सॉजवस

यह परीक्षाओं का महोना है। स्कूल का साल खतम हो रहा है और सब जगह बच्चे और मायाप पास होने की, सर्टिफिकेट की और अगले दर्जे में प्रवेश मिलने की ही बातें कर रहे हैं। बुनियादी स्कूलों में भी अक्सर यही अलुल्ला का वातावरण रहता है, बुनियादी शिक्षक-प्रशिक्षण केन्द्रों में और कभी स्कूलों में भी लिखित परीक्षाओं होती हैं, जिसके नतीजों पर विद्यापिया का भविष्य बहुत हद तक निर्भर रहता है। हर साल शिक्षक इस व्यवस्था पर असन्तोष प्रकट करते हैं, कभी प्रधान अध्यापक इस विवशता में रहते हैं कि अमुक विद्यार्थी को, जिसको कि अंक दो मार्क कम मिला, लेकिन साल भर पढ़ाई में अच्छा था, पास कराना चाहिये कि नहीं। हर साल कॉलेजों में अधिक अच्चे मार्क वालों को ही लेने का निश्चय होता है, क्योंकि जगहोंकी सख्या मर्यादित है, फिर भी हर साल विश्व-विद्यालयों की डिग्री-परीक्षाओं में असफल होनेवालों की सख्या बढ़ती जाती है और विश्व-विद्यालयों के पुराने प्रमुख कहते रहते हैं कि जिस कड़ी छानने की प्रक्रिया के बावजूद "अयोग्य" विद्यार्थियों को प्रवेश मिल रहा है, जिनका "बौद्धिक स्तर" अतना अच्चा नहीं कि उन्हें "अच्च शिक्षा" से कुछ फायदा मिल सके। फिर करना क्या है? कहा जाता है कि अिन "गुणनिश्चयात्मक" परीक्षाओं को हटा देने का नतीजा और भी अवान्छनीय होगा। शिक्पा विभाग के अधिकारी इस व्यवस्था की बुराइयों को जानते हैं, अुस पर भी गयी आलोचनाओं की सत्यता को मानते हैं, फिर भी अुनका कहना है कि व्यवहार में

यह दो बुराइयों में से अेक को चुनने का प्रश्न है। तो परीक्षाओं की व्यवस्था अिनमें से कम बुरी है। वे कहते हैं कि अगर हम अिन परीक्षाओं को और सर्टिफिकेटों को छोड़ देते हैं तो काम के लिये और अुच्च-शिक्षा केन्द्रों के प्रवेश के लिये स्पर्धा में कोअी नियामक तत्व नहीं रहेगा, अधि कारों के दुरुपयोग और भ्रष्टाचार का स्वच्छन्द बिहार होगा। और इसलिये परीक्षाओं की व्यवस्था असन्तोषजनक होते हुअें भी दूसरे विकल्प के अभाव में जिसको चलाना ही होगा।

क्या यह दुःखपूर्ण विचार सत्य है? इस लेख का अुद्देश्य यह कहना है कि नहीं, यह सच नहीं। इससे कहीं अच्छा और व्यावहारिक रास्ता अुपलब्ध है। आज समय आया है कि राष्ट्र अुसे आप्रहपूर्वक अस्तित्पार करे। आज हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य व राष्ट्रनिर्माण के सारे कार्यक्रम के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि हर-अेक काम में अुसके लिये योग्य तथा स्वभाव अेव वृत्ति से अुसके अनुरूप व्यक्ति नियुक्त हो, गलत व्यवस्था से राष्ट्र की लोकशक्ति और संपत्ति का अपव्यय न हो। जिस किसी काम में जिसकी भी विशेष दक्षता व अभिरुचि हो अुमें वह काम करने का मोक्षा मिले। इस दृष्टि से समीक्षा और चुनाव की अधिक अच्छी और कार्यसम पद्धति लागू की जा सकती है।

यह कहना ठीक है कि बुनियादी तालीम में समीक्षा की प्रणाली अुस शिक्षा के अुद्देश्य और पद्धतियों के अनुरूप होनी चाहिये। लेकिन अुतना मात्र भी पर्याप्त नहीं है। आज की परीक्षाओं की व्यवस्था के पीछे जो बुनियादी मान्यताओं हैं अुनका असर सारे राष्ट्रीय जीवन

पर पड़ता है। किसी व्यक्ति की स्वाभाविक वृत्तियों व योग्यताओं की जाच करने के पीछे जो विचार हैं अन्ही में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। आखिर परीक्षाओं किसलिअे हैं ?

हमारी मूलभूत गति यह है कि हमने अपनी सार्वजनिक परीक्षा-व्यवस्था (Public examination system) में व्यक्ति की स्वाभाविक वृत्ति व अभिरुचि और उसकी पढ़ाई के द्वारा प्राप्त योग्यता में फरक नहीं किया है। हम मानते हैं कि किसी ने स्कूल का पाठ्यक्रम पूरा करने में अमुक योग्यता दिखायी, अतने साल अउसने जिसमें बिताये, जिसलिअे अवश्य ही वह अउच्च विद्यालयों में अध्ययन के लिअे, विभिन्न प्रकार की यात्रिक व प्रावधिक विधियों में प्रशिक्षण के लिअे, शासन व्यवस्था के विविध अधिकृत पदों के लिअे और भी कभी तरह के विशिष्ट कार्यों के लिअे योग्य होगा। यह मान्यता बिल्कुल निराधार है। योग्यता शब्द का जो अर्थहीन अुपयोग साधारण हो गया है वही जिसका प्रमाण है। असल में अुसका अर्थ होना चाहिये कि कोअी व्यक्ति अपने चरित्र से, स्वभाव से और कुशलता से अेक विशेष काम करने के लिअे सर्वथा योग्य है। लेकिन अब अुसका मतलब यह हो गया है कि अुसके पास फलाना सर्टिफिकेट है या अुसने अमुक परीक्षा पास की है। अिन दोनों बातों में बहुत अंतर है।

दो व्यक्तिगत अुदाहरण अिस बात को स्पष्ट कर सकते हैं। लेखिका स्वयं स्कूल में पढ़ते समय गणित में अभिरुचि रखती थी और स्कूलों में जैसे साधारणतया होता है विद्यार्थियों और वृत्तों को खींचकर अुनने 'नियमों

को सिद्ध' करने में वैसे ही मजा अनुभव करती थी जैसे किसी खेल की हार-जीत में। स्वाभाविक ही था कि अुसको स्कूल में गणित में अच्छे "मार्क" मिले। लेकिन थोड़े ही अनुभव से मालूम हुआ कि विश्वविद्यालय के गणित के प्रोफेसर सिद्धांतों को समझना अुसकी मानसिक वृत्ति और शक्ति के बाहर था। स्कूल के गणित में अच्छा मार्क मिलना अिस बात का निदर्शक नहीं है कि किसी को गणित की सच्ची वृत्ति है।

२५ साल पहले जबकि अुनिपादी तालीम का विचार ही नहीं हुआ था, लेखिका अेक साधारण लड़कियों का स्कूल चलाती थी। आठवें दर्जे में आठारह साल की अेक लड़की थी जिसका नाम कमला था। यह अपने क्लास के लिअे अुमर में ज्यादा बड़ी थी और पढ़ाई लिखाई में कमजोर। गणित की समस्याएँ, व्याकरण और विदेशी भाषा की अुसझमें कमला की शक्ति के बाहर थी। लेकिन वह सीधी, सरल, विश्वसनीय और मेहनती थी। स्वभाव अुसका मृदु और सहानुभूतिपूर्ण था और अुसके क्लास की छोटी लड़किया अुसे बड़ी बहन की तरह स्नेह और आदर से देखती थी। वह अपने काम में व आदतों में भी साफ और नियमित थी। अुसकी किताबें हमेशा सुन्दर सजाकर रखी हुअी होती थी। कमला की अिच्छा थी "नर्स" बनने की। वह अपनी वृत्ति से अिस काम के लिअे विशेष रूप से अुपयुक्त थी। फिर भी जब तक अुसको आठवा दर्जा पास होने का सर्टिफिकेट न होता तो वह किसी अस्पताल में प्रशिक्षण के लिअे "योग्य" नहीं समझी जाती थी। और पाठ्यक्रम में निर्धारित गणित, व्याकरण और अंग्रेजी में पास होना अुसके लिअे मुश्किल था। अेक "नर्स" के

काम के लिये अिन विषयो का कोअी विशेष प्रयोजन भी नहीं है। अिस तरह की सैकड़ो कमलाओ की समस्यायें हर साल शिवपको के सामने आती हैं। अगर प्रधानाध्यापक कमला को आठवा दर्जा पास होने का सर्टिफिकेट नहीं देते तो वह अुस काम में प्रवेश पाने से वचित रह जाती जिसके लिये वह सर्वथा योग्य थी। और अगर वह सर्टिफिकेट दे देते तो सभव है कि अुसके मा बाप कमला को अुच्च विद्यालयो में दाखिल कराने के लिये अुसका अुपयोग कर लेते और कमला तो अुसके लिये योग्य थी ही नहीं। अैसी दुविधाजनक परिस्थिति होनी ही नहीं चाहिये। जिन्हें किसी अुपयोगी काम में अभिरुचि और अुसके लिये आवश्यक गुण हों तो अुन्हें अिस कारण से क्यो रोके कि अुनको कुछ अैसे विषयो में पास होने का "सर्टिफिकेट" नहीं मिला जिनका कि अुस काम से कोअी संबंध ही नहीं।

अिसी पीढी की अिंग्लंड की अेक सडकी से हम अिसकी तुलना करे। विडव-विद्यालय में पढते समय मेरी जान पहचान "मेरी" नाम की अेक लडकी से थी। अिसके पिता कोयले की खान में मजदूर थे। चौदह साल की अुमर में वह स्कुल छोडकर किसी बडे घर में नौकरानी का काम करके अपनी रोटी कमाने लगी (अिंग्लंड में चौदह साल से छोटे बच्चा से काम कराना कानून से निषिद्ध है)। लेकिन अुसकी भी अमिलापा नर्स बनने की थी। जैसे ही वह अठारह साल की हो गयी, जो कि नर्स व प्रशिक्षण के लिये निम्नतम अुम्र है, अुसने अपना आवेदन पत्र भेज दिया और अुसको अेक अस्पताल में प्रोबेशन पर लिया गया। अुसके पास मेडिक का कोअी सर्टिफिकेट नहीं था।

न ही अुसकी आवश्यकता थी। अपने काम में वह बहुत ही अच्छी साबित हो गयी और प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वह बच्चो के अेक अस्पताल में बडी जिम्मेदारी का काम सभालने लगी। अब वह बहुत कार्यव्यस्त गृहिणी और मा के रूप में भी कुछ समय अपनी शिष्ट सेवा के काम में देती है, अुस क्षेत्र में आधुनिकतम वैज्ञानिक प्रगतियो के साथ अपन आपको परिचित रखती है, और कभी कभी अल्पकालीन पुन प्रशिक्षण शिबिरो में भी शामिल होता है। कमला के जैसे ही अुसको "परिवारिका" काम में स्वाभाविक अभिरुचि और अुसके लिये आवश्यक मानसिक गुण थे। कमला के जैसे ही अुसको गणित और व्याकरण में कोअी प्रवीणता नहीं थी। लेकिन कमला के जैसे वह अपनी स्वाभाविक वृत्तियो का विकास करने से परिस्थितियो के कारण वचित नहीं रह गयी। अुन स्वाभाविक वृत्तियो के विकास के फल-स्वरूप वह अेक सुशिक्षित और अुपयोगी नागरिक बन गयी।

दूसरे क्षेत्रो में भी अैसे वैपरीत्य पाये जाते हैं। आजकल ही में प्रोफेसर जे बी अेस् हाल्डेन ने अेक अखबार में लिखा था कि वह स्वयं किसी भारतीय विश्वविद्यालय में जीवशास्त्र के अध्यापन के लिये "अयोग्य" माने जायगे क्योकि अुनके पास अिस विषय में कोअी डिग्री नहीं है। जीव विज्ञान में अुनकी गहरी अभिरुचि, लबा और नियमित अनुसंधान व अध्ययन है, जिसके कारण वे प्रामाणिकता व साथ अिस विषय पर बोलते और पढाते हैं, ये सब अुनकी सर्टिफिकेट-हीनता के सामने निरुपयोगी है। क्या अब समय नहीं आया है कि अिस तरह के

अपहास्य नियमों को हटा दिया जाय। अंक शिक्पक को अपने विषय में तत्परता, अकाग्र ज्ञानसाधना और आत्मानुशासन की शक्ति के अलावा कौन सी "योग्यता" चाहिये? हमारी पुरानी भारतीय परंपरा ने विद्वत्ता के असली मूल्य को पहचाना था। यह मानी हुआ बात थी कि ज्ञान अपने आपमें ही प्रमाण है, अुसके लिये किसी बाह्य प्रमाण की अपेक्षा नहीं है। कम से कम इस विषय में हमें अपनी राष्ट्रीय परंपरा को पुनः स्थापित करना चाहिये।

हमारे रुढ़िगत विचारों की भ्रमात्मकता को आजकल की अंक प्रीर घटना स्पष्ट करती है। समाज कल्याण मंडल (सोशियल वेल्फेयर बोर्ड) अंक स्वतंत्र संगठन है, जिसके अूपर सरकारों के या विश्वविद्यालयों के कानूनों का बंधन नहीं है। फिर भी अुसने निश्चय किया है कि ग्राम सेविका प्रशिक्षण के लिये निम्नतम "योग्यता" मेट्रिक पास है। इसका यह मतलब हुआ कि अुन्होंने कलम की अंक मार से हजारों संस्कारसंपन्न समझदार स्त्रियों को, जिन्हे ग्रामीण जीवन की जानकारी है, और जिसलिये सच्ची सेवा करने की काबलीयत है, इस काम के लिये 'अयोग्य' साबित किया और अुनकी जगह अंसी प्रवेशार्थिनियों को लिया जिनकी "योग्यता" अुस काम से कौसी संबंध नहीं रखती है। मैं जानती हू कि मेट्रिक पास कौसी लड़कियां बहुत अच्छी ग्राम-सेविकाएं हुअी हैं, लेकिन अुनकी सफलता का कारण सर्टिफिकेट नहीं था।

अब करना क्या चाहिये?

१ हर अंक कालेज, अस्पताल, प्राथमिक स्कूल और अंसी हर कौसी संस्था जो किसी विषय विशेष या धंधे का प्रशिक्षण देती है

प्रवेशार्थियों की अुस खास विषय के लिये अुपयुक्त वृत्तियों और ज्ञानकारियों की जांच अपने ही तरीके से करे। इसके लिये अुपयुक्त पद्धतियां सोची जा सकती हैं। हा, यह जरूर है कि किसी मोटर इंजिनियरिंग के स्कूल में प्रवेशार्थियों की जांच का तरीका किसी अस्पताल में प्रशिक्षण के लिये परिवारिकाओं को चुनने के तरीके से बहुत विभिन्न होगा, कला के क्षेत्र में जहां हाथ और आंख की सूक्ष्म नियतता की जरूरत है, विद्यार्थियों को अुन कुशलताओं के आधार पर नहीं चुनेंगे जिनपर से इतिहास और भाषा के गहरे अध्ययन के लिये अुनकी योग्यता की जांच होगी। ये अेडहॉक परीक्षाएँ अुन सब के लिये खुली होंगी जो भी अुनमें शामिल होना चाहे और कौसी भी इस कारण से रोका नहीं जायगा कि वह अमुक स्कूल के बदले अमुक स्कूल में पढता था या अमुक सर्टिफिकेट हासिल नहीं कर सका। जिस संस्था में विद्यार्थी प्रवेश चाहता है वही के शिक्पक अुचित जांच के बाद अपनी जिम्मेदारी पर यह तय करेंगे कि असमें अुस विषय के लिये आवश्यक मौलिक गुण हैं या नहीं। और अगर वे गलत व्यक्तियों को प्रवेश देते हैं तो अुसमें किसी दूसरे का बसूर नहीं होगा।

२ जहां भी काम के लिये व्यक्तियों को लिया जाता है, जैसे सरकारी दफ्तर, स्कूल, कालेज, व्यापार की संस्थाएँ, फैक्ट्रियां, याता-यात की कंपनियां अित्यादि अुन सब में कमियों का चुनाव इसी प्रकार होना चाहिये; वे अपनी अपनी समितियों के द्वारा खास खास कामों के लिये प्रवेशार्थियों की योग्यता और स्वाभाविक वृत्तियों की जांच करेंगे, नकि किसी विशेष स्कूल या कालेज के सर्टिफिकेट वालों की ही

लेने की बात होगी। पब्लिक सर्विस कमिशन की परीक्षाओं में बैठने के लिये किसी विश्व-विद्यालय की डिग्री की जरूरत नहीं होनी चाहिये यह प्रस्ताव सही दिशा में एक कदम है। यह कोई नया सिद्धांत नहीं है, दुनिया भर में समझदार व्यवस्थापक यही करते आये हैं। प्रवेशाधियों में जो भी योग्य पाये जाते हैं उन्हें लिया जाता है, डिग्रीवालों को ही नहीं।

३. जिन सिद्धांतों के अनुसार यदि काम होता तो अपरोक्त "अधिकारों के दुरुपयोग" की गुजाबिस नहीं होनी चाहिये। आज परिस्थिति ऐसी है कि विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिये मैट्रिकुलेशन सर्टिफिकेट की जरूरत है, कभी कामों में प्रवेश के लिये भी उसीकी मांग है। होना यह चाहिये कि जो विद्यार्थी अच्छे शिक्षा के लिये योग्य पाये जाते हैं उन्हें कालेजों में लिया जायगा। दूसरों को नहीं, दोनों को भी किसी सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं होगी।

४. जैसे कुछ पेशे अवश्य हैं—डॉक्टरी नर्सिंग, वकालत, जित्यादि—जिनमें वे काम करनेवालों से एक अमुक निम्नतम स्तर की योग्यता की अपेक्षा रखना पड़ता है। वह लोकहित के लिये जरूरी है। इसलिये उस काम में प्रवेश करने के पहले उन्हें अपनी कुशलता का कुछ न कुछ प्रमाण देना आवश्यक होगा। जिस लेख में हम इसके आखिरी रूप पर नहीं, बल्कि प्रशिक्षण के लिये विद्यार्थियों को लेने या चुनने के तरीके पर ही विचार कर रहे हैं।

५. यह विलकुल स्पष्टता से समझ लेना चाहिये कि राष्ट्र के सब बच्चों के लिये अनिवार्य सार्वजनिक शिक्षा का सिद्धांत लागू करने पर सब के लिये एक ही निर्धारित

स्तर की जिन बाह्य परीक्षाओं को हटाना ही होगा, जो आज के स्कूलों पर लादी जा रही हैं। बच्चों के व्यक्तित्व विशेष तथा विभिन्न वृत्तियों, अभिरुचियों, और कुशलताओं के लिये समान आदर का ढिंढोरा पीटते हुये उसी समय सबको यांत्रिक रूप से एक ही साँचे में ढाल देने का प्रयत्न निरर्थक है। मानव-जीवन में जो भी शुद्ध, सत्य और सुन्दर है उसपर जिस सार्वजनिक अंशरूपता के प्रयास से अतनी भयंकर विपत्ति आ पड़ी है कि उसपर जितनी भी सख्ती से बोलो अपर्याप्त ही होगा। अंगलैंड में सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था के अब ६० साल हो गये हैं, लेकिन एक सार्वजनिक 'स्टैंडर्ड' के सर्टिफिकेट की व्यवस्था कभी नहीं थी, आज भी नहीं है। यह वाद जो अक्सर सुनायी देता है कि सब स्कूलों के एक विशेष स्तर पर पहुँचने के लिये बाह्य परीक्षाओं की जरूरत है, सर्वथा भ्रम-मूलक है। सब स्कूल अक-जैसे क्यों होने चाहियें? भाग्यवश सब बच्चे एक जैसे तो नहीं हैं। जब यह सिद्धांत मान्य होगा कि अत्युच्चशिक्षा केन्द्रों में और कामों में प्रवेशाधियों को उनके व्यक्तिगत गुण और कुशलताओं के आधार पर ही लिया जायगा, यह उनसे मुलाकात करके और विशेष जाँचों के द्वारा ही तय किया जायगा, किसी बाह्य सर्टिफिकेट की अपेक्षा नहीं होगी, तब यह सार्वजनिक स्टैंडर्ड का वाद भी अपने आप खतम हो जायगा।

६. अगर हम जिस विचार को एक दफे हटाने में समर्थ होते हैं कि फलाना सर्टिफिकेट होने से फलाना काम और उसमें अतनी तनस्वाह और फलाना स्टैंडर्ड पहुँचने से फलाने कालेज में प्रवेश मिलेगा, तब आज जो

“पाठ” “प्रमोशन” और “इनाम” का लोभ विद्यार्थियों के मन को अितना धरकर रखता है, उसके बदले सारी शिक्का की प्रक्रिया की तरफ ज्यादा स्वस्थ वृत्तियों का निर्माण हो सकता है जिससे बच्चा नयी नयी अनुभूतियों के आनन्दपूर्ण जगत् में स्वतन्त्र विकास पायगा। वर्तमान व्यवस्था की परीक्षाओं में किसी न किसी तरह पास होन के तकाज के कारण जो असत्य और अन्याय की प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं उनका विस्तार यहाँ करना आवश्यक नहीं है। मैं कहता यह चाहता हूँ कि जब ये बाधाएँ और बधन हटा दिये जायें तब शिक्षक और विद्यार्थी एक मुक्ति का अनुभव करेंगे, तब उनपर अपने ही सत्य और कर्तव्यबोध का बधन रहेगा—अपने समाज के सब बच्चों को अपनी शक्ति की मर्यादा के अंदर शरीर की मन की, और आत्मा की अच्छी से अच्छी शिक्का देने का कर्तव्य, हर एक बच्चे को उसकी अपनी स्वाभाविक वृत्तियाँ और ज़रूरतों के अनुसार ज्यादा से ज्यादा विकास पान का मौका देन का कर्तव्य। मुझे एक ही डर है कि हम अपने कैदखाने की व्यवस्था के—पाठपत्रों के, परीक्षाओं के—अितन आदी हो गये हैं कि कहीं जब अनिसे छूटकारा पान का मौका मिलता है तो हम उसे लेना नहीं चाहेंगे। अगर ऐसा हुआ तो ‘पूर्ण स्वराज्य’ की हमारी आकांक्षा अब स्वप्न मात्र रहेगी।

सार्वजनिक परीक्षाएँ नहीं होगी तो सार्वजनिक पाठ्यपुस्तकों की भी ज़रूरत नहीं होगी। भाषा की समस्या हल करने के लिये एक नया रास्ता खुल जायगा, नयी सभावनाएँ निकलेगी। प्रतिभाशाली शिक्का को नये तरीके से सोचने और काम करने का मौका मिलेगा। उनके द्वारा किये गये नये प्रयोग और नये अनुभव शिक्का जगत् को अधिक समृद्ध बनायेंगे। खुले खपेज़ में नयी तालीम के सिद्धांतों की असली जाँच होगी। पुराने तरीकों के साथ—जिनसे नयी तालीम का मेल नहीं है—असे जोड़ने का प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा। असे निकल विद्यार्थी अपन ही गुणों के आधार पर आगे बढ़ेंगे या अयोग्य साबित होंगे।

अस लेख में एक सार्वजनिक परीक्षा के बदले—जिसे नतीजों पर विद्यार्थी का सारा भविष्य निर्भर रहता है—विभिन्न कामों तथा विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिये विभिन्न गुणों और कुशलताओं की स्वतन्त्र जाँच होन को आवश्यकता बतान का प्रयास किया गया है। अिन जाँचों का रूप क्या हो और उनमें सुधार कैसे किया जाय अिसकी चर्चा नहीं की, करने की ज़रूरत भी नहीं है। कभी नयी तालीम सम्मेलनों में ऐसी जाँचों के विशिष्ट स्वरूपों पर चिंतन और मनन हुआ है। अस क़रार में प्रत्यक्ष प्रयोग के लिये पर्याप्त सामग्री अुपस्थित है, केवल अमल करन की आवश्यकता है।

राजपुरा नजी तालीम सम्मेलन का कार्यक्रम

२३-२८ अप्रैल १९५९

'नजी तालीम' के पाठकों को पहले ही सूचना दी गयी है कि इस साल अखिल भारत नजी तालीम सम्मेलन अप्रैल के आखिरी हफ्त में राजपुरा, पंजाब में आयोजित हो रहा है। सम्मेलन के आखिरी दिन सुबह विनोबाजी राजपुरा पहुंचेंगे और समारोप के अवसर पर उनका प्रवचन सुनने का सोभाग्य हमको मिलगा।

सम्मेलन २५ अप्रैल दोपहर को शुरू होगा और प्रदर्शनी का अदृष्टाटन २३ ता० तीसरे पहर होगा। परंतु २३ ता० सुबह से शिक्षकों के अंक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है और इसकी चार बंठके २३ और २४ ता० के दोनो वक्त होगी। पिछले सालों के अनुभव से अंसे सम्मेलन अत्यंत मूल्यवान पाये गये हैं। इसमें स्कूलों में प्रतिदिन प्रत्यक्ष काम करने वाले शिक्षकों को अपने अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान करने तथा अपनी समस्याओं को साधियों के सामने रखने का मौका मिलता है। यह स्वाभाविक ही है कि इस सम्मेलन में अधिकतर शिक्षक पंजाब के ही रहेंगे, लेकिन आशा की जाती है कि दूसरे राज्यों की भी विशेष समस्याओं पर चर्चा होगी। चर्चा के लिये निम्नलिखित विषय रखे गये हैं। एक या दो भाषी विषय की शुरुआत करण, फिर उसपर चर्चा होगी।

१ बुनियादी तालीम क्या है ?

२ बुनियादी शाला का संगठन, प्रचलित शानात्रा का अिम पद्धति में परिवर्तित करना— आवश्यक साधन सामग्री, उत्पादित वस्तुओं की

विक्री या अुपयोग, समाज के साथ शाला का संबध।

३ बुनियादी तालीम की शिक्षण पद्धति।

४ बुनियादी शाला के शिष्यको की कठिनाशिया और समस्यार्थें।

आशा की जाती है कि प्रत्यक्ष वषेत्र में काम करनेवाले शिक्षकों के इस सम्मेलन में जो विचार और निष्कर्ष निकलेगे वे आगे अखिल भारतीय सम्मेलन में विचार और चर्चा के लिये बहुत अुपयोगी साबित होंगे।

अप्रैल २५ ता० शामको ५ बज सम्मेलन का अदृष्टाटन समारंभ होगा। इसमें स्वागताध्यक्ष का भाषण, सम्मेलन का अदृष्टाटन भाषण और अध्यक्षीय भाषण होंगे। फिर केन्द्रीय सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकार के शिक्षण विभागों के प्रतिनिधि १९५७ नवंबर में तुर्की नजी तालीम सम्मेलन के बाद देश में बुनियादी तालीम के विस्तार और विकास का जो काम हुआ उसकी सविपत् रिपोर्ट सम्मेलन के सामने पेश करेंगे। उसके बाद विभिन्न विषयों पर अधिक गहरे चिंतन के लिये सम्मेलन चर्चा अध्ययन मंडलिया में विभक्त होगा। अिन मंडलिया में विचार के लिये शिक्षक सम्मेलन व निष्कर्ष भी अुपलब्ध होंगे। पिछले अनुभवों और नतीजों के आधार पर कुछ अध्ययन सामग्री (वकिम पेपर) तैयार की जा रही है। अध्ययन मंडलिया के लिये ये विषय सुझाय जा रहे हैं।

१ बुनियादी शिक्षण की व्यवस्था व संगठन।

- २ शिवपको की तालीम व तैयारी ।
- ३ शिक्षा के लिये अपयुक्त साहित्य ।
- ४ नजी तालीम में अनुसंधान की आवश्यकता और सम्भावनाएँ ।
- ५ शिक्षा और शांति
- ६ पूर्व बुनियादी शिक्षा

अप्रैल २६ ता० का पूरा दिन तथा २७ ता० की सुबह का ज्यादातर समय जिन अध्ययन-मंडलियों के काम के लिये मिले अंसी योजना है । जिनके निष्कर्ष २७ ता० दुपहर की सभा में विनोबाजी के प्रवचन के पहले सम्मेलन के सामने रखे जायगे ।

ता० २७ अप्रैल रात को स्वागत समिति की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायगा ।

सम्मेलन के बाद ता २८ अप्रैल को

स्वागत समिति की ओर से राजपुरा के आसपास कुछ दर्शनीय स्थानों को देखने का प्रबंध किया जा रहा है । जिनका सविप्ल परिचय नीचे दिया जा रहा है ।

१ गुरुद्वारा आनंदगढ़ साहब—यहां गुरु गोविंद ने आत्मबलिदान की नींव पर सिखधर्म की स्थापना की ।

२ गुरुद्वारा फतहगढ़ साहब ।

३ पटियाला—पेप्सू की राजधानी—यहां का मोती किला आदि ।

४ भाखड़ा बाघ

५ नागल ।

६ गोविंद सागर ।

७ चढीगढ़—पंजाब की नयी राजधानी ।

८ पिंजौर—मुगल साम्राटों के प्रसिद्ध अस्थान ।

पाठकों से—

‘नजी तालीम’ के फरवरी १९५९ के अंक में सूचना दी गयी थी कि माघ का अंक सर्वोदय सम्मेलन बीच में आने के कारण कुछ देरी से निकलेगा । अंशका कारण यह भी था कि अंश अंक में हम सर्वोदय परिसंवाद तथा सम्मेलन की कुछ महत्वपूर्ण चर्चाओं और भाषण भी देना चाहते थे । अन्न शीघ्र ही नजी तालीम सम्मेलन भी आ रहा है । अंशकी तैयारी के लिये कुछ सामग्री ‘नजी तालीम’ में देना जरूरी था । यह सब तैयार करने में कुछ समय लग गया और अब माघ और अर्धमास का सम्मिलित अंक आपके सामने आ रहा है ।

माघ का अंक नहीं मिलन से जो अमुविधा हुआ है उसके लिये हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं ।

हिन्दुस्तानी तालीम संघ की बैठक बुनियादी तालीम की कुछ समस्याएँ

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की अर्धवार्षिकी बैठक १८ फरवरी १९५९ को श्री आर्यनायकमजी की अध्यक्षता में हुई। जिस बैठक में बुनियादी तालीम की कुछ मुख्य बातों पर चर्चा हुई। जिनसे बुनियादी शिक्षा की सरकारी मान्यता, बुनियादी, अन्तर बुनियादी विद्यालयों की जाच। अस्का सारांश नीचे दिया जा रहा है।

विश्वविद्यालयों में बुनियादी तालीम

१ बुनियादी तालीम सर्वव्यापक अंक राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम बने जिसलिअे यह आवश्यक है कि केन्द्रीय सरकार का शिक्षा मन्त्रालय अपनी ओर से नजी देहली में अंक अंसा अुच्च स्तर का बुनियादी विद्यालय चलाये जिसमें अुच्च आर्थिक वर्ग के बालक बालिकाओं की भी शिक्षा, बुनियादी तालीम की पद्धति से प्राप्त करने का मौका मिले। बुनियादी शिक्षा अब तक जनप्रिय नहीं बनी है। आज जिससे जनता में बुनियादी शिक्षा के बारे में यह विचार है कि बुनियादी तालीम गरीब वर्गों के लिअे है और जिसके लिअे सरकार की मान्यता और समर्थन नहीं है। जिस प्रकार के अुच्च स्तर के शहरी बुनियादी विद्यालय चलाने से जनता का विश्वास प्राप्त करने में सहायता होगी।

२ नजी देहली के बाद देश के मुख्य शहरो में राज्य सरकारों की ओर से जिस प्रकार के अुच्च स्तर के बुनियादी विद्यालय स्थापित हो।

३ आज राष्ट्र में जितने विश्वविद्यालय हैं उनके शिक्षा विभागों (फैकल्टी ऑफ

अेजुकेशन) और शिक्षक प्रशिक्षण महा-विद्यालयों में प्राथमिक से लेकर अुच्च माध्यमिक स्तर तक बुनियादी शिक्षा की प्रयोग शालाओं के निर्माण हो जहा बुनियादी शिक्षा के बारे में प्रयोग, खोज और परीक्षण का काम चले। जिस कार्यक्रम की कार्यान्वित करने के लिअे पहले कदम के तौर पर संघ सिफारिश करता है कि आज केन्द्रीय सरकार की ओर से चलाय जानवाले चारों विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों में और प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जिस कार्यक्रम का प्रारंभ हो।

४ जिस दिशा में आग के कदम के तौर पर देहली में केन्द्रीय सरकार की ओर से सेन्ट्रल अिन्स्टीट्यूट ऑफ अजुकेशन और नेशनल अिन्स्टीट्यूट ऑफ बेसिक अेजुकेशन में अुच्च स्तर की बुनियादी शिक्षा का प्रयोग हो।

संघ केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से अनुरोध करता है कि जिस प्रश्न पर विचार करके शीघ्र ही कौओ कदम अुठाये। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ जिस काम में यथासंभव सहयोग देने को तैयार है।

५ नजी तालीम में परीक्षा का स्थान —

नजी तालीम के सर्वजनमान्य अंक राष्ट्रीय शिक्षा के रूप से विकास के प्रश्न पर चर्चा व सिलसिले में परीक्षा का प्रश्न भी सदस्यों के सामने आया।

यद्यपि बुनियादी शिक्षा की योजना में परीक्षा का स्थान नहीं है तथापि वस्तुस्थिति यह है कि आज करीब करीब सभी राज्यों में

बुनियादी और अन्तर बुनियादी विद्यालयों की जाँच शिक्षा विभागों के द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार ही की जाती है और जो नयी तालीम के अद्देश्य और कार्यक्रम से विपरीत दिशा में है।

जिस प्रश्न पर विचार करने के बाद सभ ने फिर से अपना आग्रह दोहराया कि नयी तालीम की अवधि में जाँच, जिस अवधि के शिक्षाक्रम के अद्देश्य व कार्यक्रम को सामने रखकर ही की जानी चाहिये। बुनियादी तालीम का आठ साल का शिक्षाक्रम अखंड माना जाय और उसमें पाँचवी के बाद परीक्षा देकर 'अक नये ढंग का शिक्षाक्रम आरम्भ न किया जाये। विद्यार्थी की अंतिम जाँच में साल भर के काम का विवरण का ही स्थान मुख्य होना चाहिये। आज बुनियादी शिक्षा पूरा करने के बाद जो विद्यार्थी या विद्यार्थिनी आगे की शिक्षा के लिये विश्वविद्यालयों में प्रवेश करना चाहते हैं उनकी कठिनायियों के बारे में बाद में विचार हुआ।

सभ को राय यह रही कि परीक्षा या जाँच दो प्रकार की होनी चाहिये। अक माध्यमिक या अन्तर बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद शालात योग्यता की जाँच और दूसरा विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों में प्रवेश के लिये योग्यता की जाँच। विद्यालय में प्रवेश-योग्यता की जाँच के लिये विद्यार्थी को

पूर्वोक्त शिक्षा जिस पद्धति से हुई जिसका कोई आवश्यक सबध जोड़ा जाये। चाहे वह विद्यार्थी प्रचलित पद्धति के अनुसार या बुनियादी पद्धति के अनुसार शिक्षा प्राप्त हो। विश्वविद्यालय प्रवेश-परीक्षा में अगर अस्तीर्ण हो तो उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहिये।

६. बुनियादी शिक्षा की अवधि

सभ का ध्यान जिस बात पर आकर्षित किया गया कि अब सरकार की नीति आठ साल की मुक्त व लाजिमी तालीम के बदले पाँच साल तक करने की है।

यद्यपि संविधान में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक बालक व बालिका को १४ साल की आयु तक शिक्षण देने का प्रयत्न करना है, सरकार ने आर्थिक व व्यावहारिक कारण बताकर ग्यारह साल तक के बच्चों की ही शिक्षा का प्रयत्न करने का कार्यक्रम बनाया है। यह नीति शिक्षा की दृष्टि से बहुत असतोष जनक और अव्यावहारिक है। जबकि बुनियादी काफ़ी राष्ट्र लाजिमी तालीम की मीयाद को चौदह साल से आगे बढ़ा रहे हैं, यह कदम राष्ट्र के हित के लिये प्रगति कारक सिद्ध नहीं होगा। सभ महसूस करता है कि बुनियादी तालीम का विकसित रूप सामने रखकर हमें दीर्घातिशील अंसी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनानी चाहिये जिससे चौदह साल तक के हर अक बालक बालिका की शिक्षा का प्रयत्न हो।

“नवी तालीम” पत्रिका की जानकारी

फार्म ६, रूल ८.

प्रकाशन का स्थान	सेवाग्राम
प्रकाशन काल	मासिक
मुद्रक का नाम	द्वारका प्रसाद परसाओ
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
प्रकाशक	श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
संपादक	आशादेवी आर्यनायकम्, मार्जरी साभिक्स और देवीप्रसाद
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
पत्र के मालिक	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

मैं श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम् विदवांसं दिलाता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

३१ मार्च १९५९

—श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
प्रकाशक

बुनियादी और अतः बुनियादी विद्यालयों की जाँच शिक्षा विभागों के द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार ही की जाती है और जो नयी तालीम के अद्देश्य और कार्यक्रम से विपरीत दिशा में है।

जिस प्रश्न पर विचार करने के बाद सच ने फिर से अपना आग्रह दोहराया कि नयी तालीम की अवधि में जाँच, जिस अवधि के शिक्षाक्रम के अद्देश्य व कार्यक्रम को सामने रखकर ही की जानी चाहिये। बुनियादी तालीम का आठ साल का शिक्षाक्रम अखंड माना जाय और अतः पाँचवी के बाद परीक्षा देकर 'अके नये ढंग का शिक्षाक्रम आरम्भ न किया जाये। विद्यार्थी की अंतिम जाँच में साल भर के काम का विवरण का ही स्थान मुख्य होना चाहिये। आज बुनियादी शिक्षा पूरा करने के बाद जो विद्यार्थी या विद्यार्थिनी आगे की शिक्षा के लिये विश्वविद्यालयों में प्रवेश करना चाहते हैं उनकी कठिनाइयों के बारे में बाद में विचार हुआ।

सच को राय यह रही कि परीक्षा या जाँच दो प्रकार की होनी चाहिये। अब माध्यमिक या अतः बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद शालात योग्यता की जाँच और दूसरा विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों में प्रवेश के लिये योग्यता की जाँच। विद्यालय में प्रवेश-योग्यता की जाँच के लिये विद्यार्थी को

पूर्वोक्त शिक्षा जिस पद्धति से हुई जिसका कोई आवश्यक सबंध जोड़ा जाये। चाहे वह विद्यार्थी प्रचलित पद्धति के अनुसार या बुनियादी पद्धति के अनुसार शिक्षा प्राप्त हो। विश्वविद्यालय प्रवेश-परीक्षा में अगर अस्तीर्ण हा तो उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहिये।

६. बुनियादी शिक्षा की अवधि

सच का ध्यान जिस बात पर आकर्षित किया गया कि अब सरकार की नीति आठ साल की मुक्त व लाजिमी तालीम के बदले पाँच साल तक करने की है।

यद्यपि संविधान में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक बालक व बालिका को १४ साल की आयु तक शिक्षण देने का प्रबंध करना है, सरकार ने आर्थिक व व्यावहारिक कारण बताकर ग्यारह साल तक के बच्चों की ही शिक्षा का प्रबंध करने का कार्यक्रम बनाया है। यह नीति शिक्षा की दृष्टि से बहुत असंतोष जनक और अव्यावहारिक है। जबकि दुनिया के काफी राष्ट्र लाजिमी तालीम की मीमाद को चौदह साल से आगे बढ़ा रहे हैं, यह कदम राष्ट्र के हित के लिये प्रगति कारक सिद्ध नहीं होगा। सच महसूस करता है कि बुनियादी तालीम का विकसित रूप सामने रखकर हमें शीघ्रातिशीघ्र अंसी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनानी चाहिये कि जिससे चौदह साल तक के हर अके बालक बालिका की शिक्षा का प्रबंध हो।

"नओ तालीम" पत्रिका की जानकारी

फार्म ६. रूल ८.

प्रकाशन का स्थान	सेवाग्राम
प्रकाशन का काल	मासिक
मुद्रक का नाम	द्वारका प्रसाद परसाओ
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
प्रकाशक	श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
संपादक	आसादेवी आर्यनायकम्, मार्जरी साग्रिक्स और देवीप्रसाद
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)
पत्र के मालिक	हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

मैं श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम् विद्वांसं दिखता हूँ कि अपूर्वकृत विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

३१ मार्च १९५९

—श्री. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
प्रकाशक

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिन्दी पुस्तकें

मूल्य
रु न पें

मूल्य
रु न पें

शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार

१४ भुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम

१ शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति १-००

(सक्षिप्त) ०-२५

बुनियादी शिक्षा सम्मेलनों की रिपोर्टें

१५ पूर्व-बुनियादी शिक्षकों की

ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम ०-६३

२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा

अन्य पुस्तकें

(डॉ. जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट) १-१०

१६ भारत की कथा (अभिनय तथा

संगीत) ०-५०

३ समग्र नयी तालीम २-७५

१७ नयी तालीम का आयोजन ०-०६

४ आठवां न ता सम्मेलन विवरण १-२५

१८ सेवाग्राम—गांधीलोक ०-३१

५ नवा " " " ०-६३

१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार

(प्रो. राक्षीस) ०-०६

६ दसवा " " " ०-७५

७ ग्यारहवा " " " १-००

८ बारहवा " " " १-१०

बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत

नये प्रकाशन

९ प्रौढ शिक्षा का अद्देश्य (शाता

२० शांति-सेना ०-१२

नारुलकर और मार्जरी साविकस) ०-७५

२१ शिक्षका से (विनोबा) ०-२५

१० जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-

२२ शांति-सेना का विकास ०-३१

बुनियादी तालीम की योजना और

२३ विद्यार्थियों से (विनोबा) ०-२५

प्रत्यक्ष काम) (शाता नारुलकर) १-२५

२४ ग्राम स्वराज्य नयी तालीम १-००

अलग अलग विषयों पर पुस्तकें

नोट-१ पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये

११ मूल अद्योग कातना (विनोबा) ०-७५

१२ खेती शिक्षा (भित्ति और पटेल) १-००

पैसे पर प्राय ६ नये पैसे के हिसाब स

पाठ्यक्रम की पुस्तकें

डाक खर्च लगेगा। इससे अलावा

१३ आठ सालों का सम्पूर्ण शिक्षाक्रम १-१०

वी पी या रजिस्ट्री से मगाने पर

६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।

नोट-२. प्रत्येक ऑर्डर के साथ एक चौथाई

रकम पेनाली रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक - श्री आपर्णनाथकम्, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम।

मुद्रक - श्री द्वारका प्रसाद परसाओ, नयी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।

नई तालीम



संपादक—मंडल
आशादेवी : मार्जरी साईस्म
देवीप्रसाद

सम्मेलन विशेषांक



हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम

वर्ष : ७]

सं० १९५९

[अंक : ११

नअी तालीम

‘नअी तालीम’ मअी १९५९ : अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
१	प्रातः प्रवचन	... -विनोबा ...	३१५
२.	साय प्रवचन	... -विनोबा ...	३२०
३	सभापति का अभिभाषण	... — ...	३३१
४.	सम्मेलन के निर्णय	... — ...	३४२
५	पारिवारिक समाचार	...	कवर पृष्ठ तीन

‘नअी तालीम’ के नियम

१ “नअी तालीम” अंग्रेजी महीने के हर पहले सप्ताह में सेवाग्राम से प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य चार रुपये और अंक प्रति की कीमत ३७ नये पैसे हैं। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है। ग्राहक बनने के अचछुक् सज्जन चार रुपये मनीऑर्डर से भेजें, तो भुत्तम होगा। बी पी से मगाने पर अन्हें ६२ नये पैसे अधिक देना होगा।

२ किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। अंक साल से कम अवधि के लिये ग्राहक नहीं बनाय जावे हैं।

३ पत्र प्रवाहित होते ही सावधानी के साथ ग्राहको की भेज दिया जाता है। अगर दस दिन के अंदर अंक न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछनाछ करके कि लिखना चाहिये। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायत पर ध्यान न दिया जायगा।

४ तीन महीने से कम के लिये पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से अितजाम कर ल।

५ ग्राहका को चाहिये कि रेपर पर पते के साथ दी हुअी अपनी ग्राहन सरया हमेशा याद रखें और पत्र व्यवहार में ग्राहक सरया लिखना न भूलें, वरना अूनको शिकायत पर कोअी कार्रवाअी न की जा सकेगी।

—व्यवस्थापक, “नअी तालीम”

सेवाग्राम (वर्धा) सम्बन्धी राज्य

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७]

मअी १९५९

[अंक ११]

एक नयी तालीम के शिक्षक के नाते मेरी यात्रा चल रही है ।

बिनोबा

यहा पर हिंदुस्तान भर के नयी तालीम के आचार्य और विद्यार्थी आये हुये है । अुसके अलावा गांव के लोग भी अुपस्थित है ।

आप देखते है कि हमारी यात्रा आठ साल से चली है । अनेक भाषाओ में अेक बहावत है कि मनुष्य अेव सोचता है और भगवान कुछ दूसरी ही बात सोचता है । लेकिन मुझे वैसे अनुभव नहीं आया । मुझे तो यही अनुभव आया कि हम भक्त होकर जो सोचते है, हमारे लिये भगवान वही सोचता है । याने अक्सर जो कहा जाता है कि अस जीवन में अपनी सोची हुयी बात नहीं बनती है वह ठीक भी है क्योंकि कजियो वा वैसे अनुभव है, लेकिन वह बात मेरे अनुभव से मेल नहीं खाती है । मैं याद करता हू, तो मालूम होता है कि बचपन से आज तक वही चीज हुयी जो मैं चाहता था । मेरा बहुत पुराना सख्त था कि आखिरी अुम्र में परिव्राजक बनूंगा, किस तरह से, वह मालूम नहीं था । बीच में व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय जेल में रहने का मौका मिला था, अुस समय

मैंने यह फैसला कर के हो जेल छोडा कि अब आखिरी दिन परिव्राजक बनकर बिताने हूं । लेकिन मेरा यह फैसला बचपन में ही हुआ था और मैं अुसकी राह देखता था । गांधीजी के जाने के बाद मैंने कुछ भारत का नाटक अधर-अधर घोडा सा देख लिया और घोडा-सा देखने पर ही मन में निश्चय हुआ कि हमारा नया विचार लोक हृदय में तब तक नहीं पहुंचेगा, जब तक अुस के लिये मैं परिव्राजक नहीं बनूंगा । वैसे परिव्रज्या का विचार मेरे मन में पडा ही था लेकिन अुसके लिये हेतु की जरूरत थी । तो वह हेतु मिल गया । जिस दिन मुझे प्रथम भूदान मिला, वह अेक अैसी घटना थी, जिसे आकस्मिक घटना कहकर में छोड सकता था । अुसके पहले भी मंदिर, मसजिद, स्कूल आदि के लिये लोगो ने जमीन दी थी, असलिअे वह कोअी अद्भुत घटना नहीं थी, लेकिन वहा पर हरिजनो ने जमीन मांगी और लोगो ने दी । जिसका मेरे मन पर बहुत असर हुआ और मुझे लगा कि जिसमें अेश्वर का अिसारा

है। तब से आज तक मैं उस अज्ञान पर चल रहा हूँ। परिश्रम का तो सकल्प था ही। वही परमेश्वर का भी सकल्प था। कहा गया है कि कुर्वन्तम् धिमम् ओश्वरः कारयति। ओश्वर कराता है, परन्तु करनेवाले से कराता है। न करनेवाला हो, तो ओश्वर अनसे नहीं करायेगा। मेरा गणित का स्वभाव है, जिसलिये मैंने उस दिन गणित भी कर लिया था कि भूमि का मसला हल करने के लिये छठे हिस्से की याने पाच करोड़ अंकड़ की जरूरत है। मन में सवाल भूठा कि क्या मैं जिस तरह दान मांगते फिर्का तो पाच करोड़ अंकड़ जमीन हासिल हो सकती है? उस रात अन्दर खूब सवाद हुआ, जिसे मैं कृष्णार्जुन-सवाद कहता हूँ, और आखिर फैसला हुआ कि जिसका नतीजा क्या आयेगा जिस पर सोचना अपना काम नहीं। नतीजा जो भी आये, लेकिन अपनी परिश्रम के लिये एक हेतु मिल गया। जिसके मन में जो सकल्प होता है, उसकी सिद्धि के लिये भगवान हेतु देता है। फिर भी वह उस बात को न समझे, तो मानना होगा कि भगवान की उस पर अवकृपा है। लेकिन मुझ पर उसकी अवकृपा नहीं हुआ। क्योंकि मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया था जिससे कि उसको अवकृपा हो। उस दिन से मेरी परिश्रम चल ही रही है। लोग पूछते हैं कि आपकी यात्रा कब तक चलेगी तो मैं कहता हूँ कि मुझे मालूम नहीं कि यात्रा कब तक चलेगी। क्योंकि मुझे मालूम नहीं कि जीवन कब तक चलेगा। जब तक जीवन चलेगा, तब तक यात्रा चलेगी। भावान मुझे उसमें नहीं रोकेगा। मेरा यह अनुभव है कि आत्मा सत्यकाम। सत्यसकल-मनुष्य के हृदय में कोई निर्मल कामना आती है तो वह पूरी होने ही वाली है। जो भी ओश्वर से मदद मागे, वह

देने के लिये खड़ा ही है लेकिन मांगता ही कौन है?

जिस तरह मेरी यात्रा के लिये हेतु मिल गया। लेकिन जब मुझ से पूछा जाता है कि आप कौन-सा काम कर रहे हैं, तो मेरे मन में यह नहीं आता है कि मैं भूदान का काम कर रहा हूँ। भूदान का काम तो भूमिवाले करते हैं, वे जमीन देते हैं। वह काम मैं नहीं करता। शुरू के दिनों में जब लोग मुझे मान-पत्र देते थे तो मैं कहता था कि मान-पत्र तो मैं आपको दूँगा। आप मुझे दान पत्र दीजिये। जिसलिये भूदान में जो दान मिलता है उसकी जिम्मेदारी देनेवालों की, है, उसका सारा भ्रम उनका है। फिर मेरी यात्रा किसलिये चल रही है? जिसका जवाब मेरे मन में यही अठता है कि एक मजी तालीम के शिक्षक के नाते मेरी यात्रा चल रही है। मेरे साथ यात्रा करनेवाले जानते हैं कि हमारा यात्रा में हर रोज सुबह तीन घंटे वाकिंग सेमिनार होता है, जहाँ खूब ज्ञान-चर्चा चलती है। मेरा अपना अनुभव है कि आकाश के नाचे जो विचार सूझते हैं वे मंदिर-मसजिद या स्कूल में नहीं सूझते हैं। आकाश में विचार-प्रवर्तक शक्ति पड़ी हुआ है। जिसका मुझे बहुत ही अनुभव आया है। मुझे सतत नये-नये विचार सूझते ही रहते हैं।

अन दिनों मुझे एक नया विचार सूझा है, जो मैं आपके समाने रखना चाहता हूँ। त्रिग्लिश में एक शब्द है-स्पिस्ट पर्सनालिटी-याने दुभा आत्मा, भान आत्मा, भग्न-हृदय। मनुष्य एक परिपूर्ण मूर्ति है, लेकिन उसकी आत्मा के दो टुकड़े हो गये हैं। एक दिल जिधर खींचता है तो दूसरा दिल जुधर दिल खींचता है। जिस

तब मनुष्य के दो दिल बन जाते हैं । उसके जीवन में खंड पड़ते हैं । जो कि वास्तव में पूर्ण होना चाहिये, असङ्ग होना चाहिये, वह खंडित होता है । जिसका कारण यह है कि मनुष्य का प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र अलग-अलग पड़ गये हैं । दोनों अलग होने के कारण मनुष्य के जीवन के टुकड़े हो गये हैं । काम के लिये कुछ लोग हमारे साथी बनते हैं, जिनके साथ हमें व्यवहार करना पड़ता है वह कर्म-क्षेत्र के साथी कहलाये जाते हैं । लेकिन कुछ हमारे प्रेम-क्षेत्र के साथी होते हैं, जैसे मा-बाप, बच्चे, सहन-भाभी आदि । जब तक ये दोनों क्षेत्र अंक नहीं होंगे तब तक मनुष्य की आत्मा भग्न ही रहेगी । उसे भग्न अवर्द्धित आत्म-भाव का अनुभव नहीं आयेगा । इसलिये ये दोनों अंक होने चाहिये । जो प्रेमक्षेत्र के साथी हैं, वे ही कर्म-क्षेत्र के साथी बनने चाहिये और जो कर्म-क्षेत्र के साथी हैं वे प्रेम-क्षेत्र के साथी बनने चाहिये । महापुरुषों जीवनों में यही बात दीख पड़ती है कि उनके दोनों क्षेत्र अंक हो जाते हैं । जहाँ प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र अंक हो जाते हैं वहाँ धर्म-क्षेत्र बन जाता है ।

कर्मक्षेत्र+प्रेमक्षेत्र=धर्मक्षेत्र ।

लेकिन हमारा जीवन दो टुकड़ों में बंट जाता है तो उसका धर्मक्षेत्र नहीं बनता है और उसके परिणामस्वरूप सच्चाई नहीं आती है । हम न अपने घरवालों पर सच्चा प्रेम करते हैं न साधियों पर करते हैं । मैंने उसे कभी कुटुंब देखा है जहाँ पति-पत्नी बीस साल तक साथ रहे हैं, बच्चे भी हुए हैं, लेकिन पति-पत्नी के बीच परदा है । पति के हृदय की बात पत्नी नहीं जानती है और पत्नी के हृदय की बात पति नहीं जानता है ।

मनुष्य का पूर्ण प्रेम अपने पर होता है और जिसे हम अपना रूप समझते हैं वही पूर्ण प्रेम वा अधिकारी होना है । ओसा-मसीह ने कहा है 'लव दार्ई नंबर अज दार्ईसेल्फ ।' अपने पड़ोसी पर अतना ही प्यार करो जितना तुम अपने पर करते हो । और उसने अतना ही कहा होता कि पड़ोसी पर प्यार करो, तो वह मामूली बात हो जाती । क्योंकि हम पड़ोसी पर प्रेम करते ही हैं । परन्तु उसने कहा कि जितना और जैसा प्रेम हम अपनी आत्मा पर करते हैं, अतना और वैसा प्रेम पड़ोसी पर करो । यह ब्रह्मविद्या के बिना संभव नहीं है । सामने जो चीज खड़ी है, उसमें हमें अपना ही दर्शन होना चाहिये जो ब्रह्मविद्या से ही होता है । मां का बच्चे पर पूर्ण प्रेम होता है । चाहे देह द्वारा भी हो, परन्तु वह सोचती है कि बच्चा मेरी आत्मा का विस्तार है, वह देह का विस्तार, (अक्सटेंशन) है । संस्कृत में बच्चे को तनय कहा जाता है । उसका मतलब है—माता-पिता का विस्तार । हम आत्म-तत्व हैं और यह तनु याने शरीर हमारा विस्तार है । तन का मतलब ही विस्तार है और हमारा अपत्य भी उसका विस्तार है । जिस तरह अन्तरोत्तर विस्तार होता है । इसीलिये मां का बच्चे पर आत्मवत् प्यार होता है । कभी-कभी अपने से ज्यादा प्यार भी होता है, लेकिन वह आसक्ति मानी जायगी । परन्तु जितना हम अपने पर प्यार करते हैं, अतना दूसरे पर करे, तो वह आत्मदर्शन माना जायेगा । माता का आत्मदर्शन सीमित होता है, दो-चार बच्चों तक ही सीमित होता है । हम मित्रों पर प्रेम करते हैं, क्योंकि उनके साथ काम करना पड़ता है, लेकिन वहाँ काम प्रधान बनता है और प्रेम गौण बन जाता है । हम घरवालों से भी काम लेते हैं, लेकिन वहाँ काम गौण बनता है और

प्रेम प्रधान बनता है। जिस तरह अंक क्षेत्र में कार्यप्रधान और प्रेम गौण तो दूसरे क्षेत्र में प्रेम प्रधान और काम गौण बनता है। जिसलिये अगर कौनो अंक क्षेत्र में हमारी तसवीर खींचे और फिर दूसरे क्षेत्र में खींचे तो दोनों बिल्कुल अलग हो जायेंगे। कौनो आदमी बाल-बच्चे के साथ बैठा हो, तो वहाँ पर उसकी फोटो खींची जाय और मीटिंग में बैठा हो और वहाँ पर फोटो खींची जाय तो दोनों फोटो में जितना अन्तर दिखेगा कि सवाल पड़ा होगा कि 'या यह अंक ही व्यक्तित्व है?' हमारे लिये यह सापने की चीज है। हमें समझना चाहिये कि जहाँ प्रेम और काम दोनों अंक हो जायेंगे, वहाँ धर्म-चक्र हमारे लिये खुल जायेगा।

पंजाब के लोगो को पंजाब की वे चीजें मालूम नहीं है जो मुझे मालूम है। १९१८ में मेरी मा की मृत्यु हुई। और जिस दिन मृत्यु हुई उसी दिन मैंने अंग्रेज पढ़ना शुरू किया। अब ४१ साल हो गये मेरा अंग्रेज का अध्ययन चल ही रहा है। अंग्रेज मे विद्वामित्र नदी-संवाद का जिक्र आता है जिसमें विद्वामित्र और नदी अंक दूसरे से बात करते हैं। गिरास और सतलज के संगम स्थान पर विद्वामित्र खड़े हैं और भारतीय मित्रा को लेकर उस पार जाना चाहते हैं। नदी में बाढ़ आयी है।

बिपाट् छतुद्री पयसा जवेते

४१ साल पहले जब मैंने यह श्लोक पढ़ा था उसी दिन नक्शे में वह स्थान देख लिया था। दूसरे किसी स्थान का अल्लेख जितना प्राचीन नहीं मिलता है। काशी और कुरुक्षेत्र का अल्लेख आता है, परन्तु अपनिपदों में, लेकिन अंग्रेज में जिसका अल्लेख आया है। याने वेद की ध्वनि यहाँ

से निकली है। विद्वामित्र नदी से पड़ता है। रमध्य मे वचसे सोम्याय ऋतावरीष्य मूर्हतमैवः हे मेरी माता, तू मेरे लिये गुपारा, सुतरणीय बन जा। मेरी सोम्यवाणी गुनकर अंक मूर्हत के लिये रुक जा।

निपूनमध्व भवता गुपारा

तो नदी अन्तर देती है "नि स नैसे पीप्यानेव योपा मयायेव वन्या दद्वचै ते ॥ मैं तेरे लिये झुग रही हूँ, जैसे माता बच्चे के लिये झुगती है। यह कहने पर नदी को लगा कि विद्वामित्र को घंटे की अपमा देने के बजाय बाप की अपमा दू तो उसने कहा कि जैसे बच्चा बाप की सेवा के लिये झुग जाती है, वैसे मैं तेरे लिये झुग जाती हूँ। या कहकर नदी का पानी अन्तर गया और विद्वामित्र भारतीयों को लेकर नदी पार कर के चला गया। सत्यत साहित्य में मुझे यही भी जितना प्राचीन दूसरे किसी स्थान का स्पष्ट अल्लेख नहीं दिखायी दिया। वह स्थान पंजाब में है। उसी पंजाब में अब मैं आया हूँ।

ब्रह्मविद्या यही पर पड़ा हुआ था। वेद, अपनिपद, गीता आदि सारा का सारा ब्रह्मविद्या का प्रवाह जो है, उसका अगमस्थान पंजाब है। जैसे अगमस्थान में मैं आया हूँ। तो यहाँ के लोगों के साथ मैं अकरूप बन गया हूँ। मैं यहाँ के भाजियों के चेहरो की तरफ देखता हूँ तो सोचता हूँ कि क्या यह अर्जुन का चेहरा है, या कृष्ण का या विश्वामित्र का है। और जब जिस पंजाब में मैं झण्डे देखता हूँ तो मुझे लगता है कि गभीर समुद्र में हवा के कारण ऊपर के स्तरों में खिलोरे अठ रही हैं, परन्तु अन्दर गभीरता है। उस अन्दर की गभीरता में हम प्रवेश करते हैं, उस ब्रह्मविद्या में प्रवेश

करते हैं जो वेदों से लेकर गुरु-ग्रन्थ तक चली आयी है ।

यह मेरे जीवन का अन्तिम पर्व है, सन्ध्या-काल है । अणु काल में मैं जिस ब्रह्मविद्या को लेकर घर छोड़कर निकला था उसी का स्मरण सन्ध्याकाल में कर रहा हूँ । मैं मानता हूँ कि हमने पचास विद्याओं सीखी लेकिन ब्रह्मविद्या नहीं सीखी तो कुछ भी नहीं सीखा । हम लोग आश्रम खोलते हैं तो उसका अक ढाचा बन जाता है । वहाँ पर चर्मालय, कोल्हू, चरखे, बढाकाम आदि पचासों प्रकार की विद्याओं सिखायी जाती है । लेकिन अिन सब विद्याओं की जो शिरोमणि विद्या है, वह नहीं होनी है । असलिये जहाँ भी हम जाते हैं, वहाँ मनुष्यों के बीच परदा देखते हैं ।

नजी तालीम के बारे में चर्चा चलती है कि बुधोग के जरिये तालीम दी जाय या निसर्ग के जरिये या परिस्थिति के जरिये आदि । अस पर मैं कहना चाहता हूँ कि आत्मा में कुछ गुण होते हैं, उन गुणों को प्रकाश में लाना यही तालीम का काम है । असलिये गुण-विकास से बढकर तालीम का कोअी बुद्देश्य नहीं है । अस गुण-विकास के लिये चाहे आप ग्रन्थ का अुपयोग कीजिये, चाहे कुदरत का, चाहे बुधोग का । लेकिन जहाँ गुण-विकास नहीं है, वहाँ तालीम नहीं है । गुण-विकास की प्रक्रिया वहाँ-से-कहाँ जाती है, जिसे हम जरा देखें तो पता चलता है कि पचास गुणों का अधिष्ठान जो आत्म-तत्त्व है, उसे ढाल कर गुण-विकास को चर्चा कैसे की जा सकती है ? सय गुणों का अधिष्ठान है निर्भयता और निर्भयता का अधिष्ठान क्या है ? क्या अपने पास शस्त्रास्त्र आ गये तो निर्भयता पैदा हो जाती है ? क्या

हम से बडे शस्त्र दूसरे के पास आ गये तो भी हमारी निर्भयता कायम रहेगी ? समझने की जरूरत है कि सामने जो खडा है, वह मेरा ही रूप है । अस तरह आत्मरूप का दर्शन हो, तो निर्भयता आती है । आत्म-तत्त्व के बिना कौन-सा गुण स्थिर होगा ? असलिये मेरे दिल में बार-बार विचार आता है कि यह भूदान, ग्राम-दान बिल्कुल आसान हो जायगा, अगर जो मूल बीज ब्रह्मविद्या की है, जो पजाब की अपनी चीज है, उसको गहराअी में हम जा सकेंगे ।

मैं अस प्राथमिक भाषण में आपसे चद बाते कही हूँ । उनका सार अस प्रकार है ।

१ मनुष्य जो सोचते हैं, उससे परमेश्वर बिल्कुल भिन्न नहीं सोचता है, बसतें कि मनुष्य भवन बन जाय । परमेश्वर यह नहीं चाहता है कि भक्तोंकी फजिहत हो । वह तो निरहकारिता का शिरोमणि है, असलिये वह यही चाहता है कि भक्त के सकल्पों की पूर्ति हो ।

२ मनुष्य-हृदय के आत्मा के टुकडे नहीं होने चाहिये । असलिये प्रेम-श्रेय और कर्म-श्रेय को अक करके हृदय का धर्म-दोत्र बनाना चाहिये ।

३. हम पचासों चीजें सीखें, लेकिन उनके मूल में जो ब्रह्म-विद्या है, उससे कतराते रहेगें, तो गुण-विकास नहीं होगा । गुण-विकास की गहराअी तबतक नहीं आयेंगी, जबतक हम आसमान में नहीं जायेंगे ।

४. ब्रह्मविद्या पजाब की अपनी चीज है, असलिये मैं पजाब के भाजियों में अिन सब अुपियों का दर्शन करता हूँ पजाब के भाजों असका ख्याल करे कि अपने पीछे सस्कृति का कितना चत्त है । तब, अुपर-अुपर के शगडे अैसे ही खत्म हो जायेंगे ।

तालीम में पूर्ण अहिंसा और पूर्ण आजादी होनी चाहिये ।

विनेबा

यहां पर सारे हिन्दुस्तान की सोचनेवाली जमात आयी हुआ है, जो यहां चर्चा करेगी, कुछ फैसला करेगी और अपने अपने स्थान पर जाकर अमल करेगी। स्वराज्य प्राप्ति को अब करीब १२ साल हो चुके हैं। और नई तालीम का विचार सरकार ने मान्य किया है। जिस-लिअे जिस मजलिस में सरकारी लोग भी हैं और गैर सरकारी लोग भी हैं।

मैं कबूल करता हूँ कि मेरे कभी विचार ऐसे हैं कि जो मेरे अर्थन है और जो शायद जिस जमाने में अकदम से कबूल किया जानवाले नहीं हैं। लेकिन फिर भी वे विचार मुझ सहो मान्य होते हैं जिसलिअे मैं उनको रखा करता हूँ। मेरा एक विचार यह है कि किसी भी देश को तालीम सरकार के हाथ में नहीं होनी चाहिये। मैं मानता हूँ कि तालीम का यह एक बुनियादी असूल है। नहीं तो तालीम का रेजिमेशन होगा, तालीम एक ढांचे में ढाली जायेगी और सागो का दिमाग आजाद नहीं रहेगा। उस हालत में डेमाक्रेसा का नाटक ही हागा और हरेक को एक वोट का अधिकार दिया गया है, वह बकार साबित होगा। अगर सरकार के हाथ में तालीम रही तो जिस रण की सरकार होगी वही रण तालीम पर चढ़ाया।

जमाने से तालीम आजाद रही है। लेकिन जिन दिनों वेलफेअर स्टेट का ख्याल पैदा हुआ है और सरकार के हाथ में तरह-तरह की सत्ताओं दो जाती है। अन्त में तालीम का भी एक सत्ता और तालीम की जिम्मेवारी डाली जाती है। आप जानते हैं केरल एक कम्युनिस्ट

स्टेट है। वहाँ की सरकार ने तालीम के बारे में एक बिल बनाया। असा बिल था कि वह जरा कम्पता था—वस धर के जनता में सबदिली करनवाला बिल था। उसके अच्छे पहलू भी थे, लेकिन उसका नतीजा वह हानवाला था। जिसलिअे बहुत होहस्ता मचा, आखिर वह चीज गयी राष्ट्रपति के पास। और राष्ट्रपतिजा ने अचित्त समझा कि वह न्यायालय में भेजा जाय। आखिर वह बिल न्यायालय में पहुँचा और न्यायाधीश ने कुछ थोड़े फर्क सुझाये, बहुत बड़े फर्क नहीं थे, ऐसे फर्क नहीं कि उस बिल में जो मूल बिषय था उसमें बिगड़ फर्क होता था, जितन फर्क सुझाये अतन कबूल कर लिये गये और जिस बिल का अवट बन गया। बहुत उसके बारे में होहस्ता चला हिन्दुस्तान भर में। लेकिन वह बात हुआ और उसकी शिकायत हमारे साग करते हैं कि वहा तालीम पर बन्ना पूरा स्टेट के हाथ आ गया। लेकिन हम शिकायत करन के अधिकारी नहीं हैं। जिसलिअे कि वही चीज हम भी करते हैं। फर्क अतना ही है कि कम्युनिस्टा में अफिसियल-तो (कायदमता) होती है जिसलिअे वे अफिसियल स क साथ काम करते हैं। जिसके सिवाय और काओ शिकायत हो नहीं सवती। हमारे यहा भी तालीम सरकार के हाथ में है। तालीम में कौन बिषय सिखाये जाय, कितना सिखाया जाय, गणित के कितन पिरिअड रहें, मातृभाषा के लिअे कितन पिरिअड दें—पिरिअड्स तब लिख के आते हैं। यह ढांचा रहेगा असा लिखवर के आता है तदनुसार गुरुजी जो आजकल के सरकार के नोकर हैं

अस पर अमल करते हैं। फर्क नहीं कर सकते। जो सरकार तय करती है, वही करना है। अंग्रेजी कहा से शुरू करनी है, सरकार तय करेगी। जिस भाषा को कितना स्थान देना सरकार तय करेगी। अंक बुक सरकार निश्चित करती है, वह टेक्स्ट बुक कृति स्कूलों में चलती है। मैंने बार-बार कहा कि किसी भी ज्ञानी मनुष्य के हाथ में जो सत्ता नहीं थी, वह हमने अजयकुशन डिपार्टमेंट के हाथ में दे दी। उत्तर-प्रदेश में सदा छ करोड़ जनता है, जो टेक्स्ट बुक सरकार निश्चित करती है वह बुल-के-बुल बच्चों को पढ़नी पड़ेगी अतः प्रचार अध्ययन करना पड़ेगा, अतः परीक्षा देनी पड़ेगी। जिस तरह से मुझे तो सबसे बड़ा खतरा यह मालूम होता है और दुनिया को अगर बचाना है और आजादी के मान कायम रखना है तो जिसमें से हमें मुक्त होना ही चाहिये जिसमें कोई संदेह नहीं। खैर, यह मेरा पहला विचार है।

अब जिसके बाद नयी तालीम के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। नयी तालीम यह नहीं नयी तालीम है। यानि जिसका जो बाबा दस साल पहले बना होगा, वह आज नयी तालीम नहीं कहलायेगी। वह पुरानी तालीम ही जायेगी। जमना जोरो से आगे बढ़ रहा है। विज्ञान-मुक्त जमाना है, दस साल से हम कहा से कहा चले गये हैं कितनी पुरानी चीजें बेकार साबित हो चुकी हैं, अतः हाथ में पुराना दावा ही जंसा के बैसा रखेंगे तो नष्ट चनेगा। जिसलिए नयी तालीम में निम्न नये प्रयोग होने रहने चाहिये। आजकल दुनिया में दावा बनने जा रहा है। और जहाँ कहीं दावा बनता है मेरा दिल बगावत करता

है। मैं सहन नहीं कर सकता अस दावे को। नयी तालीम का जो मकसद है, वह यही है कि विद्यार्थी अंक पूर्ण वस्तु है, परिपूर्ण चीज है, टुकड़ा नहीं है, अंक मुकम्मिल चीज है और जहाँ उसे अपूर्ण समझ कर पूर्ण बनाने को कोशिश की जाती है वह तालीम नहीं है। वह पूर्ण ही है, अतः समझ कर हम चलते हैं। बटुता का ख्याल है और जिस डग से वे सोचते हैं, गलत नहीं कहा जायेगा कि बच्चा का दिमाग अभिप्रेषनेवत् होता है। अनुका दिमाग ताजा होता है, जिसलिए चीजों को ग्रहण करने के लिये तैयार होता है। जिसलिए हमारी चीजें हम अपने दिमाग में न ठोसे यह बहुत जरूरी है। अतः यह माना जाता है कि बच्चों को बनाना हमारा काम है। अरे भाजियो, बच्चों को बनानेवाला बना देता है। असके बनाने वाले आप नहीं हैं। हमें समझना चाहिये कि वे तो परमेश्वर के बहुत नजदीक होते हैं और मैं समझाऊँ साफ दिल से पेश आना चाहिये बच्चों के साथ। संस्कृत में कुछ ऐसे शब्द हैं पुत्र, पुत्री और बन्धा और कुछ तो लड़का-लड़की, बेटा-बेटी, तो यह जो पुत्र शब्द है असका अर्थ होता है पावन करनेवाला, पाक बनानेवाला। यानि जहाँ बच्चा माता-पिता के पास पहुँच गया वहाँ अपने माता पिता को पावन करना शुरू कर दिया। अब वे माता-पिता जिम्मेवार बन गये और उनके ध्यान में आ गया कि अपने यहाँ परमेश्वर आया है अस परमेश्वर को हमको पूजा करनी है, श्रद्धा करने की है, सेवा करनी है। अब जिसलिए हमारी हरेक कृति में, हमारे बोलने में, बैठने में, व्यवहार में, बर्तन में सावधानता होना चाहिये। तो यह जो बच्चा, किसी कवि ने असके बारे में कहा था, —Child is father of the man—

तो उसमें डर का कोई कारण नहीं है । आपके पास जो बच्चा आता है, वह अितनी श्रद्धा से आता है कि जब मा कहती है कि देखो, यह चाद है, तो बच्चा मान लेता है कि यह चाद है और उसे चाद कहने लग जाता है । उसके मन में शक सुबह पैदा नहीं होता है कि यह चाद है या नहीं । बल्कि वह तो पूरी श्रद्धा से उस चीज को मान लेता है । जिस तरह अंक शक्स पूरी श्रद्धा से आपके पास आया और अजीब बात है कि आपको उसे मारने पीटने की जरूरत महसूस होती है । और माता-पिताओं को भी मारने-पीटने की जरूरत महसूस होती हो, तो फिर ये राज्य-कर्ता मारने-पीटने से बाज आये ? जिसलिये तालीम में पूरी आजादी और पूरी अहिंसा होनी चाहिये । तालीम याने अहिंसा और अहिंसा याने तालीम ।

हम बच्चों को अप्रदेश देते हैं कि झूठ नहीं बोलना चाहिये तो बच्चा जिस बात को समझता ही नहीं । वह जानता ही नहीं कि झूठ क्या चीज है । और कभी वह झूठ बोलने के लिये संयार होता है, वह जिसलिये होता है कि उस पर दबाव आता है और उसके मन में डर पैदा होता है । जिसलिये मैं मानता हू कि तालीम में पूर्ण अहिंसा और पूर्ण आजादी होनी चाहिये । उसमें कांभी दबाव नहीं होना चाहिये ।

जिसलिये मैंने कहा है कि तालीम का कोई ढांचा नहीं हो सकता है । लेकिन फिर भी हम सोचने बैठते हैं, तो कुछ-न-कुछ कार्यक्रम टाईम-टेबल आदि बनाते हैं और वह ठीक भी है । हिसाब के लिये वह बनाया जाता है । परन्तु उसका आग्रह नहीं होना चाहिये । जिन दिनों बात चलती है कि अंग्रेजी किस जमात से सिखायी जाय । बम्बई राज्य में पहले तय

हुआ था कि सातवी या आठवी जमात से अंग्रेजी पढाई जाय, लेकिन अब कुछ लोग कहते हैं कि पाचवी जमात से ही अंग्रेजी पढाना शुरू किया जाय । जिस पर काफी चर्चा चलती है । अब सोचने की जरूरत है कि क्या जिस का तालीम के साथ कोई ताल्लुक है ? बच्चे की तालीम के साथ उसका कोई ताल्लुक नहीं है । तालीम के साथ जिसका ताल्लुक था, वह मादरी जबान उसको सिखायी गयी है । उसके आगे कुछ ज्ञान हासिल करना हो, तो मादरी जबान के जरिये ही हासिल करना होगा । अगर मादरी जबान के जरिये हासिल नहीं हो सकता है, तो वह हमारी कमी है । मैं मानता हू कि आज की हालत में दूसरी जबानों की भी जरूरत पड़ती है । परन्तु मैं कहना यह चाहता हू कि उसका तालीम के साथ सम्बन्ध नहीं है । यह सारा हमें व्यवहार के लिये सोचना पड़ता है ।

बच्चों को अंक पूर्ण तालीम, कम-से-कम तालीम देना चाहते हैं, तो वह क्या दें ? जिस पर चर्चा चलती है, जहा देने का ताल्लुक है, वहाँ कम-से-कम ही तालीम देनी चाहिये । ज्यादा-से-ज्यादा तो जानी चाहिये और कम-से-कम दी जानी चाहिये । बच्चे को अितनी अक्ल होनी चाहिये कि रोज वह खूब तालीम हासिल करे । तालीम ज्यादा-से-ज्यादा लेने की चीज है । कम-से-कम तालीम क्या दे, जिसका हम छोटा-सा नक्शा बनाते हैं । मेरा ख्याल है कि अगर हम उस नक्शे में अंग्रेजी को डालेंगे, तो अपने साथ भी अन्याय करेंगे और अंग्रेजी भाषा पर भी अन्याय करेंगे । मुझे अनेक भाषा सीखने का मौका मिला है और उसका मुझे शौक भी है । जिस पैदल यात्रा में दो साल पहले अंक जापानी साथी साथे थे । उनसे मैंने जापानी

सीखी है। हर रोज अंक धंटा अंनके पास बैठकर मैं जापानी का अध्ययन करता था। जिस साल अंक जर्मन लड़की हमारे साथ रही तो उससे मैंने जर्मन सीखी। यह सब मैं जिसलिअे कह रहा हूँ या मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में जो अनेक जवान हैं, अंनकी मैं कद्र करता हूँ और अंग्रेजी भाषा की कीमत जानता हूँ। अंग्रेजी ने बहुत पराक्रम किया है, उस भाषा में अमोल रत्न पड़े हैं, जिसलिअे कोश्री अंग्रेजी सीखना चाहता है तो जरूर संखें। परन्तु भाषा कैसे सिखी जाय इसका अंक शास्त्र है। पहिले मातृभाषा का व्याकरण के साथ पूरा अध्ययन कर लेना चाहिये। तो उसके बाद अज्ञान आसाना स दूसरी भाषा सीख सकता है। मैं जब चाहे कोश्री भी भाषा दस-पंद्रह दिनों में पढ़ने लायक सीख सकता हूँ। उसका अंक शास्त्र अंक अलम है। अलम यह है कि बच्चे को अपनी मादरी जवान का पूरा, पक्का ज्ञान होने के बाद ही दूसरी जवान सीखायी जाय।

५० नेहरू कभी दफ्ता मानस-शास्त्र का अंक आधार पेश करते हैं और बहते हैं कि बच्चे के दिमाग में अनेक सेलम होते हैं, जिसलिअे अनेक भाषाओं सीखाना हो, तो बचपन से ही आरम्भ करना चाहिये। यह बात सही है कि बचपन में कोश्री भी भाषा जल्दी सीख लेता है। बचपन में मैंने संध्या-ब्राह्मण की अयासना-तीन दिन में याद कर ली, तो मेरी मां मेरा बखान किया करती थी कि बिन्याने तीन दिन में संध्या सीख ली। कुछ दिन बाद मैंने मां से कहा कि तुझे और अंक बात मालूम नहीं है, कि बिन्यातीन दिन में संध्या सीखा और चार दिन में भूल गया।..... बच्चे के दिमाग में कभी सेलम होते हैं, जिसलिअे ये किसी चीज को फौरन पकड़ लेते हैं और छटसे

भूल जाते हैं और सतत अभ्यास न रहा, तो कोश्री भी चीज भूलने के लिये अंन्हें समय की जरूरत नहीं रहती है। जिसलिअे भाषा सीखाना हो, तो बातचीत के जरिये सिखायी जा सकती है और बातचीत का सिलसिला जारी रखा जाय, तभी भाषा का ज्ञान टिकता है। व्याकरण के जरिये तुलनात्मक दृष्टि से भाषा पढ़ाई जाय, तो वह पक्की बनती है। लेकिन वह बाद में भी हो सकता है, जिसलिअे मैं मानता हूँ कि बहुत जल्दी अंग्रेजी सीखाना अंग्रेजी पर भी अभ्यास है। अगर अंसा ३.१५ चाहते हैं कि इसके आगे हिन्दुस्तान में अंग्रेजी अतम चलेगी, उसका स्टैण्डर्ड बढ़ेगा, तो आपको क्विट् इंडिया-भारत छोड़ो-कहने के बदले अंग्रेजों से कहना होगा, वापस आओ। अंग्रेजी भाषा का अध्ययन जरूरी है, लेकिन सब लड़कों पर इस भाषा को धोपना चाहोगे, तो उसका स्टैण्डर्ड गिरेगा ही। मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के जिसित लोग विदेश की अंक भाषा का ज्ञान जरूर हासिल करे। लेकिन सब अंग्रेजी ही संखेंगे, तो उसमें मैं अंक खतरा देखता हूँ। यह बात ठीक है कि परिस्थिति के कारण अंग्रेजों का स्थान अूचा रहेगा, फिर भी हम में से कुछ लोगों को जर्मन सीखनी चाहिये, कुछ को जापानी, चीनी, अरबी, पारसी, फेंच इत्यादि भाषाओं सीखनी होंगी। जिस तरह तरह के ज्ञानों हमारे देश में रहेंगे, तो हमारा ज्ञान सही रास्ते पर रहेगा। नहीं तो अंग्रेजी भाषा के जरिये ही हम ज्ञान हासिल करते रहेंगे तो वह ठीक ज्ञान नहीं होगा। हम जब जेल में थे तब हमारे कुछ साथी अल्लुआइड ब्रेशिया नाम को अंक अंग्रेजी किताब पढ़ा करते थे। वे कहते थे कि जिस किताब में सब ठीक है, लेकिन सिर्फ हिन्दुस्तान के

बारे में गलत लिखा है । मैं अनुसरे कहता था कि दूसरों के बारे में गलत लिखा है या सही यह कहने के बिना कौन जापानी या चीनी तो यही नहीं है । आपवो समझना चाहिये कि हिन्दुस्तान के बारे में उसमें गलतफहमी दिखायी देती है, तो कुल अहिंसा के बारे में गलतफहमी होगी । लेकिन हम सिर्फ अपने देश के बारे में जानते हैं, इसलिये अंसा कहते हैं । इस तरह हमें समझना चाहिये कि हम अंग्रेजों के जरिये ही दुनिया का ज्ञान हासिल करेंगे तो हमारा ज्ञान गलत होगा । इसलिये हिन्दुस्तान के लोगों को भिन्न-भिन्न भाषाओं से सीखनी चाहिये । उन देशों में जाकर ज्ञान हासिल करना चाहिये । तब हिन्दुस्तान का दिमाग सही रास्ते पर रहेगा, नहीं तो अकेली बनेगा ।

नती तालीम का जो सात साल का कोर्स है उसमें के बारे में जिस समय सरकार साबती है कि उसके दो टुकड़े किये जाय । पहला पांच साल का टुकड़ा पहिले लागू किया जाय और बाद में दूसरा टुकड़ा । जब मैं यह सुनता हूँ तो कभी तो मुझे अच्छा भी लगता है कि सरकार अगर आठ साल सीखाने के बजाय पांच साल ही सिखायें, तो अच्छा ही है । सरकार जितनी कम तालीम देगी उतना अच्छा ही होगा । उसमें से जितना ही नुकसान होगा कि सरकार का पैसा खर्च होगा । लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि नती तालीम के टुकड़े नहीं हो सकते हैं यह बुनियादी तालीम का बुनियादी विचार है । एक पूर्ण चित्र का आधा टुकड़ा सामने रखा जाय तो अन्धाय होगा । बाप और बच्चा खाने बैठें हों, बच्चे की पाली में आधा लड्डू परोसा और बाप को पाली में पूरा लड्डू परोसा तो बच्चा रोना शुरू कर देता है । मुझे आधा लड्डू

कम दिया जा रहा है इस तरह चिल्लाता है । फिर मा आती है और उसको दान्त करने के लिये उसकी पाली में एक छोटा सा लेकिन पूरा लड्डू परोसती है तो बच्चा खुश हो जाता है । बच्चा समझ सकता है कि मैं छोटा हूँ, इसलिये मुझे छोटा लड्डू दिया जा रहा है । और बाप बड़ा है इसलिये मुझे बड़ा लड्डू दिया जा रहा है । लेकिन बाप को पूरा लड्डू और मुझे आधा लड्डू क्या दिया जा रहा है, जिस बात का वह समझ नहीं सकता है । क्या आप पूरा आदमी और मैं आधा आदमी हूँ ? मैं पूरा हूँ, लेकिन छोटा पूरा हूँ, बाप बड़ा पूरा है, इस बात को वह समझ सकता है । नती तालीम का सात साल का जो कोर्स रखा गया है वह कम-से-कम तालीम की बात है । दूसरे देशों में भी जब कम-से-कम तालीम की बात सोची जाती है तो सात आठ साल की ही सोची जाती है । इसलिये मैं कहना चाहता हूँ कि आपके पास पैसा कम हो तो कम स्कूल खोलिये, लेकिन बच्चों को पूरा लड्डू दीजिये, आधा नहीं । अंग्रेजी में कहावत है —

Little knowledge is a dangerous thing—स्वल्पविद्या भयकरी ।

अगर टुकड़ा ज्ञान, आधा ज्ञान देकर हम मानेंगे कि हम तालीम दे रहे हैं, तो मैं कहूंगा कि यह व्यर्थ की चीज है, यह जिम्मेवारी आप झुठाजिये । जिन दिनों सिंगल टीचर स्कूल की बात चलती है । याने चार जमाती के लिये एक ही शिक्षक पढ़ायेगा । जब मैंने यह बात सुनी तब मुझे लगा कि चार गृहवाले ब्रह्मदेव के जैसा शिक्षक पैदा होना चाहिये । ब्रह्मदेव के बिना सिंगल टीचर स्कूल नहीं चल सकते हैं । वह तो एक हास्यास्पद वस्तु हो जाती है । सरकार

चाहे थोड़ा करे लेकिन ठीक काम करे। और कुल का-कुल काम सरकार को ही ब्यो करना चाहिये ? कुछ जनता को भी करने देना चाहिये।

मैंने अपना सुझाव नेताओं के सामने रखा था और अन्होंने मंजूर भी किया था। लेकिन फिर भी नहीं बना। मैंने कहा था कि सरकार भिन्न भिन्न महकमों की परीक्षा लिया करे और उस परीक्षा में फी देकर कोअी भी बैठ सकेगा, चाहे स्कूल में अध्ययन किया हो या घर पर अध्ययन किया हो। अगर वह उस परीक्षा में पास हो जाता है तो उसको नौकरी में लिया जाय। आज सरकारी नौकरी के लिये यूनिवर्सिटी के डिग्री की जरूरत होती है, वह ठीक नहीं है। अगर सरकार अतना करती है, तो लोग अपने अपन ढंग से तालीम देंगे और तालीम में ताजगी रहेगी। आज तो तालीम का अंसा ढाचा बना है कि स्कूल के मकान का भी अंक नक्सा होता है और कही भी जाओ, उसी पैटर्न की स्कूल दिखाओ देती है। बिहार में गरमी के दिनों में ठहरा था जहा मुझ खुलार आया था। स्कूल का जो छत बना हुआ था वह अेस्वस्टास का था। असलिये बहुत गरम होने लगा। जब मैंने बहावालो स पूछा कि स्कूल के मकान के लिये अंसा छत क्या बनाया गया है तो अुहोने कहा कि ब्यो वा सवाल नहीं, स्कूल के मकान के लिये यह 'पैटर्न' तय हो चुका है। जब मैंने कहा कि अससे तो गरमी होगी, तो अुन लोगो ने कहा कि गरमी की कोअी परवाह नहीं। ब्योकि गरमी में छुट्टियाँ होती हैं। मैंने कहा, कि गरमी की छुट्टी क्या कोअी हिंदुस्तान की चीज है ? कोअी सोचता ही नहीं है। अग्रज महां आये, तो वे यह भी गरमी सह नहीं सके,

असलिये अुन्होने गरमी में छुट्टी देना शुरू किया। फिर वे अुन दिनों हवा खाने के लिये कही जाते थे। लेकिन हमारे लडके हवा खाने के लिये कहा जायेंगे ? अुनको तो उसी गाव में रहना है। दरअसल छुट्टी तो उस समय देनी चाहिये जब किसान को मदद की जरूरत होती है। बोने के या काटने के समय छुट्टी दी जा सकती है। लेकिन आज अंक ढाचा बन गया। अस तरह हर चीज का ढाचा बनता है। मैं कहना यह चाहता हू कि नयी तालीम को टुकड़े करने की बात ठीक नहीं है। या तो आप को नयी तालीम का सात साल का ब्यवस्थित कार्यक्रम बिठाना चाहिये या समझना चाहिये कि हम नयी तालीम नहीं दे रहे हैं, प्राथमिक शालाओं चला रहे हैं।

अक दफा आपके जैसे शिक्षकों की सभा में भाषण करते हुआ मैं आरम्भ किया था, "मेरे प्यारे शान्ति सैनिकों।" वे सुनते ही रहे कि यह क्या बोल रहा है। मैं मानता हू कि अंसा होना चाहिये कि जितने शिक्षक हैं, वे सब के सब शान्ति-सैनिक हैं। अगर वे शान्ति-सैनिक नहीं हैं तो शिक्षक नहीं हैं, यह निश्चित बात है। फिर चाहे वे और कुछ हो न हो। सरकार जिधर तालीम का महकमा चलाती है और पुलिस का, मिलिटरी का महकमा भी चलाती है। सरकार तो अंक भेनिटी फेर है, जिसमें सब प्रकार की चीजें होती हैं। लोगो का प्रतिबिम्ब सरकार में अुठता है। तो अुसमें कोअी बात नहीं है। लेकिन समझना चाहिये कि किसी देश को सेना पर सालाना तीन सौ करोड खपा खर्च करना पड़ता हो, तो हमारा तालीम का महकमा बदनाम है। अगर हमारे अुस्ताद ठीक काम कर रहे हैं तो अुसका नतीजा

यही होगा कि देश में निर्भयता और आजादी रहेगी और देश की अन्दरूनी ताकत बनी रहेगी और पुलोस, मिलीटरी आदि पर ज्यादा खर्चा नहीं करना पड़ेगा । अगर ऐसा हो, तभी समझना चाहिये कि तालीम ठीक से चल रही है । जिसलिये मैं मानता हूँ कि आप सब शिक्षक शांति-सैनिक हैं । मैंने तो यह मान लिया है । जिसलिये आप पर यह कहने की जिम्मेवारी आयी है कि आप शांति-सैनिक नहीं हैं । अगर आप शांति-सैनिक नहीं हैं तो शिक्षक ही नहीं हैं । नजी तालीम के शिक्षक तो हैं ही नहीं ।

आज हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी भारी जिम्मेवारी आयी है । कुल दुनिया हिन्दुस्तान की तरफ आशा की निगाह से देखती है और समझती है कि जिस देश से दुनिया को कुछ राह मिलेगी । यह हरगिज नहीं हो सकता है कि अपना देश अभी फौजी ताकत बनायें जो कि जिस ओर अमेरिका की बराबरी कर सके । परमेश्वर की जिस देश पर कृपा है कि यहाँ वह चीज होनेवाली नहीं है । जिसलिये हम फौजी ताकत बना सकते हैं तो वह अल्लाही, नैतिक ताकत ही होगी और हम सब का यह फर्ज ही है । जिन दिनों मेरा दिल शांति सेना में लगा हुआ है । जिसलिये मैं आपके साथ शांति सेना का सम्बन्ध जोड़ रहा हूँ, ऐसी बात नहीं है । आप शांति-सैनिक नहीं हैं तो क्या है यह जरा बतायें । देश में जितनी जितनी ताकत होनी चाहिये, देश के शिक्षकों को देश को देनी चाहिये । अतः देश को ऐसी तालीम दी जाती होनी चाहिये कि लोग अच्छी चीज को फौरन पकड़ेंगे और बुरी चीज को छोड़ देंगे । लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ है कि लोग प्रेम का अजारा मानने के लिये राजी हैं । लोग डर से फौजी चीज

मानते हैं, यह तो साबित हो चुका है । वहाँ पाकिस्तान में अयूबखान आता है, तो उसके डर से कराची का पानी डरने लग जाता है और दूध में नहीं घुसता है । मैंने अखबारों में अंक खरब पढ़ी कि अयूबखान के आने पर वहाँ दूध की बम्पी होने लगी, क्योंकि दूध में पानी पड़ना बन्द हुआ । जिस तरह से डर का परिणाम होता है । यह तो लोगो ने देख लिया है । दुनिया को लगता है कि डर से कुछ अच्छे काम हो सकते हैं । लेकिन जिसके आगे हमें ऐसी दुनिया बनानी है कि हमें यह साबित करना है कि डर से कोई अच्छा काम नहीं हो सकते हैं, प्रेम से ही हो सकते हैं । मैं बच्चों से हमेशा कहता हूँ कि तालीम देनेवालों में अगर आपको फौजी डरावेगा, धमकावेगा, तो आपको उसकी बात हरगिज नहीं माननी चाहिये । आपको यह कहना चाहिये कि हमें प्रेम से समझाओ तो हम आपकी बात मानेंगे । लेकिन आप हमें डरायेंगे, तो नहीं मानेंगे ।

कुछ लोग कहते हैं कि नजी तालीम की आज सत्त जरूरत है, क्योंकि लड़के अहड़ बन गये हैं । किसी की बात मानते नहीं । जिसलिये नजी तालीम चलेगी तो लड़के कुछ मानने लग जायेंगे मैं कहना चाहता हूँ कि यह गलत खयाल है । नजी तालीम चलेगी तो लड़के और अहड़ बनेंगे । वह अहड़ता दूसरे प्रकार की होगी, परन्तु यह होनेवाला है कि पुरानी पीढ़ी की बात लड़के अंते ही नहीं माननेवाले हैं । “बाबा वाक्य प्रमाणम्”-वाली बात नहीं चलेगी । नजी तालीम का परिणाम यह होगा कि लड़के दबाव से किसी की बात नहीं मानेंगे, समझाने से मानेंगे । नजी तालीम आयेगी, तो यह नहीं हो सकेगा कि आज की पुरानी रचना वाक्य रखकर जो लोग अज्ञान के काबिल

नहीं है, अन्हें भी अिज्जत दी जाय। अिज्जत कोभी पैदा करने की चीज नहीं है। जो अिज्जत के काविल नहीं है उनको अिज्जत देना असम्भव होगा क्योंकि मूल्य बदलेगे। नञी तालीम का लडका पूछ बैठेगा कि प्रधान मन्त्री से राष्ट्रपति को ज्यादा तनस्वाह क्यों दी जाती है? अगर उसका जवाब ठीक मिला तो वह कहेगा कि बात ठीक है और नहीं मिला तो कहेगा कि गलत है। दर्जे के साथ तनस्वाह क्या जुड़ी हुई होनी चाहिये? नञी तालीम में छोटे-बड़े सब लडके अक साथ काम करेंगे, झाड़ू लगायेंगे, भगी काम करेंगे और तालीम पावेंगे। अक दफा नञी तालीम के लडके आ रहे थे तो किसी ने कहा झाड़ू की तालीम के लडके आ रहे हैं। मैंने कहा कि आपने बहुत अच्छा शब्द अिसंभल किया। तालीम दो प्रकार की होती है। अक झाड़ू तालीम और दूसरी भूरेवाली तालीम जो कचरा करना जानती है जो साफ करना नहीं जानती। रामवृष्ण परमहंस ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। अक दफा अन्हें विद्या की अिच्छा हुअी तो अन्होंने देवी से, जिसकी वे अुपासना करते थे, कहा, मा, मैं मूरख हूँ, मुझे विद्या चाहिये। उस रात देवी ने उनको सपने में दर्शन दिया और बोली—बेटा, तू विद्या चाहता है तो देख, यह भूरा पडा है, वहा से विद्या ले ले। फिर वे बोले, मुझे भीसी भूरेवाली विद्या नहीं चाहिये। अिसलिये मैं कहता हूँ कि नञी तालीम झाड़ू-वाली विद्या है। यह पुराने मूल्यों को झाड़ू देगी। नञी तालीम अजून पर पुराने मूल्य नहीं टिकेंगे। अिसका मतलब यह नहीं कि लडके विनयसपन्न नहीं रहेंगे। अूनमें विनय तो जरूर रहेगा, लेकिन पुराने जर्जर मूल्य नहीं टिकेंगे।

नञी तालीम के लडके बगावत करनेवाले बनेंगे। अगर लडके डरपोक, दवे हुए बने तो कहना पड़ेगा कि वह नञी तालीम नहीं है।

पुराने समाज का अक मूल्य है कि समाज का जितना अिन्तजाम किया जायेगा वह हिंसा से किया जायेगा। फिर चाहे उसको कानून का रूप दिया जाय, लेकिन आखिरी सेम्बशन हिंसा होगी। अिन दिनों राजनीति में बहुत चर्चा चलती है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि वेल-फ़ेअर स्टेट, सोशियालिस्ट स्टेट, कम्युनिस्ट स्टेट आदि जो भिन्न भिन्न प्रकार के स्टेट्स होते हैं, वे सब अक ही रंग के हैं। सब का दारोमदार मिलीटरी पर है। चाहे कम्युनिस्ट स्टेट हो चाहे राजा की हुकुमत हो। आप देखने हैं कि देखते देखते डेमाक्रेसी का रूपान्तर डिक्टेटरशिप में हो जाता है। विदेश के हमले से बचाने के लिये देश में सेना रखी जाती है। लेकिन देश की सेना के हमले से हमें कौन बचायेगा? अिसका कोभी जवाब नहीं दिया जाता है। यह बात ठीक है कि आज सेना पर कुछ जावता है। लेकिन हम देखते हैं कि फ्रान्स जैसे देश में जिसने दुनिया को बड़े-बड़े तत्वज्ञान-आजादों का, लोकशाही का तत्वज्ञान दिया। जहाँ के अुत्तम लेखकों ने दुनिया पर असर डाला, अिस तरह जिनका साहित्य अितना अुत्तम है, जिन्होंने क्रान्ति का आरम्भ किया, वही देश आज जिस हालत में है? आज वह अक आदमी के हाथ में है। अिस तरह डेमाक्रेसी का रूपान्तर होने में देर नहीं लगती है। क्योंकि आखिरी सेम्बशन हिंसा है। नञी तालीमवालों को यह अुम्मीद रखनी चाहिये, अूनमें यह हिम्मत होनी चाहिये कि हम स्टेट को हिंसा के दमोमसार से मुक्त करेंगे।

आप जानते हैं कि मैं कश्मीर जा रहा हूँ । अभी बस्सीजी ने दावत दी है और कहा है कि हम वहा की हालत जितनी देखना चाहते हैं, देखें । कश्मीर में अिन दिनों अच्छी हवा के कारण ट्रिस्ट जाया करते हैं, लेकिन मैं वहा अेक ट्रिस्ट के नाते नहीं जा रहा हूँ, मैं अक खिदमतगार के नाते जा रहा हूँ । मैं वहा देखना चाहता हूँ, सुनना चाहता हूँ, मैं सीखना चाहता हूँ जिन जिन लागो से मिल सकता हूँ, मिलना चाहता हूँ । मुझ अिस काम में आपके आशीर्वाद की जरूरत है । नहीं तो मुझमें अैसा कोअी बल नहीं है कि मैं वहा जाकर कुछ खास काम कर सकूँ । मुझ वहा का ज्ञान नहीं है । हिन्दुस्तान में बहुत पूमा हूँ, अिसलिये वहा तो आदी बन गया हूँ । लेकिन कश्मीर के देहाती को मैं किस तरह मदद पहुचा सकूँगा, या नहीं पहुचा सकूँगा यह मैं नहीं जानता हूँ । लेकिन दिल में अक खयाल है कि कुछ सेवा हो । अिसीलिये मुझे आप सब से आशीर्वाद की बहुत जरूरत है । कहा जाता है कि कश्मीर अिस दुनिया का वहिदत, स्वर्ग है । लेकिन स्वर्ग में जो पहुचा वह वापिस नहीं लायता और हिन्दू धर्मग्रंथों में लिखा है कि स्वर्ग स कोअी वापिस लाटा तो पुण्यक्षय कर क लाटा है । मुझ वहा से पुण्यक्षय कर क लौग्न की अिच्छा नहीं है । मैं तो चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान का कुछ-न कुछ पुण्य बँडे और प्रम पैदा हो ।

हमें समझना चाहिये कि दुनिया में आज जो छोटे छोटे राष्ट्र बने हैं वे टिकनवाले नहीं हैं । जैसे-जैसे विज्ञान बढ़गा वैसे-वैसे अिधर तो रहेगा ग्राम, जहा मानव-समूह रहेगा और अिधर होगा वन वल्ड, अेक विरव । दोनों की बीच जो

भी चीजें होगी, वे धीरे धीरे खत्म हो जायेंगी । अुसमें बहुत देरी नहीं है बयाकि विज्ञान जोरो से आगे बढ रहा है । अिसलिये भिन्न भिन्न देशों में प्रेम पैदा होना चाहिये । मैं चाहता हूँ कि अने देशों में अितना प्रेम हो कि वहा के हिन्दू, मुसलमान, सीख और दूसरी जमातवाले मुहब्बत से साथ रहे और जैसा अभी बस्सीजी ने कहा, कि हमारा दिल छोटा न हो बडा दिल बन । हम यह न कहें कि हम पजाबी या बंगाली हैं बल्कि यह कहें कि हम हिन्दुस्तानी हैं, यह कम-से-कम चीज है । अुसमें भी अक खतरा है । अगर हम जय हिंद कह कर रुक जायेंगे, तो खतरा पैदा हो सकता है । अिसलिये हमन नया मन बलाया है, जय-जगत् । दुनिया बहुत वेग से आगे बढ रही है । अुधर तो हम शानि गगल और खद तक पहुचने की कोशिश कर रहे हैं, कुत भी हजारों मील अपर जा रहे हैं तब हम नीचे रहे, यह कैसे संभव होगा ? जिस जमाने के कुत भासमान पर खद रहे हैं अुस जमाने में हमारे दिल छोटे नहीं रहन चाहिये । आज विज्ञान न मसला पैदा कर लिया है । छोटे दिल और बडे दिमाग की टक्कर हो रही है । हमारे पूर्वजों का दिल छोटा होता, तो कोई बात नहीं थी । बयाकि अुस वकत दिमाग भी छोटा था । अिसलिये जीवन चलता था । लेकिन आज दिमाग बडा बना है । हमारे अखबारों में कुल दुनिया की खबरें आती हैं । अिस हालत में दिल छोटा रहा, तो खतरा है । अिन दिनों छोटे दिल और बडे दिमाग में जो कश्मकश चल रही है वह कब तक जारी रहेगी ? जब तक या तो हम दिमाग को छोटा नहीं करेग जो करना मुमकिन है नहीं, या दिल को बडा नहीं बनायेंग, जो मुमकिन है । अस्सर हम सर्वोदयवालों से पूछा जाता है कि बया आप विज्ञान को बडावा देना चाहते हैं ? लोग

समझते हैं कि ये सर्वोदयवाले तो चरखा भी चलायेंगे और चरखे से तकली को बेहतर मानेंगे, अस्से लकड़ी की तकली को बेहतर मानेंगे और कोभी भूगलीया से कातना शुरू करेगा तो य नाचने लग जायग। मैं कहना चाहता हू कि विज्ञान पर अगर किसी का हक है तो सर्वोदय-वालों का है। दूसरे का नहीं है। जिनका विज्ञान पर हक नहीं है व अस्को अपन कब्ज में रखेंगे, तो दुनिया का खाला होगा। विज्ञान क बिना सर्वोदय का नहीं चलेगा और सर्वोदय के बिना विज्ञान का नहीं चलेगा। इसलिये नजी तालीम में विज्ञान की बहुत जरूरत रहेगी। हमें विज्ञान को बढ़ावा देना होगा। अगर विज्ञान के साथ अहिंसा आयगी तो जैसा ओमा मसाह न कहा था कि हम इस पृथ्वी पर स्वर्ग लायें, वह संभव होगा। अगर यह होगा कि विज्ञान अक बाजू और अहिंसा दूसरी बाजू रहेगी, तो दुनिया की दुश्शा होगी। इसलिये सर्वोदयवालों को पुरान औजारों का अभिमान बिल्कुल नहीं रखना चाहिये। नये नये औजार लेन चाहिये। इस पर लोग पूछते हैं कि बाबा, आप विज्ञान की बात करते हैं तो फिर पैदल क्यों घूमते हैं ? मैं जवाब देता हू कि बाबा जमीन पर इसलिये घूमता है, कि अा जमीन मिलती है। अगर वह हवाभी

जहाज में घूमेगा, तो अस्से हवा ही मिलगी। पैदल यात्रा दकियानुस बात नहीं है, यह अब साबित हो चुका है जब कि काग्रस ने प्रस्ताव किया है कि अस्के सदस्यों को पैदल यात्रा करनी चाहिये। आठ साल पहले यह बात नहीं थी। आप देहात के लोगों के हृदय में प्रवेश करना चाहते हो तो अुनक तरीक से हो सकता है। हमारी पैदल यात्रा साअिन्स के खिलाफ नहीं है बल्कि वह बिल्कुल अप टु डट साअिन्स है। हम कहना चाहते हैं कि जैस-जैम विज्ञान बढ़गा, मनुष्य-संख्या बढ़गी-वैसे वैसे या तो हवाभी जहाज रहेगा या पैदल यात्रा। बीच की मोटरे आदि नहीं रहेगी। लोग सावेग कि रास्तों के लिअ जो जमीन रखी जाता है वह व्यय जाती है। इसलिये रास्ते खोद कर वहां हल चराना पडगा। अुस हालत में बिल्कुल आखिर में टिकनवाली कोअी चीज है तो पैदल यात्रा और हवाभी जहाज ही है। मैं कहना यह चाहता हू कि नजी तालीम का विज्ञान के बिना नहीं चलेगा, इसलिये अस्से विज्ञान के साथ जुड जाना लाजिमी है।

नजी तालीम सम्मेलन
राजपुरा, पंजाब
ता २७.४.१९५६

नजी तालीम का यह दशन सङ्कलित न बने, यह ब्याल रखन की जरूरत है। चाहे हमारा जीवन नाथ में ओते, हमें विज्ञ के नागरिकत्व का अनुभव होना चाहिये। अहिंसा और विज्ञान दोनों के योग से ही यह हो सकता है। नजी तालीम के मानो है, अहिंसा और विज्ञान का योग। इसी योग से हम इस दुनिया में स्वयं ला सकते हैं।

विमोक्षा के प्रणाम

आठवीं अखिल भारत नजी तालीम सम्मेलन
सेवाग्राम, अमृतसर, १९५२

सभापति का अभिभाषण

मित्रो और साथियो,

करीब अठारह महीनो के बाद हम फिर से तेरहवें नञी तालीम सम्मेलन के लिये अकेसाथ मिल रहे हैं। पञाब में अखिल भारत नञी तालीम सम्मेलन का यह पहला ही अधिवेशन है। इस अधिवेशन के लिये देशभर के नञी तालीम के कार्यकर्ताओं को पञाब में अके साथ मिलने का जो सुअवसर मिला, अुनके लिये में पञाब सरकार को और पञाब के रचनात्मक कार्यकर्ताओं को हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की ओर से हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हू।

नञी तालीम सम्मेलन के लिये राजपुरा बयो चुना गया अुसके बारे में मैं यहा दो शब्द कहना चाहता हूँ। पञाब सरकार ने अपनी राज्यानी चडीगड में नञी तालीम सम्मेलन को निमन्त्रण दिया था। लेकिन हमने राजपुरा को ही चुना। बयोकि हम यह मानते हैं कि राजपुरा और फरीदाबाद अिन दोनों स्थानों में जो काम हुआ, नञी तालीम के इतिहास में अुनका अके विशेष महत्व है। सन् १९४९ में भारत सरकार के निमन्त्रण से हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने राजपुरा और फरीदाबाद अिन दो शरणार्थी शिविरो में शिक्पा के सगठन की इम्मेवारी सो। आज आगे के सामने यह जो सुयोत्रित नगरी दोख रहे है अुन समय अिसके बदले अके तबूजों की नगरी थी। हमारे वर्ग बूझों को छाया में या तबूजों के नीचे चलते थे। जब आधिया जाना थी या ज़ोरो से चर्पा होती थी, तब हमारा शिक्षा का काम बट रहता था। लेकिन इस कठिन परिस्थिति में शरणार्थी-शिक्षकों के सहयाम से नञी तालीम के द्वारा अके अुन्मूलित समाज को जोडने का जो काम

अिन दो स्थानों में हुआ अुसका अके बहुत बडा शैक्षणिक मूल्य है, अैसा हम मानने हैं। इस अवसर पर में राजपुरा और फरीदाबाद को अुन शिक्षक और शिल्लिवाओं को हमारा धन्य-वाद प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने बहुत घोरज और वहादुरी के साथ अिस काम में हमारी मदद की।

नञी तालीम सम्मेलन के लिये राजपुरा को चुनने का अके और कारण यह रहा कि हमारी प्रिय बहन बीबी अमतुलसलाम ने अिसे अपनी सेवा के क्षेत्र के रूप में चुना है। दस साल पहले पूज्य कस्तूरबा गांधी की पुण्यस्मृति में रचनात्मक कार्यक्रम का जो छोटा-सा बीज अुन्होंने बोया था वह आज कस्तूरबा सेवा-मंदिर नाम को रचनात्मक काम की अके बडी सस्था बनी है। राजपुरा में रचनात्मक काम और विशेष रूप से नञी तालीम के काम का जो विकास हुआ है, अुसमें बीबी अमतुलसलाम का बडा हाथ रहा है। अुनकी सेवाओं के लिये हिन्दुस्तानी तालीमी सघ अिस अवसर पर अुनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है।

यह नञी तालीम का तेरहवा सम्मेलन है, लेकिन नञी तालीम के काम के अिवक्तीस साल पूर्ण हाते हैं और बाओसवे साल का प्रारंभ होता है। ठीक अिवक्तीस साल पहले अप्रैल १९३८ में चर्पा में स्वयं गांधीजी के हाथों से बुनियादी तालीम की पहली सस्था का अुद्घाटन हुआ था। नञी तालीम के प्रथम आचार्य स्वयं विनोयजी थे। अिसी सस्था में नञी तालीम के सिद्धांत और प्रयोग पर अुनके भाषण होते थे और यहा की अम्पास-शाला में अुन्होंने नञी तालीम पद्धति का पहला पाठ दिया था।

आज फिर से वह समय आया है कि हम पिछले अिक्रस वर्षों की नयी तालीम के काम का मूल्यांकन करे, देश में नयी तालीम की वर्तमान यथार्थ परिस्थिति को समझने का प्रयत्न करे और उसके आगे के कार्यक्रम के लिये योजना तैयार करे। इस सम्मेलन में देशभर की सरकारी और गैर-सरकारी नयी तालीम की संस्थाओं के प्रतिनिधि एकत्र हुए हैं। नयी तालीम की प्रगति की समीक्षा के लिये यह एक अप्रयुक्त अवसर है।

नयी तालीम के काम के लिये गांधीजी ने हमें दो निर्देश दिये थे। उन्होंने कहा था कि सब से पहले हमें सेवाग्राम में ही बच्चों की तालीम से लेकर विश्व-विद्यालय के दर्जे तक की एक सम्पूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम तैयार करना है।

दूसरा निर्देश उन्होंने हमें एक सूत्र के रूप में सन् १९४४ में दिया था। तब हमारे राष्ट्र के सामने सब से बड़ी समस्या थी अक्ष की। उन्होंने कहा था "सच्ची तालीम वह है जो मुक्त की सबसे बड़ी और मौलिक आवश्यकताओं का जवाब देती है। आज मुक्त भूखा है, आज नयी तालीम का सबसे बड़ा काम हो जाता है कि वह ज्यादा से-ज्यादा अन्न उत्पन्न करे।"

अब दोनों निर्देशों के अनुसार हम नयी तालीम के पिछले अिक्रस सालों के काम का मूल्यांकन करने का प्रयत्न करेंगे।

सबसे पहले हमें देखना है कि सेवाग्राम में कितना काम हुआ है। सेवाग्राम के कार्यकर्त्ताओं के पास धन-बल और शक्ति-बल दोनों की कमी रही है, लेकिन श्रद्धा की कमी नहीं रही। जितने साधन और जितनी सक्षमता उन्हें प्राप्त थी अन्ही के आधार पर उन्होंने पूर्व-वुनियादी,

वुनियादी, अन्तर-वुनियादी और अन्तम वुनियादी, अन्त चार अवस्थाओं में अंक समग्र राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम का विकास करने का यथा-शक्ति प्रयत्न किया है। इसके अलावा विभिन्न राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों के लिये और रचनात्मक कार्यक्रमों की संस्थाओं के लिये करीब १५०० कार्यकर्त्ताओं को नयी तालीम का प्रशिक्षण भी दिया है। पिछले अिक्रस वर्षों का शिक्षण खर्च का व्योरा (वर्षों में) इस प्रकार रहा है —

चालू खर्च १२,३७,००२

स्थायी खर्च ६,०१,३५९,

वेतन ४,९१,३११

व्युत्पादन ७,६७,७०४,

स्थावर (संपत्ति) ४,०७,४३७,

सेवाग्राम के कार्यकर्त्ता भली-भांति जानते हैं कि सेवाग्राम के काम में अभी बहुत कमियां हैं। नयी तालीम की पद्धति के बारे में अभी बहुत प्रयोग और अनुसंधान करना है, वर्तमान परीक्षा पद्धति के स्थान में एक वैज्ञानिक जांच की पद्धति का विकास करना है, शिक्षण माहिर्य और शैक्षणिक साधनों का निर्माण-कार्य अभी बाकी है। अतः होते हुए भी सेवाग्राम के कार्यकर्त्ता नवतत्वापूर्वक इस सम्मेलन के सामने बहना चाहते हैं कि सेवाग्राम के शैक्षणिक काम के अनुभव से अन्हे समग्र नयी तालीम का याने एक सम्पूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा का जो दर्शन मिला है उससे अुनका विश्वास बृद्ध हुआ है कि इस राष्ट्र के बच्चे और सयानों के सर्वांगीण विकास के लिये, एक स्वतंत्र लोक-तन्त्रात्मक राष्ट्र के नागरिक तैयार करने के लिये, एक वर्गविहीन सहकारी समाज के निर्माण के लिये नयी तालीम ही सर्व श्रेष्ठ

साधन है। तालीमी सच यह भी मानता है कि अगर कार्यकर्ताओं में और शिक्का विभाग के अधिकारियों में श्रद्धा और लगन हो, जनता से सहयोग प्राप्त हो, तो भारत के गरीब-से-गरीब गांव में भी यह संपूर्ण शिवपान्थम अमल में लाया जा सकता है। लेकिन इसके लिये सबसे पहली और सबसे बड़ी आवश्यकता है—नयी तालीम में विश्वास की। हमारे देश में जहाँ-जहाँ नयी तालीम के कार्यक्रम में सफलता नहीं मिली है वहाँ कार्यकर्ताओं में और अधिकारियों में विश्वास का अभाव है अंसा मानना चाहिये।

अब हमें यह देखना है कि पिछले अठ्तीस वर्षों में नयी तालीम ने राष्ट्र की मौलिक आवश्यकताओं का जवाब देने का कहा तक प्रयत्न किया है।

पिछले अठ्तीस सालों की अवधि हमारे देश ने अतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय रहा है। इन वर्षों में दो आजादी की लड़ाइयाँ हुईं और इस अहिंसक संग्राम के अन्त में भारत स्वतन्त्र हुआ। लेकिन आजादी के साथ-साथ देश ने दो टुकड़ हुए। लाखों भाभी-बहन और बच्चे अन्मूलित होकर आश्रय के लिये आये और राष्ट्र के सामने उनके स्थापन का विराट और जटिल प्रश्न खड़ा हुआ।

जिसी अवधि में द्वितीय विश्व-महामुद्ध चलता। जापान के हिरोशिमा में पहला अणुबम गिरा और आणविक युग की शुरुआत हुयी। इसी विश्व युद्ध के जमाने में बंगाल में भयंकर अवाल पड़ा, हजारों बच्चे अनाथ हुये और बरसात तक भारत की जनता के लिये अन्न-समस्या सबसे बड़ी समस्या रही और आज भी है।

आजादी के बाद राष्ट्रके विकास के लिये पहली पंचवर्षीय योजना का काम पूरा हुआ। अभी दूसरी योजना के अनुसार कार्य चल रहा है।

इस बीच में गांधीजी का असमाप्त काम पूरा करने के लिये बिनोबाजी अपनी भूदान पदयात्रा में निकले। आज आठ साल हुये उनकी पदयात्रा निरन्तर चल रही है। भूदान का विकास ग्रामदान में हुआ है और ग्रामदान के आधार पर ग्राम स्वराज्य निर्माण का प्रयत्न चल रहा है।

हिन्दुस्तानी तालीमी सच मानता है कि नयी तालीम के कार्यकर्ताओं ने अपनी शक्ति के अनुसार राष्ट्र के अन्न आन्दोलनों में भाग लेने का प्रयत्न किया है। स्वतन्त्रता के आन्दोलन के दिनों में बहुत-सी बुनियादी शालाएँ बन्द रही और नयी तालीम के करीब-करीब सभी गैर सरकारी कार्यकर्ता कारावास में रहे। बंगाल के अकाल के समय जितने नयी तालीम के कार्यकर्ता बाहर थे, अन्होंने अनाथ बच्चों के लिये शिशु सदनो का संगठन किया और शिवपण शिविर चलाकर कार्यकर्ताओं को नयी तालीम की ट्रेनिंग दी।

आजादी के बाद जब राष्ट्र के सामने घरणार्थी भाभी-बहनों के स्थापन का प्रश्न आया तब हिन्दुस्तानी तालीमी सच ने भी सरकारी काम में सहयोग करने का प्रयत्न किया और अन्न घरणार्थी शिविरों में नयी तालीमी का एक मूल्यान् प्रयोग हुआ, अंसा हम मानते हैं।

भूदान-आन्दोलन की शुरुआत से ही नयी तालीम के कार्यकर्ताओं ने यह पहिचान लिया कि भूदान, ग्रामदान और नयी तालीम के काम

के ध्येय अंक ही है। जिसलिखे मूदान और ग्रामदान का कार्य बुनियादी शाला, अन्तर बुनियादी विद्यालय और प्रशिक्षण की संस्थाओं के लिखे शिक्षाक्रम का अंक अग माना गया।

नयी तालीम के कार्यकर्ता यह मानते हैं कि जब से ग्रामदान का आरम्भ हुआ है नयी तालीम के अतिहारा में अंक नया अध्याय शुरू हुआ। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ ने यह नया प्रस्ताव किया है कि “अब सघ का कर्तव्य है कि अति अहिंसक क्रान्ति में वह थड़ा के साथ प्रवेश करे और अुसके साथ पूरा-पूरा सहयोग दे।” नयी तालीम के अति नवीनतम विकास का नाम रखा गया ‘ग्राम-स्वराज्य नयी तालीम’।

हमारा विश्वास है कि जब नयी तालीम अंक अहिंसक सहयोगी समाज के निर्माण का साधन बनेगी तभी नुसका सच्चा स्वरूप प्रकट होगा और अुसकी आन्तरिक सम्भावनाओं का विकास होगा। जिसलिखे नयी तालीम का आगे का काम ‘ग्राम-स्वराज्य नयी तालीम’ का कार्यक्रम है।

अति प्रकार पिछले अिकीस वर्षों में राष्ट्र के सामने जब-जब कोअी महान् आह्वान आया है नयी तालीम ने यथाशक्ति अुसका अुत्तर देने का प्रयत्न किया है। जिससे नयी तालीम के काम में नयी शक्ति और नयी प्रेरणा का संचार हुआ है।

बापूजी का जो निर्देश था कि “सच्ची शिष्या राष्ट्र की मौलिक आवश्यकता का जवाब देने का प्रयत्न करे”—अति व्याख्या में जो सकेत है अुसका पालन करने के लिखे सघने प्रयास किया है अैसा हम मानते हैं।

लेकिन जब हम अिस प्रश्न पर विचार करते हैं कि अिस समय राष्ट्र में बुनियादी

तालीम की परिस्थिति क्या है तो हमें मानना पडता है कि अिकीस साल पहले हमने नयी तालीम के जिस ध्येय को सामने रखकर काम शुरू किया था अुससे हम अभी बहुत दूर हैं। यह बात मच है कि केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने यह घोषणा की है कि बुनियादी तालीम ही राष्ट्रीय शिक्षा की प्राथमिक अवस्था का कार्यक्रम रहेगा। लेकिन जिस बुनियादी तालीम को सरकारी शिक्षा-विभागों से मान्यता मिली है और जिसे गान्धीजी ने “बुनियादी राष्ट्रीय शिष्या” यह नाम दिया था अिन दोनों में बहुत अन्तर है।

जिम बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा की योजना पहिले-वर्षा-शिष्या सम्मेलन में १९३७ में बापूजी की अध्यक्षता में सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई थी और अुसके बाद अखिल भारत राष्ट्रीय महासभा के हरिपुरा अधिवेशन में मार्च १९३८ में दुहराओ गयी थी—अुसका पहला बुनियादी सिद्धान्त यह था :

वेश की तमाम लडके-लडकियों को सात से चौदह साल तक सात साल की मुफ्त और लाजिमी तालीम मिलनी चाहिये।

दस साल की आजादी के बाद भी आज हम नयी तालीम को अिस पहले ध्येय से बहुत दूर हैं। भारत के नागरिक की हैसियत से और नयी तालीम के कार्यकर्ता की हैसियत से हमें गभीरता के साथ अिस प्रश्न का सामना करना चाहिये और अने को पूछना चाहिये कि शिक्षा के अिस प्राथमिक ध्येय की पूर्ति में भी हम आज अितन पोछे क्यों हैं ? आज दुनिया के दूसरे राष्ट्रा में मुफ्त और लाजिमी तालीम की अवधि चौदह साल से आगे बढाओ जा रही है। किसी किसी राष्ट्र में अठारह साल तक मुफ्त और

लाजिमी तालीम का ध्येय सामने रखा गया है। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के ध्येय में हम पीछे कदम अठा रहे हैं। प्रश्न यह है कि अगर हमारे बच्चों को-राष्ट्र के मावी नागरिकों को-अतनी "स्वल्प शिक्षा" मिले तो क्या हम आज की दुनिया में अंक लोकतन्त्र के निर्माण की आशा रख सकते हैं।

बुनियादी तालीम का दूसरा बुनियादी ध्येय गांधीजी के शब्दों में "अंक अंसे समाज का निर्माण करना है जिसकी नींव अन्साफ और न्याय पर हो, जिस समाज में अमीर और गरीब का भेदभाव न हो, जहा सबको आजादी का हक हो और सबको अपनी रोजी मिलने का विश्वास हो।"

जब हम अपने को यह पूछते हैं कि पिछले बीस वर्षों में हम जिस 'न्याय पर आधारित समाज' के निर्माण की ओर कहा तक अग्रसर हुअे हैं तो हमें यह मानना होगा कि हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं अतना ही नहीं बल्कि अंसा मालूम हो रहा है कि हम विपरीत दिशा में जा रहे हैं। हमारे देश की शिक्षा-व्यवस्था दिन-प्रतिदिन वर्ग व्यवस्था बन रही है और जनता में और शिक्षा विभागों में यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि बुनियादी तालीम गरीबों की तालीम है। सन् १९५६ में सेवाग्राम में अन्तर बुनियादी शिक्षा सम्मेलन का अद्वैतन करते हुअे केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री डॉ॰ श्रीमालाजी ने बुनियादी तालीम की वर्तमान परिस्थिति का जो स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया उससे अंक अद्वैतन आपके सामने रखा हुआ है—

"जिस प्रकार भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी शिक्षा को मान्यता देने के बाद दो

शिक्षा पद्धतियाँ साथ-साथ चल रही हैं। जनता के लिये अंक प्रकार और मध्यम और धनी वर्गों के लिये दूसरा प्रकार। जिस तरह दो शिक्षा व्यवस्थाओं किसी भी राष्ट्र की शक्ति का निर्माण नहीं कर सकती हैं।

"बुनियादी शिक्षा का मुख्य अुद्देश्य वर्ग विशेष की शिक्षा तथा जन-साधारण की शिक्षा के भेद को हटाना है, परन्तु जिस परिस्थिति में उसका विपरीत परिणाम हुआ है। दोनों वर्गों का अन्तर अधिक ही हो गया है। जिस समय हमारे देश में तीन प्रकार की शालाओं है। बुनियादी शालाओं, अुच्च माध्यमिक शालाओं या हाजीस्कूल तथा पब्लिक स्कूलस्। ये तीन प्रकार की शालाओं हमारे समाज के तीन मुख्य वर्गों के द्योतक हैं।"

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में वर्ग-व्यवस्था का यह अंक स्पष्ट चित्र है। जिसका परिणाम यह हुआ है कि साधारण जनता यह समझती है कि बुनियादी तालीम के द्वारा समाज के अुच्च वर्ग अपना स्थान सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। जब मंत्री तालीम के आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ था तब सच्ची सेवा की भावना से कार्यकर्ताओं ने पिछड़े हुअे भिलाकों में, अंसे गावों में बुनियादी तालीम का काम शुरू किया था जहा जिससे पहले शिक्षा की कोभी व्यवस्था नहीं थी। लेकिन धीरे-धीरे जैसे-जैसे, बुनियादी शिक्षा को प्रतिष्ठा घटती गयी जनता में भी यह विश्वास बढ़ता गया कि अुनके गांव की बुनियादी शाला अंक निकृष्ट दर्जे की शाला है और जिन ग्रामवासियों की आर्थिक हालत कुछ अच्छी रही वे और बुनियादी शालाओं के शिक्षक भी अपने बच्चों को शहरों में पुरानी तालीम के विद्यालयों में भेजने लगे।

जिसी प्रकार आदिवासियों के बच्चों के लिये और पहाड़ी जिलों में जिस भावना से बुनियादी तालीम का काम शुरू किया गया कि अति प्रवृत्ति की सन्तानों के अपूर पुरानी शिक्षा पद्धति का बुरा असर न पड़े, लेकिन उनकी तरफ से भी सहरो में प्रचलित पुरानी तालीम की शालाओं के लिये माग आ रही है। क्योंकि वे मानते हैं कि उन्हें उनकी वर्तमान परिस्थिति में कायम रखने के लिये ही बुनियादी तालीम का प्रवर्तन किया जा रहा है।

जिस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था में बुनियादी शालाओं का स्थान सय से नीचा है अतना ही नहीं, दूसरे प्रकार के प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों को जो सुविधायें मिलती हैं। वे भी बुनियादी शालाओं को उपलब्ध नहीं हैं। जो विद्यार्थी बुनियादी या अर्द्ध बुनियादी शिक्षा की संस्थाओं से अतीत होकर निकलते हैं उनके लिये अर्द्ध शिक्षा की व्यवसायिक (professional) और औद्योगिक (technical) शिक्षा की सब संस्थाओं के द्वार बन्द हैं। आज बड़ी बर्षों से माध्यमिक शिक्षा की एक प्रकार की हैसियत से अर्द्ध बुनियादी शिक्षा की मान्यता का प्रश्न हमारे देश की विभिन्न राज्य सरकारों के सामने है। लेकिन बुनियादी तालीम के मावी विकास के लिये जिस महत्व के प्रश्न पर अब तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। जिसलिये स्वाभाविक ही है कि बुनियादी तालीम पर जनता का विश्वास घटता जा रहा है और पालकों के मन में यह शका बनी रहती है कि वे अगर अपने बच्चों को बुनियादी शालाओं में भेजें तो उनके लिये आगे की शिक्षा की सम्भावनायें नष्ट हो जाती हैं।

बुनियादी तालीम के विचार में और अक्षर स्वायत्त यह रही कि धीरे-धीरे अक्षरों की अवधि भी घटाओ जा रही है। जिस राष्ट्रीय शिक्षा की योजना के जन्मदाताने जिसे अक्षर सात साल के एक सम्पूर्ण शिक्षाक्रम के रूप में राष्ट्र के सामने रखा था। लेकिन आज बुनियादी तालीम की अवधि मात्र ४ या ५ साल की रह गयी है। जिसका परिणाम यह रहा है कि नजी तालीम का अद्देश्य सिद्ध नहीं होता है। सिर्फ राष्ट्र के पैसे, शक्तियाँ और प्रवृत्तियों का अपव्यय मात्र हो रहा है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भी सिर्फ पांच साल की परिवर्तनना रखी गयी है अगर राष्ट्र के नेताओं की यह राय है कि हमारे राष्ट्र के बच्चा के लिये बरसों तक हम सिर्फ पांच साल की बुनियादी तालीम ही दे सके तो मैं आग्रहपूर्वक यह निवेदन करना चाहता हूँ कि यह शिक्षा छ से ग्यारह साल तक की अर्द्ध के बच्चों के लिये न होकर नौ से चौदह साल तक की अर्द्ध के बच्चा के लिये हो, क्योंकि जिस अवस्था के विस्तार विद्याभ्यास को हम जो शिक्का देंगे वह स्थायी होगी यह शिक्का-शास्त्रियों का अनुभव है।

यहां मैं राष्ट्र में नजी तालीम की वर्तमान परिस्थिति का वर्णन करने का एक प्रयास किया है। यह चिन्तन अतिसहृदयक नहीं है, पर यथार्थ है असा भरा निवेदन है लेकिन हम यह न भूलें कि नजी तालीम के विकास में कुछ अतिसहजनक पहलू भी हैं। आज हमारे देश के बड़ी राज्यों में सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकार के बुनियादी और अर्द्ध बुनियादी विद्यालय शिक्का का अच्छा काम कर रहे हैं और उन्होंने जनता का विश्वास भी प्राप्त किया है। बिहार राज्य सरकार पिछले बीस बर्षों से आठ बर्षों की

बुनियादी शिक्षा और उत्तरबुनियादी शिक्षा का विकास करने का प्रयत्न कर रही है। मद्रास राज्य में भी सरकारी और गैर-सरकारी नवी तालीम की संस्थाओं में शिवपा के काम का विकास सन्तोषजनक है। लेकिन जितना होते हुअे भी हमें यह मानना चाहिये की राष्ट्र में बुनियादी तालीम की जो वर्तमान परिस्थिति है उससे हम नवी तालीम के कार्यकर्ता सन्तोष नहीं मान सकते। लेकिन हमें निराश भी नहीं होना है। बापूजीने कहा था :-

“सत्याग्रह के अभिधान में नैराश्य यह शब्द नहीं है। अगर हमें ऐसा लगता है कि हमें सफलता नहीं मिल रही है तो हमें इसका कारण अपने अन्दर ढूढना चाहिये। कमजोरी और अविश्वास से ही नैराश्य पैदा होता है।”

असलिये नवी तालीम के जिन कार्यकर्ताओं ने इसे थडा के साथ अपने जीवन के कार्य के रूप में भुठा लिया है अन्हे अपनी सारी शक्तिया और विचार सहत करके इस परिस्थिति का कारण ढूढ निकालना है। हमें समझने का प्रयत्न करना है कि हमारे अंदर कौन-सी कमजोरिया है जिनके परिणाम स्वरूप आज जनता का नवी तालीम के कार्यक्रम में विश्वास नहीं है। बुनियादी तालीम का काम करते हुअे शिक्षकों को, निरोसकों को और व्यवस्थापकों को विन-कृति समस्याओं का सामना करना पडता है।

अस सम्मेलन में देश के हरेक राज्य से नवी तालीम के कार्यकर्ता, रचनात्मक कार्यकर्ता और सरकारी शिक्षा विभागों के अधिकारी अकमाय मिले हैं। अस प्रश्न पर विचार करने के लिये यह अक बहुत अच्छा अवसर है।

मैं यह भी आशा करता हू कि कार्यकर्ताओं का यह सम्मेलन अस प्रश्न पर सिर्फ चर्चा विचारों से ही सतोष नहीं मानेगा बल्कि नवी तालीम की वर्तमान परिस्थिति को सुधारने के लिये अक प्रत्यक्ष कार्यक्रम की योजना भी तैयार करेगा। अस सम्मेलन की अध्यक्षता मडलियों के विचार के लिये जो विषय रखे गये हैं वे किसी ध्येय को सामने रखकर चुने गये हैं।

पिछले अठ्ठकोस वर्षों से मैं नवी तालीम का काम कर रहा हू। अस कार्य की सफलता से जो आनंद मिलता है, असका भी कुछ अनुभव मिला है। अस काम में जो कठिनावियाँ आती हैं उसका भी अनुभव है। आज देश भर में नवी तालीम का कार्यक्रम जो निस्तेज और निष्प्राण बन रहा है। मेरी राय में उसके जो कारण हैं, अन्हे मैं आपके सामने रखना चाहता हू। मेरी राय में उसका मुख्य कारण यह है कि हमने यह नहीं पहचाना कि नवी तालीम की जड में जो जीवन-दर्शन है उसकी स्वीकृति के बिना हम नवी तालीम का सच्चा काम नहीं कर सकते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि नवी तालीम सिर्फ शिक्षा पद्धति में सुधार की योजना नहीं है। लेकिन राष्ट्र निर्माण के अक समग्र कार्यक्रम का अंग है। अस कार्यक्रम की बुनियाद में जो सामाजिक, आर्थिक और नैतिक विचार हैं अन्हे बार-बार गापीजी ने विस्तार के साथ राष्ट्र के सामने रखा है। अन्हे यहा दोहराने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन राष्ट्र निर्माण के अक बुनियादी अमूल को मैं अवश्य अस सम्मेलन के सामने रखना चाहूंगा। क्योंकि राष्ट्र निर्माण की जो योजनायें बन रही हैं उनमें अस तत्व की अपेक्षा की गजी है।

बुनियादी तालीम का पहिला बुनियादी अमूल यह है कि राष्ट्र के सब बच्चों को शिक्षा

का समान अधिकार है। यह जिस युग वा सबसे बड़ा सदेस है अंसा में मानता हूँ। लेकिन आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण की जो योजनाएँ बन रही हैं उनमें विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्तर के बच्चों के लिये शिक्षा की सुविधाएँ भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होंगी अंसी मान्यता दीखती है। मुझे डर है कि जब तक हमारे राष्ट्र निर्माण की और राष्ट्रीय शिक्षा की योजनाएँ जिस आर्थिक और शैक्षणिक विषमता के आधार पर बनेंगी तब तक नयी तालीम का काम अपने बुद्देश्य को सिद्ध करने में असफल होगा यह अनिवार्य है।

मैं दृढ़ता के साथ यह कहना चाहता हूँ कि जो राष्ट्र अपने नागरिकों के लिये सामाजिक और आर्थिक समता के सिद्धांत को मान्य नहीं करेगा और अपने बच्चों के लिये समान शैक्षणिक सुविधाओं की व्यवस्था नहीं करेगा वह राष्ट्र कभी नयी तालीम का काम नहीं कर सकेगा। जिसका अवश्यम्भावी परिणाम वही होगा जो आज हो रहा है। न जनता में नयी तालीम के प्रति श्रद्धा बढ़ान होगी और न शिक्षा विभाग के अधिकारियों में बुनियादी तालीम के काम करने के लिये उत्साह होगा। राष्ट्र के पैसे खर्च होंगे लेकिन नयी तालीम का काम नहीं होगा और बुनियादी तालीम के प्रति यह भावना बनी रहेगी कि यह गरीब और देहाती जनता के लिये निकृष्ट दरजे की अंक प्राथमिक शिक्षा की योजना है।

नयी तालीम का जो दूसरा बुनियादी सिद्धान्त है कि सारी शिक्षा कोभी न कोअी उत्पादक काम के जरिये दी जाए, जिसवा भी सच्चा प्रयोग तब तक नहीं हो सकेगा जब तक समाज में और राष्ट्र में उत्पादक काम के प्रति

श्रद्धा नहीं उत्पन्न होगी, जब तक हमारे राष्ट्रजन और राष्ट्र के नेता जिस बुनियादी असूल को स्वीकार नहीं करेंगे कि उत्पादक काम व्यक्ति और समाज के विकास के लिये सबसे बड़ा और सब से शक्तिशाली साधन है।

अभी बुनियादी श्रद्धा के अभाव से आज सब जगह बिनोया जी के शब्दों में "बुनियादी तालीम का वानरीकरण" हो रहा है। बच्चों के हाथ से कटे हुअे सूत शालाओं के भण्डारों में बन्द हैं। अस पर धूल जम रही है, और बच्चे या तो फटे कपडों में या नंगे धूम रहे हैं। गाव-गाव में हमारे बच्चे भूले हैं और हम 'अधिक अन्न उपजाओ' का आन्दोलन चला रहे हैं। आज तक शिक्षा जगत की यह राय बनी है कि उत्पादक काम के साथ सम्बन्ध जोडने से शिक्षा की प्रतिष्ठा घटती है और यह जातिच्युत होती है। अपने हाथ से अन्न अन्न करके खाना और हाथ से वस्त्र पैदा करके उसे पहिनना शिक्षा का काम नहीं है। शिक्षा का काम है बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास। बुनियादी शिक्षा से बच्चों का बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास रुक जायेगा जिसलिये वह अच्छी शिक्षा नहीं।

हमारा देश जाति भेद का देश है। शिक्षा जगत में बौद्धिक शिक्षा की जाति अूची और बुनियादी शिक्षा की जाति नीची है। क्योंकि यह शिक्षा हाथ के काम के द्वारा दी जाती है। जिसलिये बच्चों के मा बाप अगर अपने बच्चे को नीच जाति की शालाओं में नहीं भेजना चाहे तो असमें आश्चर्य की कोअी बात नहीं है।

जिस दुःखद विषय पर और अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। अच्छा तो यह

होगा कि हम इस प्रश्न पर विचार करे कि राष्ट्र में नयी तालीम के सच्चे विकास के लिये हमारा प्रत्यक्ष कार्यक्रम क्या होना चाहिये।

नयी तालीम की सफलता के लिये सबसे पहला और सबसे आवश्यक कार्यक्रम यह है कि जिस देश की जनता नयी तालीम के जिस पहले बुनियादी सिद्धान्त को पहचाने और स्वीकार करे कि जिस राष्ट्र के सब बच्चों को शिक्षा का समान अधिकार है और मिलना चाहिये। पिछले आठ वर्षों में नयी तालीम के आचार्य पूज्य विनोबा जी अपनी पदयात्रा के द्वारा भारत के गांव-गांव और नगर-नगर में आर्थिक समता के सन्देश का प्रचार कर रहे हैं। वे बार-बार कहते हैं कि वे नयी तालीम का ही काम कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जिस भूदान प्रामदान आन्दोलन का ध्येय है कि भारत के प्रत्येक बच्चे को अन्न मिले और शिक्षा मिले। जब तक नयी तालीम के कार्यकर्ता विनोबा जी के दिखाये हुये मार्ग का अनुसरण करके जिस देश के प्रत्येक नागरिक के पास जिस सन्देश को नही पहुँचायेंगे और नयी तालीम के लिये आवश्यक राष्ट्रीय भूमिका को तैयार नही करेंगे तब तक नयी तालीम का सच्चा विकास नही हो सकेगा। मुझे यह कहने में बहुत खुशी है कि नयी तालीम के बहुत से कार्यकर्ताओं ने जिस सत्य को पहिचाना लिया है और वे भूदान प्रामदान कार्य में प्रत्यक्ष भाग लेकर उस नये समाज की रचना के भागिकारी काम में हाथ बटा रहे हैं जहाँ नयी तालीम अंक बाहर से लादी हुयी शिक्षा पद्धति नही रहेगी। लेकिन समाज रचना की अंक स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में विकसित होगी। तब नयी तालीम "जनता के लिये, जनता के

द्वारा और जनता की तालीम" होगी। (Education for the people, of the people and by the people). तब नयी तालीम राष्ट्रीय तालीम बनेगी।

नयी तालीम के कार्यकर्ताओं का दूसरा बुनियादी काम भी जन शिक्षा का ही काम होगा। वह है "हाथ के द्वारा शिक्षा" जिस सिद्धान्त का व्यापक रूप से प्रचार और प्रसार। गांधीजी अपने जीवन-काल में प्रवचनों के द्वारा और प्रत्यक्ष बुदाहरण के द्वारा निरन्तर यह काम करते रहे और आज विनोबाजी भी कर रहे हैं। फिर भी जिस दिशा में बहुत काम अभी बाकी है। आज भी हमारे समाज में हाथ के काम की ओर काम करनेवाले को अचित स्थान नही मिला है। आज भी शिथिल मनुष्य अपने को हाथ से काम करने वाले मजदूर या कारीगर से बहुत अच्चा समझता है। यह मनोवृत्ति समाज के सभी स्तरों में फैली हुयी है और हरेक मजदूर चाहता है कि उसके लडके का अंसी शिक्षा मिले कि उसे और हाथ का काम न करना पड़े।

जब हमारे समाज में और राष्ट्रीय जीवन में हाथ के काम को अचित स्थान मिलेगा, तब नयी तालीम के कार्यकर्ता अपने जीवन और कार्य के द्वारा यह सिद्ध कर सकेंगे कि काम शिक्षा का सब से बड़ा साधन है और देश के जन साधारण में राष्ट्रीय जीवन को काम करने-वालों की अंक सहकारी, सहयोगी श्रम आधारित समाज के रूप से विवसित करने की भावना पैदा होगी तभी समाज में नयी तालीम को अपना अचित स्थान मिलेगा और वह अपना सच्चा काम कर सकेगी।

हम नयी तालीम के कार्यकर्ताओं को यह भी स्मरण रखना है कि नयी तालीम सिर्फ

अन्य जीवन दर्शन नहीं है, यह एक विज्ञान है और एक कला भी। इससे दार्शनिक पहलू का पहला स्थान है, लेकिन साथ साथ हमें जिस दर्शन का एक प्रत्यक्ष वायज्यम के रूप में विकसित करने के लिए जिसके विज्ञान और जिसकी कला का भी विचार करना है। अब तक शिक्षण शास्त्र में और शिक्षा मनोविज्ञान में जितने सुपरोक्षित आविष्कार किये गये हैं उनका भी हम अध्ययन करता है और उनसे लाभ उठाना है। नयी तालीम की सस्थाओं में शैक्षणिक अनुसंधान के लिये एक विशाल क्षमता पड़ा है। हमें बड़ी खुशी है कि केन्द्रीय सरकार ने नयी देहली में बुनियादी तालीम के एक अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की है। लेकिन अगर हमें वैज्ञानिक आधार पर नयी तालीम का विकास करना है तो जिस प्रकार के बहुत से अनुसंधान केन्द्रों की आवश्यकता होगी जहाँ नयी तालीम के विभिन्न पहलुओं पर परीक्षण और प्रयोग का काम चलता रहेगा।

अन्त में जब हम अपने को पूछते हैं आज सिर्फ हमारे देश में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में शिक्षा के काम करने वालों के सामने सबसे बड़ा प्रश्न कौन सा है तो हमें मानना होगा कि यह प्रश्न विश्व शांति का है। विज्ञान की अतृप्ततर प्रगति से मानव के विनाश के अस्त्रों का जिस हद तक विकास हुआ है कि आज विश्व के सामने मानव जाति के संपूर्ण लोप हो जान की संभावना है। विश्व के वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं के सामने यह एक बहुत बड़ी नैतिक चुनौती है। आज परिस्थिति तो यह है कि या तो हम सब एक साथ मिलकर शांति का काम करें या अकेलापन मिलकर खतम हो जायें। जिस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है शांति की।

जिसलिए जिस आवश्यकता का जवाब देना नयी तालीम का दायित्व हो जाता है।

नयी तालीम का दावा यह है कि सत्य और अहिंसा पर आधारित समाज की रचना जिसका ध्येय है। सन् १९३८ में वर्धा शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए गांधीजी ने जो कहा था उसे मैं फिर से यहाँ दोहराता हूँ —

“अगर हम कौमी और अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष को वन्द करना चाहते हैं तो हमारे लिये जरूरी है कि जिस शिक्षा की मैंने महा हिमायत की है, अपने बालकों को शिक्षित करके दुष्ट और सुदुष्ट आधार पर अस्था आरम्भ करें। मेरी जिस योजना की तह में अहिंसा भरी हुआ है।

“अगर हिन्दुस्तान ने हिंसा को छोड़ देना वा निश्चय किया तो उसे जिस अनुशासन से होकर गुजरना पड़ेगा, शिक्षा का यह तरीका उसका एक खास अंग होगा।”

जिस सम्मेलन के लिये विनोबाजी न जो सन्देश भजा था, उसमें भी उन्होंने वाक्यकर्ताओं को स्मरण दिलाया था कि समाज का अहिंसक रक्षण भी शिक्षा का ही काम है।

‘नयी तालीम के सम्मेलन के लिये कुछ बातें मैं कहूँ अंतो मांग की गयी हैं। ग्रामदान, उसके आधार पर ग्राम स्वराज्य, यह हमारा पाठ्यक्रम है। उसमें शिक्षा और रक्षा अंश दो बड़े अंग हमको विकसित करने हैं। रक्षा के लिये शांति सेना और शिक्षा के लिये ग्राम जीवन। शिक्षा और रक्षा अंशें जितने के ख्याल से दो पहलू हो जाते हैं। अहिंसा में शिक्षा और रक्षा एक ही चीज बन जाती है। जब तक ये दो चीजें अलग-अलग मानी जायेंगी तब

तक अहिंसा अपना पूर्ण रूप नहीं दिखा सकेंगी। नशी तालीम की अंक-अंक नशी कला प्रस्फुटित हो रही है। हमारे शिक्षक-गण उसके ग्रहण में पीछुड न जाय यह देखने की बात है।”

हमारे प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूजी ने भी अपने सन्देश में नशी तालीम के कार्यकर्ताओं के सामने यही अपेक्षा रखी थी —

“ भारत शान्ति और अहिंसा का अंक प्रबल समर्थक है, अंसी अुसकी स्याति है। लेकिन अस स्याति के हम पूरे के पूरे योग्य नहीं हैं। क्योंकि हम स्याति और अहिंसा की बातें तो करते हैं, लेकिन अपने घरेलू और राष्ट्रीय जीवन में जिस प्रकार का व्यवहार करते हैं, वह शान्ति और अहिंसा के बिलकुल विपरीत है। हमारा अंसा अन्तर्द्वन्द्व बहुत ही हानिकारक है अंसा मेरा निश्चित मत है। बुनियादी शिक्षा जिस समस्या के समाधान में बड़ा तब सहायक

होगी यह मैं नहीं जानता, किन्तु जहां तक हो सके अुसे पूरी कोशिश करनी चाहिये।”

यह नशी तालीम के कार्यकर्ताओं के लिये अंक महान चुनौती है और अस चुनौती को हमें नम्रतापूर्वक स्वीकार करना है। असकाम के लिये अंसा निष्ठा और कठिन परिश्रम और त्यागवृत्ति की आवश्यकता होगी। लेकिन अस ससार में निष्ठा और त्याग के बिना कोअी महान् कार्य सम्पन्न नहीं होता है। हमारे राष्ट्र के बच्चों को नशी तालीम के द्वारा विश्वकल्याण और विश्व-शान्ति के लिये तैयार करना अससे महान् कार्य कोअी हो सकता है ? मेरा पूर्ण विश्वास है कि अस महान् कार्य के लिये अंकनिष्ठ श्रद्धावान् कार्यकर्ताओं की कमी नहीं होगी।

नशी तालीम की साधना के मार्ग पर चलने के लिये अीस्वर हमें शक्ति दे यही हमारी प्रार्थना है।

जहां बच्चों को अस बात का बड़ावा दिया जायगा कि वे शान्ति और सेती के काम में अपने मां-बाप की मदद करें, वहां अुधे यह महसूस करने का मौका भी दिया जायगा कि अुनका सम्बन्ध सिर्फ अुनके मां-बाप से ही नहीं, बल्कि अपने गांव और देश से भी है, और अुन्हें असकी भी कुछ सेवा करनी है। असलिये मेरे स्याच में तो तालीम का यही अंक तरीका आता है। मंत्रियों से मैं यह कहूंगा कि शंरातो तालीम देकर वे मुल्क के बच्चों को असहाय या अपाहिज ही बनावेगे, अथ कि अुनको शिला के लिये अुनसे खुद सेहनत कराकर वे अुधे बहादुर और आत्मविश्वासी बना सकेंगे।

तेरहवें आखिल भारत नजी तालीम सम्मेलन के निर्णय ।

ता. २७ अप्रैल १९५९

राष्ट्रीय शिक्षा :

१. राष्ट्रीय शिक्षा का यह बुनियादी ध्येय रहा है कि राष्ट्र के सभी बच्चों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा की समान सुविधायें मिलें । यह सम्मेलन जिस बुनियादी ध्येय को फिर से दुहराता है और अपा निश्चित मत प्रकट करता है कि यह सिद्धान्त हमारी योजना का आधार बने । शिक्षा को जो भी सुविधायें हम दें राष्ट्र के सभी बच्चों को समान रूप से प्राप्त हों ।

आठ साल की समग्र योजना —

२. विनोबाजी ने जिस सम्मेलन के सामने यह विचार रखा है कि राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा का आठ साल का शिक्षाक्रम अंक समग्र प्रदिया है । जिस प्रक्रिया को पाठ साल के बाद सङ्घित न किया जाय क्योंकि यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये हानिकर है ही और राष्ट्र के साधनों का पूर्ण अपव्यय भी है ।

यह सम्मेलन विनोबाजी के जिस विचार की स्वीकृति करता है और निश्चित मत प्रकट करता है कि आठ साल का समग्र कार्यक्रम ही बुनियादी शिक्षा का आधार रहे ।

नजी तालीम में विज्ञान और अहिंसा का योग—

३. जिस सम्मेलन की राय में आज शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण और शीघ्र-से गीघ्र व्यवहार में लायी जानेवाली आवश्यकताओं में अंक यह है कि वैज्ञानिक प्रवृत्ति तथा दृष्टिकोण का अहिंसा के नैतिक मूल्यों के साथ गठबन्धन किया जाय । निभयता और सत्य के प्रति निष्ठा से किसी भी सच्चे वैज्ञानिक को पहचान हानी चाहिये । यही गुण समान रूप से युन लोगों में अवश्य ही पाये जायेंगे जिनमें अहिंसा का विकास हुआ है । सम्मेलन की ऐसी आशा है कि विश्वविद्यालयों और विद्यालयों के कार्यकर्त्ता जिस सिद्धान्त को कार्य में परिणत करने में आगे बढ़ेंगे और मार्गदर्शन देंगे ।

४. विनोबाजी ने प्रत्येक शिक्षक की अंसी चुनौती दी है कि वह अपने को शान्ति संनिव माने और शिक्षण कार्य को आगे की पीढी के मनसों में शान्ति को नीचों को सुदृढ करने का अंक अपूर्व अवसर समझें । यह सम्मेलन जिस चुनौती का स्वागत करता है और शिक्षकों को आह्वान करता है कि वे जिस काम के अपने उत्तरदायित्व समझें और सेवा, आराम सयम और स्वाध्याय के द्वारा जिस कार्य के लिये अपने को तैयार करें ।

५. यह सम्मेलन “नजी तालीम में व्यवस्था” पर अध्ययन मण्डली की सिफारिशों का समर्थन करता है और अनुरोध करता है कि राज्यसरकारें और नजी तालीम का काम करनेवाली सभी संस्थायें जिन सिफारिशों का अमल में लाने का प्रयत्न करें ।

नजी तालीम में शिक्षक-प्रशिक्षण

६. यह सम्मेलन शिक्षक प्रशिक्षण अध्ययन मण्डली की सिफारिशों का समर्थन करता है और अनुरोध करता है कि राज्य सरकारें और नजी तालीम का काम करनेवाली सभी संस्थायें जिन सिफारिशों को अमल में लाने का प्रयत्न करें ।

पूर्व बुनियादी शिक्षा

७. पूर्व-बुनियादी शिक्षा की योजना बालक और पलक दोनोंको ध्यान में रखकर बनायी जाय और ऐंसा समचित कार्यक्रम बने जो घर में तथा शाला में दोनों जगह चल । यह सम्मेलन जिस राय से पूर्ण-तया सहमत है । ऐंसा नही होने से बच्चों और बड़ों के हितों में फर्क रहेगा जो बच्चों के विकास में बाधक होगा ।

८. नजी तालीम में अनुसंधान अध्ययन मण्डली की यह सिफारिश है कि बुनियादी शिक्षा की प्रणाली व्यवस्था और सङ्गठन पर निरन्तर शोध कार्य करने की आवश्यकता है और जनसहयोग कैसे प्राप्त हो यह भी शोध का विषय बने । यह सम्मेलन जिस सिफारिश का समर्थन करता है और यह अनुरोध करता है

कि राज्य सरकारों और बुनियादी शिक्षा में लगी हुआ सब संस्थाओं और कार्यकर्ता जिस कार्य को अपने हाथ में ।

नमी तालीम का साहित्य

१ शिक्षण-साहित्य की परम आवश्यकता की ओर यह सम्मेलन राष्ट्र के सब संस्थागत कार्यकर्ता और साहित्यिकों का ध्यान खींचता है और उनसे निवेदन करता है कि वे जिसे राष्ट्र-सेवा के आवश्यक कार्यक्रम के तौर पर अपने हाथों में ले । नमी तालीम साहित्य अध्ययन गोष्ठी की सिफारिशों को यह सम्मेलन समर्थन करता है और यह अनुरोध करता है कि राज्य सरकार और बुनियादी शिक्षा में लगी हुआ सब संस्थाओं और कार्यकर्ता जिस कार्य को अपने हाथ में ले ।

नमी तालीम की व्यवस्था

अध्ययन गोष्ठी का प्रतिवेदन

(संयोजक - श्री रामचरण अग्रवाल)

जिस टोली की दो बैठके हुआ—अंक २६४५९ के अपराह्न में डाई बजे से साडे चार बजे तक और दूसरी २७४५९ के पूर्वाह्न में साडे आठ बजे से १० बजे तक । लगभग ३० व्यक्तियों ने चर्चाओं में भाग लिया ।

१ टोलीने अभी जो बुनियादी शिक्षा का संगठन राज्यो में सरकारी द्वारा हो रहा है उनके संबंध में प्रथम विचार किया । भूदान ग्रामदान के प्रदर्शनों के फलस्वरूप जो ग्राम स्वराज्य और ग्राम-संकल्प के द्वारा ग्रामनिर्माण की संभावनाओं और समस्याओं अंतर्निहित हुआ है, उनकी पृष्ठभूमि में, जन-आधारित ग्राम आयोजन के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा के संगठन के पहलुओं पर भी विचार किया ।

२ आज से दो वर्ष पहले केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय से नियुक्त श्री रामचन्द्र बुनियादी शिक्षा मूल्यांकन समिति ने तब तक की बुनियादी शिक्षा में जो प्रगति हुआ थी या नहीं हुआ थी उस पर रिपोर्ट दी थी । उसकी सिफारिशों को अमल में लाने के लिये अलग-अलग राज्यो में जो कदम उठाये गये हैं, उनकी रिपोर्टें उन राज्यो के प्रतिनिधियों ने दी ।

३. भारतीय सविधान के अनुसार चौदह वर्ष की उम्र तक की शिक्षा की व्यवस्था सारे राष्ट्र के लिये शीघ्र में-शीघ्र होनी चाहिये । अब प्रयोग के काल समाप्त हो चुके हैं और नमी तालीम के ढांचे पर प्रारंभिक शिक्षा का संगठन केन्द्र और राज्य शासनो ने स्वीकृत कर लिया है । अब समस्या मुख्यतः यह है कि प्रत्येक राज्य में हजारों पुराने ढांचे से चलते हुए प्राइमरी और मिडल स्कूलों को बुनियादी शिक्षा के ढांचे के स्कूलों में जल्द-से जल्द परिवर्तन करना । राज्य के शिक्षा विभागों के प्रशासन जिस काम को नियत समय के भीतर और पूरी अच्छाओं के साथ सम्पन्न कर, जिसके लिये अध्ययन टाली नीचे लिखे सुझाव देती है -

(क) वर्तमान विद्यालयों को बुनियादी ढांचे के विद्यालयों में बदलने का काम अतिना व्यापक है कि जिस टोली की दृष्टि में, ऐसा परम आवश्यक दिखता है कि जिस किसी राज्य में भी डाइरेक्टर महोदय के अतिरिक्त बुनियादी शिक्षा का जानकार अंक विशेष अधिकारी डाइरेक्टर के दर्जे का ही संपूर्ण व्यवस्था का डाइरेक्टर के साथ और उसके प्रति आभारी नहीं रख लिया गया हो वहां यह शीघ्र रखा जाय । प्रत्येक राज्य अपनी परिस्थितियों की दृष्टि से अपने शिक्षा निर्देशालय का जिस प्रकार का पुन-संगठन शीघ्र करे, जिसकी अपेक्षा है ।

(ख) बुनियादी संस्थाओं का व्यवस्थापन और निरीक्षण अनेक ही अधिकारियों के द्वारा होना चाहिये जिन्हें बुनियादी शिक्षा में प्रशिक्षण मिला हो और जिसका अनुभव हो । जहां वही भी और जब कभी भी कोजो अप्रशिक्षित अधिकारी जिस काम के ऊपर नियुक्त किये जाय, उनके प्रशिक्षण और पुनरु-स्थापन की व्यवस्था यथासंभव शीघ्र होनी चाहिये ।

(ग) उत्पादक काम बुनियादी शिक्षा के अभिन्न अंग है । अनेक लिये कच्चे माल और अतिरिक्त ढग के यन्त्र अत्यादि की यथासंभव प्राप्ति, उनके अतिरिक्त संपन्न और संचार माल के विनियोग की भी व्यवस्था ठीक समय पर होनी चाहिये । जिसमें सादी तथा ग्रामोद्योग कमीशन, सर्व सेवा सच और उनकी शाखाओं का सहयोग राज्य शासनो और बुनियादी

संस्थाओं को प्राप्त करना चाहिये। अल्पादित वस्तुओं के विनियोग के लिये टोली की सिफारिश है कि जिस सवध में राज्य शासन की स्पष्ट नीति निश्चित होनी चाहिये। केन्द्र शिक्षा मंत्रालय की बुनियादी शिक्षा समिति ने जो मुझाव जिस सवध में दिये हैं, राज्य शासनों द्वारा उसकी स्वीकृति की सिफारिश वह टोली करती है। जिसके अनुसार अल्पादित वस्तुओं का उपयोग अचित्त हिसाब से देते हुए छात्रों के विद्यालय भोजन तथा वस्त्र में हो और विद्यालयों के सामुदायिक जीवन के विकास में होना चाहिये। उसे सरकारी नहीं मानना चाहिये और खजाने में जमा नहीं होना चाहिये।

(घ) जिस टोली की राय में यह बहुत ही आवश्यक है कि बुनियादी शिक्षण संस्थाओं के मूल्यांकन पुरानी ढंग की परीक्षाओं से न होकर शिक्षण संस्थाओं में सत्ता चलने वाले स्वयं छात्रों और शिक्षकों के अपने मूल्यांकन के द्वारा होने चाहिये। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए टोली की अभी की सिफारिश यह है कि शिक्षा सम्पूण करने के प्रमाण पत्र देन में ५० प्रतिशत अंक भीतरी मूल्यांकन के आधार पर दिये जाय और ५० प्रतिशत अंक बाहरी किसी केन्द्रीय सरक्षण द्वारा चुन गये प्रश्न पत्रों के भीतरी के आधार पर।

(ङ) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विस्तार सेवा का काम (Extension Service Work) छात्रों स्कूलों के लिये चल रहा है। टोली की राय है कि प्रारम्भिक विद्यालयों के लिये भी अंशे विस्तार सेवा-काम बाध्यता माना जाय। विभिन्न अवस्था-स्तरों की दृष्टि से विस्तार सेवा काम की विभिन्न आवायें सीनियर तथा जूनियर रह सकती हैं।

(च) अभी राज्य सरकारें ६ से ११ वर्ष तक की उम्र में लिये प्राथमिक शिक्षण की योजना चला रही हैं और चलाने वाली हैं। संविधान के अनुसार १४ वर्ष तक की शिक्षा की व्यवस्था उनके लिये गारंटी है। टोली सिफारिश करती है कि अपने-अपने राज्यों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक राज्य प्रशासन अपना अंक लक्ष्य निर्धारित करे कि वह किस

निश्चित अवधि के भीतर में १२ से १४ वर्ष तक की शिक्षा सबों में लिये अमलबद्ध करायेगा।

(छ) जिस अध्ययन टोली की यह राय है कि न केवल ६ से १४ वर्षों तक की उम्र का सार्वजनिक बुनियादी शिक्षण, बल्कि सारी जनता की समग्र जीवन क्यारी शिक्षा की प्रति तीव्रतर और गतिशील होगी यदि ग्राम दान ग्राम-स्वराज्य, ग्राम सन्तर आदि से जो वातावरण सारे देश में अत्यन्त हान पाया है उस से पूरा लाभ उठाया जाय।

गायदानी गांव में तो ग्राम निर्माण के कार्यक्रम में गांव की शिक्षा का भार ग्राम लेया है। चित्तु नहा अभी ग्रामदान नहीं भी हुआ हो या ग्राम स्वराज्य की योजना पूरी कायास्त्रि नहीं भी हा रही हो, वहा रचनात्मक प्रवृत्ति के बगिया के द्वारा प्रेरणा दी जा सकती है कि गांव अपने निजी सत्त्व से तथा गांव की निधि अब जनशक्ति के अग्रगण्य से प्राप्त शिक्षा का भार अपने बंधों पर उठाव। धैर्य करने से ही राष्ट्रीय शिक्षा केवल साक्षरता अधिकारों पर निर्भर नहा रहेंगे बल्कि वास्तविक स्वावलंबन के आधार पर खड़ी हो सकेगी। राज्य शासनों के द्वारा जो भी काम जिस शिक्षा में हो रहे होंगे, भुनकी प्रति तीव्र ध्यान सत्त्वों और ग्राम प्रयत्नों के द्वारा होने की सम्भावना है।

साहित्य निर्माण समिति की रिपोर्ट

(संयोजक- श्री जगन्नाथ दवे।)

समिति चरित्र संस्था १५

समिति न नयी तालीम साहित्य निर्माण कार्य के लिये जो आवश्यक साहित्य की जरूरत है उस पर विचार किया। क्योंकि नयी तालीम जगत में राष्ट्र में पूर्ण बुनियादी और बुनियादी शिक्षा का अधिक और व्यापक प्रचल हुआ है जिसलिये अनेक दो प्रकार की शिक्षा का साहित्य निर्माण होना ज्यादा आवश्यक है।

साहित्य में तीन प्रकार की श्रेणियां रती जाती हैं।

१ बालकापयोगी, २ शिक्षक-उपयोगी, ३ सामान्य उपयोगी।

अपरोक्त साहित्य धेणियो के अन्तर्गत कौन कौन से साहित्य निर्माण करना चाहिये इसका समिति ने विचार किया और प्रथम पूर्व बुनियादी विभाग के लिये निम्न विभाग रखे गये ।

१. बालकोपयोगी

अ. बच्चों के ज्ञान और खेल के विषय में ।

आ कहानियां नाटक गीतिकाव्यें

अि दैनिक जीवन की सामान्य चर्चायें

२. शिक्षकोपयोगी

अ. बालकों की शिक्षण और विकास की जलग-अलग पद्धतियां हैं । उनका परिशीलन करके शिक्षकों के लिये पूर्व बुनियादी शिक्षण और कार्य के संबंध में पुस्तकें लिखनी होंगी ।

आ पूर्व बुनियादी शिक्षा ने सामन ही बड़े बच्चों तक नहीं हो और उनका उपयोग कंसा किया जाय अतः बच्चे के पुस्तकें निर्माण की जावे ।

१ लोकानुयोगी-साहित्य निर्माण के लिये सामान्य कार्य का विवरण और चित्रण बिना शास्त्रीय शब्दों के लोक भाषा भाषा में होना चाहिये ।

पूर्व बुनियादी साहित्य के निर्माता कौन हों ?

१. बालवाडी के शिक्षक ।

२. बालवाडी के प्रशिक्षण विद्यालयों के अध्यापक और प्रशिक्षार्थी ।

३. बालवाडी मध्य में रह लेनेवाले सिद्ध हस्त साहित्यकार ।

बुनियादी साधन

१. बालकोपयोगी-

अ. बालकोपयोगी साहित्य निर्माण हेतु भिन्न-भिन्न बरतों के लिये अब उनके अनुरूप भिन्न विषयों का समावेश होना चाहिये । जैसे-

- (१) सराजी, (२) आहार, (३) आरोग्य, (४) प्रकृति विरोधन,

आ. बुनियादी साहित्य में लोककथायें लोक नाटक, गीत, आदि का संग्रह-आ स्वयं बच्चों ने निर्माण किये हों ।

अि. बुनियादी साहित्य निर्माण में बालक जो पत्रिकाओं चलाते हैं या निकालते हैं उनका भी विशेष स्थान है । उसमें से भी चुनी हुई सुन्दर कृतियों का समावेश साहित्य में होना चाहिये ।

ओ. घरेलू वैज्ञानिक जानकारी का जीवन की वस्तुओं द्वारा और बाहर जो विज्ञान पग पग पर उपरिष्ठ है, उसका सूक्ष्म अवलोकन कर अब उसकी गहराइयों को खोजबोल कर सरल वर्णन का साहित्य निर्माण होना चाहिये ।

अु. दैनिक, सामाजिक प्रश्न और उनसे संबंध रखनेवाली अन्य विभिन्न वैज्ञानिक पारिभाषिक ज्ञान का संकलन और उनका विषय के अनुसार साहित्य निर्माण करना ।

मुक्त साहित्य निर्माण करने के लिये यह ध्यान रखना आवश्यक होगा कि वे बालकों के स्वयं प्रेरणा देनेवाला हो और बालक स्वयं चार से आगे पढ़े ।

अिस्त प्रकार की अपलब्ध पुस्तकों को विभिन्न विषयोंवार संग्रहित किया जावे और उनका पुस्तकालय बनाया जावे ताकि बालक समय-समय पर स्वयं ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

२. शिक्षकोपयोगी-

अिस्त धेणी में तीन प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है ।

अ. प्रवृत्तियों के विषय में-जैसे-बेटी, बहन विद्या आद्यो

१. सामाजिक जीवन, सेवा आदि ।

२. आरोग्य सफाई ।

३. सांस्कृतिक कार्य-जित्वादि ।

आ. शिक्षकों के द्वारा तैयार की हुई-समवाय पाठ तथा मोट्ट और रोखनियों पर आधारित सब विषयों पर

१. भाषा, साहित्य ।

२. गणित ।

३. विज्ञान ।

४. समाज-शास्त्र ।

- ५ कला ।
- ६ संगीत आदि ।
- ३ शालाओं के संचालन संबंधी विषयों का विवरण जैसे,
 - १ वाचिक, मासिक, साप्ताहिक योजनाएँ ।
 - २ काम और उसके समवाय पाठ की योजना ।
 - ३ शाला की जाव का विवरण ।
 - ४ बच्चों के परीक्षण का विवरण ।
 - ५ विन, चार्ट्स द्वारा और सापनों द्वारा बँसा शिक्षण कैसे ।
 - ६ प्रवास और औपनिषिक यात्रा संयोजन बँसा हुआ ।
 - ७ शाला प्रदक्षिणी ।
 - ८ शाला पुस्तकालय ।
 - ९ बोधहर का तादता और सामूहिक रखोभी ।

औ नयी तालीम के दृष्टिकोण से मनोवैज्ञानिक साहित्य निर्माण ।

औ बुनियादी शाला के लिख साहित्य कैसे निर्माण करना जिसके बारे में शिक्षकों के लिख मागदमा पुस्तिका ।

औ अर्ध त्रैमासिक या मासिक का संगठन जिसमें प्रत्येक जो काम होता है उसका पूर्ण विवरण प्रकाशित किया जाय ।

लोकोपयोगी साहित्य

अुत्तर बुनियादी शिक्षा के लिख सचित्र और सुंदर ढंग से पुनर् अव शास्त्रीय परिभाषाओं से रहित अर्ध सुपाठ्य साहित्य निर्माण होना आवश्यक है । साहित्य निर्माण कौन कर सकता है ?

१ बालक-बालकों के भिन्न विषयों पर समय-समय-पर लिखे हुए लेखों का संग्रह कर सचित्र किताबें बनाना ताकि वे अर्ध बालकों के लिखे अपलब्ध रहे । अनिमित्त से चुनी हुई पुस्तकों का प्रकृ प्रस वडा

टाजीम और छीनो टाजीम का अनुपमाग करने १००-२०० पुस्तकें निकाल कर क्षेत्रीय साहित्य बन सकता है ।

- २ बुनियादी शाला के शिक्षक
- ३ प्रशिक्षण विद्यालय के प्रशिक्षणार्थी और अध्यापक,
- ४ सिद्धहस्त साहित्यकार जो बुनियादी शिक्षा में रुचि रखते हैं ।

‘मुद्राण’

साहित्य निर्माण के बारे में समिति ने सोचा कि १ पर्याप्त राज्य में अर्ध समिति हो जा जिस कार्य का संगठन करे और अनुसंधान परीक्षण करने प्रकाशित करे ।

२ विभिन्न राज्यों में जो साहित्य प्रकाशित किया जाता है उसका परिचय हिंदुस्तानी तालीमी सच की नयी तालीम पत्रिका में होना चाहिये ताकि सब अनुसंधान लाभ ल सके । प्रकाशित साहित्य सच की भेजना आवश्यक है ।

३ लेखकों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों के प्रकाशन में अगर कुछ कठिनाधिया हो तो नेशनल अिस्टी-ट्यूट आफ बेसिक अज्युकेशन या हिन्दुस्तानी तालीमी सच जैसी संस्थाओं की सहायता ली जाय ।

४ बुनियादी शिक्षा के विभिन्न स्थान से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं की सूची बनवाने पर नयी तालीम में प्रकाशित की जाय ।

५ नेशनल अिस्टीट्यूट आफ बेसिक-ने जो पुस्तक सूची बनायी है उसका वितरण ठीक से हो ।

अगले अधिवेशन से विभिन्न राज्य और संस्थाओं द्वारा प्रकाशित नयी तालीम की और नयी तालीम के अनुपयोगी विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों की प्रदक्षिणी लगायी जावे ।

पारिवारिक समाचार ।

पण्डितजी का शुभागमन

गत १८ अप्रैल भारत के प्रधान मंत्री प० जवाहरलालजी सेवासाम पधारे । पहले वे बापू कुटी गये । घूमकर आश्रम देखा और आश्रमवासियों से बातचीत की । उसके बाद वे महादेव भाओ भवन के हॉल में पहुँचे जहाँ सेवासाम के २० गाँव शालाओं के शिक्षक, बच्चे व ग्रामवासियों के प्रतिनिधि और हिन्दुस्तानी तालीम संघ के कार्यकर्ता गण और विद्यार्थी उन्हें स्वागत करने के अिरुद्धे हुअे थे । भजन और स्वागत भाषण के बाद बच्चों को भूदेय करके मुन्हाने हो शब्द बहे । जाते समय अपने हाथों से बच्चों की फूल बाटे । बच्चों ने "बाबा नेहरू की जय, प्यारे राघव की जय" संगीत के साथ भुन्हें विदा दी ।

राजपुरा नञी तालीम सम्मेलन

तारीख २३ से २७ अप्रैल तक राजपुरा (पञ्जाब) में १३ वें अखिल भारत नञी तालीम का अधिवेशन रहा । पहले दो दिन शिक्षक सम्मेलन रहा । जिस सम्मेलन के चार अधिवेशन हुअे । जिस सम्मेलन की अेरु विशेषता यह रही कि पञ्जाब की प्राथमिक और दुनियादी शालाओं के शिक्षक ही जिन चारों अधिवेशन के अध्यक्ष रहे । शिक्षक सम्मेलन में चर्चा के लिये नीचे लिखे चार विषय चुने गये थे ।

१. नञी तालीम का स्वरूप और ध्येय ।

२. नञी तालीम की पद्धति ।

३. नञी तालीम में व्यवस्था या सगठन

४. दुनियादी शालाओं के शिक्षकों की समस्याओं और कठिनायियाँ ।

ता० २३-४-५९ शाम को पञ्जाब के मुख्य मंत्री श्री प्रतापसिंह कैरो ने नञी तालीम प्रदर्शनी का अुद्घाटन किया । ता० २५, २६, २७ अप्रैल सम्मेलन का खुला अधिवेशन रहा । सम्मेलन के आखिरी दिन पूज्य विनोबा अपनी पदयात्रा में राजपुरा पहुँचे । सुबह तथा तीसरे प्रहर दो प्रवचन, सभापति का भाषण और सम्मेलन के निर्णय जिस अक में प्रकाशित किये गये हैं । सम्मेलन का पूर्ण विवरण आगामी अक में प्रकाशित किया जायगा ।

शुभ विवाह प्रसंग

मञी माह में सेवासाम में तालीमी संघ का बहुत छोटा परिवार है । लेकिन जिस छोटें से परिवार में तीन बहुत आनन्द के प्रसंग हुअे । ता० ९-५-५९ को तालीमी संघ प्राप्तन छात्रा कु० मुन्गोचना वा मेसूर के श्री भादयम के साथ शुभ विवाह हुआ ।

११-५-५९ को तालीमी संघ ग्राम आरोग्य विभाग के कार्यकर्ता श्री मेघनाथ मट्टाचार्य अक नाना भाओ के साथ जापान की कु० फिलिस ओमतो का शुभ विवाह हुआ । जिस दम्पति ने अपने सम्मिलित जीवन से भारत में ग्राम आरोग्य का काम करने का प्रत लिया है ।

ता० १३ को तालीमी संघ के कार्यकर्ता श्री नारायण म्हुस्कर के साथ अल्लोपुर गाँव की कु० वत्सला बाघमारे का शुभ विवाह हुआ । श्री नारायण भाओ अञी सेवासाम सघन क्षेत्र में ग्राम शिक्षक का पाम कर रहे हैं ।

नयी तालीम

“नयी तालीम” जून १९५९ : अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
१.	ग्रहचर्य की शिक्षा	—रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३४७
२.	आत्मिक शिक्षा	—गांधीजी	३४९
३.	तेरहवा नयी तालीम सम्मेलन, राजपुरा— अध्ययन गोष्ठियों के प्रतिवेदन	—	३५०
राज्यों में बुनियादी शिक्षा की प्रगति			
४.	आंध्र प्रदेश	—	३५३
५.	आसाम राज्य	—	३५४
६.	बुड़ीसा राज्य	—	३५६
७.	झुत्तर प्रदेश	—	३६०
८.	पंजाब राज्य	—	३६५
९.	बंबई राज्य	—	३६७
१०.	बिहार राज्य	—	३७०
११.	नयी तालीम की दिशा में बिहार में गैर-सरकारी प्रयत्न	—	३७५
१२.	अखिल भारत नयी तालीम सम्मेलन, राजपुरा	—मार्जरी साभित्स	३७७

विशेष सूचना

जैसे कि “नयी तालीम” के विषयों को अग्रे में सूचित किया गया है, माह जुलाई १९५९ से नयी तालीम का साक्षरता खरा चार रुपये होना । कामज की महंगाई से और छपाई खर्च के बढ़ने से धन में यह वृद्धि करना लाजमी हो गया है । माह जुलाई से जो “नयी तालीम” के ग्राहक बनना चाहें धन से अनुरोध है कि वे साक्षरता खरा चार रुपये भेजने की कृपा करें ।

नई तालीम

(हिन्दुस्तानी तालीमी सघ की मासिक पत्रिका)

वर्ष ७]

जून १९५९

[अंक १२

ब्रह्मचर्य की शिक्षा

अस ससार में असी को धर्म कहा जा सकता है जो सब विषमताओं के बीच में अेकता स्थापन करता है, सघर्षों के बीच में शान्ति लाता है और सब विच्छेदों में मिलन का सेतु बनता है। धर्म के अन्दर समग्र मनुष्यत्व का समावेश होता है। मनुष्य में छोटा बड़ा अन्दर बाहर सब कुछ जब समतोल होता है तभी धर्म का पालन होता है। अिससे जब मनुष्य विच्छिन्न होता है तो सत्य से स्थलित होता है। सौन्दर्य से भ्रष्ट होता है। भारत के धर्म का यही सनातन आदर्श है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ्य, वानप्रस्थ आदि सब आश्रम धर्म को जीवन में ससार में सर्व प्रकार से सार्थक करने के लिये सोपान हैं। धर्म ससार के कोअी आशिक प्रयोजन की सिद्धि के लिये नहीं है, बल्कि सारा ससार ही कर्म साधना के लिये है। अिस प्रकार धर्म प्राचीन भारत में गृहस्थजीवन में, गृह धर्म के रूप से, राज्य चालना में राजधर्म के रूप से, भारत के समग्र समाज को अक सार्थकता प्रदान करता था।

अिसीलिये प्राचीन भारत न शिक्षा की अवधि का नाम ब्रह्मचर्य रखा था। अुस समय भारत जानता था कि ब्रह्म प्राप्ति के द्वारा मनुष्यत्व प्राप्ति ही शिक्षा है। अिस शिक्षा के बिना न कोअी गृहस्थ बन सकता है और न राज्य चालन कर सकता है। क्योंकि भारत का लक्ष्य था ब्रह्म को पाना। राज्य के सब कर्मों के द्वारा, सब आश्रमों के द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति हो। अिसलिये अेक ब्रह्मचर्य ने सिचा दूसरी कोअी शिक्षा भारत की साधना के लिये अनुकूल ही नहीं थी।

शिक्षा के लिये आज भी हमें वन की आवश्यकता है और गुरु गृह की भी। वन हमारा सजीव निवास स्थान है, और गुरु है हृदयवान शिक्षक। आज भी बालक-बालिकाओं को अिसी प्रकार वन में और गुरु गृह में ब्रह्मचर्य पालन के द्वारा शिक्षा ग्रहण करना होगा। समय के परिवर्तन से हमारी परिस्थितियों में नितन ही नये न

परिवर्तन हो लेकिन शिक्षा के जिस चिरतन नियम की उपयोगिता में कोओ परिवर्तन नहीं हो सकता है, यथार्थ यह नियम मनुष्य चरित्र के नित्य सत्य के ऊपर प्रतिष्ठित है ।

असलिये अगर आदर्श विद्यालय की स्थापना करनी है तो घनी वस्ती से दूर खुले आकाश के नीचे विस्तृत मैदान में और पेड़ों के बीच में जिसकी व्यवस्था होनी चाहिये । वहाँ अध्यापक गण अकान्त में शान्त वातावरण में अध्ययन और अध्यापन करते रहेंगे । ज्ञान साधना की ओर यज्ञ भूमि में विद्यार्थी बढ़ेंगे और अनजाने ही ज्ञान प्राप्ति करते रहेंगे ।

अगर सम्भव हो तो जिस विद्यालय के साथ खेती के लाभ कुछ जमीन रहना भी आवश्यक है । जिसी जमीन से विद्यालय का आवश्यक भोजन उत्पन्न होगा और विद्यार्थी जिस खेती काम में सहायता करेंगे । साथ ही एक गोशाला भी रहेगी विद्यार्थियों के सहयोग से गोपालन का काम चलेगा । जिस प्रकार विद्यार्थियों के साथ प्रकृति का संबंध सिर्फ भावना के आधार पर नहीं बरमे के आधार पर विकसित होता रहेगा ।

अनुकूल ऋतु में बड़े बड़े वृक्षों की छाया में विद्यार्थियों के वर्ग चलेगें । जिन वृक्षों की छाया में शिक्षकों के साथ चलते हुअे विद्यार्थी अपनी शिक्षा का अंश पूरा करेंगे । सध्या के अवकाश के समय विद्यार्थी शिक्षकों के साथ ग्रह नक्षत्रों का परिचय प्राप्त करेंगे, संगीत का अभ्यास करेंगें पुराने इतिहास की कहानिया सुनेगें ।

बालका की शिक्षा का स्थान असा होना चाहिये जहा प्रकृति के नियमों के अनुसार विश्व प्रकृति के साथ निकट संबंध रखते हुअे ब्रह्मचर्य का पालन करते हुअे गुरु के सहवास से वे सहज ही ज्ञान लाभ कर सकें । मनुष्य बनने की यही स्वाभाविक प्रक्रिया है । बहुत से विषयों को पठान से शिक्षा नहीं होती है मनुष्य बनने की प्रक्रिया दूसरी है । जहा अकान्त में तपश्चर्या चलती है, वही हम सीखते हैं । जहा लोकचक्षु के अंतराल में गोपन में त्याग होता है, जहा शिक्षक गण स्वयं ज्ञान की चर्चा में प्रवृत्त हैं वही छात्रों को विद्या का प्रत्यक्ष दर्शन होता है । जहा बाहर विश्व प्रकृति का आविर्भाव बाधा मुक्त है वही मन भी बाधामुक्त होकर विकसित होता है । जहा ब्रह्मचर्य की साधना, चारित्र्य, स्वस्थ और शालमवश रहता है, धर्म की शिक्षा भी वही सरल और स्वाभाविक होती है ।

आत्मिक शिक्षा

मैंने हृदय की शिक्षा को अर्थात् चरित्र के विकास को सदा प्रथम स्थान दिया है और उसका परिचय चाहे जिस बुद्धि में और जितने प्रचार के वातावरणों में पले हुये लड़के और लड़कियों को अल्पाधिक परिमाण में कराया जा सकता है। यह सोच कर मैं लड़को और लड़कियों के साथ रात-दिन पिता रूप से रहता था। चरित्र को मैंने अनुकी शिक्षा का आधार रूप माना था। बुनियाद मजबूत हो तो और बाते लड़के अवकाश मिलने पर दूसरों की सहायता लेकर या अपने आप सीख ले सकते हैं।

विद्यालयों के शरीर और मन के शिक्पण की अपेक्षा अनुकी आत्मा को शिक्षित करने में मुझे बहुत अधिक श्रम पड़ा। आत्मा का विकास कराने में मैंने धर्म की पोषियों का सहारा कम लिया था। मैं मानता था कि विद्यार्थियों को अपने-अपने धर्म के मूल तत्व जानने चाहिये और अपनी धर्म पुस्तकों का साधारण ज्ञान अगुह होना चाहिये। अगुह यह ज्ञान मिल जाय उसके लिये मैंने यथा शक्ति सुभीता कर दिया था। पर मैं उसे बुद्धि के विकास का अंग मानता हूँ। आत्म शिक्षण शिक्षा का एक स्वतन्त्र विषय है, यह बात मैंने टालस्टाय आश्रम के बालकों की शिक्षा प्रारम्भ करने के पहले ही समझ ली थी। आत्मा का विकास करने का अर्थ है चरित्र का गठन, श्रीश्वर का ज्ञान प्राप्त करना, आत्मज्ञान प्राप्त करना, यह ज्ञान प्राप्त करने में बालकों को बड़ी मदद की जरूरत है। और मैं यह मानता था कि अनुके बिना दूसरा ज्ञान व्यर्थ है, और हानिकारक भी हो सकता है।

आत्मिक शिक्षा कैसे दी जाय ? बालकों से भजन गवाता था, नीति की पुस्तकें पढ़कर सुनाता था। पर उससे सन्तोष न होता था। ज्यों-ज्यों अनु से संपर्क बढ़ता गया त्यों-त्यों मैंने देखा कि यह ज्ञान पोषियों द्वारा तो नहीं दिया जा सकता। शरीर की शिक्षा शरीर की कसरत से दी जा सकती है, दी जानी चाहिये। बुद्धि की बुद्धि की कसरत से। वैसे आत्मा की आत्मा की कसरत से। आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण से ही मिल सकती है। अतः युवकों की उपस्थिति हो या न हो, शिक्षक को सावधान रहना ही चाहिये। लका में बैठा हुआ शिक्षक अपने आचरण से अपने शिष्यों की आत्मा को हिला सकता है। मैं झूठ बोलता रहूँ और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने की कोशिश करूँ तो वह बेकार जायगी। डरपोक शिक्षक शिष्यों को सयम कैसे सिखा सकता है ? मैंने देखा कि मुझे अपने साथ रहनेवाले लड़के और लड़कियों के सामने पदार्थ पाठ रूप होकर रहना चाहिये। जिससे मेरे शिष्य मेरे शिष्यक बन गये। अपने लिये नहीं तो अनुके लिये मुझे मला होकर रहना चाहिये, यह मैंने समझा और कहना चाहिये कि टालस्टाय आश्रम का मेरा अधिकतर समय जिन युवकों और युवतियों का अहसानमद है।

—गांधीजी

अध्ययन गोष्ठियों के प्रतिवेदन

शिक्षक प्रशिक्षण गोष्ठी का प्रतिवेदन ।

(संयोजक:-दशरथ अग्रवाल सिन्हा)

शिक्षक-प्रशिक्षण गोष्ठी की दो बैठकें २६-४-५९ के अथवा २७-४-५९ के पूरा होने में हुई। दोनों बैठकों में सम्मेलन के प्रतिनिधि तथा स्थानीय शिक्षकों ने काफी सहाय्य में भाग लिया। सर्व प्रथम विभिन्न राज्यों से आये हुए प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्याओं को व्यक्त किया, जिन पर गोष्ठी ने विचार-विमर्श हुआ। गोष्ठी के निष्कर्ष निम्नलिखित प्रकार रहे:-

१. विभिन्न राज्यों में शिक्षक प्रशिक्षण की अनेक समस्याएँ हैं, जिनके स्वरूप तथा शिक्षाक्रम में अंतरूपता नहीं है। विभिन्न राज्यों की अपनी विशेष समस्याएँ हैं, फिर भी कोशिश यह होनी चाहिये कि सभी प्रशिक्षण सस्थाओं में प्रशिक्षण के मूलभूत सिद्धान्तों, और कार्यक्रमों में अंतरूपता अवश्य आ जाय। जिस सुझाव पर हिन्दुस्तानी शालीमी तथा विचार करने और प्रशिक्षण विद्यालयों के शिक्षाक्रमों में अंतरूपता लाने के लिये कदम उठावे।

२. भारत जैसे कृषि-प्रधान देश के लिये कृषि की प्रारम्भिक शिक्षा में कृषि का स्थान प्रमुख है। अतिलिये शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में भी कृषि बुधोग का प्रधान स्थान रहना चाहिये। प्रत्येक प्रशिक्षण विद्यालय में कृषि बुधोग के अभ्यास के लिये चारों ओर छात्र शिक्षकों पर कम-से-कम पांच एकड़ भूमि समुचित सिंचाई की व्यवस्था के साथ रहना आवश्यक है। कृषि के अतिरिक्त अन्य सहायक बुधोग का भी उचित स्थान रखना चाहिये।

३. शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों का आवासीय (रिसेडेंस) होना आवश्यक है। शिक्षक और प्रशिक्षार्थी यदि साथ रहे, तो पाठ्यक्रम का अभ्यास तथा सामुदायिक जीवन के लिये पर्याप्त समय मिलेगा।

४. सामुदायिक जीवन केवल विद्यालय तक सीमित न हो, बल्कि स्थानीय गांवों को भी अपने समुदाय के भीतर माना जाय। अपेक्षा की जाती है कि दो वर्षों के इस प्रशिक्षण के बाद शिक्षक प्रारम्भिक आठ वर्षों तक के छात्रों को समुचित शिक्षा देने के योग्य हो सकते हैं।

५. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बुधोगों की शिक्षा समुचित रूप से नहीं दी जा रही है। बुधोग में अपेक्षित कुशलता लाने के लिये प्रतिदिन लगभग ढाई घंटे अभ्यास होना आवश्यक है। यह सभी सम्भव होगा जब सैद्धान्तिक विषयों में मनोविज्ञान, विषय विधि, शिक्षा-सिद्धान्त और शालीय व्यवस्था ही आवश्यक रखे जायें।

प्रशिक्षण विद्यालयों में अभ्यासशाला (ट्रेनिंग स्कूल) का रहना अत्यन्त आवश्यक है।

६. निम्न प्रशिक्षण विद्यालयों (जूनियर ट्रेनिंग स्कूलों) में प्रशिक्षार्थियों की भर्ती के प्रश्न पर विचार किया गया। यह निश्चय हुआ कि मैट्रिक स्टैंडर्ड के या उसके समकक्ष विद्यार्थी ही भरती किये जाय। यदि पोस्ट बेसिक अतीर्ण छात्र भरती होना चाहें तो उन्हें प्राथमिकता दी जाये। जिन विशेष स्थानों या परिस्थितियों में अतिनी योग्यता के भी शिक्षक न मिल सके, वहाँ आठवें ग्रेड अतीर्ण छात्र लिये जा सकते हैं। यहाँ भी सीनियर बेसिक स्कूल के सफल छात्रों की भर्ती में प्राथमिकता दी जाय। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में केवल स्नातक ही भर्ती किये जायें।

७. प्रशिक्षण विद्यालयों में जैसे ही शिक्षक बहाल किये जायें जिन्हें कम-से-कम तीन वर्षों के शिक्षण का अनुभव प्राप्त हो और जिन्हें बुधोग की भी आवश्यक योग्यता प्राप्त हो।

८. प्रशिक्षण विद्यालयों में समीक्षा (सेसेमेट) और मूल्यांकन (जिमायुमेन्ट) के प्रश्न पर विचार किया गया। गोष्ठी का विचार है कि समीक्षा और

मुत्पादन को शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यालयों में अनिवार्य रूप में रखा जाय। यह निर्णय हुआ कि सभी छात्र और परीक्षा की माग्यता प्रशिक्षण विद्यालयों में अभी पचास-गचास प्रतिशत रहे। श्रमका स्थान प्रशिक्षण विद्यालय के सभी विद्यार्थी-छात्रों में रहे जैसे कि सभी पाठ्य-विषय, बुध्दोद्योग, सामुदायिक जीवन तथा व्यावहारिक शिक्षण। "समृद्धि दश" में मुत्पादन होने के लिये स्थानीय तथा विभागीय आवश्यकताओं का ध्यान रखने लगे प्रत्येक विद्यालय के लिये जाच समिति की नियुक्ति आवश्यक है।

१. विभिन्न राज्यों में प्रशिक्षण महाविद्यालय चलाये जा रहे हैं। त्रिमस्र कुछ अंगे महाविद्यालय हैं जिन्हें विश्व-विद्यालयों से अभी तक माग्यता नहीं मिली है। शिक्षा विभाग अंसी कोशिश करे त्रिमस्र अत्र महाविद्यालयों का विश्वविद्यालयों की स्वीकृति लीज प्राप्त हो जाय।

१०. कुछ राज्यों में हाजीम्बूला व साथ प्रशिक्षण का जुटे रहते हैं। विशेषतः अंसी बान महिला विद्यालयों में देखा जाता है। प्रशिक्षण विद्यालयों की अपनी विशेष आवश्यकताओं हैं। श्रमका वातावरण भी मिश्र होना चाहिये। दयासम्भव हाजीम्बूला के साथ प्रशिक्षण विद्यालय न रहे जायें।

**बुनियादी शिक्षा में शोध-कार्य
(समीक्षा-धी प्रभातचन्द्र शर्मा)**

सुझाव

१-मण्डली द्वारा विचार विमर्श के पदचात् बुनियादी शिक्षा में अनुसंधान के निम्न बुद्धिपूर्व निर्धारित किये गये :-

(क) जनता के मन में बुनियादी शिक्षा सबंधी विद्वान् तथा अभ्यास के प्रति भ्रम निवारण करना,

(ख) बुनियादी शिक्षा को कार्यान्वित करने में व्यावहारिक कठिनायियों का समाधान करना

(ग) बुनियादी शिक्षण-पद्धति तथा शिक्षण विधियाँ में सुधार करना,

२-बुनियादी शिक्षा में अनुसंधान का कार्य जिस समय बुनियादी शिक्षा के राष्ट्रीय संस्थान (भारत सरकार नयी दिल्ली, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बेसिक एजुकेशन), कुछ विश्वविद्यालयों, स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा अन्य सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं में अनुसंधान का कार्य करने के लिये अप्रस्थित साधन पर्याप्त नहीं है। अतः जिस मण्डली का यह मुताव है कि प्रत्येक राज्य सरकार कम से कम अपने अंश स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय को अंश अत्यंत अनुसंधान संस्थान बनायें। मण्डली का मत है बहुत से प्रशिक्षण विद्यालयों में अब तक भी अभ्यास शालाओं की बुनियाद प्रस्थापित नहीं है। यदि व्यावहारिक समस्याओं के संबंध में अनुसंधान करना हा तो जिस कमी को तुरन्त दूर करना चाहिये।

३-मण्डली का यह मत है कि बुनियादी प्रशिक्षण आचार्यों की एक सलाहकार समिति बनायी जाय। यह समिति राज्य के अनुसंधान संस्थान के छात्र कार्यक्रम में सलाह देगी तथा भिन्न भिन्न अनुसंधानों की प्राथमिकता को निर्दिष्ट करेगी।

४- बुनियादी शिक्षा सम्बन्धी शोध की समस्याओं पर विस्तार पूर्वक विचार विनिमय के पदचात् मण्डली का यह मत है कि आरम्भ में शोध कार्य का व्यावहारिक समस्याओं तक सीमित रखना चाहिये।

- (१) बुनियादी शिक्षा की प्रगति में बाधक समस्यायें,
- (२) पाठ्यक्रम के निर्माण सबन्धी समस्यायें,
- (३) बुनियादी शिक्षाविधियों में सुधार,
- (४) अध्यापकों का चुनाव तथा अध्यापक प्रशिक्षण में सुधार,
- (५) बुनियादी शालाओं पर प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण का प्रभाव,
- (६) बुनियादी शिक्षा का स्थानीय समाज पर प्रभाव,
- (७) बुनियादी शिक्षा में बुध्दोद्योग के बुन्नादक तथा औद्योगिक पक्ष,
- (८) बुनियादी शिक्षण की समीक्षा तथा मूल्यांकन

पूर्व-बुनियादी शिक्षा
(संयोजिका-धोमती शांता नारुलकर)

चूँकि नवी तालीम पूर्व-बुनियादी से प्रौढ शिक्षा तक की सतत प्रक्रिया है, जिसलिए पूर्व-बुनियादी शिक्षा की ओर अतना ही ध्यान दिया जाना चाहिये जितना कि किसी बुनियादी या अन्तर बुनियादी सिग्मा क्रम को दिया जाता है।

जिस प्रकार पूर्व-बुनियादी शिक्षा और किण्डरगार्टन, मोण्टीसोरी चालू प्रारम्भिक शिक्षा विधियों के साथ न के फर्क है उसी प्रकार अन्तर्गत अङ्क में भी भेद है। जिन बातों को दृष्टि में रखने हों वह मण्डली निम्न मुद्दायें पेश करती हैं।

[१] पूर्व बुनियादी शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किये जाने चाहिये।

[२] पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण की अवधि अन्तर्गत के लिये जो चालू नर्सरी की विधियों में दृष्ट है, कम से कम ६ मास की होनी चाहिये।

[३] जहाँ पर पूर्व बुनियादी प्रशिक्षण का काम चल रहा है वहाँ पर प्रशिक्षण की अवधि २ वर्षों की हो। लेकिन नवी आरम्भ होने वाली संस्थाओं में यह अवधि एक वर्ष की हो सकती है। किन्तु उसके बाद गाव के पूर्व बुनियादी स्कूल में एक वर्ष का प्रत्यक्ष कार्य का अनुभव आवश्यक है।

[४] जहाँ तक सम्भव हो पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गाव में ही स्थित हो।

[५] पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण के चुनाव और प्रवेश में महिला अध्यापिकाओं को प्राथमिकता दी जावे।

[६] चुनाव की न्यूनतम योग्यता अन्तर्गत बुनियादी अथवा हाजी स्कूल हो। अगर जिस योग्यता के व्यक्ति मिलने में कठिनाई हो तो-सीनियर बेसिक परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्तियों को लिया जावे।

[७] पूर्व-बुनियादी के शिक्षा के साधनों का चुनाव करते समय स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखा जावे।

[८] मुफ्त दूध एवं दोपहर का भोजन बच्चों को दिया जाना पूर्व-बुनियादी पाठ्यक्रम का आवश्यक अंग हो।

[९] प्रत्येक राज्य सरकार कम से कम पूर्व-बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र अनिवार्य रूप से चलावे। यह केन्द्र अलग से चलाये जायें अथवा विमी चालू प्रशिक्षण संस्थाओं के साथ जहाँ तक सम्भव हो महिला संस्थाओं के साथ।

[१०] सरकार अन्तर्गत सार्वजनिक संस्थाओं को जो पूर्व बुनियादी शिक्षा का काम कर रही है अनुदान दे कर प्रोत्साहन करे। यह चर्चा मण्डली जनता से भी अनुरोध करती है कि वह भी जिस काम में रुचि ले तथा जिन संस्थाओं के साथ पूरा सहयोग करे।

[११] पूर्व बुनियादी शिक्षा के संबंध में शोध की बड़ी आवश्यकता है। जिसलिए भारत सरकार जिस काम को भी अपने हाथ में ले।

(अध्ययन मंडली में "शिक्षा तथा शांति" पर हुई चर्चा का प्रतिवेदन अगले अंक में प्रस्तुत किया जायगा।)

आंध्र प्रदेश में बुनियादी शिक्षा की प्रगति (१९५८-५९)

सामान्य परिचय

अस अेक साल की अवधि में आंध्र देश में बुनियादी शिक्षा के सभी पहलुओं में काफी प्रगति हुओी । साल के प्रारंभ में बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय, बुनियादी विद्यालय तथा पूर्व बुनियादी विद्यालयों की सख्या क्रमशः ३४, १८६९ और ५ थी । साल के अंत में इनकी सख्या क्रमशः ४५, २३२१ और ९ हुओी । अस साल में तेलंगाना के सभी प्राथमिक स्कूलों में बुनियादी शिक्षा का ढाचा शुरू करन का आदेश सरकार ने दिया । बुनियादी शिक्षा पर सलाह देने के लिये अेक सलाहकार मंडल का भी निर्माण हुआ ।

पूर्व बुनियादी शिक्षा

पूर्व बुनियादी शाला के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिये पेंटपाडु में अेक प्रशिक्षण विद्यालय चलाया जा रहा है । अस के प्रशिक्षण सत्र का प्राठमक्रम भी पूरे तौर से तैयार किया गया है । अस साल में चार नये पूर्व-बुनियादी विद्यालय खोले गये हैं ।

जूनियर और सीनियर बुनियादी शालाओं

अस साल नये ८४ बुनियादी विद्यालय खोले गये और ३६२ प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी विद्यालयों के रूप में बदल दिया गया । प्रशिक्षण विद्यालय

तेलंगाना प्रदेश में पाँच नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोले गये । पाँच शासकीय प्रशिक्षण विद्यालयों को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयों में रूपान्तरित किया गया । महिला

शिक्षा योजना के अन्तर्गत तीन नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोले गये जिनमें गरीब औरतो को प्रवेश देकर शिक्षक प्रशिक्षण और सामान्य शिक्षण की शिक्षा दी गयी । आर्थिक सहायता पानेवाले अेब और प्रशिक्षण विद्यालय का भी प्रारंभ हुआ । आंध्र प्रदेश में प्रशिक्षण की अवधि दो साल रखी गयी है । प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण तेलंगाना प्रदेश में प्रशिक्षण की अवधि अेक साल ही रखी है । भविष्य में वहाँ भी वह अवधि दो साल की रहेगी ।

स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय

पेंटपाडु में अेक स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय है । प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों की दो टोलियों को असमें पुन प्रशिक्षण दिया जाता है । असकी अवधि तीन माह की है । अलावा असके यह विद्यालय आंध्र और वेकटेदवर विश्वविद्यालयों के नियंत्रण में चलने वाले शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी ओडि विद्यार्थियों को अेक माह का सामुदायिक प्रशिक्षण भी देता है ।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का पुनप्रशिक्षण

आंध्र प्रदेश के प्राथमिक स्कूलों में काम करने वाले मौजूदा अध्यापकों को पुन प्रशिक्षण देने की पूरी सुविधा है । तीन या अुससे शघिक विभागवाले हर किसी प्रशिक्षण विद्यालय का अेक विभाग पुन प्रशिक्षण के लिये ही निर्धारित है । टोली के बाद टोली अस विभाग में पुन प्रशिक्षण पाती है ।

आसाम राज्य में बुनियादी शिक्षा

संक्षिप्त विवरण

सभी प्राथमिक शालाओं को बुनियादी शालाओं में परिवर्तित करने की नीति सरकार ने अपनायी है। सभी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय बुनियादी प्रशिक्षण संस्थाओं में रूपांतरित किये गये हैं। राज्य में कुल २१ प्रशिक्षण विद्यालय हैं जिनमें अंक स्नातकोत्तर प्रशिक्षणाधियों के लिये है। अपर्युक्त २१ प्रशिक्षण विद्यालयों में १२ विद्यालय आसाम राज्य बुनियादी शिक्षा मंडल के अंतर्गत और दोप विद्यालयों का संचालन राज्य सरकार करती है। नौ शासकीय प्रशिक्षण विद्यालयों में तीन पहाड़ी जिलाओं में हैं जिनमें दो केवल विद्यापिनिया के लिये हैं। जिस साल अंक और प्रशिक्षण विद्यालय खोला जा रहा है। काम प्रगति के पथ पर है।

२१ प्रशिक्षण विद्यालयों में कुल १४०० शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षित शिक्षकों की मांग की पूर्ति के लिये आज के मौजूदा सुभीते अपर्याप्त है। राज्य भर में कुल शिक्षक २२८३३ हैं। अनुमति से सिर्फ ७९९२ प्रशिक्षित शिक्षक हैं। शिक्षकों की अंक बड़ी संख्या की अनिवार्यता योग्यता माध्यमिक उत्तीर्णता ही है अतः बुनियादी शिक्षा के सभी पहलुओं की जानकारी देने के लिये अंक साल का प्रशिक्षण अनेक काफी नहीं होगा। सभी प्रशिक्षण विद्यालय सामाजिक जीवन पर आधारित तथा आवासीय हैं।

बुनाबी तथा बागवानी जिन प्रशिक्षण विद्यालयों के मुख्य अंग हैं। बेंत और बांस के काम, रेशम के अंग्रेज, मधुमक्खी पालन, गन्ने का काम आदि पूरक अंग्रेजों के रूप में शामिल किये गये हैं।

जिन प्रशिक्षण विद्यालयों के अलावा बुनियादी शिक्षा योजना के अंतर्गत अंक जनता कालेज, पांच सामुदायिक केन्द्र तथा अंक बड़ा पुस्तकालय भी चलाये जा रहे हैं।

राज्य सरकार ने तय किया है कि राज्य की सभी प्राथमिक शालाओं को क्रमशः बुनियादी शालाओं में बदल दिया जाय। जिसके लिये सन् १५४ में राज्य की विधान सभा ने प्राथमिक शिक्षा कानून (१९४७) को हटाकर अंक बुनियादी शिक्षा कानून पास किया है।

राज्य में सघन क्षेत्रों के आधार पर बुनियादी शिक्षा का प्रारंभ हुआ है। लेकिन बुनियादी शिक्षा कानून के प्रारंभ से प्रशिक्षित शिक्षकों की प्राप्ति के अनुसार राज्यस्तर में स्कूलों का रूपांतर बुनियादी शिक्षा के ढांचे में हो रहा है। चूंकि प्रशिक्षण विद्यालयों से प्रशिक्षित होकर निरन्तरवाले शिक्षकों की संख्या अधिक नहीं है रूपांतर को क्रियाधीमी है।

गत साल केन्द्र सरकार की महिला शिक्षा योजना तथा सुशिक्षितों को बेकारी के निवारण की योजना का राज्य में अमल में लाया गया है। पहली योजना के अंतर्गत आवासिक मकानों के सहित २०० शालाएँ तथा दूसरी योजना के अंतर्गत शाला रहित गांवों में २६२ शालाएँ स्थापित की गयी हैं। आचार्य तथा शिक्षकों की अध्ययन गोष्ठी का आयोजन हुआ है।

सम्प्रत राज्य की १४,१८६ प्राथमिक स्कूलों में १६०० शालाएँ बुनियादी हैं। फिलहाल प्राप्य सुविधाओं के अनुसार अन्य शालाओं को बुनियादी शालाओं में बदलना अंक बड़ा

भारी काम है। ६ से ११ साल की उम्र के लड़कों में ६० प्रतिशत लड़के स्कूलों में आते हैं। शेष लड़का को भी शिक्षण की सुविधा देनी हो तो ३००० नये स्कूल खोलने पड़ेंगे, और १७ हजार शिक्षकों की जरूरत पड़ेगी।

बुनियादी शिक्षा का प्रचार करनेवाली असासकीय सस्थाओं को सरकार के द्वारा आर्थिक सहायता मिली है।

स्वावलंबन के सबंध में भी दो शब्द। यद्यपि शालाओं में मूल अद्योगों का प्रवेश हुआ

है। फिर भी चूंकि उत्पादन की तादाद बहुत ही कम है स्वावलंबन के प्रतिशत की गणना नहीं की जा सकती। बिन परिवर्तित अधिक सस्यक स्कूलों में जमीन के टुकड़े मात्र ही उपलब्ध हैं। अतएव उनमें छोटे बच्चों को अपने हाथों के उपयोग की शिक्षा मात्र दी जा सकती है, गणना की मात्रा में उत्पादन की गुजाबिश कम है। सचमुच बुनियादी शिक्षाक्रम न शालाओं की स्थिति सुधारी है और विद्यार्थियों का गुण-विकास किया है।

(पृष्ठ ३५३ का लेपास)

प्राथमिक स्कूलों को बुनियादी शिक्षा के ढांचे में बदलना।

१९५५ में आस्र सरकार ने अंक निर्णय लिया कि चूंकि सभी प्राथमिक स्कूलों को बुनियादी स्कूलों के रूप में बदलने में काफी समय लगेगा जिसलिये बुनियादी शिक्षा के काम पहलुओं को प्राथमिक स्कूलों में प्रारंभ किया जाय। जून १९५८ में अंक अपनिर्देशक तथा पांच जिला विद्याधिकारी गांधी ग्राम की अध्य-यन-गोष्ठी में भेजे गये। आवश्यक पहलू व प्रवृत्तियों को प्रारंभ करने के द्वारा बुनियादी ढांचे में परिवर्तित होने का आदेश सरकार ने

तेलंगाना क्षेत्र के सभी प्राथमिक शालाओं को दिया। जिस अद्देश्य की सिद्धि के लिये दो अध्ययन गोष्ठियों का आयोजन हुआ पहला हैदराबाद में और दूसरा काकीनाडा में। जिनका आयोजन जिला विद्याधिकारियों के प्रयोजनार्थ हुआ जिन्होंने जिससे लाभ अठाकर बारो बारी से विभिन्न जिलों के अप शाला निरोक्षक तथा प्राथमिक शाला शिक्षकों के सामार्थ अध्ययन गोष्ठियों का आयोजन किया।

अन्तर बुनियादी शिक्षा

राज्य में राज्य सरकार के नियंत्रण में पेट-पाठ में अकमात्र अन्तर बुनियादी विद्यालय है।

उड़ीसा राज्य में बुनियादी शिक्षा

(१९५७-५९)

अनुक्रम

पिछले बारह सालों से उड़ीसा राज्य में बुनियादी शिक्षा योजना का कार्यान्वयन हो रहा है। अनुत्तीस सदस्यों को लेकर शिक्षामन्त्री के सभापतित्व में बुनियादी-शिक्षण मंडल का पुनर्गठन हुआ है। जिस मंडल के ध्येय हैं -

१. बुनियादी शिक्षण के सबंध में सरकार को सलाह देना।

२. सभी प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी शालाओं में रूपांतरित करने के लिये बुनियादी रीति से प्राथमिक शालाओं का संगठन करना।

३. शिक्षणक्रम तय करने में माध्यमिक शिक्षण मंडल की मदद करना और छोटे और सातवें दर्जे का पाठ्यक्रम नियंत्रित करना।

४. मंडल के आर्थिक कामों के लिये वजट (अंदाज-पत्रक) तैयार कर सरकार के सामन पेश करना।

शिक्षा नीति

राज्य ने प्राथमिक स्तर में बुनियादी शिक्षा को पूरा पूरा मान लिया है। रामचन्द्रन कमिटी के नीचे लिखे मुद्दों पर विचार करने के लिये शिक्षा विभाग के निर्देशक के सभापतित्व में बुनियादी शिक्षण मंडल के द्वारा अंक कमिटी का निर्माण हुआ और उसकी बैठक ९ जून १९५९ को बुलायी गयी।

(क) सभी प्राथमिक शालाओं को बुनियादी विद्यालयों में रूपांतरित करना।

(ख) प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षणको को दुबारा प्रशिक्षण देना।

(ग) संचालकों और निरीक्षकों को प्रशिक्षण देना।

(घ) प्रचलित प्रशिक्षण विद्यालयों को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयों में परिवर्तित करना।

(च) नये बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय खोलना।

अपरोक्त कमिटी ने रामचन्द्रन कमिटी के जिन जिन प्रस्तावों की सिफारिश की है, अनुसवसे शिक्षण मंडल सहमत है।

१ धन तथा बुनियादी शिक्षणको की कमी के कारण राज्य के सभी प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी विद्यालयों में रूपांतरित करके हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का पाठ्यक्रम चलाना संभव नहीं है।

२ राज्य में रहनेवाले नौ हजार प्रशिक्षित शिक्षणको को पुनः प्रशिक्षण देने के बजाय राज्य के मौजदा १६ हजार अप्रशिक्षित शिक्षणको को प्रशिक्षण देना ही वाजिब है।

३. चूँकि वही अद्देश्य सामने रखकर हमारे प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी नीतियों का प्रचलन हुआ है अतएव यह जरूरी नहीं है कि हिन्दुस्तानी तालीमी सघ का पाठ्यक्रम प्रवेश करके उनका बुनियादी शालाओं में रूपांतरित किया जाय। यह देखा गया है कि राज्य के प्रशिक्षण विद्यालयों में सफाई, प्रायंता, सामाजिक जीवन आदि सामान्य बातों में प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है बल्कि आवश्यकता जिस बात की है कि छात्राध्यापकों को सामान्य यत्रादि की मरम्मत, लोहारी का

काम आदि वास्तविक घघो की जानकारी दी जाय ।

बुनियादी शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा के साथ संयोग करने से अुच्च बुनियादी विद्यालयो के छात्रो के हाओस्कूल में और माध्यमिक शाखा के छात्रो के अुच्च बुनियादी विद्यालयो में दाखिल होने में कोओ दिक्कत नही थी । अुत्तर बुनियादी विद्यालयो की गिनती बहु अुद्देशीय माध्यमिक शालाओ के रूप में हुओ है और झुडीसा माध्यमिक शिवपा-मडल अुत्तर बुनियादी विद्यालयो के लिजे अेक पाठ्यक्रम तैयार कर रही है । सरकार ने बुनियादी शिक्षा मडल के निम्न लिखित प्रस्तावो का समर्थन किया है-

१ अप्रैल १९५९ से सभी निम्न बुनियादी विद्यालयो में प्राथमिक शालाओ के संशोधित पाठ्यक्रम का प्रयोग बुनियादी नीतियो के साथ करने के विषय पर विचार हुआ । यह निर्णय किया गया कि प्रचलित तथा संशोधित प्राथमिक पाठ्यक्रम के साथ बुनियादी नीतियो का समावेश होकर असका नाम संशोधित पाठ्यक्रम रहेगा और यह १ अप्रैल १९५९ से सभी प्राथमिक और बुनियादी विद्यालयो में अमल में लाया जायगा । इसके बाद बबओ राज्य की बुनियादी शालाओ की तरह अुद्योग तथा सामाजिक जीवन पर भी जोर दिया जायगा ।

२ सभी प्राथमिक विद्यालयो का नाम बुनियादी विद्यालयो में बदलने का सवाल अुठा था । यह निश्चय किया गया कि सभी प्राथमिक विद्यालयो का नाम बुनियादी विद्यालयो में परिवर्तित करने का अनुरोध सरकार से किया

जाय तथा झुडीसा शिक्षा मडल के विधि-विधानो में तदनुसार परिवर्तन भी किये जायें ।

सरकार ने यह भी निर्णय किया था कि प्रचलित बुनियादी विद्यालयो का पूर्व-बुनियादी विभाग १ अप्रैल १९५९ से हटा दिया जायगा ।

बुनियादी शिक्षा मडल ने निम्न लिखित प्रस्ताव मजूर किये जो कि सरकार की स्वीकृति मिलने पर कार्यान्वित किये जायगे ।

१ यह निर्णय किया गया कि बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय के छात्राध्यापको को अंग्रेजी की अध्यापन प्रणालियाँ सिखायी जायें ताकि वे छठी और सातवीं श्रेणी में अंग्रेजी पढाने के समर्थ हो ।

२ प्रचलित होनेवाले अुच्च प्राथमिक विद्यालयो को निम्न पूर्ण बुनियादी शाला का नाम देकर अुनमें बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त भेट्रिक शिवपको को प्रधानाध्यापक नियुक्त करने के विषय पर भी चर्चा हुओ ।

३. अुच्च बुनियादी विद्यालय और बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्रो में साजिकल, स्टोव, पेट्रो-माक्स, लाइट आदि की मरम्मत के काम अुद्योग के रूप में ग्रहण करने के संबध में भी विचार किया गया । खयाल किया गया कि माध्यमिक अंगलिश विद्यालयो में प्रचलित ये अुद्योग अुच्च बुनियादी विद्यालयो में भी कारगर हो सकेगे । यह निर्णय किया गया कि बुनियादी शिवपा संस्थाओ में हारमोनियम मरम्मत, किताय बघाओ, सिलाओ, बिजली तार का काम आदि पर प्रयोग किया जायगा ।

४ माध्यमिक अिन्दिश विद्यालय में आठवें दर्जे को सम्मिलित करने तथा अुच्च बुनियादी

विद्यालयों तथा माध्यमिक अंग्लिश विद्यालयों में एक सामान्य शिष्याश्रम की चलाने की बात पर चर्चा विचार हुआ था। मडल ने निश्चय किया कि आठवें दर्जे की माध्यमिक अंग्लिश विद्यालयों में सम्मिलित किया जाय और अब सामान्य पाठ्यक्रम भी तैयार किया जाय।

प्रशिक्षण संस्थाओं

आगुल का स्नातकोत्तर युनियादी प्रशिक्षण विद्यालय जो सन् १९५५ में खोला गया था—बुत्वाल विश्वविद्यालय से संबद्ध है। इस विद्यालय का काम भी सन्तोष जनक है। जिसमें हर साल ४८ शिष्यको को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है और उनमें से आठ स्त्रियां होती हैं। इस विद्यालय में एक प्रयोग शाला, बुनाबी विभाग, सरजाम, कृषिविषय तथा पुस्तकालय है। प्रशिक्षण की अवधि पूरे एक साल की है। मजी और जून माह में प्रशिक्षार्थी गावों के सर्वे तथा ग्राम निर्माण का काम ही करते हैं।

राज्य के छ जिलों में सरकार द्वारा संचालित सर्वांग पूर्ण छ युनियादी प्रशिक्षण केन्द्र हैं। उनका शिक्षाकाल दो वर्ष का है। उसमें मैट्रिकपुलेट, अडरप्रेज्युवेट तथा उसके समकक्ष योग्यता के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है।

युनियादी शालाएँ

नीचे लिखे तीन विभागों से राज्य में युनियादी विद्यालय खोले गये हैं।

१ अडोसा युनियादी शिक्षा मडल।

२ गैर सरकारी शिष्या संस्थाएँ।

३ सामुदायिक योजना व्यवस्था।

राज्य में दो उत्तर युनियादी विद्यालय हैं।

अनुमं से अब सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय है और दूसरा खानगी संस्था से संचालित है। आधा भी जाती है कि वे ग्राम-विश्व विद्यालय तथा बंदम बंदा संवेग। राज्य में कुल २१ मुख्य युनियादी विद्यालय हैं। अनुमं से तीन गैर सरकारी संस्थाओं से संचालित हैं। अनुमं दो को सरकार की आर्थिक मदद मिलती है।

राज्यभर में कुल ३६० निम्न युनियादी शालाएँ हैं। अनुमं दो आदर्श युनियादी विद्यालय बटक और बरहामपुर शहर में अचल में खोले गये हैं जिनका संचालन अनु माहरो की नगर संभाएँ करती हैं।

३१ मार्च १९५९ में विभिन्न युनियादी विद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार रही।

एडके लड़कियाँ कुल			
अ २ उत्तर यु० विद्यालय	८८	३	९१
आ २३ मुख्य "	"	२९३०	६८५ ३६१५
बि ३६० निम्न "	"	१७५१८	६१४९ २३६६७

पाठ्यक्रम

युनियादी प्रशिक्षण केन्द्रों में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये हिन्दुस्तानी तालीमी सघ द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम सामान्य परिवर्तनों के साथ उपयोग किया जा रहा है। हिन्दुस्तानी तालीमी सघ द्वारा निर्धारित आठ सालों का संपूर्ण पाठ्यक्रम ही सभी युनियादी शालाओं में अस्तिमाल किया जा रहा है। प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रमों में समानता लाने के वास्ते अगले साल से प्राथमिक विद्यालयों में सरकार द्वारा स्वीकृत मौलिक नितियों के साथ परिवर्तित पाठ्यक्रम ही अमल में लाया जायगा। आगामी सालों में बबजी राज्य के युनियादी

स्कूलों की तरह जिस राज्य के बुनियादी स्कूलों में भी अद्योग तथा सामाजिक जीवन पर अधिक जोर दिया जायगा।

समीक्षा

पाचवे तथा आठवे दर्जे के आखिर में बुनियादी शिक्षा के ध्येय और कार्य को दृष्टि में रखकर विद्यार्थियों का सैद्धांतिक ज्ञान तथा व्यावहारिक औद्योगिक योग्यता जानने के हेतु अनुकी समीक्षा की जाती है। जिस पद्धति में लोगो के मन में बुनियादी शिक्षा के प्रति अच्छा खासा विश्वास पैदा कर दिया है। वह पद्धति शिक्षा के बाद विद्यार्थियों को सामाजिक योग्यता प्रदान करती है और अच्छे नागरिक बनाती है। साथ ही शिक्षा समाप्त करने के बाद जीवन के अच्छे आधार का निर्माण विद्यार्थियों में करती है। बुनियादी विद्यालय से उत्तीर्ण होकर निकले छात्रों को उसी स्तर के दूसरे माध्यमिक तथा प्राथमिक विद्यालयों से निकले छात्रों के समकक्ष जाहिर किया गया है।

पुनर्संगठन तथा विस्तार-योजना

पुनर्संगठन तथा बुनियादी और सामान्य शिक्षा के संचालन में समता लाने की सरकार से मान्य योजना की बुनियादी तथा सामान्य शिक्षा के लिये तीन अनुनिर्देशकों की नियुक्ति के द्वारा कार्यान्वित किया गया है। मौजूदा चाला निरीक्षकों को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय तथा बुनियादी विद्यालयों का निरीक्षण करने का अधिकार दिया गया है। राज्य के बुनियादी शिक्षा संगठन जिन समस्याओं के अधिकारी होंगे और वे उनके मंत्री का हैसियत से कार्यभार वहन करेंगे।

गत साल नवंबर दिसंबर में बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा के अनुनिर्देशक बुनियादी शिक्षा की व्यवस्था के संबंध में अल्पकालीन प्रशिक्षण लेने के लिये राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा संस्था (National Institute of Basic Education) द्वारा दिल्ली में आयोजित एक प्रशिक्षण सत्र में राज्य द्वारा भेजे गये थे।

बुनियादी विद्यालयों की अनुपादित आयों से विद्यार्थियों को दुपहर का भोजन दिया जाता है। साथ साथ दूध भी बांटा जाता है।

प्राथमिक विद्यालयों की बुनियादी शिक्षा के ढाँचे में बदलना

झुडीसा शिक्षा विभाग के निर्देशक के संचालन में जून १९५९ में आसाम, बिहार, झुडीसा, पंजाब मणिपुर, और त्रिपुरा प्रांतों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पूर्व प्रादेशिक अध्ययन गोष्ठी का आयोजन हुआ। उसके निर्णय प्रयोजनकारी तथा महत्वपूर्ण हैं। जिस गोष्ठी की सिफारिशों को अगले दो वर्षों में कार्यान्वित करने का प्रस्ताव रखा गया है और उससे संबंधित एक योजना भी, आवश्यक निधि की पूर्ति के लिये केन्द्रीय सरकार के सामने पेश किया गया है।

दूसरे विभागों के साथ संबंध

बुनियादी शिक्षा विभाग ने सामुदायिक विकास योजना, खादी तथा ग्रामोद्योग मंडल और कृषि विभाग के साथ निकट का संपर्क रखा है। अनु विभागों ने भी राज्य में बुनियादी तालीम को तरक्की के लिये भरसक मदद दी है।

अपसहार

बुनियादी शिक्षा ने राज्य में जनप्रियता प्राप्त की है। नये बुनियादी स्कूलों को खोलने तथा (घोषण पुच्छ १९० पर)

उत्तर प्रदेश में बुनियादी शिक्षा की प्रगति

बुनियादी शिक्षा की अप्रयुक्तता, अप्रयोगिता और उसके आधारभूत सिद्धान्तों की मनोवैज्ञानिकता को देखते हुये, उत्तर प्रदेश का शासन ने जब सन् १९३८ में बेसिव शिवपा-पद्धति को प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के लिये स्वीकार किया, तो यह भी निश्चय किया गया कि कुछ सघन वषट्त्रो में प्रपाड प्रयोग करने की अपेक्षा अिसे प्रारम्भिक शिक्षा के समस्त षपत्र में लागू किया जाय और प्रदेश क सभी प्रारम्भिक विद्यालयों को, क्रमशः परन्तु यथा-सम्भव शीघ्र ही, बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तित कर दिया जाय। बुनियादी तालीम के क्षेत्र में, भारत वर्ष के किसी भी दूसरे प्रदेश द्वारा अुठाये गये कदमों में, सम्भवतः यह सबसे साहसपूर्ण कदम था और अिस नीति ने हम अेक साथ ही दो समानान्तर शिक्षण विधियाँ के चलने की अुलक्षन से बचा लिया था।

अूनियर बेसिक स्कूल

योजना को कार्यरूप में परिणत करने के लिये यह आवश्यक था कि वर्तमान प्रारम्भिक विद्यालयों को बुनियादी स्कूलों में बदलन के लिये अप्रयुक्त शिक्षकों का प्रवन्ध किया जाय और दीक्षित निरीक्षकों का अेक अैता समूह

(पृष्ठ ३५९ का रोपण)

मौजूदा बुनियादी स्कूलों को अुच्च बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तन करने के लिये राज्य के विभिन्न भागों से आवेदन पत्र आते रहते हैं। हमारी प्रार्थना के अुत्तर में विद्यालयों की प्रवन्ध समितियों द्वारा भूदान, विद्यालय तथा कार्यकर्ता निवास निर्माण करने की आर्थिक मदद देने

तैयार किया जाय जिनसे बुनियादी विद्यालयों के अध्यापक पथ-प्रदर्शन पा सके।

अतः शासन ने १९३८ ई० में, अिलाहाबाद में स्नातको के लिये अेक पोस्ट-ग्रेजुअेट ट्रेनिंग कालेज खोला। बुनियादी शिक्षा के दर्शन और पद्धति में ट्रेनिंग देने के बाद ये स्नातक, १९३९ ई० में, प्रदेश में नव स्थापित सात बेसिक रेफ्रेन्सर कोर्स केन्द्रों के सचालन के लिये भेज दिये गये। अिन केन्द्रों में प्रति वर्ष, तीन-तीन महीने के लिये, गैर बुनियादी प्रारम्भिक स्कूलों के लगभग ७००० प्रशिक्षित अध्यापक, रेफ्रेन्सर कोर्स के लिये आते थे। सन् १९४६ ई० तक अिन केन्द्रों पर लगभग ३५००० शिक्षकों ने बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त और प्रयोग में ट्रेनिंग पायी। अिनकी सहायता से १९४५-४६ तक प्रदेश के १२,०१७ प्रारम्भिक (कक्षा १ से ५ तक के) स्कूलों को बेसिक स्कूलों में परिवर्तित कर दिया गया। अिन स्कूलों को अुद्योग और कला की सामग्री खरीदने के लिये ३३ रु प्रति वर्ष प्रासंगिक अनुदान दिया जाता था, अर्थात् प्रति वर्ष अिस कार्य के लिये १,६४,८०२ रु० दिये जाते थे। सन १९४६-४७ में प्रदेश के ये सातों रेफ्रेन्सर कोर्स केन्द्र और समस्त

की स्वीकृति अति अुत्साहदायक है। वृषि विभाग, सहकारी विभाग, आदिम जाति और ग्राम सुधार विभागों के लिये हमारे शिवपकों की बढ़ती हुआी भाग से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारे शिवपक अुन विभागों के लिये बिल्कुल ही योग्य है।

नामल स्कूल बेसिक नामल स्कूलों में परिवर्तित कर दिये और जिनमें समान रूप से शिल्प-केन्द्रित पाठ्यक्रम चलने लगा। क्रमशः प्रदेश के प्रत्येक जिले में एक-एक बेसिक नामल स्कूल और सचल शिक्षा दल खोल दिये गये जिससे प्राथमिक शिक्षा की सावजनिक भाग की पूर्ति हो सके। सन् १९५७-५८ के आँकड़ों के अनुसार जिस समय प्रदेश में ३५,०४७ जूनियर बेसिक स्कूल हैं और जिनमें ७७,३२५ अध्यापक तथा ८०२८ अध्यापिकाओं का कार्य कर रही हैं। ये स्कूल कक्षा १ से ५ तक हैं और जिन्हें जूनियर बेसिक स्कूल कहा जाता है।

सीनियर बेसिक स्कूल

अर्थाभाव के कारण १९५४ के पूर्व सीनियर बेसिक-स्तर (कक्षा ६, ७ और ८) पर बेसिक शिक्षा को आरम्भ नहीं किया जा सका। जिस वर्ष (१९५३-५४ में) केन्द्रीय सरकार ने निक्षिप्तों की बेरोज़गारी को दूर करने लिये जो अनुदान दिया, उत्तर प्रदेश ने उसका प्रयोग सीनियर बेसिक स्तर पर बुनियादी शिक्षा के प्रसार में किया। चूँकि उत्तर प्रदेश का मुख्य धंधा कृषि है और यहाँ की ८०% जनता भूमि धर्म में लगी रहती है, अतः यह निश्चित किया गया कि सीनियर स्तर के बुनियादी विद्यालयों में खेती और बागवानी को मुख्य बुनियादी बुझोग रखा जाय और प्रदेश के प्रत्येक जूनियर हाजीस्कूल (सीनियर बेसिक स्कूल) के लिये कम से कम खेती योग्य १० अकड़ भूमि प्राप्त की जाय। यह भी निश्चित किया गया कि सामुदायिक तथा प्रसार कार्य (Community and Extension Work) को जिन स्कूलों के शिवपण में प्रमुख स्थान देकर जिन्हें सामुदायिक विवास-केन्द्रों का रूप दिया जाय,

जिससे ये स्कूल बेसिक शिवपा की सकल्पना की कसौटी पर खरे अउतर सके। अब जिन सीनियर बेसिक स्कूलों के पाठ्यक्रम में सामान्य शिवपण और कृषि कार्य के अतिरिक्त कृषि-प्रसार, सामाजिक तथा सास्कृतिक शिवपण, सामुदायिक स्वास्थ्य और सफाई, सामुदायिक निर्माण-कार्य और स्थानीय बुझोगों के विकास को सम्मिलित कर लिया गया है। अतः ये स्कूल वास्तव में सस्थागत हो न रहकर समाज-गत भी हो गये हैं और समाज से अुनका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है। १९५७-५८ के आँकड़ों के अनुसार प्रदेश के ३९८१ जूनियर हाजीस्कूलों में से २२१० कृषि-साधन सम्पन्न-सीनियर बेसिक स्कूल हैं जिनके पास कृषि कार्य के लिये लगभग २२,००० अकड़ भूमि है। जिनके अतिरिक्त ४२८ असे सीनियर बेसिक स्कूल हैं, जिनमें मुख्य बुझोग कृषि नहीं है और जिनमें कताजी बुनाजी, घातुकला, काष्ठकला आदि दूसरे शिल्प मुख्य बुझोग के रूप में चलते हैं। कृषि-केन्द्रित स्कूलों में १८२४ अन्डर ग्रेजुअेट और ६०३ कृषि ग्रेजुअेट और शिल्प-केन्द्रित स्कूलों में १४९ अन्डर ग्रेजुअेट और ४४ ग्रेजुअेट शिल्प-अध्यापक का कार्य कर रहे हैं। जिस सख्या में २१६ प्रसार निर्देशका की सख्या सम्मिलित है। जिन सीनियर बेसिक विद्यालयों में से ६०० स्कूलों में पोषघर और कृषि सघालय और ५०० स्कूलों में सामुदायिक केन्द्र हैं। जिस प्रकार जिस समय तक प्रदेश में (३६८१-२६३८) १३४३ स्कूल असे हैं जिनमें कृषि-अथवा शिल्प की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। सीनियर बेसिक स्कूलों के पास जो भूमि है, जिसमें से ३८ प्रतिशत कृषि-योग्य भूमि सिचाजी के अन्तर्गत लायी जा सकी है और शेष के लिये प्राकृतिक

वर्षा पर आश्रित रहना पड़ता है। १९५७ ५८ तक अिन सीनियर बेसिक स्कूलों पर कुल रु० ११,६२०,५८३० (मुख्य मंत्री शिक्षा-कोष से १०,२७,६६८ ५७ + राजकीय अनुदान से १३४, ३८६ ७३) व्यय हुआ है और रबी और खरीफ दोना फसलों की अपुन निरटसग रुपया में लगभग ८,८३, ०६ रु० ८२ न पै है। स्वावलंबन की दृष्टि से भी यह सरया पर्याप्त आशाप्रद है।

बुनियादी प्रशिक्षण सस्याओं

बेसिक नार्मल स्कूल

जूनियर बेसिक स्कूलों के शिष्यका की दीक्षा के लिये प्रदेश में ७२ बेसिक नार्मल स्कूल हैं, जिनमें ५५ पुरुषों के और १७ महिलाओं के हैं और जो प्रति वर्ष ३००० पुरुष तथा ८०० महिला प्रशिक्षार्थी दीक्षित करते हैं। अिन विद्यालयों में परम्परागत विषयों के अतिरिक्त विभिन्न अनुबन्धित शिष्यण तथा प्रसार-कार्य का विशेष रूप से शिक्षण होता है। अिनमें सीनियर बेसिक परीक्षोत्तिर्ण विद्यार्थी प्रवेश पाते हैं।

जूनियर ट्रेनिंग कालेज

सीनियर बेसिक स्कूलों के अध्यापकों की दीक्षा के लिये ३४ पुरुषों तथा ३ महिलाओं के दीक्षा विद्यालय हैं, जो प्रतिवर्ष १७०० पुरुष तथा १५० महिला अध्यापकों के प्रशिक्षण का प्रबन्ध करते हैं। अिनमें हाइस्कूल अुर्त्तिर्ण विद्यार्थी लिये जाते हैं।

जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज

नार्मल स्कूलों तथा माडल स्कूलों के लिये शिक्षक तैयार करने के लिये प्रदेश में ३ जूनियर

यर बेसिक ट्रेनिंग कालेज हैं। ये अिन्टरमीडियेट पास छात्रों को दो साल की ट्रेनिंग देने के अपरान्त सी० टी० (बेसिक) का प्रमाण पत्र देते हैं। अभी तक अिनमें ६०० से अधिक अध्यापक दीक्षित हुये हैं।

पोस्ट ग्रेजुअेट बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ

बसिक नार्मल स्कूलों, जूनियर ट्रेनिंग कालेजों तथा निरीक्षकों को दीक्षित करने के लिये प्रदेश में अेक स्नातकोत्तर ट्रेनिंग कालेज है। अभी तक यहाँ से लगभग ६०० से अधिक पुरुषों तथा १५० महिलाओं का प्रशिक्षण हो चुका है।

प्रशिक्षण के अतिरिक्त यह ट्रेनिंग कालेज, बेसिक शिक्षा-प्रणाली में सुधार के लिये नये नये प्रयोग करता है और बुनियादी सस्याओं के लिये समीचीन नयी सामग्री तैयार करता है। वह अध्यापकों के पय-प्रदर्शन के लिये साहित्य भी प्रकाशित करता है और बेसिक शिक्षा की अन्य समस्याओं को भी मुल्लताता है।

अिस ट्रेनिंग कालेज का प्रशिक्षणकाल अेक वर्ष का है। शेष सभी ट्रेनिंग सस्याओं का प्रशिक्षणकाल दो वर्ष है।

द्वितीय योजना में बुनियादी शिक्षण

शिक्षु सस्याओं

योजनावधि में महिलाओं के राजकीय नार्मल स्कूलों से सलग्न ११ आदर्श विद्यालयों में पूर्व बुनियादी शालाओं (शिशु-शालाओं) खोली गयी है।

नये जूनियर बेसिक स्कूल

५००० जूनियर बेसिक स्कूलों में से सन् १९५८ तक ३७५० विद्यालय खोले जा चुके हैं

तथा उनके निम्ने अध्यापक और आवश्यक अपकरण दिये गये हैं।

पुराने जूनियर बेसिक विद्यालयों के सुधार के हेतु उनको अद्योग-सामग्री देने के लिये १०० रु० प्रति वर्ष अनुदान दिया जाता है। योजना-वधि में कुल खर्च ३४,६२,००० रु० होगा। स्थानीय निकायों को स्कूलों की अमारतो के सुधार के लिये १००० रु० प्रति विद्यालय अनावर्तक अनुदान दिया जाता है।

नि शुल्क शिक्षा

अस दिशा में पहला कदम १९५६-५७ में अगुया गया जबकि कक्षा १ से ३ तक बेसिक शिक्षा नि शुल्क कर दी गयी। जुलाई १९५७ से कक्षा ४ और ५ में भी शिक्षा नि शुल्क कर दी गयी है। अब प्रदेश के जूनियर बेसिक स्तर तक की शिक्षा नि-शुल्क है।

अनिवार्य शिक्षा

अस समय तक १५ नगर पालिकाओं में लड़कों के लिये शिवपा अनिवार्य है। योजना-वधि के अन्त तक १०८ नगर पालिकाओं के पूर्ण और ३३ नगर पालिकाओं के आंशिक क्षेत्रों में अनिवार्य शिक्षा आ जायगी।

सीनियर बेसिक स्कूल

योजनावधि में ५०० सीनियर बेसिक स्कूल खुलेंगे। १९५३-५८ तक २० राजकीय तथा ७० सहायता प्राप्त स्कूल खोले जा चुके हैं। १९५८-५९ तक ४०० स्कूलों की शिल्प-वेन्द्रित करने का प्रबन्ध कर दिया गया है। योजनावधि में २०० अतिरिक्त विद्यालयों में कृषि-कार्य शुरू किया जायगा, जिनमें १९५६-५७ तक ४०

स्कूलों में इसका प्रारम्भ हो गया है। अिन विद्यालयों में से २२५ स्कूलों में सामान्य विज्ञान तथा ८ बालिका विद्यालयों में संगीत-शिक्षण का भी प्रबन्ध हो गया है। योजनावधि में ५००) प्रति विद्यालय अनुदान देकर १७०० सीनियर बेसिक विद्यालयों में पुस्तकालय खोले जायेंगे। १९५७-५८ तक ६८० विद्यालयों को यह सुविधा दी जा चुकी है।

प्रशिक्षण

योजनाकाल में ५ जूनियर ट्रेनिंग कालेज तथा १२ बेसिक नामल स्कूल खोलने का निश्चय किया गया है, जिनमें १९५८-५९ में ११ नामल स्कूल तथा ३ जूनियर ट्रेनिंग कालेज खुल गये हैं। प्राविट ट्रेनिंग कालेजों को अब तक २०,०००) का अनुदान दिया गया है।

निरीक्षण

विद्यालयों की सख्या में वृद्धि होने के कारण द्वितीय योजना में सहायक अप विद्यालय-निरीक्षकों की सरया में १६० की वृद्धि निर्धारित है। १९५८ तक ११० नये स्थान स्वीकृत हो चुके हैं।

सेवारत प्रशिक्षण

सेवारत प्रशिक्षण की योजना द्वितीय पंच-वर्षीय योजनाआ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रदेश के नामल स्कूलों के आचार्यों का सेवारत प्रशिक्षण, स्नातकास्तर दीक्षा विद्यालय लखनऊ तथा नामल स्कूल के अध्यापकों और निरीक्षक वर्ग की सेवारत दीक्षा जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेजों में हाती है। यह वर्ग नियम से हो रहा है। निरीक्षक वर्ग तथा सहायक अध्यापकों का प्रशिक्षणकाल ३ माह का है।

साहित्य

बुनियादी स्कूलों के अध्यापकों तथा निरीक्षकों के पथ-प्रदर्शन के लिये बेसिक ट्रेनिंग कालेजों के अध्यापकों द्वारा अनुबन्धित शिक्षण सम्बन्धी अनेक सदशिका तैयार की गयी है। शिक्षा-विभाग बेसिक शिक्षा के अध्यापकों के लिये सहायक पुस्तकें (Hand Books of Suggestions for Teachers) भी तैयार कर रहा है। इस योजना में बुनियादी स्कूलों के सभी विषयों और क्रियाओं के सम्बन्ध में पथ प्रदर्शन किया जा रहा है।

गत वर्ष के विशेष कार्य

गत वर्ष पोस्ट ग्रेजुएट बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ में सामाजिक विषय के समवाय पर शोध-कार्य हुआ है। बुनियादी स्कूलों के पाठ्यक्रम में सामाजिक विषय अनेक अंशों पर विपणन है जिसका अनुबन्धित शिक्षण भलीभांति नहीं हो पाता। अतः समवाय की दृष्टि से इस विषय के पाठ्यक्रम को दोहराया गया है और सामाजिक विषय का अनेक अंशों पर अनुबन्धित पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसे बालक के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से अनुबन्धित कर भलीभांति पढ़ाया जा सकता है। यह पाठ्यक्रम बालक के घर, स्कूल और परिसर को केन्द्र मान कर तैयार किया गया है। अब इस अनुबन्धित पाठ्यक्रम का ट्रेनिंग कालेज से सलग्न 'प्रदर्शन विद्यालय' में परीक्षण किया जा रहा है और यदि यह पाठ्यक्रम सतोषजनक सिद्ध हुआ तो इसे प्रदेश के सभी विद्यालयों में लागू किया जाएगा।

असौ सप्ताह में अनेक ही अध्यापक द्वारा अनेक से अधिक कक्षाओं को पढ़ाना (Multiple

Class Teaching) के लिये अनेक टाइम-टेबल तैयार किया गया है। ऐसे प्रदेश के सभी बुनियादी स्कूलों में वितरित किया जा रहा है।

बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ में ही इस वर्ष अनेक और प्रोजेक्ट संचालित किया जा रहा है, जिसमें हम विभिन्न शिल्पों के लिये कक्षा ५ और ६ के बच्चों की रुचि धकान और उत्पादन-क्षमता की दृष्टि से समय-विभाजन के निर्धारण की समस्या का निराकरण निकाल रहे हैं। इस प्रोजेक्ट के संचालन में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा दो वर्ष के लिये अनुदान प्राप्त हुआ है।

बेसिक स्कूलों के लिये हचिकर पाठन-सामग्री तैयार करने की योजना में अनेक अमेरिकन अध्यापिका श्रीमती काफी के अनुभव तथा प्रयोग विशेष रूप से लाभप्रद सिद्ध हुये हैं।

पाठ्य पुस्तक

प्रदेश में बुनियादी स्तर की पाठ्य पुस्तकों का प्रणयन तथा प्रकाशन शासन द्वारा अथवा उसके निरीक्षण में ही होता है। इस कार्य के अन्तर्गत अभी तक भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक शास्त्र की पुस्तकें प्रकाशित तथा प्रसारित की गयी हैं। इस वर्ष कक्षा १ और २ की भाषा और गणित की पाठ्य पुस्तक का सशोधन किया गया है।

परिगोष्ठियाँ

गत वर्ष सेवान्तरोप शिक्षा के अन्तर्गत बेसिक ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ में चार-चार हफ्ते की पाँच वर्कशाप चलायी गयी जिनमें राजकीय बेसिक नार्मल स्कूलों के प्रधानों और अध्यापकों निरीक्षकों के पथ-प्रदर्शन का कार्यक्रम संचालित किया गया।

(अध्यापक पृष्ठ १६५ पर)

पंजाब में बुनियादी शिक्षा

सन् १९४९ में जब जरगाव में शिवपको के प्रशिक्षण के लिये पहला बुनियादी विद्यालय खोला गया तब पंजाब राज्य में बुनियादी शिक्षा का प्रारम्भ हुआ। तब से इस दिशा में सतत प्रगति हो रही है। सामान्य प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओं को बुनियादी शिक्षा पद्धति के ढाँचे पर रूपांतरित करने के लिये आवश्यक परिस्थिति निर्माण करने की दृष्टि से विद्यालयों में प्रचलित पाठ्यक्रमों का सशोधन करने के लिये अनेक विशेष समिति नियुक्त हुई। इस पाठ्यक्रम को सन् १९५१ में प्रारम्भ किया गया और इस पाठ्यक्रम के अतर्गत विषय वही थे जो निम्न बुनियादी तथा प्राथमिक श्रेणी के पाठ्यक्रम में हैं। प्राथमिक स्कूलों के पाठ्यक्रम से फरक इतना ही था कि इसमें मूल बुद्ध्योगों की जगह पर प्रत्यक्ष प्रवृत्तियाँ थी। बुच्च बुनियादी स्तर में भी पाठ्यक्रम इस तरह तैयार किया गया कि स्कूलों का रूपांतर बुनियादी शिक्षा पद्धति में करना आसान हो सके।

(पृष्ठ ३६४ का संध्या)

प्रदेश में बुनियादी शिक्षण सम्बन्धी विचारों के आदान-प्रदान के लिये ट्रेनिंग कालेजों तथा नार्मल स्कूलों में अध्यापकों और छात्राध्यापकों की परिगोष्ठियाँ होती हैं। प्रसार अध्यापकों तथा सब डिप्टी अन्सपेक्टरों के विचार-विमर्श के लिये प्रत्येक जिले तथा मण्डल (Region) में भी इसी सम्बन्ध में गोष्ठियाँ हुआँ हैं। कुछ परिगोष्ठियों के विषय निम्नावित हैं :-

१-बुनियादी शिक्षा और सर्वोदय।

२-बुनियादी शिक्षा और शिक्षा सम्बन्धी

बुनियादी शिक्षा की योजना में तीव्रता लाने की दृष्टि से प्रथम पंचवर्षीय योजना के काल में कयी निम्न बुनियादी स्कूलों को खोला गया। सन् १९५४ में चढीगढ में प्रथम बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय खोला गया। सन् १९५५ से निम्न स्तर का शिक्षक प्रशिक्षण बुनियादी पद्धति में बदल दिया गया है। अब राज्य में कुल आठ स्नातकोत्तर प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं। उनमें तीन सरकारी हैं और पाँच गैर सरकारी हैं। बी. ओड बुनियादी तथा निम्न बुनियादी प्रशिक्षण वर्गों के पाठ्यक्रम में बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत व विधियों के प्रशिक्षण के साथ साथ बुद्ध्योग, सामाजिक जीवन, तथा समाज सेवा आदि का प्रशिक्षण भी शामिल है। प्रशिक्षणाधियों को हिन्दी और पंजाबी की प्रवीणता-जाच परीक्षा में भी उत्तीर्ण होना पड़ता है।

निम्न स्तर के प्रशिक्षण को बुनियादी ढाँचे में परिवर्तित करने से निम्न बुनियादी प्रशिक्षित

विभिन्न दार्शनिक विचार धाराओं।

३-बुनियादी शिक्षा तथा भुतके लक्ष्य।

४-वर्तमान बुनियादी विद्यालयों की सुधार-योजना।

५-शिल्प शिक्षण की प्रभावपूर्ण विधियाँ।

६-विद्यालय में पठन-सामग्री को सुलभ बनाना।

७-पूर्व बुनियादी शिक्षा का महत्त्व।

८-युवक दलों का संगठन।

शिक्षकों को प्राथमिक स्कूलों में नियुक्त करना संभव हुआ। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कुल संख्या में सम्प्रति जैसे निम्न बुनियादी प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या करीब ४० प्रतिशत है। बुनियादी ढांचे में परिवर्तन की दिशा में यह एक सफल प्रयास है।

प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में राज्य में नए बुनियादी विद्यालय खोले गये तथा पुराने ढंग के विद्यालय बुनियादी ढांचे में बदल दिये गये। अतः विभिन्न प्रकार के विद्यालयों को सरवा अस प्रकार है।

निम्न बुनियादी विद्यालय	६७८
गुच्च बुनियादी विद्यालय	४६
उत्तर बुनियादी विद्यालय	४

चालू साल में १०० प्राथमिक स्कूलों को बुनियादी स्कूलों में रूपांतरित करने की स्वीकृति सरकारने दी है।

अक्टूबर १९५७ से राज्य सरकार न राज-पुरा तथा फरीदाबाद के नयी तालीम केन्द्रों का संचालन हिन्दुस्तानी तालीमी संघ से अपने हाथ में ले लिया है। अतः केन्द्रों में उत्तर बुनियादी स्तर तक बुनियादी शिक्षा का प्रयोग हुआ है।

परंपरागत पद्धति में प्रशिक्षित निरीक्षक तथा शिक्षकों को बुनियादी शिक्षा से परिचित कराने के लिये सन् १९५० से विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों में नए प्रशिक्षण सत्र चलाये जा रहे हैं। प्रचलित शिक्षा पद्धति को बुनियादी पद्धति का दिशा में परिवर्तित करने के लिये केन्द्र

सरकार द्वारा जून १९५८ में एक उत्तर प्रादेशीय अध्ययन-गोष्ठी का आयोजन चटौगढ में हुआ था। इसमें पंजाब उत्तर प्रदेश हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और जम्मू काश्मीर के ३४ प्रतिनिधि तथा पर्यवेक्षकों ने भाग लिया था जिनमें बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के आचार्य, जिला शाला निरीक्षक-निरीक्षिकाओं भी शामिल थे। इसके साथ राज्य के सहायक शाला निरीक्षक तथा निरीक्षिकाओं व उपयोगार्थ भी इसी तरह के एक सत्र का आयोजन हुआ था ताकि पद्धति परिवर्तन के अस कार्य को मदद मिल सके।

राज्य तथा जिला स्तर में केवल बुनियादी शिक्षा के लिये अधिकारियों की नियुक्ति की योजना फलहास राज्य में नहीं है। निर्देशक के स्तर के कामों का निरीक्षण उपनिर्देशक द्वारा होता है जो प्रशिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया करते हैं जिनमें निम्न स्तर की बुनियादी प्रशिक्षण संस्थाओं भी शामिल है। अधिकारियों से ही आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त कर सकने से बुनियादी संस्थाओं का काम सुगम हो गया है। जिला के स्तर में बुनियादी शिक्षा के कामों का निरीक्षण जिला शाला निरीक्षक, निरीक्षिकाओं या उनके सहायक करते हैं। चूँकि अतः से अधिकांश को बुनियादी शिक्षा का परिचय ज्ञान दिया गया है अभी कोथी खास कठिनाओं अस दिशा में नहीं है। बुनियादी शिक्षा व काम का निरीक्षण गहराई से करके असकी प्रगति के लिये आवश्यक मार्गदर्शन करने के लिये एक राज्य स्तरीय मंडल की स्थापना के लिये प्रयत्न जारी है।

वर्गवी राज्य में बुनियादी शिक्षा की प्रगति

वर्तमान परिस्थिति

सन् १९५६ में राज्यों की पुनर्रचना होने से वर्गवी राज्य में वजी नये क्षेत्र मिल गये जिससे अन् क्षेत्रों में स्थित बुनियादी शालाओं भी वर्गवी राज्य में मिल गयी और बृहत् वर्गवी राज्य की बुनियादी शालाओं को तादात्त मोधता से बढ़ी। सन् १९५८ के अंत में राज्य की बुनियादी शालाओं की संख्या ७५७० रही जब कि प्राथमिक स्कूलों की कुल संख्या ४६९६० रही। यान बुनियादी स्कूल का प्रतिशत १५.९ रहा। बुनियादी स्कूलों में कुल १५४१७४५ विद्यार्थी दर्ज हुये जबकि प्राथमिक स्कूलों में भर्ती होनवाले विद्यार्थियों की संख्या ५३६२६६६ रही। बुनियादी विद्यालय में पढनवाले विद्यार्थी २८७५ प्रतिशत रहे। प्रदत्तवार विद्यालयों की संख्या इस प्रकार है। पुराना वर्गवी क्षेत्र ४४७३, सीराष्ट्र २३५२, कच्छ ४२, विदभ ४०६, मराठवाडा १९७।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

बुनियादी शिक्षा के प्रसार में शिक्षक प्रशिक्षण का अेक प्रमुख स्थान है। सन् १९४८ में सरकार ने हरअेक प्रदेश में अर्ग-कुल तीन स्नातकोत्तर प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना की। सन् १९४९ में सभी प्राथमिक प्रशिक्षण विद्यालयों को बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयों में बदल दिया गया। और मूल अुचोग, सामाजिक जीवन, समवाय पद्धति से पढाना आदि विषयों का सपूर्ण प्रवेश अुन विद्यालयों के पाठ्यक्रम में हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यो को गति देन के स्याल से आर्थिक सहायता देकर खानगी संस्थाओं को प्रोत्साहित किया गया ताकि वे

बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय खोलकर अस काम को आगे बढ़ायें। सन् १९५५ में खानगी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षण कार्य के तरीके तथा ध्येया की तरनकी के संवध में जरूरी सलाह देने के लिअे सरकार ने अेक समिति नियुक्त की। अस समिति की सिफारिश वे अनुसार सरकार ने माध्यमिक तथा प्राथमिक शाला में अुत्तीर्ण शिक्षकों के लिअे दो साल का शिक्षक प्रशिक्षण सत्र प्रारंभ किया।

अिन दो सालों के प्रशिक्षण सत्र में माध्यमिक शाला का प्रमाण पत्र प्राप्तकर्ता शिक्षकों को अुच्च बु० विद्यालयों के लिअे तैयार किया जाता है जब कि प्राथमिक शाला परीक्षा अुत्तीर्ण प्रशिक्षार्थी निम्न बुनियादी शाला के शिक्षक बनन के लिअ तैयार किय जाते हैं। खानगी बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों को दो जानै-वाली आर्थिक सहायता ६०% से ६६ १/२% तक बढ़ायी गयी है। सत्र राज्य में १२६ बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं जिनमें ५१ सरकारी हैं और ७५ गैर सरकारी हैं। अिनमें साधारण तौर पर हर साल २००० शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है।

राज्य में ५ स्नातकोत्तर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय भी हैं जिनमें ३ मराठी क्षेत्र में हैं और दो गुजराती क्षेत्र में। वे अमरावती, धुलिया, गांगोटी, राजपेपला और पोरबंदर में हैं। वे हर सान १७५ स्नातका को प्रशिक्षित करते हैं।

शिक्षकों के लिअे अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र

अुपर्युक्त दीर्घ कालीन प्रशिक्षण सुविधाओं के अलावा बुनियादी विद्यालयों के शिक्षकों के

लिअे अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र तथा अध्ययन गोष्ठियों का आयोजन शिक्षा विभाग करता है। अल्पकालीन सत्र गर्मी की छुट्टियों में आयोजित होते हैं और अध्ययन-गोष्ठियाँ ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में आयोजित होती हैं। निरीक्षण अधिकारी तथा स्नातक शिष्यों के उपयोगार्थ—जिनका प्रशिक्षण पुराने ढंग से हुआ है—सोनों के बुनियादी शिक्षण केन्द्र में हर साल चार सप्ताहों का अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र चलाया जाता है। अलावा इसके बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय के बुद्धिमान-शिष्यों के लिअे अखिल भारत खादी कमीशन महाविद्यालय, श्रवक रोड नासिक में अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र कताभी व बुनाडी का प्रशिक्षण देने के लिअे चलाता है। ४०-५० शिक्षक हर साल यह प्रशिक्षण पाते हैं। सभी प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्राथमिक शाला के शिक्षकों के लिअे हर साल गर्मी की छुट्टियों में दो सप्ताह का अल्पकालीन प्रशिक्षण सत्र चलाया जाता है। जिन सत्रों में बुनियादी तथा सामाजिक शिक्षा का स्कूलों के कार्यक्रम में अनुस्थापन के संबंध में भी जानकारी दी जाती है। जिनके अलावा छ सप्ताहों के शिविर तथा अध्ययन गोष्ठियाँ का आयोजन भी हर साल ग्रीष्म की छुट्टियों में हर जिले में होता है। ये शिविर गैर बुनियादी स्कूलों में बुनियादी शिक्षा प्रारंभ करने से होनेवाली समस्याओं से संबंधित प्रश्नों पर चर्चा करते हैं। बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों ने भी अपने पड़ोसी शालाओं के लिअे विस्तार सेवा योजना को अपनाया है। यह योजना राज्य के १२ बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यान्वित हो रही है। जिन ६० प्र० महाविद्यालयों के आसपास में रहनेवाले

करीब २५ विद्यालयों को अिस विस्तार सेवा योजना से लाभ पहुँचा है। अगली गर्मी की छुट्टियों में हर जिले के बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सौराष्ट्र क्षेत्र के विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिअे पाँच सप्ताहों का प्रशिक्षण सत्र चलाने का विचार है।

बुनियादी विद्यालयों के लिअे साहित्य-निर्माण

बुनियादी विद्यालयों में काम करनेवाले शिक्षकों के मार्गदर्शन के लिअे बुनियादी शिक्षा पर राज्य ने साहित्य निर्माण किया है। अब तक तीन किताबें प्रकाशित की गयी हैं। जिनके अलावा, 'जीवन शिक्षण' नाम से मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं को—जो बुनियादी विद्यालयों के शिक्षकों के उपयोगार्थ ही प्रकाशित होती हैं—शिक्षा विभाग प्रोत्साहन देता है। शिक्षकों के लिअे साहित्य प्रादेशिक भाषा मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित किये जाते हैं। जनवरी १९५८ तथा १९५९ में बुनियादी शिक्षा सप्ताह में उपर्युक्त पत्रिकाओं ने बुनियादी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित लेखों का विशेषांक अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। शिक्षा विभाग ने बुनियादी शिक्षा पर पाँच बड़े विज्ञापन पत्र प्रकाशित किये जिन में तीन जनवरी १९५८ के बुनियादी शिक्षा सप्ताह में तथा दो जनवरी १९५९ के बुनियादी शिक्षा सप्ताह में प्रकाशित किये गये।

पाठ्यक्रम

सन् १९५५ तक शिक्षा विभाग ने बुनियादी तथा गैर-बुनियादी विद्यालय के लिअे अलग-अलग पाठ्यक्रम रखे थे बुनियादी तथा गैर बुनियादी स्कूलों में सातवें दर्जे के अंत में अलग-

अलग परीक्षाओं भी चलती थी लेकिन सन् १९-५५ में प्राथमिक तथा बुनियादी शिक्षा मंडलों की संयुक्त समिति से शिक्षा विभाग ने पाठ्यक्रम को संशोधित करा लिया और प्राथमिक स्तर के सभी विद्यालयों में चाहे बुनियादी या चाहे गैर-बुनियादी हो, यह सामान्य पाठ्यक्रम लागू किया। इस साधारणीकरण से दोनों की परीक्षा सामान्य हो गयी। गैर-बुनियादी विद्यालयों का बुनियादी शिक्षा के ढांचे में बदलने की दृष्टि से अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम को फिर से संशोधित किया गया और आरोग्य शिक्षा तथा सामाजिक जीवन को इस पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग मानकर इसमें शामिल किया गया। सप्रति सभी स्कूलों में सामाजिक या सामुदायिक जीवन अनिवार्य विषय बन गया है। आज विद्यालय का पहला घटा सफाई, प्रार्थना-आदि में ही लगाया जाता है। विभिन्न विषयों के अति स्कूलों में मंत्रियों का चुनाव होता है और सारे स्कूल के अति मंत्रियों की अंतर्परिपक्ष है। सांस्कृतिक कार्यक्रम, समारोह, सहल तथा हस्तलिखित पत्रिका चलाना आदि कार्य बुनियादी तथा गैर-बुनियादी स्कूलों का शिक्षा के अभिन्न अंग बने हुए हैं।

बुद्धिगम शिक्षण

बुनियादी विद्यालयों में बुद्धिगम शिक्षण की दिशा में बड़ी प्रगति से तरकीबों की गयी है। इस विषय में प्रमुख बदल यह लिया गया कि बच्चा तथा बच्ची काम के अति बुनियादी विद्यालयों में अप्रत्यक्ष होनेवाले साधनों में अंतर्दर्जा (Standard) निश्चित किया गया। शिक्षक तथा सचालकों को इस विषय में मार्गदर्शन करने के अति पुस्तक प्रकाशित की गयी है जिसमें बुनियादी स्कूलों के अप्रयोगी साधनों के विस्तृत विवरण—जैसे लकड़ी का

प्रकार लवाही, चौड़ाही, मुटाही, आकार तथा निश्चित दाम आदि दिये गये हैं। बुनियादी स्कूलों के अति आवश्यक चीजें बच्ची राज्य का ग्राम बुद्धिगम मंडल तैयार कर विद्यालयों की मांगों की पूर्ति करता है। इससे बुनियादी विद्यालयों को अच्छे प्रकार के मजबूत साधन सुगमता से मिल पाते हैं। बुद्धिगम भवनों के निर्माण के द्वारा इस दिशा में अंतर् और महत्वपूर्ण कदम अठाया गया है। विज्ञान की शालाओं को जिस तरह प्रयोग शालाओं की बड़ी आवश्यकता है उसी तरह बुनियादी विद्यालयों के अति बुद्धिगम भवनों की नितात आवश्यकता है। अति बुद्धिगम भवन के अति सरकार ने योजना बनायी है। अंतर्का सारा खर्च सरकार अठाती है। अंतर् बुद्धिगम भवन का खर्च र ४४०० तक होता है। कुल ३०० बुद्धिगम-भवनों के अति सरकार ने अब तक स्वीकृति दी है।

अन्तर बुनियादी विद्यालय

अन्तर बुनियादी विद्यालयों को खोलने के अति सरकार ने काफी प्रोत्साहन दिया है। किलहाल बच्ची राज्य में कुल आठ अन्तर बुनियादी विद्यालय हैं जिनमें से छ का सचालन खानगी संस्थाओं करती है और दो सरकार से चलाये जाते हैं। सीरापुर् के क्षेत्र में अन्तर बुनियादी विद्यालय लोकशाला कहे जाते हैं और वे अपनी ही परीक्षाओं के अति विद्यार्थियों को तैयार करते हैं। बच्ची राज्य में अन्तर बुनियादी विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों के समकक्ष हो माना गया है और माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तरह अन्तर बुनियादी विद्यालयों के विद्यार्थी भी माध्यमिक शाला प्रमाण पत्र (S S C.) परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इसमें अन्तर्णी होने पर अंतर्को विश्वविद्यालयों में भी प्रवेश मिल जाता है।

• विहार में बुनियादी शिक्षा

(१९५८-५९)

प्रथम अवस्था - ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

नयी तालीम के क्षेत्र में विहार राज्य को अेक विशेष स्थान प्राप्त है। जिस राज्य मे बुनियादी तालीम प्रारम्भ से लेकर आज तक विघ्न-बाधाओं और रुकावटों को पार करते हुअे निविघ्न प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सर्व प्रथम १९३८ में प्रथम बेसिक ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना हुअी। १९३९ में अुत्तर विहार के चम्पारण जिले में १०० मील के सघन क्षेत्र में कुछ बुनियादी विद्यालयों की स्थापना हुअी। यह क्षेत्र जिसके पहले भारत में पूज्य महात्मा गांधी के राजनैतिक कार्यकलापों के केन्द्र के रूप में विख्यात हो चुका था। बुनियादी शिक्षा के पूर्ण आठ वर्गों की शिक्षा की व्यवस्था का यह प्रथम प्रयास था जो अैसे पिछडे अिलाके म की गयी जहा पहले से अिने गिने प्रारम्भिक स्कूल ही मौजूद थे। राज्य सरकार द्वारा नियुक्त निरीक्षकों की अेक समिति जिसकी प्रगति की जाच बडी तत्परता से करती रही और प्रत्येक साल जिसका निरीक्षण और परीक्षण होता चलता था। नयी सस्याओं के सचालन के लिअे भाग्यवश नये शिक्षक सफलता पूर्वक प्रशिक्षित यही किये गये।

द्वितीय प्रयोगावस्था-

सघनक्षेत्र मे दस वर्षों के सफल प्रयोग के

सस्या का नाम	१९५२-५९ प्रवेशार्थी
५१९ सीनियर बेसिक स्कूल	९१,४९६
१४ पोस्ट बेसिक स्कूल	२,२१९
२० सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	३१४२

बाद राज्य के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे बुनियादी शिक्षा के सफल प्रसार की आशा बधी। १९४८ में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिअे कुछ और बेसिक ट्रेनिंग स्कूल खोले गये। सघन क्षेत्र के केन्द्रीय स्थान में अेक राजकीय अुत्तर बुनियादी विद्यालय की स्थापना हुअी। विहार की बुनियादी शिक्षा के अितिहास में १९५० वा साल अेक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है जब राज्य के प्रत्येक जिले में अेक-अेक बेसिक ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना हुअी। विशास योजनाओं के फलस्वरूप ५८० बुनियादी विद्यालय और १३ अुत्तर बुनियादी विद्यालयों की स्थापना हुअी। जिस अवसर पर बुनियादी विद्यालयों के निर्माण और प्रसार में जनता का भी काफी सहयोग हुआ। जिसके प्रमाणस्वरूप लागे ने ३०० अेकड़ जमीन का दान दिया। १९५१ वा वर्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं है जब अुत्तर बिहार के तुरकी नामक स्थान में अेक टीचर्स ट्रेनिंग कालेज खोला गया। जिस समय तक राज्य का शिक्षा विभाग जिस शिक्षा की परिणपूर्णता और विशेषताओं से परिचित हो चुका था।

वर्तमान अवस्था -

अभी विहार राज्य मे पूर्ण विवसित राज-किय बुनियादी विद्यालयों की सग्या और अवस्था निम्न लिखित है।

कुल खर्च	प्रतिछात्र खर्च	शिक्षकों की सख्या
४०,००,०००	४३)	३४७९
४,००,०००	१७५)	१५७
११ ००,०००	३४०)	१५८

अिसमें ११४२ सक्षिप्त प्रशिक्षण में—

प्रत्येक गुरु छात्र २०) प्रति माह की छात्रवृत्ति पाते हैं ।

अूपर की सरयाओ से पता चलता है कि राज्य की बुनियादी सस्याओ में लगभग अेक लाख छात्र पढते हैं । १९५१-५२ में बुनियादी विद्यालयों में लगभग ६६००० विद्याथिया का प्रवेश हुआ । अभी प्रवेशाथियों की सस्या ९१००० है । अिसका अर्थ यह हुआ कि विद्याथियों की भर्ती में ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है । अिसी तरह १९५१-५२ में सर्वोदय हाजी-स्कूलों में छात्रों की सस्या ११८४ थी । यह अब बढ़कर २२७९ हो गयी है । छात्रों की सस्या में प्रति साल वृद्धि होने से यह स्पष्ट होता है कि अिसकी अुपयोगिता का असर और प्रभाव लोणा पर पडता ही जा रहा है । अिनके अतिरिक्त जनता द्वारा संचालित अैसे २०० गैर सरकारी बुनियादी विद्यालय हैं जिन्हें राज्य सरकार से सहायता के रूप में कुछ रकम मिलती है । प्रतिवर्ष अिन विद्यालयों को सहायता के रूप में २००,००० रुपये राज्य सरकार देती है । छोटी से छोटी अेव बड़ी से बड़ी ये सारी सस्यामें सर्वांगपूर्ण बुनियादी सस्याम हैं । अब राज्य सरकार के लिये यह सम्व नहीं हो सकेगा कि प्रवेशाथियों की सस्या के लिये अेक अलग प्रतिवेदन साल-व-साल अिस रूपमें प्रस्तुत कर सकेगी, ब्योकि राज्य के सारे प्राथमिक विद्यालय बुनियादी विद्यालया में परिवर्तित हो रहे हैं । अुपर्युक्त सस्याओ में प्रारभिक विद्यालयों में प्रवेश पानेवाले छात्रों की सस्या नहीं है । ये धीरे धीरे बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तित हो रहे हैं । जनवरी १९५९ से ३०,००० प्रारभिक विद्यालयों के प्रथम, द्वितीय

और तृतीय वर्ग बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तित हो चुके हैं ।

तृतीय अवस्या राज्य भर में प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप बुनियादी शिक्षा —

बिहार में बुनियादी शिक्षा की तीसरी दशा की अर्थात् १९५८-५९ की अवधि शिक्षा के विकास में अक अतिहासिक महत्व रखती है । १९३८ से ही बुनियादी शिक्षा सबधी प्राप्त अनुभवों के आधार पर अिसके प्रचार अेव प्रसार तथा राज्य के सारे प्रारभिक विद्यालयों में परिवर्तन का कम विधिवत् और ब्यावहारिक रूप में अपनाया गया है । अिस तरह प्रत्येक साल अेक अेक वर्ग परिवर्तित होता चलेगा । पुराने शिक्षाक्रम के स्थान पर अेक नया अनुकूलित शिक्षाक्रम लागू किया गया है । यह कदम काफी सोच समझकर सही दिसा में अुठाया गया, ब्योकि प्रारभिक विद्यालयों के अधिकाधिक शिक्षक बेसिक ट्रेड नहीं थे । तीस हजार प्रारभिक विद्यालयों के सत्तर हजार शिक्षकों में सिर्फ छ हजार शिक्षक बेसिक ट्रेड थे । पूरे बेसिक ट्रेड शिक्षकों से ही अनुस्थापन का कार्य प्रारभ किया जाय अिसके लिये ठहरने के वास्ते जनता तैयार न थी । जनता अपने बच्चों के लिये समन्वित और व्यवस्थित सुंदर शिक्षा चाहती थी । अुन्होंने अपनी आवाज विधान सभा और प्रेस के द्वारा बुलन्द की कि यदि बुनियादी शिक्षा अच्छी शिक्षा है तो परम्परागत विद्यालयों और बुनियादी विद्यालयों के बीच का अेद मिटा दिया जाय । बुनियादी शिक्षा की प्रगति और जनता की प्रबल जिच्छा के फलस्वरूप राज्य सरकार ने बेसिक अेजुकेशन बोर्ड की देखरेख में सम्पा-

दित अनुकूलित शिक्षाक्रम को जनवरी १९५९ से प्रथम द्वितीय और तृतीय वर्षों में लागू किया है। बाद में प्रत्येक वर्ष अंक अूपर के ओ वर्ष में कमया यह शिक्षाक्रम लागू होता चलेगा और यह आशा की जाती है कि १९६४ तक राज्य की सारी प्रारम्भिक शिक्षा बुनियादी शिक्पा के ढांचे में परिवर्तित हो जायगी। १०-३० से ४ तक कुछ विद्यालयों के कार्यक्रम और पूर्वाह्न और अपराह्न दो शिफ्टों की समय-सारिणी में सोच समझ कर सुधार किया है। स्वावलम्बन, सामुदायिक जीवन और समवायी शिक्षा बुनियादी शिक्पा का मेरुदंड है और य सारी चीजें नये अनुकूलित शिक्पाक्रम म समावेशित की गयी हैं।

४-विशेष शिक्पाको की तैयारी

राज्य के सारे ट्रेनिंग स्कूल अब बेसिक ट्रेनिंग स्कूल हैं। अभी सीनियर बेसिक ट्रेनिंग स्कूल २० हैं। अिन प्रशिक्षण केन्द्रों से १००० प्रतिवर्ष शिक्पाक प्रतिवर्ष निकलते हैं। अिन स्कूलों में भी छात्रों की सख्या बढ़ायी गयी है जिससे द्वितीय पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक अिससे दून शिक्पाक अिन केन्द्रों से प्रतिवर्ष प्रशिक्षित होते चले। मैट्रिकुलेशन या अिन्टरमीडियट क बाद दो वर्षों का सर्टिफिकेट कोर्स अिन प्रशिक्षण केन्द्रों में चालू है।

अिन सीनियर ट्रेनिंग स्कूलों के अतिरिक्त ४२ जूनियर ट्रेनिंग स्कूल हैं। पहले मैट्रिक से कम योग्यता वाले छात्र भी अिन विद्यालयों में प्रवेश पा जाते थे। लेकिन अब अिनमें काफी सुधार करक बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। निम्नवर्गीय एवं महिला छात्रों को छोडकर अब अिनमें भी सिर्फ मैट्रिक प्रवेशार्थी ही लिय जाते हैं। जिस

साल से जूनियर बेसिक ट्रेनिंग स्कूल भी सीनियर बेसिक ट्रेनिंग स्कूल के शिक्पाक्रम को अपना चुके हैं। अिन प्रशिक्षण केन्द्रों से ४००० शिक्पाक प्रतिवर्ष प्रशिक्षित होते चलेगे। अत दो वर्षों के भीतर बिहार के बेसिक ट्रेनिंग स्कूल प्रतिवर्ष ६००० बेसिक ट्रेड शिक्पाक प्रशिक्षित करते चलेग।

पुराने स्टाफ के पुन प्रशिक्षण की भी व्यवस्था अिन ट्रेनिंग स्कूलों में की गयी है। ६ महिन से लवर १ वर्ष का विशिष्ट कोर्स चालू किया गया है। अिस तरह प्रतिवर्ष २,००० शिक्पाक को बुनियादी तालीम का प्रशिक्षण मिलता है।

५-टीचर्स ट्रेनिंग कालेजों का भी पुन सगठन हुआ है। अिन ट्रेनिंग कालेजों में अक वर्ष का स्नातकोत्तर प्रशिक्षण होता है जिसमें सामुदायिक जीवन औद्योगिक प्रशिक्षण और और समवायी शिक्पा का अम्मास आवश्यक है। राजकीय ट्रेनिंग कालेजों के अतिरिक्त पटना विश्वविद्यालय म और भी ट्रेनिंग कालेज हैं। अिन दोनों तरह के ट्रेनिंग कालेजों के शिक्पाक्रम म सुधार कर दिया गया है जिससे बुनियादी शिक्षा के आधार पर सगठित माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

६-अुद्योग विशेषज्ञों का प्रशिक्षण

ये ट्रेनिंग स्कूल और ट्रेनिंग कालेज प्रत्येक छात्र को अुनके द्वारा चुन गये अेक मुख्य अुद्योग और अक सहायक अुद्योग में भी प्रशिक्षण देते हैं। फिर भी वह गुरु छात्र यदि बेसिक या पोस्ट बेसिक स्कूल से अुत्तीर्ण छात्र नहीं हैं तो ट्रेनिंग सस्थाओं में प्राप्त औद्योगिक प्रशिक्षण के द्वारा अुसे अुद्योग का प्रारम्भिक ज्ञान ही प्राप्त हो सकेगा। अिसलिये विशिष्ट

औद्योगिक प्रशिक्षण के लिये अंक विशिष्ट कोर्स की व्यवस्था की गयी है। जिसमें अंसे ही शिक्षको को प्रशिक्षित किया जाता है जो टीचर्स ट्रेनिंग सस्थाओं से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर चुके हों। बुनाओ और काष्ठकला के अिस विशिष्ट प्रशिक्षण में अंक वर्ष का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रशिक्षक अिस प्रशिक्षण के लिये प्रतिनियोजित किये जाते हैं। बुनियादी विद्यालयों के शिक्षको के लिये राज्य के अंक सीनियर ट्रेनिंग स्कूल में कृषि के विशिष्ट प्रशिक्षण के वास्ते प्रवष कर दिया गया है जहा ६० अंकड जमीन का अंक बहुत बडा फार्म है।

७-पर्यवेक्षी कर्मचारियों का प्रशिक्षण

प्रारम्भिक विद्यालयों के पर्यवेक्षको के अतिरिक्त शायद बिहार ही अंसे कुछ राज्यों से से अंक है जहा पर्यवेक्षी कर्मचारियों का प्रवष किया गया है और राष्ट्रीय प्रसार सेवा क्षेत्रों की सन्धा के आधार पर अुनकी बहाली हुआ है। ६३५ अवर शिक्षा निरीक्षको का पद तो स्वीकृत हो चुका है। प्रारम्भिक विद्यालयों की देखरेख की पूरी जबाबदेही अधिकारियों को दे दी गयी है। बुनियादी शिक्षा में अिनकें भी प्रशिक्षण की आवश्यकता बहुत पहले सपसी गयी। अिसलिये प्रतिवर्ष १०० अधिकारियों को ५०-५० की दो टोलियों में ६-६ महीने के प्रशिक्षण की व्यवस्था अंक सीनियर ट्रेनिंग स्कूल में कर दी गयी है। यह १९५६ में शुरू हुआ। प्रशिक्षण की अवधि मे अिन अधिकारियों से मूल अुद्योग में गहन अम्यास, दो अन्य अुद्योगों का काम चलाअू अान अम्यास पाठ और बुनियादी विद्यालयों के निरीक्षण का व्यावहारिक अम्यास कराया जाता है। ये सामुदायिक जीवन

का भी व्यावहारिक अम्यास करते हैं जो अिनकी प्रगति विषयक जाचका अंक अग है। यह विशिष्ट प्रशिक्षण बिहार के अंक प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्र विरूम में संगठित किया गया है जिसका बिहार के प्रशिक्षण केन्द्रों में अंक विशिष्ट स्थान है।

शिक्षा विभाग के अुच्चस्तरीय अधिकारियों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गयी है। यह १५ दिनों का "नयी तालीम" प्रशिक्षणक्रम सेवाग्राम, वर्धा में भी चलता है।

अिन सारी बातों से यह पता चलता है कि बिहार राज्य ने बुनियादी शिक्षा के प्रत्येक अग को सुदृढ करने के लिये ठोस कदम अुठाया है।

८-बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों का अन्य सस्थाओं में प्रवेश

१४ अुत्तर बुनियादी विद्यालयों की स्थापना बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों का माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश कराने के लिये हुआ थी। ये अुत्तर बुनियादी विद्यालय १९४८ में ही बहूद्देशीय माध्यमिक विद्यालयों के रूप में शुरू किये गये थे। कला, विज्ञान और अुद्योग के अध्ययन की व्यवस्था की गयी थी। ये अुद्योग प्रत्येक अुत्तर बुनियादी विद्यालय में अपनाये गये थे। माध्यमिक शिक्षा के अनुस्थापन के फलस्वरूप ये अुत्तर बुनियादी विद्यालय हायर सेकेण्डरी में बदल दिये गये और अिनका विकास अब बहूद्देशीय माध्यमिक विद्यालयों के रूप में हो रहा है। अिन अुत्तर बुनियादी विद्यालयों में कला, अुद्योग और कृषि मुख्य विषय हैं। अंसा कदम भी आगे अुठाया जा रहा रहा है कि सामुदायिक जीवन और अुद्योग का स्तर अिन अुत्तर बुनियादी विद्या-

लयों का जितना अूचा हो कि अन्य परम्परागत माध्यमिक विद्यालय जिनका अनुसरण करे।

९-बिहार की संस्थाओं में जांच और परीक्षण का स्थान

बिहार की बुनियादी संस्थाओं में बाह्य परीक्षा का स्थान नहीं था। उनके कार्य और रेकार्ड की जांच ही उनकी परीक्षा का रूप था। इस तरह की जांच (असेसमेंट) के लिये अत्यन्त योग्य स्टाफ चाहिये और सफलता के अनेक कारण हैं। लेकिन अब जब कि प्रारम्भिक विद्यालयों का अनुस्थापन बुनियादी विद्यालयों में हो रहा है, यह निश्चय हुआ है कि ५० प्रतिशत बाह्यपरीक्षा और ५० प्रतिशत जांच (असेसमेंट) प्रत्येक स्तर के

कच्चा माल और उत्पादन।

संस्था का नाम	कच्चा माल	उत्पादित वस्तुओं की कीमत	खजाने में जमा की गयी रकम
५७९ बुनियादी विद्यालय	१,१६,३९२	२,२५,९४१	१,७०,४९४
१४ उत्तर बुनियादी विद्यालय	२०,१९१	५८,८०२	४७,१८७
२० सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	३९,३३१	७९,३५३	४०,६९४
	१,७५,९१४	३,६४,०९६	२,५८,३७५

कच्चे माल पर प्रतिशत उत्पादन।	बेसिक स्कूल	२१३ प्रतिशत।
	पोस्ट बेसिक स्कूल	२७९ "
	सीनियर ट्रेनिंग स्कूल	१८१ "

अूपर की संस्थाओं से बुनियादी शिक्षा के उत्पादन अग पर प्रकाश पड़ता है। उत्पादक कार्यक्रम में नियम की कठोरता नहीं है।

अद्योग व्यवस्थित ढंग से संगठित हैं और यह बिहार में बुनियादी शिक्षा का मुख्य अग है। उत्पादित वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था में कोअी कठिनायी नहीं होती क्योंकि ये विद्यालय में ही खप जाती है।

अुपसंहार - बिहार राज्य में बुनियादी शिक्षा का कार्य दो दशान्दियों से भी अधिक समय से चल रहा है। अपने पथ पर बढ़ने के लिये जिसे अनेक कठिनायियों का भी

नजी तालीम की दिशा में बिहार में गैर-सरकारी प्रयत्न

संयोजक, बिहार सर्वोदय मंडल

१९४६ के पहले गैर-सरकारी आधार पर नजी तालीम का काम व्यवस्थित रूप में बिहार में चल रहा था। उसके बाद की बदली हुई परिस्थिति में प्रायः सभी क्षेत्रों में गैर-सरकारी आधार पर काम करने की प्रवृत्ति कुछ ढीली पड़ गयी। वही हाल बिहार में नजी तालीम के काम का भी हुआ। विनाबाजी के भूदान आन्दोलन के बाद से फिर गैर-सरकारी आधार पर पुर्नार्थ करने की प्रवृत्ति जागी किन्तु बहुत दिनों तक भूदान ग्रामदान आदि कार्यों की ओर ही कार्यकर्त्ताओं का ध्यान विशेष रूप से रहा। ग्राम स्वराज्य के विचार को अमली रूप देने के बारे में जब सोचा जान लगा तो प्रगट हुआ कि ग्राम स्वराज्य का ग्रामदान के विचार के साथ जैसे अभिन्न सदृश है वैसे ही नजी तालीम के साथ भी है। नजी तालीम के बिना ग्राम-स्वराज्य संभव नहीं। इसी बीच विनाबाजी अकेले की पाठशाला और अकेले के महा-विद्यालय का विचार भी देखे चुके थे। कार्यकर्त्ताओं ने अब यह महसूस किया कि नजी तालीम की दिशा में भी अपनी शक्ति भर प्रयत्न करना अनिवार्य है।

विनाबाजी जब बिहार में यात्रा कर रहे थे तो उन्होंने १९५४ के अन्त में बिहार सर्वोदय मंडल नाम की एक संस्था बनायी थी। खादी

ग्रामोद्योग, हरिजन सेवा, आदिवासी सेवा, महिला अत्याचार आदि कार्य करनेवाली विभिन्न संस्थाएँ अब तक अलग-अलग काम करती थीं। अकेले दूसरे के साथ संपर्क नहीं था। अनेक विभिन्न संस्थाओं के बीच संपर्क स्थापित करना अकेले दूसरे की मदद करे, जिसकी कोशिश करना तथा भूदान ग्रामदान के काम में सब संस्थाएँ भाग ले अंसी स्थिति उत्पन्न करना सर्वोदय मंडल का काम रहा। इसके अलावा सर्वोदय आन्दोलन में तब कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करना तो इसका काम था ही। सर्वोदय मंडल ने नजी तालीम की दिशा में भी कुछ करने का निर्णय किया। इसके लिये उसने १९५७ में एक नजी तालीम समिति बनायी। इस समिति में आचार्य वद्वनाथ वर्माजी और श्री रामशरण अणुप्राध्यायी भी सदस्य रहे। श्री अणुप्राध्यायी से इस समिति के संयोजक बनने का भी अनुरोध किया गया और उन्होंने कृपापूर्वक यह उत्तरदायित्व स्वीकार किया। जाहिर है कि ये दोनों व्यक्ति नजी तालीम के क्षेत्र में बिहार में शुरू से ही मार्गदर्शक रहे हैं। सर्वोदय मंडल ने भी उनके मार्गदर्शन में नजी तालीम का कार्यक्रम चलाने का निश्चय किया।

मंडल ने यह अनुभव किया कि नजी तालीम के प्रति जनता में जो अज्ञानता है उसको दूर

(पृष्ठ ३७४ का शेषार्थ)

सामना करना पड़ा। बिहार के लिये यह अब विचार विमर्श का विषय नहीं रह गया है। अब राज्य सरकार ने अपनी नीति निश्चित कर ली है कि प्रारम्भिक विद्यालयों को धुनियादी

विद्यालयों में परिवर्तित कर ही लिया जाय। इसकी प्रयोगावस्था कब की समाप्त हो गयी। अब तो सारे विद्यालयों के लिये असे अपनाये का मसला सामने है।

करना सब से जरूरी काम है, दूसरा काम अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय चलाना है। तीसरा काम कोअी अेसा विद्यालय चलाना है जिसमें नअी तालीम का आदर्श-रूप अुपस्थित हो सके। मडल ने यह कोशिश की कि रचनात्मक कार्य में लगे सभी कार्यकर्ता नअी तालीम के प्रति जनता में अभिरुचि अुत्पन्न करे। पूसा में हुअे द्वितीय प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन में अिस आशय के अेक प्रस्ताव के द्वारा सभी रचनात्मक कार्यकर्ताओं से अिसके लिअे निवेदन किया गया। बाद में अेक नअी तालीम विचार गोष्ठी का आयोजन श्री जयप्रकाश नारायणजी की अध्यक्षता में खादीग्राम में किया गया। अिस गोष्ठी में विस्तारपूर्वक अिस विषय में चर्चायें हुअी। अन्य बातों के अलावा यह तय हुआ कि रचनात्मक कार्यकर्ताओं के तीन तीन दिन के शिविर किये जायें। अिन शिविरों में नअी तालीम का विचार कार्यकर्ताओं को अिस प्रकार से समझाया जाय कि वे जनता में नअी तालीम के अनुकूल हवा तैयार करने के लिअे प्रचार कर सके और अैसे कार्यकर्ताओं का धुनाव किया जाय जो अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय का काम करे। अिस निर्णय के अनुसार छ शिविर बिये गये जिनमें लगभग अेक

हजार कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। अिनमें से करीब २०० व्यक्ति अेक घटे की पाठशाला और अेक घटे का महाविद्यालय का काम चलाने को चुने गये। अब ५०-५० के अंश में २०० साथी बहनों को प्रशिक्षण देकर अिस काम में लगाना है। अनिवार्य कारणों से प्रशिक्षण का काम अभी शुरू नहीं हो सका है। अब शुरू करने की कोशिश हो रही है। आशा है यह काम तुरंत ही शुरू हो जायेगा।

जहा तक नअी तालीम का विद्यालय चलाने का पकन है अेक विद्यालय सर्वोदय ग्राम, भुज-फरपुर बिहार खादी ग्रामोद्योग सघ के अभिक्रम से चल रहा है। अिसको अधिक समुन्नत बनाने का प्रयास हो रहा है। मडल चाहता है कि यह विद्यालय नअी तालीम का अेक आदर्श विद्यालय बन जाय। अेक दूसरा प्रयत्न श्री घीरेन्द्र मजूमदारजी के मार्गदर्शन में गांव का ही विद्यालय मानकर नअी तालीम के प्रयोग करने का है। अिसके लिअे गांव का चुनाव किया जा रहा है और आशा है अिस आधार पर शीघ्र ही नमूने का काम अुपस्थित किया जा सकेगा।

गैर सरकारी आधार पर बिहार में जो थोडा बहुत काम नअी तालीम की दिशा में हम लोग कर सके हैं और करना चाहते हैं अुसका यह अेक संक्षिप्त परिचय है।

असिल भारत नयी तालीम सम्मेलन, राजपुरा

सम्मेलन समाप्त हुआ है ।

कार्यारम्भ होता है ।

पंजाब सरकार का निमन्त्रण स्वीकार कर तालीमी सच ने अखिल भारत नयी तालीम सम्मेलन का तेरहवा अधिवेशन राजपुरा में अप्रैल २५, २६, और २७ को बुलाया । पंजाब में पहली बार यह सम्मेलन सपन्न हुआ । असिलिमे अुम्मीद है कि सूवे में नयी तालीम के प्रति अभिलषि बढ़ाने में यह सम्मेलन मददगार हुआ होगा । अप्रैल के ये तीन दिन भी खास कारण से मुकरंर किये गये । पूज्य विनोबाजी अपनी पदयात्रा में २५ और २६ अप्रैल को राजपुरा में मुकाम करनेवाले थे । असिले सम्मेलन को अुनकी अपस्थिति का लाभ भी मिल सका । लेकिन साल के ये आखिरी दिन अपनी सस्याओं से निकलकर बाहर बहुत दूर जाने के लिये प्रतिकूल थे । अिन कारणों से दूसरे प्रान्तों से कार्यकर्तागण बड़ी तादाद में हाजिर नहीं हो सके । फिर भी जो थोड़े लोग आये खास अुद्देश्य से आये और अध्ययन मडलियो तथा चर्चाओं में दिलचस्पी के साथ भाग लिया ।

पिछले सालों से चलती आयी परंपरा के अनुसार असिल साल भी अप्रैल २३ और २४ दो दिन नयी तालीम के शिवपको तथा कार्यकर्ताओं का अेक खास सम्मेलन भी सपन्न हुआ । नयी तालीम प्रदर्शनी का अुद्घाटन २३ अप्रैल के दिन हुआ । सम्मेलन की अवधि में प्रतिनिधिगण तथा जनता असिल प्रदर्शनी का लाभ अुठा सके ।

नयी तालीम के असिल अक में सम्मेलन को चर्चाओं और निष्कर्ष आदि का अुल्लेख अलग

दिया है । असिलिमे अुनको यहां दुहरान की आवश्यकता नहीं है । केवल अुन नयी बातों और नये पहलुओं का जिक्र करना तथा अुनका महत्व समझाना पर्याप्त है जो राजपुरा में पेश आये ।

शिक्षक सम्मेलन का अुद्देश्य यह रहा कि स्कूलों और प्रशिक्षण केन्द्रों के रोजमर्रे के कार्य में लगे कार्यकर्ताओं को नयी तालीम के सिद्धांतों व कार्य प्रणाली का साफ चित्र देना । असिल सम्मेलन की चार बैठके हुअी । तीन में नीचे लिखी बातों पर चर्चा हुअी ।

१ नयी तालीम का स्वरूप क्या है ?

२ पढ़ाने की प्रणाली क्या है ?

३ नयी तालीम स्कूलों की व्यवस्था ।

चौथी बैठक में अपस्थित शिक्षकों को अपनी कठिनायियां सब के सामने पेश करने का अवसर दिया गया । फिर अुन समस्याओं का हल अेक महारथीदल "Brain Trust" द्वारा विषयानुसार सुझाया गया । हर अेक बैठक का अध्यक्षपद पंजाब के अेक-अेक अनुभवी शाला शिक्षकों ने शोभित किया । यह अेक नयी और निराली प्रथा थी । हर अेक अध्यक्ष ने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा किया । असिल नयी प्रणाली से जितने लाभ की समावना थी अुतना नहीं हो सका । कारण अपस्थित लोगों में शिक्षकों की अनिश्चित प्रशिक्षणार्थी ज्यादा थे । प्रत्यक्ष अनुभव की कमी के कारण प्रशिक्षार्थी लोग बैठक में पेश हुअे प्रश्नों का पूरा महत्व नहीं

समझ सके। अपने अपने क्षेत्रों में छोटी-छोटी मंडलियों में जिस कार्य की और चर्चा करे तो विशेष लाभ हो सकेगा। शिक्षक सम्मेलन के चर्चा के विषयों को मूर्त रूप में उपस्थित करने में प्रदर्शनी उपयोगी सिद्ध हो सकी। जिस वर्ग की प्रदर्शनी में अद्योग व ज्ञान के समवाय के अच्छे-अच्छे नमूने रखे थे। बालकों के व्यक्तित्व के विकास को भी बतानेवाले असरदार नमूने भी थे। कभी वार ऐसा भी हुआ कि किये गये प्रश्नों के जवाब में अतना ही कहना पर्याप्त रहा कि प्रदर्शनी में फलाना नमना देखें, अतमे आपको जवाब मिलेगा।

बिहार राज्य में नयी तालीम का कार्य कभी सालों से लगातार सफलापूर्वक चलता आ रहा है। जिस कारण से वहाँ से आये नमूने काफी असरदार व शिक्षाप्रद थे। अन्यान्य नये स्कूलों से जो नमूने आये थे वे नयी तालीम के उपयुक्त नहीं कहे जा सकते। मामूली स्कूलों के नमूनों के समान ही थे। असा प्रतीत हुआ कि नयी तालीम प्रदर्शनी के मूलभूत अमूलों को ठीक ठीक रयाल में नहीं रखा गया था, यद्यपि स्वागत समिति ने अक छोटी पर अच्छी मार्गदर्शिका तैयार करके भेजी थी जिसमें नयी तालीम प्रदर्शनी के बारे में समझाया गया था। जिस स्थिति को सुधारने का क्या तरीका ही असपर विचार करना है। अपने आसपास के स्कूलों के अध्यापकों के साथ विचार विनिमय करके हर प्रशिक्षण विद्यालय अक प्रदर्शनी का आयोजन करे। इसके पदचात हर अक शिक्षक अपने अपने दैनिक कार्य के आधार पर आलेख (Chart) तैयार करे। जिस तरीके से प्रशिक्षण केन्द्र समवाय-पद्धति का विकास कर सकेगा।

नयी तालीम को अच्छी तरह समझाने के लिये और अक साधन है प्रत्यक्ष समवाय पाठ। राजपुरा के सम्मेलन के अवसर पर असे पाठों का आयोजन हो सका। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री विद्यालंकार जिसमें दिलचस्पी रखते थे और राजपुरा में तालीमी सघ के मार्गदर्शन में कजों सालों से नयी तालीम के स्कूल चलते थे। जिस साल के सम्मेलन की अक विलकुल नयी चीज यह थी कि राजपुरा के नयी तालीम शालाओं में से पाच वर्ग चुने गये। हर अक वर्ग के लिये प्रदर्शनी का अक अक कमरा दिया गया। जिस तरह हर कमरे में अक वर्ग के पाच दिन का काम चलता रहा। हर अक वर्ग ने अलग-अलग अद्योग के आधार पर अपनी योजना बनायी।

- | | | |
|----------------------------|----------|--------------|
| १ पूर्व-दुनियादी - | शैक्षणिक | खेल-साधन |
| २ दुनियादी वर्ग दूसरा | | कताजी |
| ३ " " तीसरा | | बागज काम, |
| | | कापिया बनाना |
| ४ " " सातवा | | बागवानी |
| ५ उत्तर दुनियादी वर्ग दसवा | | बडभीगिरी |

जिसी खास शिक्षक को बुलाने का प्रयत्न नहीं किया गया। मामूली शालाओं में से बाहर की कोजी खास परिस्थिति तैयार करने का प्रयत्न भी नहीं हुआ। मतलब यह है कि साधारण स्कूल के रोजमर्रे के काम को ही चलाकर दिखाया गया जहाँ शिक्षक अद्योग व ज्ञान के समवाय का अपना तरीका लोगों के सामने रखते थे। पूर्व दुनियादी विभाग में अक अपवाद रहा। वहाँ Holland की श्रीमती क्रिस्तीना सेगबोअर (Christina Segboer) ने वर्ग शिक्षक के साथ यह प्रदर्शित किया कि स्थानिक साधनों को लेकर सस्ते पर कारगर खेल साधन किस तरह बनाये जा सकते हैं।

सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने जिस योजना की खूब सराहना की। सबसे अनु बालकों और शिक्षकों को तहेदिल से धन्यवाद दिया।

सम्मेलन की अध्ययन मंडलियों में कोसी खास चीज नहीं रहो। केवल "शिक्षा और शान्ति" और "सोध-कार्य" ऐसे दो विषय जोड़े गये।

अध्ययन के लिये जो समय दिया गया—एक दोपहर और दूसरे दिन सवेरे—और जो निष्कर्ष निकले दोनों सन्तोषजनक माने गये। भुम्मीद है कि अिन निष्कर्षों के आधार पर नयी तालीम के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर सविस्तार अध्ययन कार्य चलेगा। प्रतिनिधिगण अपने-अपने स्थान में जाकर जिस अध्ययन को जारी रखेंगे ऐसी भुम्मीद है। अन्यथा जो अुत्साह राजपुरा में शुरू हुआ वह ठंडा पड जायगा।

सम्मेलन के कार्य पर विचार करते समय यही एक बात महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। सम्मेलन कोसी सिद्धि नहीं है। सम्मेलन का लाभ जिसमें है कि वह नये अध्ययन, नये कार्य और नये प्रयत्न का अुत्साह पैदा करे। जमाने की क्या मांग है? अितना ही नहीं कि आजकल के बुनियादी व गैर बुनियादी के द्वैत को समाप्त करके अुनके बदले में सबके लिये और समान एक राष्ट्रीय शिक्षा योजना बनावे, बल्कि समय की पुकार यह है कि शिक्षण विचार पर एक राष्ट्रीय आन्दोलन हो, ताकि राष्ट्रमानस

शिक्षा की सामान्य नीति और व्यवहार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर गभीर चिंतन शुरू करे। सवाल क्या है? यह तो पूज्य विनोबाजी और देशमान्य नेताओं ने अपने भाषणों में साफ-साफ व्यक्त किया ही है।

१ राष्ट्रीय शिक्षा तथा राष्ट्रीय सरकार दोनों के बीच का सही संबंध क्या हो?

२ सच्ची शिक्षा का सर्वस्व स्वतंत्रता है। अुस आजादी को कायम रखते हुअे सरकार अपना फर्ज कैसे अदा कर सकती है?

३ कम से कम चौदह साल की अुमर तक राष्ट्र के सब बालकों को शिक्षा की व्यवस्था कैसे की जाय?

४ शाला के अभ्यासक्रम में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं का स्थान क्या हो? सासकर अंग्रेजी का।

अिन सवालों का जवाब केवल तर्क से या नारों से नहीं दिया जा सकता। जरूरत है गभीर चिंतन व अध्ययन की।

सम्मेलन ने ये सवाल अुठाये हैं। प्रतिनिधियों का यह कर्तव्य है कि जबतक समूचे राष्ट्र का ध्यान जिस ओर आकृषित न हो जाय तबतक आराम न ले। "राम काज किये बिन मोहि कहाँ विश्राम" यही अगला कदम है।

—मार्जरी साजिक्स

समझ सके। अपने अपने क्षेत्रों में छोटी-छोटी मंडलियों में इस कार्य को और चर्चा करे तो विशेष लाभ हो सकेगा। शिक्षक सम्मेलन के चर्चा के विषयों को मूर्त रूप में अप्रस्थित करने, में प्रदर्शनी उपयोगी सिद्ध हो सकी। जिस वर्ष की प्रदर्शनी में बुद्धि व ज्ञान के समवाय के अच्छे-अच्छे नमूने रखे थे। बालकों के व्यक्तित्व के विकास को भी बतानेवाले असरदार नमूने भी थे। कभी बार ऐसा भी हुआ कि क्रिये गये प्रश्नों के जवाब में अतिना हो कहना पर्याप्त रहा कि प्रदर्शनी में फलाना नमूना देखें; उसमें आपको जवाब मिलेगा।

बिहार राज्य में नयी तालीम का कार्य कभी सालों से लगातार सफलापूर्वक चलता आ रहा है। इस कारण से वहां से आये नमूने काफी असरदार व शिक्षाप्रद थे। अन्याय नये स्कूलों से जो नमूने आये थे वे नयी तालीम के अप्रयुक्त नहीं कहे जा सकते। मामूली स्कूलों के नमूनों के समान ही थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि नयी तालीम प्रदर्शनी के मूलभूत अंशों को ठीक ठीक ख्याल में नहीं रखा गया था, यद्यपि स्वागत समिति ने एक छोटी पर अच्छी मार्गदर्शिका तैयार करके भेजी थी जिसमें नयी तालीम प्रदर्शनी के बारे में समझाया गया था। जिस स्थिति को सुधारने का क्या तरीका हो उसपर विचार करना है। अपने आसपास के स्कूलों के अध्यापकों के साथ विचार विनि-मय करके हर प्रशिक्षण विद्यालय एक प्रदर्शनी का आयोजन करे। उसके पश्चात् हर एक शिक्षक अपने अपने दैनिक कार्य के आधार पर आलेख (Chart) तैयार करे। जिस तरीके से प्रशिक्षण केन्द्र समवाय-पद्धति का विकास कर सकेगा।

नयी तालीम को अच्छी तरह समझाने के लिये और एक साधन है प्रत्यक्ष समवाय पाठ। राजपुरा के सम्मेलन के अवसर पर ऐसे पाठों का आयोजन हो सका। राज्य के शिक्षा मंत्री श्री विद्यालंकार इसमें दिलचस्पी रखते थे और राजपुरा में तालीमी सभ के मार्गदर्शन में कभी सालों से नयी तालीम के स्कूल चलते थे। जिस साल के सम्मेलन को एक बिलकुल नयी चीज यह थी कि राजपुरा के नयी तालीम शालाओं में से पांच वर्ग चुने गये। हर एक वर्ग के लिये प्रदर्शनी का एक एक कमरा दिया गया। जिस तरह हर कमरे में एक वर्ग के पांच दिन का काम चलता रहा। हर एक वर्ग ने अलग-अलग बुद्धि के आधार पर अपनी योजना बनायी।

- | | | |
|----------------------------|----------|------------------------|
| १ पूर्व-बुनियादी - | शैक्षणिक | खेल-साधन |
| २. बुनियादी वर्ग दूसरा | | कताजी |
| ३. " " तीसरा | | वागज काम, कापिया बनाना |
| ४ " " सततवा | | बागवानी |
| ५ उत्तर बुनियादी वर्ग दसवा | | बढ़ीगिरी |

किसी खास शिक्षक को बुलाने का प्रयत्न नहीं किया गया। मामूली शालाओं में से बाहर की कोई खास परिस्थिति तैयार करने का प्रयत्न भी नहीं हुआ। मतलब यह है कि साधारण स्कूल के रोजमर्रे के काम को ही चलाकर दिखाया गया जहाँ शिक्षक बुद्धि व ज्ञान के समवाय का अपना तरीका लोगों के सामने रखते थे। पूर्व बुनियादी विभाग में एक अपवाद रहा। वहाँ Holland की श्रीमती क्रिस्तीना सेगबोअर (Christina Segboer) ने वर्ग शिक्षक के साथ यह प्रदर्शित किया कि स्थानिक साधनों को लेकर सस्ते पर कारगर खेल साधन किस तरह बनाये जा सकते हैं।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

हिंदी पुस्तकें

मूल्य	मूल्य
रु न पै.	रु न पै.
शिक्षा पर गान्धीजी के लेख व विचार	१४ अन्तर-बुनियादी शिक्षाक्रम (सक्षिप्त) ०-२५
१. शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति १-००	१५ पूर्व-बुनियादी शिक्षा की ट्रेनिंग का पाठ्यक्रम ०-६३
बुनियादी शिक्षा सम्मेलनों की रिपोर्टें	अन्य पुस्तकें
२ बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (डॉ जाकिर हुसेन समिति की रिपोर्टें) १-५०	१६ भारत की कथा (अभिनय तथा संगीत) ०-५०
३ समग्र नअी तालीम २-७५	१७ नअी तालीम का आयोजन ०-०६
४. आठवा न ता सम्मेलन विवरण १-२५	१८ सेवाग्राम—गायीलोक ०-३१
५ नवा " " " ०-६३	१९ सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार (श्री राजीस) ०-०६
६. दसवा " " " ०-७५	
७ ब्यारहवा " " " १-००	
८. बारहवा " " " १-५०	
बुनियादी शिक्षा के आम सिद्धांत	नये प्रकाशन
९ प्रौढ शिक्षा का अद्देश्य (शाता नासलकर और मार्जरी साजिक्स) ०-७५	२०. शांति-सेना ०-१२
१०. जीवन शिक्षा का प्रारम्भ (पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना और प्रत्यक्ष काम) (शाता नासलकर) १-२५	२१. शिक्षा से (विनोबा) ०-२५
अलग-अलग विषयों पर पुस्तकें	२२ शांति-सेना का विकास ०-३१
११. मूल अद्योग. शातना (विनोबा) ०-७५	२३. विद्यार्थियों से (विनोबा) ०-२५
१२. खेती शिक्षा (भित्ति और पटेल) १-००	२४ ग्राम स्वराज्य नअी तालीम १-००
पाठ्यक्रम की पुस्तकें	नोट-१. पुस्तक की कीमत पर प्रत्येक ५० नये पैसे पर प्राय ६ नये पैसे के हिसाब से डाक खर्च लगेगा। जिसके अलावा चौ. पी या रजिस्ट्रार से मगाने पर ६३ नये पैसे अधिक लगेंगे।
१३. आठ सालों का सम्पूर्ण शिक्षाग्राम १-५०	नोट-२. प्रत्येक ऑर्डर के साथ अथवा चौथाओ खम पेसगी रूप में आनी चाहिये।

प्रकाशक - श्री राधाकृष्ण, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम।

मुद्रक - श्री द्वारका प्रसाद परसासी, नअी तालीम मुद्रणालय, सेवाग्राम।